प्रकाशक

यूनिक ट्रेडर्स,

चौड़ा रास्ता,

जयपुर

१९७४

मूल्य

सामान्य संस्करण १५·०० रु०

विशिष्ट संस्करण १८·०० रु०

मुद्रक

जयपुर मान प्रिण्टर्स

बाणवालों का दरवाजा

चौड़ा रास्ता, जयपुर

सम्पादकीय

राजस्थान में प्रति वर्ष भारी तादाद में पुस्तकें छपती हैं। किन्तु अभी तक एक ऐसी पुस्तक का सर्वथा अभाव अनुभव किया जा रहा था, जो देश के इस सरनाम प्रदेश के बारे में सर्वांगीण जानकारी प्रस्तुत कर एक संदर्भ ग्रन्थ का स्थान ग्रहण कर सके। प्रस्तुत ज्ञान-कोष इसी अभाव की पूर्ति की दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

राजस्थान जैसे विशाल प्रदेश के नानारंगी रूपों की झलक एक लघु काय ग्रन्थ में देना सहज कार्य नहीं है। फिर भी हमने भरसक प्रयत्न किया है कि इस निरन्तर महिमा मंडित होने वाली भूमि के किसी भी पक्ष के बारे में जिज्ञासा रखने वाले व्यक्ति को प्रारम्भिक जानकारी तो सुलभ हो ही जाय। इस प्रयास में जो कोर-कसर रह भी गई है, उसे हम अगले संस्करण में दूर करने का यथाशक्य प्रयत्न करेंगे।

ज्ञान-कोष की सामग्री जुटाने में विभिन्न ग्रन्थों, पत्र-पत्रिकाओं और सरकारी प्रकाशनों से सहायता ली गई है, जिसके लिए हम सम्बन्धित लेखकों और प्रकाशकों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। अनेक विद्वानों से भी हमें इस दुष्कर कार्य में भरपूर सहायता मिली है, विशेष रूप से राजस्थानी साहित्य और संस्कृति के मौन साधक श्री रावत सारस्वत से। राजस्थानी साहित्य विषयक सामग्री प्रकारान्तर से उन्हीं की देन है, जिसके लिए हम उनके आभारी हैं।

आशा है, यह ज्ञान-कोष न केवल पुस्तकालयों के लिए ही संग्रहणीय होगा, अपितु राज्य की प्रशासनिक प्रतियोगिता-परीक्षाओं के उम्मीदवारों के लिए भी समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगा।

अनुक्रमणिका

अध्याय | पृष्ठ संख्या

—०—

१ | ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से राजस्थान भारत के उन विरल प्रदेशों में है, जिनका नाम अपनी गौरवमयी परम्पराओं के लिए बहु-विश्रुत रहा है। इस धरती ने शस्त्र और शास्त्रों की साधना और दुर्गा एवं सरस्वती की आराधना एक साथ की है। पुरातत्व शास्त्रियों के मतानुसार इस प्रदेश के जोधपुर, जैसलमेर और बीकानेर के रेतीले भागों में कभी हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के समान ही प्रागैतिहासिक बस्तियों का निवास था। इसी क्षेत्र में कभी प्रातः स्मरणीया सरस्वती नदी भी बहती थी, जिसके तट पर बैठ कर वैदिक ऋषियों ने ऋग्वेद की ऋचाओं का सृजन किया।

पौराणिक गाथाओं में वर्णित अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का घटनास्थल भी इस प्रदेश को बताया जाता है। उदाहरण के लिए भूतपूर्व जयपुर रियासत का वैराठ नामक कस्बा ही वह विराटपुर अनुमानित किया जाता है जो मत्स्य नरेशों की राजधानी था और जहां पाण्डवों ने द्रौपदी के साथ अज्ञातवास का तेरहवां वर्ष व्यतीत किया था। इसी प्रकार कोटा में चम्बल के किनारे स्थित 'कंसुआ' नामक स्थान के बारे में भी यह विश्वास प्रकट किया जाता है कि महर्षि कण्व का आश्रम कभी यहीं रहा था। धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार अजमेर में पुष्कर नामक सुप्रसिद्ध तीर्थ ही वह स्थल है, जिसे ब्रह्मा ने सृष्टि-रचना के बाद यज्ञ करने के लिए चुना था। जो भी हो, इतना सुनिश्चित है कि इस प्रदेश की पुरातन पृष्ठ-भूमि बड़ी समृद्ध रही है।

जहां तक इतिहास का सम्बन्ध है, यहां के रण-बांकुरों की रक्त-रंजित गौरव-गाथायें भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी गई हैं। राणा सांगा, महाराणा प्रताप, जयमल-पत्ता और राठोड़ दुर्गादास जैसे वीर, हाडी रानी और कर्णावती-सी वीरांगनायें, भामाशाह से त्यागी और पद्मनी सी रूपसियां अपने उदात्त मानवीय गुणों के लिए आदर्श एवं अनुकरणीय चरित्र बन गये हैं। भक्ति की भाव-धारा भी यहां अबाधगति से प्रवाहित हुई है। दादू और सुन्दरदास की निर्गुण वाणी ने यहां की धरती को निराकार ब्रह्म के अस्तित्व का सन्देश सुनाया है, तो दर्द दीवानी मीरा

ने यहां के कण-कण को कृष्ण की रूप-माधुरी में अवगाहन कराया है। काव्य और कला के क्षेत्र में भी इस प्रदेश का अतीत अत्यन्त गौरवशाली रहा है। हिन्दी साहित्य के वीर गाथा काल की शीर्षस्थ रचनायें 'पृथ्वीराज–रासो', 'हमीर–रासो', 'खुमाण–रासो' और 'वीसलदेव–रासो' इसी प्रदेश में लिखी हुई हैं। शृंगार रस के सुप्रसिद्ध कवि बिहारी ने अपनी 'बिहारी–सतसई' और महाकवि पद्माकर ने 'जगत–विनोद' की रचना यहीं के राज-दरबारों में रहकर की। संस्कृत भाषा में 'शिशुपाल–वध' के रचयिता महाकवि माघ और 'ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त' नामक ज्योतिष-ग्रन्थ के लेखक ब्रह्मगुप्त की प्रतिभा भी इसी वरद भूमि की गोद में पल्लवित और पुष्पित हुई।

संगीत के क्षेत्र में तो राजस्थान ने जो सेवायें की हैं, वे अतुलनीय हैं। यहां के अनेक शासक स्वयं महान् संगीत-विद् थे। उदयपुर के महाराणा कुंभा ने 'संगीत-राज' और 'संगीत-मीमांसा' नामक जिन ग्रन्थों की रचना की वे आज भी संगीत-मर्मज्ञों द्वारा अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं। जयपुर के कला-रसिक शासक महाराजा प्रतापसिंह ने भी 'संगीत-सार' तथा 'राग-मंजरी' नामक दो ग्रन्थों का प्रस्तुतीकरण किया। बीकानेर के महाराजा अनूपसिंह के राज्याश्रित कवि भावभट्ट ने 'अनूप-संगीत-विलास' और 'अनूप-रत्नाकर' ग्रन्थ लिखकर संगीत के विभिन्न पक्षों का विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया।

विश्व-विश्रुत संगीतज्ञ स्वामी हरिदास डागर की ध्रुपद शैली को नष्ट होने से बचाने का श्रेय भी राजस्थान के कलाकारों को ही है। ख्याल-गायकी के क्षेत्र में सुप्रसिद्ध गुलाम अब्बास, करामत खाँ, कल्लन खाँ आदि भी यहीं के राज्याश्रित कलाकार थे।

स्थापत्य कला के क्षेत्र में तो राजस्थान ने वह कमाल हासिल किया है, जिसको देख कर फर्गुसन और हावेल जैसे शिल्प-समीक्षकों को दांतों तले अंगुली दबानी पड़ी है। देलवाड़ा स्थित वस्तुपाल और तेजपाल के जैन मन्दिरों का तो संसार में कोई सानी ही नहीं। चित्तौड़, रणथम्भौर और भरतपुर के दुर्ग, जैसलमेर और बीकानेर की हवेलियां, डीग और आमेर के राज-प्रासाद और बाडोली तथा रणकपुर के देवालय उच्चकोटि की स्थापत्य और मूर्तिकला के उज्जवल उदाहरण हैं।

चित्र-कला के क्षेत्र में भी राजस्थान ने असाधारण ख्याति अर्जित की है। यहां की राजपूत कलम अपनी कमनीयता एवं सुषमा के लिए सुविदित है। राजस्थानी चित्रकला की किशनगढ़ तथा बूंदी शैली तो अपनी मौलिकता एवं भाव-व्यंजना के लिए कला पारखियों की सराहना की विशिष्ट अधिकारिणी रही है। यहां की पुरानी हवेलियों में बने भित्ति चित्र यहां के लोगों की कला-प्रियता का आज भी स्पष्ट

उद्घोष करते हैं। इस प्रकार राजस्थान सांस्कृतिक दृष्टि से एक अत्यन्त समृद्ध प्रदेश है।

राजस्थान का स्वरूप-विकास

किन्तु आज हम जिस भू-भाग को राजस्थान के नाम से जानते हैं, उसने अंग्रेजी शासन से पूर्व कभी भी एक राजनैतिक इकाई के रूप मे अपना अस्तित्व ग्रहण नहीं किया था।

इस प्रदेश के भिन्न-भिन्न भाग भिन्न-भिन्न काल और परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न नामों से जाने जाते थे। महाभारत काल में इस प्रदेश का बीकानेर क्षेत्र जो उस समय जांगल की संज्ञा से अभिहित किया जाता था, कौरवों के पैतृक राज्य का ही एक अंग था। इसी प्रकार विराटनगरी जिसे आजकल वैराठ कहा जाता है, मत्स्य प्रदेश के शासक राजा विराट के अधिकार में थी। एक ऐतिहासिक प्रवाद के अनुसार एक बार कौरवों के भड़काने पर त्रिगर्त (कांगड़ा-पंजाब) के राज सुशर्मा ने विराट के गोधन का अपहरण कर लिया और जब विराट नरेश अपने गोधन को मुक्त कराने गये तो स्वयं ही बन्दी बना लिए गये। बाद में कौरवों ने राजा विराट पर आक्रमण कर दिया, किन्तु अर्जुन की सहायता से कौरव हार गये और विराटाधीश की विजय हुई। राजस्थान के किसी राजा की विजय का यह पहला ऐतिहासिक उदाहरण है। इस घटना के बाद जब पांडवों ने चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना की तो नकुल ने मरुभूमि और मध्यमिका का इलाका विजय किया तथा पुष्कर क्षेत्र के लोगों को अधीनस्थ किया। सहदेव ने मत्स्य तथा अवंति के राजाओं से अपनी अधीनता स्वीकार कराई और उन्हें कर देने के लिए विवश किया। इस प्रकार लगभग सारा राजस्थान पांडवों के चक्रवर्ती साम्राज्य में सम्मिलित था।

महाभारत काल के पश्चात् सिकन्दर के आक्रमण तक जिस प्रकार हिन्दुस्तान का कोई इतिहास उपलब्ध नहीं होता, ठीक उसी प्रकार राजस्थान का भी कोई इतिहास उपलब्ध नहीं होता। सिकन्दर के आक्रमण के परिणामस्वरूप पंजाब की अनेक जातियों ने राजस्थान में आकर शरण ली। राजस्थान में स्वतन्त्रता प्रेमी लोगों को शरण देने की परम्परा बहुत ही विशद् रही है। शिवि लोगों ने चित्तौड़ के निकट गिरी में अपने जनपद की राजधानी स्थापित की थी और मालव लोग भी जयपुर राज्य के दक्षिणी-पूर्वी भाग में वागरछल नामक स्थान पर आकर रहे थे। इन स्थानों से उनके सिक्के भी प्राप्त हुए हैं। सिकन्दर के आक्रमण के पश्चात् ये लोग राजस्थान में किस वक्त आये इसका तो कोई ठीक समय निश्चित नहीं है किन्तु इतना सुनिश्चित है कि सिकन्दर के बाद ये समस्त गणराज्य तथा सम्पूर्ण राजस्थान

चन्द्रगुप्त मौर्य के अधीनस्थ हो गया था क्योंकि उसका राज्य कावुल से लेकर सुदूर दक्षिण में मैसूर तक तथा हिरात से लेकर ठेठ मगध तक था। जयपुर डिवीजन के बैराठ नामक कस्बे में अशोक का एक छोटा सा शिलालेख भी मिला है। ब्रहद्रथ को मारकर पुष्यमित्र शुंग द्वारा मौर्य साम्राज्य पर आधिपत्य करने के बाद भी मौर्यों का राज्य आठवीं शताब्दी तक मारवाड़ तथा मेवाड़ में कहीं-कहीं था। शुंगों के काल में बल्ख के यूनानी शासक ने राजस्थान पर आक्रमण कर दिया और मध्यमिका पर, जिसे आजकल नगरी के नाम से पुकारते हैं, घेरा डाल दिया किन्तु शुंगों से हार मानकर उसे सिंध और सौराष्ट्र की तरफ हट जाना पड़ा।

यूनानियों के पश्चात् शक, कुशाण और हूण लोगों ने एक के वाद एक भारत को आक्रान्त किया। शक लोग स्वतन्त्र राजाओं के रूप में तो पंजाब तक आकर रह गये परन्तु कुशाणों के क्षेत्रपाल के रूप में वे पूर्व में मथुरा तक तथा दक्षिण में उज्जैन तक पहुँच गये। इस प्रकार शक संवत् के आरम्भ तक करीव ४६ वर्ष तक राजस्थान पर कुशाणों का राज्य रहा। इसके पश्चात् राजस्थान, उज्जैन और कच्छ पर शक क्षत्रप नहापाण ने स्वतन्त्र होकर महाक्षत्रप की उपाधि धारण कर राज्य करना प्रारम्भ किया। उसके दामाद उशवदान ने पुष्कर में एक गांव भी दान किया था। इसके पश्चात् महाक्षत्रप नहपाण दक्षिण के सातवाहन वंश से हार गया किन्तु आगे चल कर रुद्रदामा नाम के दूसरे महाक्षत्रप ने उसके राज्य को पुन: शकों के अधीनस्थ कर लिया और उसकी सीमा का विस्तार ठेठ नासिक तक कर लिया व ३९३ ई० तक शकों का राज्य इस प्रदेश पर रहा। कुशाण तथा शक ये दोनों ही आर्य जाति के लोग थे और शिव के अत्यन्त भक्त थे। हां, कनिष्क वाद में वौद्ध अवश्य हो गया था किन्तु उसके सिक्कों पर शिव मूर्ति का अंकन इस वात का द्योतक है कि उसकी आस्था भी शिव में अवश्य रही होगी।

समुद्रगुप्त महा प्रतापी राजा हुआ था। उसने राजस्थान के पूर्वी भाग में रहने वाली जातिग्रों को कर देने के लिए विवश कर दिया था। सम्पूर्ण राजस्थान पर गुप्तों का आधिपत्य चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के जमाने में ही हुआ। विक्रमादित्य ने शकों के आखिरी महाक्षत्रप रुद्रसिंह को मार कर सारा पश्चिमी हिन्दुस्तान अपने अधिकार में कर लिया और उज्जैन को अपनी दूसरी राजधानी वनाई। ४९९ ई० तक गुप्त राजा राजस्थान पर राज्य करते रहे और उसके वाद हूणों के प्रभाव का विस्तार होने लगा।

हूणों में तोरमाण महाप्रतापी राजा हुआ। उसने गन्धार, पंजाव तथा काश्मीर से आगे वढ़ कर गुजरात, काठियावाड़, राजपूताना तथा मालवा पर अधिकार कर लिया। ५८९ ई० तक हूण लोग राजस्थान पर राज्य करते रहे। ये

लोग आर्य जाति के थे तथा शिव के भक्त थे। तोरमाण के पुत्र मिहिरकुल का बनाया हुआ एक शिव मन्दिर उदयपुर डिविजन स्थित बाडोली नामक स्थान पर आज भी मौजूद है। मन्दसौर के राजा यशोवर्मन ने तोरमाण के वेटे मिहिरकूल को पश्चिमी हिन्दुस्तान से मार कर भगा दिया और उसके वाद पूर्वी राजस्थान तथा अरावली के निकट के पश्चिमी भागों पर गुर्जरों का राज्य हो गया। गुर्जर लोग लगभग ७० वर्ष तक राजस्थान पर राज्य करते रहे। उनकी राजधानी भीनमाल थी जो आजकल जोधपुर डिविजन के जालौर जिले का एक गांव है। सन् ६०० ई० के आसपास गुर्जरों का राज्य हर्षवर्द्धन के पिता प्रभाकरवर्द्धन द्वारा उजाड़ दिया गया। केवल उनकी कुछ जागीरें अलवर जिले में रह गई। शेष इलाके हर्षवर्द्धन के अधीनस्थ प्राचीन क्षत्रियों के हाथ में चले गये। जांगल प्रदेश की राजधानी नागौर में असल में नागवंशियों का आधिपत्य था किन्तु वाद में वह नागों के हाथ में चला गया और उन्होंने अपना कब्जा दक्षिण में मंडोर तक बढ़ा लिया। मौर्यवंशी लोग चित्तौड़ से मारवाड़ के रेगिस्तान को पार करते हुए सिन्ध तक पहुँच गए। गुर्जरों की राजधानी भीनमाल तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्रों पर चावडों का राज्य हो गया। अरावली के दक्षिण में आकर गुहिल लोग वस गए और उन्होंने भीलों को प्रसन्न कर भीलो इलाके का शासन हाथ में ले लिया। कोटा डिविजन का प्रदेश आगे-पीछे मध्य भारत के नागवंशियों के हाथ में चला गया। इस प्रकार हर्षवर्द्धन के काल में अर्द्ध स्वतन्त्र ये विभिन्न राज्य फैले रहे। हर्षवर्द्धन के देहान्त के पश्चात् कन्नौज के साम्राज्य में अराजकता फैल गई और भीनमाल के रघुवंशी परिहार राजा नागभट्ट ने उस पर आधिपत्य कर लिया। वह भीनमाल को अपनी राजधानी वनाकर राज्य करने लगा और उसने अपने युग में सिन्ध के मुसलमानों को भी परास्त किया। इसी नागभट्ट के वंश में एक नागभट्ट और हुआ जिसे नाहड़राव भी कहा जाता है। उसने कन्नौज के साम्राज्य पर स्वामित्व प्राप्त कर लिया। उसके अधीनस्थ आन्ध्र, सैंधव, विदर्भ, कलिंग, वंग, मालव, किरात, तुरुष्क, वस्त और मत्स्य इत्यादि प्रदेश थे। इस तरह सारा उत्तरी भारत उसके आधीन हो गया। जब तक परिहारों का प्रभाव रहा तव तक मुसलमान लोग सिन्ध और मुल्तान से एक इन्च भी आगे न वढ़ सके किन्तु इन लोगों ने अरब लोगों को कभी खदेड़ कर नहीं भगाया क्योंकि यह धर्म-भीरु थे। जब कभी भी मुसलमानों द्वारा अरबों को भगाने की वात की जाती वे लोग मुल्तान के सूर्य मन्दिर में घुस आने की धमकी देते और ये लोग सूर्यवंशी होने के कारण अगाध श्रद्धा रखते थे। इसलिए इनको भी अपने मन पर काबू रखना पड़ता। इधर परिहार भी किसी विदेशी हमले का डर नहीं होने के कारण शिथिल हो गये और यह शिथिलता इस हद तक वढ़ गई कि इस राज्य को कायम होने के २० वर्ष वाद सन् १०१८ में महमूद गजनवी इसे रौंदता हुआ आगे निकल गया। महमूद गजनवी

ने परिहारों की भूमि मारवाड़ में होकर सोमनाथ पर आक्रमण कर दिया और परिहार लोग उसे आगे बढ़ने से नहीं रोक सके।

महमूद गजनवी के आक्रमण से अन्तिम हिन्दू साम्राज्य समाप्त हो गया और उसके ध्वंसावशेषों पर कई छोटे-छोटे राज्य स्थापित हो गए। राजस्थान के उत्तर में नागौर से दिल्ली तक चौहानों का राज्य हो गया। इन लोगों ने अपनी राजधानी नागौर से हटा कर सांभर बना ली और बाद में राज्य के विस्तार के साथ अजमेर को अपनी राजधानी बना ली। मारवाड़ के मध्य भाग पर परमारों का राज्य हो गया। मारवाड़ के दक्षिण पश्चिम में सांचौर में सोलकियों का राज्य स्थापित हुआ और अरावली के उस पार चित्तौड़ तक अब गहलोतों का प्रभाव प्रबल हो गया। ये सीमायें थोड़ी बहुत बदलती अवश्य रहीं किन्तु जब मुहम्मद गौरी ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया उस समय हिन्दुस्तान में अजमेर का चौहान राजा पृथ्वीराज सबका शिरमौर था। उसने आस-पास के राजाओं को एकत्रित कर तुर्कों का मुकाबला किया। तुर्क लोग हार कर भाग गये किन्तु पृथ्वीराज ने राजपूती शान और आन के अनुसार भगोड़े लोगों का पीछा करना उचित नहीं समझा यदि वह ऐसा कर सकता तो मुहम्मद गौरी का खातमा उसी आक्रमण से हो जाता। उसकी इस भूल का परिणाम यह हुआ कि दूसरे आक्रमण में पृथ्वीराज हार गया।

गुलामवंश के सुल्तान अलतमश ने चौहानों को आखिरी बार हरा कर अजमेर में तुर्कों का राज्य स्थापित कर लिया। यहां एक बात उल्लेखनीय है कि तेरहवीं शताब्दी में तुर्कों का राज्य उत्तर भारत में स्थापित हो जाने से कई राजपूत राजाओं ने राजस्थान में शरण ली और वे लोग अरावली के पूर्व, पश्चिम और उत्तर-दक्षिण में बस गये। ठीक इसी प्रकार ६०० वर्ष पहले भी सिकन्दर के आक्रमण के समय अनेक जातियों ने राजस्थान में आकर आश्रय ग्रहण किया। कछावा लोग ग्वालियर नरवर से पश्चिम में हट कर जयपुर में आ गये। राठौड़ सामन्त बदायुं छोड़ कर मारवाड़ में आ बसे। चौहान लोग अजमेर छोड़कर मारवाड़ के दक्षिण-पश्चिम सिरोही, तथा दक्षिण-पूर्व बूंदी में आकर बस गये। भाटी लोग भटिंडा तथा भटनेर छोड़कर एक दो सदी में जैसलमेर आकर जम गये। इस प्रकार पुराने राजाओं और उन राजाओं के पुत्रों की अन्तिम शरणास्थली होने के कारण राजस्थान में आर्यों की जन-जातियां तथा उनके तौर तरीके आज तक उपलब्ध होते हैं। मालवा तथा गुजरात का समृद्ध प्रदेश तो तुर्कों के हाथ में चला गया किन्तु राजस्थान की रेगिस्तानी तथा ऊबड़ खाबड़ भूमि राजपूतों के स्वामित्व में ही रही। आगे चलकर अलाउद्दीन खिलजी ने राजस्थान को एक बार फिर झिंझोडा। उसने रण-थम्भौर, जालौर तथा नाडौल में गुहलातों को हराया किन्तु अलाउद्दीन के देहावसान के तुरन्त

वात ही राजपूत पुनः स्वतन्त्र हो गये। मेवाड़ के शिशोदियाओं ने गुजरात और मालवा के उन सूवेदारों को जो स्वतन्त्र होकर वादशाह वन गये थे, कई वार हराया व राणा कुम्भा ने तो मालवा पर विजय प्राप्त कर वहां के वादशाह को वंदी वना लिया था। चित्तौड़ का विजय स्तम्भ इस घटना का आज भी साक्षी है किन्तु इन लोगों में महत्वकांक्षा और कूटनीतिज्ञता का अभाव होने के कारण वे कोई सुदृढ़ साम्राज्य की स्थापना नहीं कर सके। गुहलोतों की स्थिति सन् १५२६ ई० तक काफी मजबूत हो गई। जिस वक्त वावर ने हिन्दुस्तान पर हमला किया उस वक्त उसे भी भारत को विजय करने के लिये भारत के सबसे वड़े राजा चित्तौड़ के महाराणा संग्रामसिंह से लोहा लेना पड़ा। राणा सांगा हार अवश्य गये, किन्तु फिर भी वावर ने राजस्थान में कदम नहीं रखा, क्योंकि उसे राजपूतों के शौर्य का परिचय मिल चुका था। अव राजस्थान का इलाका पूरी तरह वंट गया था। जैसलमेर में भाटी, वीकानेर, जोधपुर, में राठौड़, अरावली के दक्षिणी-पूर्वी भाग में गहलोत और वूंदी-सिरोही में चौहान तथा जयपुर में कछावों की सत्ता स्थापित हो चुकी थी। वावर के वेटे हुमायूं को परास्त करने के वाद शेरशाह ने मारवाड़ के राजा मालदेव पर चढ़ाई की। मालदेव वड़ा पराक्रमी शासक था। उसका दवदवा उत्तरी गुजरात से लेकर राजस्थान तक था। शेरशाह किसी तरह मालदेव को परास्त तो कर सका किन्तु उसके मुंह से यह वात अवश्य निकली कि मुट्ठी भर वाजरे के लिए हिन्दुस्तान का राज्य खो वैठता। शेरशाह से त्रस्त वावर का वेटा हुमायूं राजस्थान में शरण लेने आया किन्तु उसके साथियों द्वारा मारवाड़ में कुछ वैलों को कत्ल किये जाने के कारण मारवाड़ के राजा मालदेव ने शरण देने से इन्कार कर दिया और हुमायूं सिन्ध में होकर फारस की तरफ चला गया। हुमायूं का वेटा अकवर वड़ा प्रवल वादशाह हुआ और उसने राजस्थान के सव राजाओं को अपना सामन्त वना लिया। मारवाड़ के राजा राव चन्द्रसेन ने जव सामन्त वनने के वारे में अपनी अस्वीकृति दे दी तो अकवर ने उसके भाई राव उदयसिंह को राजा वना दिया और चन्द्रसेन को पहाड़ों की शरण लेनी पड़ी। चित्तौड़ के राणा प्रताप ने भी अकवर की अधीनता स्वीकार करने से इन्कार किया और मृत्यु-पर्यन्त उसने अकवर की अधीनता स्वीकार नहीं की। हल्दी घाटी के युद्ध में राणा प्रताप की हार हुई और उसे भी चित्तौड़ छोड़ कर चावंड में शरण लेनी पड़ी। अकवर ने राजपूत राजाओं पर निगरानी रखने के लिये एक सूवेदार की नियुक्ति की। तभी से अजमेर में सूवे की नींव पड़ी। वास्तव में राजस्थान के एकीकरण की नींव का सूत्रपात इस घटना को माना जा सकता है क्योंकि इससे पहले सव राजा लोग अपने को पृथक-पृथक रूप से स्वतन्त्र समझते थे किन्तु अव वे एक सूवे में वंध गये।

राजपूतों द्वारा मुगलों से सम्वन्ध जोड़ने के फलस्वरूप भारत की राजनीति

में एक स्थिरता आई और अमन-चैन कायम हुआ। इस युग में साहित्य, संगीत और ललित-कला का बड़ा विकास हुआ। हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति के संगम से एक नई हिन्दुस्तानी संस्कृति का उद्भव हुआ। किन्तु औरंगजेब के सिंहासनारूढ़ होते ही सारा मानचित्र बदल गया। उसने हिन्दुस्तानी संस्कृति के स्थान पर मुस्लिम संस्कृति और हिन्दू राज्यों के स्थान पर मुस्लिम राज्य कायम करने की सोची और किसी अंश तक उसे इसमें सफलता भी प्राप्त हुई। मुगलों के बाद मराठों ने राजपूत राजाओं को तंग करना प्रारम्भ किया और उनसे चौथ वसूल की। ये लोग गद्दी के हकदारों में से किसी एक का पक्ष लेकर उन्हें आपस में लड़ा देते थे। इस प्रकार परस्पर लड़ने से धीरे-धीरे उनकी शक्ति क्षीण होती गई और आखिरकार भीतरी और बाहरी अशान्ति से तंग आकर राजस्थान के राजाओं ने १९ वीं शताब्दी में अंग्रेजों से संधि कर ली। यद्यपि संधि में प्रदर्शन तो मित्रता का ही किया गया था परन्तु स्पष्ट रूप से वर्चस्व अंग्रेजों का ही था। अंग्रेजों के आगमन के साथ हिन्दुस्तान के इतिहास में एक नया दौर शुरू हुआ। भारत की संस्कृति पर पश्चिम की छाप लगी। खान-पान, रहन-सहन, आचार-व्यवहार जीवन का कोई भी पक्ष इससे अछूता नहीं रहा। गुलामी की यह अवस्था भारतवासियों को असह्य हो गई और १८५७ में पहला स्वतन्त्रता संग्राम हुआ।

राजनैतिक चेतना की कहानी

सन् सत्तावन का जो पहला संग्राम हुआ, उसने समस्त देशवासियों को अदम्य प्रेरणा दी। राजनैतिक चेतना के जिस सूर्य का उदय देश के क्षितिज पर हुआ, उसकी किरणों ने राजस्थान की धरती को भी ज्योतिर्मय किया।

रियासती शासकों के दमन-चक्र ने चेतना की किरणों को और भी प्रखर करने में योग दिया। जैसलमेर के श्री सागरमल गोपा, जोधपुर के श्री बालमुकुन्द बिस्सा, भरतपुर के श्री रनेश स्वामी, धौलपुर के श्री पंचम और बीकानेर के कतिपय निरीह किसानों के हत्याकाण्ड ने यहां की राजनैतिक चेतना को उभाड़ने में अग्नि में घी डालने का काम किया।

राजस्थान निर्माण

इस प्रकार स्वाधीनता का यह संग्राम निरन्तर चलता रहा और १५ अगस्त, १९४७ को वह शुभ दिन आया, जब हिन्दुस्तान ने स्वतन्त्रता के स्वर्णोदय के दर्शन किये। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राजस्थान के राजाओं ने धीरे-धीरे भारत सरकार से समझौता कर लिया और अपनी सार्वभौम सत्ता जनता को हस्तान्तरित कर दी। वर्तमान राजस्थान के निर्माण की प्रक्रिया काल-क्रम के अनुसार १९४८ से आरम्भ होकर १९५६ में निम्न प्रकार पूर्ण हुई:—

राजस्थान-निर्माण की विगत

चरण	स्थापित संघ	राजधानी	स्थापना तिथि	सम्मिलित रियासतें
प्रथम	मत्स्य संघ	अलवर	१८ मार्च १९४८	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली
द्वितीय	राजस्थान प्रथम	कोटा	२५ मार्च १९४८	बांसवाड़ा, बूंदी, डूंगरपुर, झालावाड़, किशनगढ़, कोटा, प्रतापगढ़, शाहपुरा, टोंक
तृतीय	संयुक्त राजस्थान	उदयपुर	१८ अप्रेल १९४८	राजस्थान प्रथम+ उदयपुर
चतुर्थ	विशाल राजस्थान	जयपुर	३० मार्च १९४९	संयुक्त राजस्थान+ बीकानेर, जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर
पंचम	संयुक्त विशाल राजस्थान	,,	१५ मई १९४९	विशाल राजस्थान+ मत्स्य संघ
षष्ठ	राजस्थान संघ	,,	२६ जनवरी १९५०	संयुक्त विशाल राजस्थान +सिरोही (आबू को छोड़कर)
सप्तम्	राजस्थान (वर्तमान)	,,	१ नवम्बर १९५६	राजस्थान संघ+अजमेर, आबू, सुनेलटप्पा (सिरोंज को छोड़ कर)

२ | भौगोलिक विशिष्टतायें

राजस्थान की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठ-भूमि जितनी विशिष्ट रही है, उतनी ही विशिष्ट है यहां की भौगोलिक सम्पदा । ३४२२१४* वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र वाला यह विशाल भू-भाग आकार में इंगलैंड से बड़ा और जर्मनी या जपान से थोड़ा ही छोटा है ।

भारतीय गणतन्त्र का यह दूसरा सबसे बड़ा प्रदेश २३°३′ से ३०°१२′ उत्तरी अक्षांश और ६९°३०′ से ७८°१७′ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है ।

रेखागणित के विषम-कोण चतुर्भुज के आकार के इस राज्य के पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में १०७० कि० मी० पाकिस्तान, उत्तर और उत्तर-पूर्व में पंजाब तथा हरियाणा व उत्तर-प्रदेश, दक्षिण-पूर्व में मध्यप्रदेश और दक्षिण-पश्चिम में गुजरात की सीमायें हैं ।

अरावली की प्राचीन पर्वत मालायें इस राज्य को विभाजित करती हुई दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व तक फैलती चली गई हैं ।

अरावली पहाड़ राजस्थान को चतुर्भुज के एक कोण की तरह पूर्व और पश्चिम के रूप में दो हिस्सों में विभाजित करता है । पश्चिमी राजस्थान में थार का रेगिस्तान सिन्ध और सतलज नदी से लेकर अरावली श्रृंखला से होड़ लगाता हुआ दक्षिण में कच्छ के रण तक फैला हुआ है । यह रेगिस्तान मुख्यतः जोधपुर और बीकानेर जिलों पर फैला हुआ है । जयपुर जिले में भी यह रेगिस्तान बढ़ने का प्रयास कर रहा है, परन्तु यहां पर यह उस तरह नहीं छा पाया है । इसका मुख्य कारण यहां की बिखरी हुई पहाड़ियां और ऊबड़-खाबड़ जमीन है । उदयपुर और कोटा अरावली पहाड़ियों के जिले हैं । चम्बल नदी उत्तर-पूर्व में राजस्थान और मध्यप्रदेश की सीमा-रेखा को बनाती हुई बह रही है ।

राजस्थान के थार के रेगिस्तान और अरावली के पहाड़ ने इतिहास में जब तक मनुष्य की परीक्षा ली है ।

---

*इण्डिया १९७३ ।

अरावली पहाड़ राजस्थान के लिये एक जल-दाता का काम करता है। मानसून टकरा कर जो पानी यहां छोड़ देती है, उससे रावी का वहाव तैयार होकर उत्तर-पूर्व की ओर वहने लगता है और आगे बढ़ता हुआ यमुना नदी में मिल जाता है। पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में पानी का वहाव कच्छ के रण की तरफ है। पूर्वी भाग में पानी को बहा कर बनारस, माही और साबरमती नामकी नदियां समुद्र तक ले जाती हैं। थार के रेगिश्तान में से होकर कोई नदी नहीं वहती। यदि वैसा होता तो थार का रेगिस्तान, रेगिस्तान नहीं रहता। वह गंग-नहर के आस-पास के इलाके की तरह हरा-भरा हो जाता। थार के रेगिश्तान में लूनी नदी के नाम से एक नाला वहता है जो मौसमी होते हुये भी समुद्र तक पहुँचने की हिम्मत कर गया है।

झुंझुनूं और अलवर जिले में पानी का परिवहन आन्तरिक है। ये जिले पानी को बाहर नहीं जाने देते, उन्होंने एक तरह से अपनी ही सीमा में कैद कर रखा है। सीतली, सोता, साहिवी और वराह के नाले यहां से बाहर निकलने का प्रयास करते हैं पर वे रेतीले टीवों में ही धंस कर रह जाते हैं। भरतपुर से भी कुछ पानी आता है जो यमुना नदी में जाकर वहां के पानी की श्री वृद्धि करता है। जयपुर, सवाई-माधोपुर, टौंक, अजमेर, भीलवाड़ा, बूंदी, कोटा, झालावाड़, चित्तौड़ और उदयपुर जिलों के कई भागों में पानी का वहाव चम्बल की तरफ है। चम्बल राजस्थान का सबसे बड़ा जल-प्रदाय है। चम्बल को सबसे बड़ा जल-प्रदाय बनाने वाली नदियां मारेल, बांसी, कुल, काली, काली सिंध, परवा, वेणच और गम्भीरी है। पाटु नदी का विशाल जलाशय डूंगरपुर और बांसवाड़ा है। साबरमती नदी में उदयपुर और सिरोही दोनों स्थानों का पानी मिल कर वहता है। बनास नदी का पानी तो सिरोही जिले से आता है। पाली, जालौर और सिरोही जिलों में होकर बहने वाली नदियाँ बागड़ी, सकरी, मिठड़ी जवाई और सभी नाले ऐसे हैं जो लूनी नदी में आकर मिलते हैं। पूर्वी राजस्थान में पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है, इसलिये वहां काफी सिंचाई की जा सकती है।

वर्षा की दृष्टि से राजस्थान को तीन भागों में बांटा जा सकता है—

(१) अरावली पर्वत के पूर्व में स्थित ५०० से ८०० मिली मीटर वाला भाग।

(२) पूर्व में अरावली की तलहटी से पश्चिम का रेगिस्तान वाला ३०० से ५०० मिली मीटर वाला भाग। और,

(३) थार के रेगिस्तान वाला १०० से २०० मिली मीटर तक फैला हुआ भाग।

राजस्थान की पहाड़ी चोटियाँ

चोटियां	ऊँचाई
१. गुरु शिखर	१७२२ मीटर
२. जरगा	१३१० ,,
३. कुम्भलगढ़	१२४४ ,,
४. गोरग	६३६ ,,
५. सांडमाता	६३० ,,
६. तारागढ़	६१४ ,,

इन भागों में सबसे अधिक वर्षा वाला भाग अरावली का आबू शिखर है। यहाँ वर्षा १,००० मिलीमीटर से भी अधिक होती है। शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में इन्द्र देवता की दृष्टि दो तरह की रही है। एक भाग पर वे दयावान रहे हैं तो दूसरे भाग पर उनकी कोप दृष्टि पड़ी है।

६० प्रतिशत वर्षा जून से सितम्बर तक मानसून द्वारा होती है। दिसम्बर से फरवरी तक सर्दियों में ५ प्रतिशत वर्षा होती है। मानसून द्वारा ही मूसलाधार वर्षा होती है। शुष्क भागों में खेती केवल आठ से लेकर बारह सप्ताह तक ही हो पाती है। इससे भी ज्यादा शुष्क इलाकों में साल में १० सप्ताह तक।

राजस्थान में तापमान की चरम सीमा मई में वहाँ के कई भागों में बनी रहती है। तापमान की यह सीमा ४०–५०^0 सेन्टीग्रेड है। इस महीने में कम से कम तापमान २०^0 सेन्टीग्रेड से २७^0 सेन्टीग्रेड रहता है। श्रीगंगानगर में ५०^0 सेन्टीग्रेड तापमान रहता है। जोधपुर, बीकानेर और बाड़मेर में तापमान ४६^0 सेन्टीग्रेड, जयपुर व कोटा में ४२^0 सेन्टीग्रेड और झालावाड़ में ४७^0 सेन्टीग्रेड रहता है। गर्मी के मौसम में यहाँ गर्म लू चलती है जो प्रायः आँधी का रूप धारण कर लेती है। यहाँ गर्मी भी विकराल होती है। यह इलाका रेतीला होने के कारण यहाँ रात्रि में तापमान में गिरावट आ जाती है। दिसम्बर से फरवरी तक शिशिर ऋतु रहती है। जनवरी के महीने में यह तापमान श्रीगंगानगर में २०^0 सेन्टीग्रेड, बीकानेर में २२^0 सेन्टीग्रेड, जयपुर और अजमेर में २२·५^0 सेन्टीग्रेड, जोधपुर, बाड़मेर और झालावाड़ में २४·५^0 सेन्टीग्रेड और कोटा में १३·५^0 सेन्टीग्रेड रहता है। शुष्क क्षेत्र के पश्चिम हिस्से में साधारणतया शीत लहर चला करती है।

राजस्थान में आर्द्रता गर्मी के मौसम में कम रहती है, पर वह मानसून में बढ़ जाती है। यहाँ अप्रैल में कम से कम आर्द्रता रहती है और अगस्त में अधिक से अधिक। औसतन यह दिसम्बर से फरवरी तक के ठण्डे मौसम में प्रातःकाल ५० से ६० प्रतिशत और दोपहर के बाद २० से ३० प्रतिशत तक रहती है। राज्य के अलग-अलग हिस्सों में यह आर्द्रता न्यूनाधिक रहती है। मानसून के निकल जाने के बाद यह आर्द्रता घट जाती है, वह ठण्डे मौसम की आर्द्रता से भी कम हो जाती है।

अरावली पहाड़ की शृङ्खलायें और उनकी चट्टानें राजस्थान की धरती पर मजबूती के साथ फैली हुई हैं। विन्ध्याचल पहाड़ की चट्टानें जो अरावली पहाड़ की चट्टानों का ही एक आगे बढ़ता हुआ हिस्सा है, केब्रियन युग और प्राग् केब्रियन युग की हैं। ये चट्टानें मुख्यतः पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी अरावली और जोधपुर तक फैली हुई हैं।

पोकरण और बाप में भूरे और लाल रंग की चट्टानें हैं। यह विन्ध्याचल की चट्टानों से भिन्न हैं। जैसलमेर में मिलने वाली चट्टानें गोदवान-युग की हैं। जैसलमेर की चट्टानें चूने-पत्थर की चट्टानें हैं। बाड़मेर में मिलने वाली चट्टानें बीलमीर की चट्टानें हैं। बाड़मेर की इन चट्टानों में पेड़-अवशेष भी पाये जाते हैं। ये Cretaneous Age की चट्टानें हैं। जैसलमेर और बीकानेर की चट्टानें भी कुछ ऐसी ही हैं। राजस्थान की विभिन्न चट्टानें आपस में एक दूसरे से भिन्न है। इस विविधता का मूल कारण राजस्थान की भौगोलिकता की भिन्नता है। इस भौगोलिक भिन्नता की रासायनिकता के असर से इन चट्टानों का निर्माण हुआ है।

राजस्थान में विविध प्रकार की मिट्टी पाई जाती है। राजस्थान की मिट्टी को जलवायु, प्राकृतिक दशा आदि के आधार पर सात वर्गों में बाँटा जा सकता है :—

१. रेगिस्तानी मिट्टी
२. भूरे रंग की पीली मिट्टी
३. नदी घाटी की भूरी काली मिट्टी
४. लाल पीली मिट्टी
५. लाल काली मिली हुई मिट्टी
६. कछारी मिट्टी
७. साधारण काली मिट्टी

१. रेगिस्तानी मिट्टी

रेगिस्तानी मिट्टी राजस्थान को प्रकृति ने दिल खोल कर दी है। जैसलमेर बीकानेर, चूरू, बाड़मेर, पाली का कुछ हिस्सा, जालौर, गंगानगर और नागौर में रेगिस्तानी मिट्टी ही मिट्टी है। इस क्षेत्र में वर्षा औसतन १५ इन्च और कहीं-कहीं इससे भी कम होती है। इसलिये इस भू-भाग में पैदावार नहीं के बराबर होती है।

रेगिस्तानी मिट्टी का रंग पीला, भूरा और थोड़ा-सा कालापन लिये हुये है। इस मिट्टी की उर्वरक शक्ति बहुत कम है और कछारीपन अधिक है।

२. भूरे रंग की पीली मिट्टी

यह जोधपुर, नागौर, सीकर, झुंझुनू, पाली और पूर्वी पाली में पाई जाती है। यह रेगिस्तानी मिट्टी से मिलती-जुलती है। इसमें नत्रजन और अन्य अवयवी तत्त्व ज्यादा मात्रा में हैं। इस मिट्टी में उर्वरक शक्ति कम है। परन्तु पानी को थामने की शक्ति रेगिस्तानी मिट्टी से ज्यादा है। पानी का विस्तार ३० फीट से लेकर ६० फीट तक की गहराई का है।

३. नदी घाटी की भूरी काली मिट्टी

यह मिट्टी नदी की तलहटी में पाई जाती है। इसका जमाव गंगानगर, अलवर और भरतपुर जिलों में हैं। इसमें नमक बहुतायत में मिला हुआ है। पानी का विस्तार ४० से १०० फीट की गहराई तक का है।

४. लाल पीली मिट्टी

इस प्रकार की मिट्टी सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़, भीलवाड़ा, अजमेर और सवाईमाधोपुर जिलों में लगभग ५० से ६० मील की चौड़ाई में फैली हुई मिलती है। भीलवाड़ा, चित्तौड़ और बांसवाड़ा में लाल और काली मिट्टी का मिश्रण पाया जाता है। इन सभी प्रकार की मिट्टियों में उर्वरकता की भारी कमी है। पानी का विस्तार ३० से ४० फीट की गहराई तक का है।

५. लाल काली मिली हुई मिट्टी

यह लाल मिट्टी के साथ-साथ काली और भूरी मिट्टी के मिश्रण के साथ चौरस मैदानों में पाई जाती है। पहाड़ी इलाकों में पाई जाने वाली यह मिट्टी दूसरी प्रकार की मिट्टी से ज्यादा उपजाऊ है। कछारीपन इस मिट्टी का गुण है।

६. कछारी मिट्टी

यह मिट्टी सवाईमाधोपुर, भरतपुर तथा टोंक जिलों में पाई जाती है। इस मिट्टी में कछारीपन ही कछारीपन है। इस मिट्टी का ऊपरी भाग पीले रंग और भूरे रंग में मिलता है। इसकी उर्वरकता ठीक-ठीक है।

७. साधारण काली मिट्टी

यह कोटा, बूंदी, झालावाड़ और सवाईमाधोपुर के कुछ हिस्सों में मिलती है। पानी का विस्तार ३० फुट गहराई का है। यह मिट्टी उदयपुर, अरावली की शृङ्खलाओं और कोटा की विन्ध्याचल की पहाड़ी श्रेणियों में पाई जाती है। यह बहुत उपजाऊ मिट्टी है।

राजस्थान में नदियों की कमी का प्रमुख कारण वर्षा की कमी है। राजस्थान में इसलिये मौसमी नदियाँ बहुत कम हैं। राजस्थान की सबसे बड़ी नदी चम्बल है। यह कोटा से होती हुई यमुना में गिरती है। दक्षिण-पूर्वी राजस्थान की सीमा चम्बल ने ही बनाई है। इसके अलावा अन्य नदियाँ सिन्ध, पार्वती और बनास हैं, जो अरावली के दक्षिण छोर से निकल कर डूंगरपुर और बांसवाड़ा में बहती हुई खम्भात की खाड़ी में गिरती है। पूर्वी-क्षेत्र में बाण-गंगा नदी है जो जयपुर जिले की बैराठ की पहाड़ियों से निकल कर भरतपुर को पार करती हुई यमुना में जा मिलती है।

अरावली के उत्तर-पश्चिम में लूनी नदी बहती है। यह अजमेर की नाग पहाड़ियों से निकलती है। इसकी सहायक नदियाँ सूकड़ी, जवाई, जोजरी और संकरी हैं।

इन नदियों के अलावा छोटे-छोटे नाले भी हैं। उदाहरण के लिये गंगानगर जिले में खारी, कोठरी, काटली, झांसी और गम्भीरी जैसे छोटे-छोटे नाले हैं।

राजस्थान में दो प्रकार की झीलें है। एक खारे पानी की और दूसरी मीठे पानी की। खारे पानी की झीलों में, सांभर, डीडवाना और पंचभदरा की झीलें मुख्य हैं। यहाँ बड़ी मात्रा में नमक का उत्पादन होता है। बीकानेर क्षेत्र में लूणकरणसर झील से भी काफी मात्रा में नमक पैदा किया जाता है। इनके अलावा खारे पानी की और झीलें भी राज्य में हैं।

मीठे पानी की झीलों की संख्या बहुत कम है। लेकिन जो भी है, उन्होंने विश्व में ख्याति प्राप्त करली है। उदयपुर में सबसे बड़ी मानव निर्मित झील जयसमन्द है। यह झील ९ मील लम्बी और ५ मील चौड़ी है। इसके अलावा उदयपुर में उदयसागर और पिछौला, अजमेर में पुष्कर, आनासागर और फायसागर हैं। जोधपुर में बालसमन्द, सरदारसमन्द, भरतपुर में बन्ध बैनैठा और जयपुर में जमवारामगढ़, टोरडी सागर तथा कलश सागर राज्य की मीठे पानी की झीलें हैं। इनके अलावा राज्य में छोटी झीलें और तालाब भी काफी हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है कि किसी भी स्थान की वनस्पति और जीव रचना उस स्थान की जलवायु और मिट्टी पर निर्भर करती है। इस दृष्टि से राजस्थान को चार इकाइयों में बांटा जा सकता है—

(१) शुष्क वनस्पति की इकाई,
(२) सूखा इकाई,
(३) उपजाऊ इकाई, और
(४) मैसोफाईट-इकाई (शुष्क व तर इकाई)

१. शुष्क वनस्पति की इकाई

इसमें राज्य के गंगानगर, चूरु, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर का कुछ हिस्सा

तथा जोधपुर आते हैं। यह क्षेत्र प्रायः रेतीले टीलों वाला है। यहां औसतन वर्षा ५ इंच से १० इंच तक होती है और पानी का बड़ा अभाव रहता है। यहां वनस्पति के नाम पर जो पौधे पाये जाते हैं वे शुष्क भोजी हैं। दूसरे शब्दों में इनमें गर्मी और शुष्कता को सहन करने की शक्ति होती है। इस आब-हवा के दबाव के कारण इन पौधों की पत्तियां छोटी-छोटी होती हैं और इनकी जड़ें काफी गहराई तक जमीन में धंसी होती हैं। जड़ें लम्बी होने के कारण ये जमीन की गहराई में घुस कर पानी तक पहुँच जाती हैं। दूसरी ओर जहां पानी उपलब्ध हुआ है वहां कई प्रकार के पौधे उग आये हैं। यहां कई किस्म के पशु मिलते हैं जिनमें मुख्यतः ऊँट, भेड़ तथा बकरे-बकरियां हैं। ऊँट कई दिनों तक बिना पानी के रह सकता है। इसी कारण वह शताब्दियों से रेगिस्तान में जहाज का काम करता आया है। बीकानेर और जैसलमेर में भेड़ें बहुतायत से पाई जाती हैं जिससे ऊन का उद्योग फला-फूला है। रेतीले क्षेत्र में बिच्छू और सर्प भी निकलते हैं। काला सांप भी यहां अधिकाधिक मात्रा में पाया जाता है। इस क्षेत्र में पाये जाने वाले बिच्छू लम्बे होते हैं। तेन्दुए और पुन्डरीक भी यहां देखने को मिलते हैं। फसल के समय तोते, खरगोश और चूहे देखने को मिलते हैं। रेगिस्तान में पाये जाने वाले चूहे बड़े होते हैं और भूरे, सफेद और मटमैले रंग के होते हैं। इसके अलावा यहां गायें और भैसें भी पाई जाती हैं

२. सूखी इकाई

इसमें बाड़मेर जिले के कुछ हिस्से, सिरोही, पाली, सीकर और झुंझनू जिले की अर्द्ध-शुष्क पेटी आती है। यहां ढालू पहाड़ियों वाली चौरस भूमि है। यहां १० से १५ इन्च औसत वर्षा होती है। यहां एरण्ड, इमली और गुडूची जाति के पौधे उगते हैं। यहां लोमड़ी, भेड़िया व गीदड़ आदि जानवर भी पाये जाते हैं। जरख नाम का खूंखार जानवर भी यहीं देखने को मिलता है।

३. उपजाऊ इकाई

इसमें उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़, कोटा, बूंदी और झालावाड़ जिले आते हैं। यह उपजाऊ इकाई है। यहां के दक्षिणी-पूर्वी हिस्सों में खेती की जाती है। अरावली पहाड़ की श्रृंखलाओं के कारण यहां ३० इन्च से ४० इन्च तक वर्षा होती है। पानी अच्छा होने के कारण यहां वनस्पति घनी होती है। जानवरों के नाम पर यहां हिरन, बन्दर, भेड़, बकरी तथा मोर आदि होते हैं।

४. शुष्क व तर इकाई

इस इकाई में अलवर, भरतपुर, जयपुर, टोंक तथा कोटा क्षेत्र के कुछ हिस्से आते हैं। यहां पेड़-पौधों की संख्या अधिक है और कहीं-कहीं जंगल और घन बसे

हुए हैं। भरतपुर में केवलादेव घना में विश्व विख्यात जल-पक्षी हैं। यह स्थान शिकार के लिए बहुत प्रसिद्ध है।[1]

जलवायु

राजस्थान की जलवायु प्रायः शुष्क है। ग्रीष्मकाल में अत्यधिक गर्मी तो शीतकाल में अत्यधिक ठण्ड। दिन और रात तथा गर्मी और सर्दी में तापान्तर बहुत अधिक है। गर्मी के दिनों में धूल भरी आंधियां चलती हैं और सर्दी के दिनों में कड़ाके की सर्दी पड़ती है। ग्रीष्म ऋतु में अधिकतम तापमान ४९° सेन्टीग्रेड तक पहुँच जाता है तो सर्दियों में न्यूनतम तापमान ऋणात्मक भी हो जाता है। कुछ प्रमुख स्थानों का अधिकतम/न्यूनतम तापमान नीचे दिया जा रहा है।

राजस्थान के प्रमुख स्थानों का तापमान

(सेन्टीग्रेड डिग्री)

क्रम संख्या	केन्द्र	१९६९		१९७०	
		अधिकतम	न्यूनतम	अधिकतम	न्यूनतम
१	अजमेर	४३	४	४५	३
२	अलवर	४५	४	४५	४
३	आबू पर्वत	३९	४	३८	२
४	उदयपुर	४३	३	४४	४
५	कोटा	४५	५	४५	७
६	गंगानगर	४७	१	४७	१
७	चूरू	४६	( )१	४६	१
८	जयपुर	४४	३	४५	३
९	जैसलमेर	४६	१	४६	२
१०	जोधपुर	४५	१	४७	५
११	धोलपुर	४८	१	४९	१
१२	पिलानी	४५	(—)१	४५	२
१३	बांसवाड़ा	४५	५	४६	९
१४	बाड़मेर	४७	६	४८	३
१५	बीकानेर	४७	१	४६	१
१६	भीलवाड़ा	४४	२	४५	४
१७	सीकर	४८	(—)१	४८	१

सन्दर्भ—बेसिक स्टेटिस्टिक्स राजस्थान, १९७१

---

१. जनसम्पर्क निदेशालय द्वारा प्रकाशित 'राजस्थान का भूगोल' से साभार।

आंधियां

रेगिस्तानी हिस्सों में वर्ष के अधिकांश महिनों में तेज सूखी हवायें चलती हैं। ये तेज हवायें अपने साथ बालू रेत लाकर भयंकर आंधी का रूप ग्रहण कर लेती हैं। कभी-कभी ऐसे अंधड़ों/तुफानों की गति १५० कि०मी० प्रति घण्टा तक हो जाती है। गर्मियों में प्राय: यह तीसरे पहर आती है जब कि सूर्य की भीषण गर्मी से बालू मिट्टी के टीले भयंकर रूप से गर्म हो जाते हैं। इन आंधियों से दिन में भी अंधकार छा जाता है और बालू के टीले उड़ते हुए दूसरे स्थानों पर चले जाते हैं। औसत रूप से रेत-युक्त आंधियाँ गंगानगर में २७ दिन, बीकानेर में १८ दिन, जोधपुर में ८ दिन, जयपुर में ६ दिन, कोटा में ५ दिन और अजमेर में ३ दिन चला करती है। इन्हीं आंधियों से मरुस्थल का प्रसार पूर्व में होता जा रहा है।

वर्षा

जलवायु का दूसरा मुख्य अंग वर्षा है। और राजस्थान में वर्षा ही जलवायु विभेद का प्रमुख निर्धारक तत्व है। अरब सागर की मानसूनी हवायें ही यहां वर्षा करती है। राजस्थान में सर्वप्रथम व सर्वाधिक अरावली की दक्षिणी-पश्चिमी पहाड़ियों में वर्षा होती है। जैसलमेर और बीकानेर तक पहुँचते-पहुँचते हवायें जल रहित हो जाती हैं, फलस्वरूप वर्षा बहुत कम हो पाती है। सर्दी में भी राजस्थान में वर्षा पश्चिम की ओर से आने वाले चक्रवातों से होती है परन्तु इस वर्षा की मात्रा बहुत कम है। यह ३–४ सेन्टीमीटर ही हो पाती है। राजस्थान के विभिन्न जिलों में वार्षिक वर्षा का विवरण अगले पृष्ठ पर दी गई सारणी के अनुसार है।

◆◆◆◆◆◆◆◆
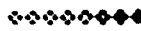
तीस साल बाद

राजस्थान में ८० वर्षों की वर्षा के आंकड़ों का अध्ययन करने पर पता चलता है कि हर तीसरी दशाब्दी में प्रदेश में भारी वर्षा होती है।

सिंचाई विभाग के अनुसार इस वर्ष (१९७३ में) प्रदेश के दक्षिणी और पश्चिमी भागों में जो भारी वर्षा से अभूतपूर्व बाढ़ आयी है, ऐसी हालत करीब ३० वर्षों के अन्तर से होती चली आयी है।

५६ साल पहले १९१७ से, उसके बाद १९४४ में भी बाड़मेर, जालौर, जैसलमेर, जोधपुर, पाली, सिरोही, कोटा व उदयपुर जिले में औसत से कई गुना अधिक वर्षा हुई है।

राजस्थान में वार्षिक वर्षा

(सेंटी मीटर)

क्र०सं०	जिला केन्द्र	औसत *	१९७०
१	२	३	४
१.	झालावाड़	१००.४७	१०३ ७२
२.	बांसवाड़ा	९२.२४	९७.०२
३.	कोटा	८८.५६	७०.१७
४.	चित्तौड़गढ़	८५.२१	८५ ७६
५.	बूंदी	७६.४१	६०.५७
६.	डूंगरपुर	७६.१७	७०.१३
७.	भीलवाड़ा	६९.९०	८६.३३
८.	सवाई माधोपुर	६८.९२	६८.७४
९.	भरतपुर	६७.१५	५८ ७७ @
१०.	सिरोही	६३.८४	८८.७३
११.	उदयपुर	६२.४५	७७.९८
१२.	टोंक	६१.३६	६५.६९
१३.	अलवर	६१.१६	७८.६९
१४.	जयपुर	५४.८२	७०.०६
१५.	अजमेर	५२.७३	६७.३०
१६.	पाली	४९.०४	६०.००
१७.	सीकर	४६ ६१	५६.०६
१८.	झुंझुनू	४४.४५	४७.५७
१९.	जालोर	४२.१६	४७.४५
२०.	नागोर	३८.८६	५७ १२
२१.	चूरू	३२.५५	४९ ९३
२२.	जोधपुर	३१.८७	६३.१८
२३.	बाड़मेर	२७.७५	१६ ३५
२४.	बीकानेर	२६.३७	२६.५०
२५.	गंगानगर	२५ ३७	२३.३४
२६.	जैसलमेर	१९.४०	२५.१८

संदर्भ—बेसिक स्टेटिस्टिक्स राजस्थान, १९७१

* औसत ५० वर्षों का (१९०१—१९५०)

@ १९६९ की वर्षा

३ | जनसंख्या एवं आवास

जनसंख्या

१९७१ की जनगणना के आधार पर राजस्थान की कुल जनसंख्या २५,७६५,८०६ है जबकि १९६१ के आंकड़ों के अनुसार यह २०,१५५,६०२ थी। १९६१–७१ के दशक में यहाँ २७.८३% जनसंख्या की वृद्धि दर रही है। यह वृद्धि दर भारत की औसत वृद्धि दर से अधिक है। भारत की पिछले दशक की जनसंख्या में वृद्धि दर २४,८० रही है। राजस्थान की जन संख्या यद्यपि काफी वढ़ती जा रही है। फिर भी क्षेत्रफल के लिहाज से वहुत कम है।

क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का भारत में मध्यप्रदेश के वाद दूसरा स्थान आता है। देश के कुल भू–भाग का ९.५९% हिस्सा राजस्थान है।

राजस्थान में जनसंख्या का घनत्व ७५ है। जो काफी कम है। घनत्व की दृष्टि से राजस्थान से नीचे केवल चार राज्य, हिमाचल प्रदेश (६२), मनीपुर (४८), मेघालय (४५) और नागालैण्ड (३१) है। सवसे अधिक घनित्व केरल (५४९) है।

राजस्थान के विभिन्न जिलों में भी आवादी एक सी नहीं है। पूर्वी मैदानी हिस्सों में जनसंख्या सवसे अधिक है और पठारी तथा पश्चिमी सूखे प्रदेश में आवादी सवसे कम है।

आवास गृहों की स्थिति

१९७१ की जनगणनानुसार राजस्थान में घरों की संख्या ४३२६६८० थीं जिनमें ४५०३८९८ परिवार निवास करते थे। प्रति परिवार सदस्यों की औसत संख्या ५·७२ थी तथा इस आधार पर प्रति २·५५ व्यक्तियों के हिस्से एक कमरा आता है। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में घरों की संख्या क्रमशः ३५५४०५१ तथा ७७२६२९ थीं। ग्रामीण परिवार ५·७६ औसत सदस्यों के हैं जवकि नगरीय परिवार ५·५६ सदस्यों के हैं, फलस्वरूप, प्रति कमरे के पीछे गांवों में २·६१ लोग निवास करते हैं और शहरों में २·३१ लोग। राज्य में जिलानुसार गृहों की संख्या आगे पृष्ठ २४ पर प्रदर्शित की गई है।

जनसंख्या की दशकवार विगत*

(१९०१—१९७१)

वर्ष	जनसंख्या			** लिंग अनुपात
	कुल	पुरुष	स्त्रियाँ	
योग				
१९०१	१०,२९४,०९०	५,४०३,९८९	४,८९०,१०१	९०५
१९११	१०,९८३,५०९	५,७५६,२०६	५,२२७,३०३	९०८
१९२१	१०,२९२ ६४८	५,४२९,३७८	४,८६३,२७०	८९६
१९३१	११,७४७,९७४	६,१६०,६१०	५.५८७,३६४	९०७
१९४१	१३,८६३.८५९	७,२७४,६७९	६,५८९,१८०	९०६
१९५१	१५,९७०,७७४	८,३१३,८८३	७ ६५६,८९१	९२१
१९६१	२०,१५५,६०२	१०,५६४,०८२	९,५९१,५२०	९०८
१९७१	२५,७६५,८०६	१३,४८४,३८३	१२,२८१.४२३	९११
ग्रामीण				
१९०१	८,७४३,४३४	४,६०७,५१३	४,१३५,९२१	८९८
१९११	९,५०७,६८०	४,९९४,०१९	४,५१३,६६१	९०४
१९२१	८,८१७,३१३	४,६५१,४७७	४ १६५,८३६	८९६
१९३१	१०,०१८,७६९	५,२५१,९२३	४.७६६,८४६	९०८
१९४१	११,७४६,७५८	६,१५८,८२२	५,५८७.९३६	९०७
१९५१	१३,०१५,४९९	६.७८१,०४८	६,२३४,४५१	९१९
१९६१	१६,८७४,१२४	८,८२०,८८०	८,०५३,२४४	९१३
१९७१	२१,२२२,०४५	११,०६०,९९५	१०,१६१,०५०	९१९
शहरी/नगरीय				
१९०१	१,५५०,६५६	७९६,४७६	७५४,१८०	९४७
१९११	१,४७५,८२९	७६२,१८७	७१३,६४२	९३६
१९२१	१,४७५,३३५	७७७,९०१	६९७,४३४	८९७
१९३१	१,७२९,२०५	९०८,६८७	८२०,५१८	९०३
१९४१	२,११७,१०१	१,११५,८५७	१,००१,२४४	८९७
१९५१	२,९५५,२७५	१,५३२,८३५	१,४२२,४४०	९२८
१९६१	३,२८१,४७८	१,७४३,२०२	१,५३८,२७६	८८२
१९७१	४,५४३,७६१	२,४२३,३८८	२,१२०,३७३	८७५

**स्त्रियाँ, प्रति एक हजार पुरुष

*Census of India 1971.—

*Population Statistics—Rajasthan 1971.

जनसंख्या, क्षेत्रफल एवं घनत्व के अनुसार जिलों का स्थान

जनसंख्यानुसार स्थान		जिले का नाम	जनसंख्या (१९७१)	जनसंख्या प्रतिशत	क्षेत्रफल (१९७१) (वर्ग कि०मी०)	क्षेत्रफल प्रतिशत	क्षेत्रफल के अनुसार स्थान	जनसंख्या का घनत्व (१९७१) प्र.व.किमी.	घनत्व के अनुसार स्थान
१९६१	१९७१								
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	१	जयपुर	२,४८२,३८५	९·६३	१४,०००	४·०९	९	१७७	२
२	२	उदयपुर	१,८०३,६८०	७·००	१७,२६७	५·०५	७	१०४	१०
३	३	भरतपुर	१,४९०,२०६	५·७८	८,०९३	२·३६	१८	१८४	१
५	४	गंगानगर	१,३९४,०११	५·४१	२०,६२९	६·०३	५	६८	२०
४	५	अलवर	१,३९१,१६२	५ ४०	८,३८२	२·४५	१७	१६६	३
८	६	नागौर	१,२६२,१५७	४·९०	१७,७१८	५·१८	६	७१	१९
७	७	सवाईमाधोपुर	१,१९३,५२८	४·६३	१०,५९३	३·१०	१४	११३	९
९	८	जोधपुर	१,१५२,७१२	४·४७	२२,८६०	६·६८	४	५०	२३
६	९	अजमेर	१,१४७,७२९	४·४६	८,४७९	२ ४८	१६	१३५	६
११	१०	कोटा	१,१४३,८७०	४·४४	१२,४३७	३·६३	१०	९२	१३
१०	११	भीलवाड़ा	१,०५४,८९०	४·०९	१०,४५०	३·०५	१५	१०१	११
१२	१२	सीकर	१,०४२,६४८	४ ०५	७,७३२	२·२६	१९	१३५	७
१३	१३	पाली	९७०,००२	३·७७	१२,३९१	३·६२	११	७८	१८
१५	१४	चित्तौड़गढ़	९४४,९८१	३·६७	१०,८५८	३·१७	१२	८७	१४
१४	१५	झुंझुनू	९२९,२३०	३·६१	५,९२९	१·७३	२२	१५७	४
१६	१६	चूरू	८७४,४३९	३·४०	१६,८२९	४·९२	८	५२	२२
१७	१७	बाड़मेर	७७४,८०५	३·०१	२८,३८७	८·३०	२	२७	२४

II

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१८	१८	जालौर	६६७,९५०	२·५९	१०,६४०	३·११	१३	६३	२१
२१	१९	बांसवाड़ा	६५४,५८६	२·५४	५,०३७	१·४७	२५	१३०	८
१९	२०	टौंक	६२५.८३०	२·४३	७,२००	२·१०	२०	८७	१५
२०	२१	झालावाड़	६२२,००१	२·४१	६,२१६	१·८२	२१	१००	१२
२२	२२	बीकानेर	५७३,१४९	२·२२	२७,२३१	७·९६	३	२१	२५
२३	२३	डूंगरपुर	५३०,२५८	२·०६	३,७७०	१ १०	२६	१४१	५
२५	२४	बूंदी	४४९.०२१	१·७४	५,५५०	१·६२	२३	८१	१७
२४	२५	सिरोही	४२३,८१५	१·६४	५.१३५	१·५०	२४	८३	१६
२६	२६	जैसलमेर	१६६,७६१	०·६५	३८,४०१	११·२२	१	४	२६

Source—Population Statistics–Rajasthan, 1971.

राजस्थान में आवास–गृहों की स्थिति

(१९७१)

क्र०सं०	जिला	गृहों की संख्या		
		कुल	नगरीय	ग्रामीण
१.	अजमेर	२०१,६६१	७६,६६०	१२७,००१
२.	अलवर	२१३,७१८	२१,५१५	१९२,२०३
३.	उदयपुर	३५०,०३१	४३,४५३	३०६,५७८
४.	कोटा	२०८,६५३	५४,९९५	१५३,६५८
५.	गंगानगर	२१४,३५८	३८,२५३	१७६,१०५
६.	चित्तौड़गढ़	१८९,४७७	१९,०९०	१७०,३८७
७.	चूरू	१२६,२६४	३७,५५१	८८,७१३
८.	जयपुर	३९१,११२	१२२,३५२	२६८,७६०
९.	जालौर	१११,७५७	५,८८९	११२,८६८
१०.	जैसलमेर	३०,४२६	४,३५५	२६,०७१
११.	जोधपुर	१८५,९१६	५९,९८३	१२५,९३३
१२.	झालावाड़	१०९,५३०	१०,६४०	९८,८९०
१३.	झुंझुनूं	१२६,२३९	२२,३५८	१०३,८८१
१४.	टौंक	१००,६३५	१७,८३२	८२,८०३
१५.	डूंगरपुर	९३,२९७	५,९२९	८७,३६८
१६.	नागौर	१९७,७५२	२४,००७	१७३,७४५
१७.	पाली	१८३,३८६	२१,७१४	१६१,६७२
१८.	बांसवाड़ा	१०९,२६७	५,९२२	१०३,३४५
१९.	बाड़मेर	१३०,५९५	१०,२२०	१२०,३७५
२०.	बीकानेर	८७,७७६	३५,९५१	५१,८२५
२१.	बूंदी	८०,११७	१२,५१२	६७,६०५
२२.	भरतपुर	२३५,४३०	३३,९८६	२०१,४४४
२३.	भीलवाड़ा	२०५,४४८	२१,४८८	१८३,९६०
२४.	सवाईमाधोपुर	२०५,३८३	२५,९३१	१७९,४५२
२५.	सिरोही	८४,९५६	१४,७३५	७०,२२१
२६.	सीकर	१४४,४९६	२५,३०८	११९,१८८
	कुल	४,३२६,६८०	७७२,६२९	३,५५४,०५१

भाषा–बोलियाँ*

राजस्थान में लगभग चौदह तरह की भाषा–बोलियाँ बोली जाती है। सर्वाधिक प्रतिशत हिन्दी-भाषी लोगों का हैं। जो प्रायः प्रत्येक जिले, तहसील और ग्राम में बोली जाती है। प्रमुख बोलियाँ तथा उनको बोलने वालों की संख्या १९७१ की जनगणना के अनुसार निम्न प्रकार है :—

भाषा-बोलियाँ	बोलने वालों की संख्या	प्रतिशत
हिन्दी	१५.६६६,०१५	६०.८०
मारवाड़ी	४,१९१,६४१	१६.२७
राजस्थानी	१,९७६,३८२	७.६८
बागड़ी-राजस्थानी	९७३,३९९	३.७८
मेवाड़ी	८१२,१६४	३.१५
उर्दू	६५०,९४६	२.५३
पंजाबी	४६६,८२८	१.८१
हाड़ौती	३३४,३५०	१.३०
सिंधी	२४०,३२१	०.९३
ढूंढाड़ी	१,५५,०३९	०.६०
खड़ी बोली	९४७	०.०१
बागड़ी	५३८	(अत्यल्प)
अन्य	२९४,२३६	१.१४
कुल	२५,७६५,८०६	१००.००

---

*[उपर्युक्त तालिका में बागड़ी, ढूंढाड़ी, हाड़ौती, मेवाड़ी, मारवाड़ी नामों से जो बोलियाँ पृथक्-पृथक् दिखाई गई हैं, ये वस्तुतः राजस्थानी के अन्तर्गत ही मानी जानी चाहिये। जनगणना के गवेषणों का उक्त वर्गीकरण किसी भाषा-वैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित नहीं है।]
— संपादक

४ | सामाजिक जीवन

राजस्थान की सामाजिक संरचना बड़ी वैविध्यमयी एवं इन्द्र-धनुषी है। यहां अनेकानेक जातियों, धर्मों और भाषाओं के बोलने वाले लोग रहते हैं। यहां के मूल-निवासियों के अतिरिक्त यहां पंजाब, सिन्ध, उत्तर-प्रदेश, गुजरात, बंगाल, महाराष्ट्र तथा मद्रास आदि अनेक प्रदेशों के लोग यहां निवास करते हैं और वे यहां के सांस्कृतिक सूत्र में ऐसे बंध गये हैं कि वे इस प्रदेश के अविच्छिन्न अंग हो गये हैं।

धर्म-संप्रदाय

राज्य की इस विशाल आबादी में हिन्दू, जैन, सिक्ख, मुसलमान तथा ईसाई सभी धर्मों के मानने वाले लोग हैं। हिन्दुओं की कुल मिला कर लगभग १५० जातियाँ और उप जातियां हैं, जिनमें ब्राह्मण, राजपूत, वैश्य, कायस्थ, मीणा, बलाई, माली, भील, जाट, अहीर, नाई, धोबी, दर्जी, डाकोत, चमार, कलाल आदि मुख्य हैं।

मुसलमानों में शेख, पठान, मेव, मुगल, सैयद आदि जातियां हैं। कुछ ऐसी भी जातियां हैं जो धर्म से मुसलमान हैं, किन्तु आचार-व्यवहार से हिन्दुओं जैसी हैं। इनमें खानजादा, कायमखानी तथा मेव आदि की गणना की जाती है।

वेश-भूषा

राजस्थान के निवासियों की वेश-भूषा में बड़ा वैविध्य है। यह विविधता न केवल एक जाति या वर्ग से दूसरी जाति या वर्ग के बीच ही उपलब्ध होती है, अपितु एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र के बीच भी इसके दर्शन होते हैं। किन्तु इतनी विविधता के बावजूद भी उनमें एक आन्तरिक समानता है, जो राजस्थानी संस्कृति की विराटता की परिचायक है। उदाहरण के लिए राजपूत वर्ग साफे बांधता है जबकि अन्य जातियों के लोग पगड़ियां बांधते है अथवा टोपी लगाते है। ग्रामीण लोग जो साफे

बांधते हैं वे भी पगड़ियों की तरह ही बांधते हैं। ये पगड़ियां भी विभिन्न ढंग की पहनी जाती हैं। जयपुर में पगड़ियों में वलदार लपेट होते हैं तो हाड़ौती में सादा पेचों की पगड़ी पहनी जाती है। उदयपुर की पगड़ी भी यद्यपि सादा पेचों की होती है लेकिन उसका सिरा उठा हुआ रहता है। धोती जो कि सर्वमान्य पोशाक है, अलग-अलग ढंग से पहनी जाती है। कोई दो लांग की धोती पहनते हैं तो कोई तीन लांग की धोती पहनते हैं, कोई धोती को घुटने तक चढ़ाये रखते हैं तो कोई धोती को पैरों तक लम्बी रखते हैं।[1]

देहातों और नगरों में पुरुषों की पोपाक में अन्तर है। नगरों की पोशाक में अचकन अथवा शेरवानी और उसके नीचे धोती अथवा चूड़ीदार पायजामे का प्रयोग किया जाता है जबकि देहातों में अंगरखी और घुटने तक की ऊंची धोती पहनने की प्रथा है। अब तो गांवों तथा नगरों में काफी साधारण पोशाक खादी का कुर्त्ता, खादी का पायजामा और खादी की टोपी चलने लगी है। लेकिन फिर भी आधी से अधिक जनता इसे नहीं अपनाती। देखा-देखी और फैशन का असर राजस्थान में कोई कम नहीं है। नित नये फैशन चलते हैं और नित नये ढंग की पोशाक अपनायी जाने लगी है। शहरों में लगभग ५० प्रतिशत लोग आज भी कोट, पैंट, बुशर्ट, हैट आदि का प्रयोग करते है।

स्त्रियों की वेश-भूषा प्रायः एक सी होती है। लूगड़ी, कब्जा (ब्लाउज) और लहंगा औरतों के पहनावे की मुख्य चीजें हैं। विशेषकर ग्रामीण औरतें अपनी लूगड़ी, लहंगे और अन्य पहनावे की वस्तुयें रंगीन और कलात्मक पहनती हैं। लहंगे और लूगड़ियों तथा अंगियों को गोटा लगाकर सजाया जाता है। मुसलमान स्त्रियों की पोशाक चूड़ीदार पजामा और ओढ़नी है। ये स्त्रियां चूड़ीदार पायजामे पर एक चोगा और धारण करती हैं, जिसे 'तिलका' के नाम से सम्बोधित किया जाता है और उसके ऊपर सिर ढकने के लिये ओढ़नी पहनती है। सिंधी एवं पंजाबी महिलायें सलवार और गरारा पायजामा पहनती हैं, बदन पर कुर्त्ता एवं सिर ढकने के लिए एक दुपट्टे का प्रयोग करती हैं।

आभूषण पहने का रिवाज ग्रामीणों में खूब है। यहां तक कि पुरुष लोग भी आभूषण पहनते हैं। पुरुषों के आभूषणों में मुरकी, लौंग, तूड़, अंगूठी आदि प्रमुख हैं। यद्यपि इनका प्रचलन अब धीरे-धीरे बहुत कम होता जा रहा है, तथापि ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी लोग इन्हें पहनना पसन्द करते हैं।

स्त्रियों के आभूषणों में तो राजस्थान में जितनी विविधता और सुन्दरता मिलती है, वह शायद ही कहीं अन्यत्र उपलब्ध हो। सिर से लेकर पांव तक स्त्रियां

---

१. राजस्थान वार्षिकी एवं व्यक्ति-परिचय के सम्पादक के सौजन्य से।

आभूषणों से अलंकृत रहना पसन्द करती हैं। यद्यपि आधुनिक सभ्यता के प्रसार के साथ अब इसमें परिवर्तन अवश्य आ गया है तथापि स्त्रियों की आभूषण–प्रियता वरावर अपने नित नये रूप में वनी हुई है। गांवों में आज भी परम्परागत आभूषण पहने जाते हैं और चूंकि अधिकांश जनता ग्राम–वासिनी है, इसलिए जो आभूषण ग्रामीण महिलाओं द्वारा पहने जाते हैं, वे आज भी राजस्थान की महिलाओं की आभूषण-रुचि का प्रतिनिधित्व करते हैं।

श्री अगरचन्द नाहटा द्वारा संपादित 'सभा शृंगार-वर्णन-संग्रह' के पृ० ३१० में वर्णित ६३ आभरण (४) और (५) में राजस्थान के स्त्री-आभरणों के नाम इस प्रकार दिये गये हैं—

(४) अणवट, अंगूठी, विछिया, पोलरी, कड़ी, कांवी, कांकण, कटिमेखला, झांझर, वाजूवन्ध, वहिररवा, पूंची, छाप, वींटी, हार, अर्द्धहार दुलड़ी, चौकी, माला, मोरड़ी, घड़ी, चीरू, सांकली, तेसड़, जिह्ड़ा, पायल, मोतीसरी, सीसफूल. तलो, नवरंग, नवग्रही, वोर, अकोटा, झाल, खक्गाली, खीटली, पानड़ी, नकफूली, नकवेसर, सिंघो, घूघरी, राखड़ी, सहेली।

(५) १. राखड़ी, २. वेणी, ३. सहेलडी, ४. झावउ, ५. सइथउ, ६. टीलउ, ७. चांदलउ, ८. कांच. ९. शीशफूल, १०. फूली, ११. मोरिला, १२. पनड़ी, १३. अरहट्ठ, १४. नकवेसर, १५. कांटल, १६. नकफूली, १७. कुंडल, १८. घींड, १९. वींटला, २०. अकउडा, २१. नागला, २२. तांडक, २३. वाली, २४. हारादिक, २५. नीवोली, २६. मादलिया, २७. हांस, २८. चीड, २९. दुलड़े, ३०. सांकली, ३१. वालियां वालर्मी, ३२. चूड़ी, ३३. कांकण, ३४. कांकणी, ३५. वहिरखा, ३६. पहुंचिया, ३७. हथवालड़ा, ३८. कांचूवा, ३९. कटिमेखला, ४०. झांझर, ४१. नेउर, ४२. कडला, ४३. त्रेंघडी, ४४. घूघरी, ४५. घूघरा, ४६. पाउलि, ४७. कावी, ४८. विछिया, ४९. मुद्रा इत्यादि स्त्रीजनाभरण नामानि।

राजस्थान के परम्परागत प्रमुख स्त्री-आभूषणों का संक्षिप्त विवरण अंग-उपांगों के क्रम के नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

सिर

शीश फूल—जब स्त्रियां सिर पर वोरला (चूडामणि) नहीं गुंथवाती हैं, उस समय वे वालों को सुव्यवस्थित रखने के लिये सिर पर शीश फूल वांधती है। यह वनावट में वड़ा सुन्दर होता है।

---

१ राजस्थान भारती : शकुन्तला शर्मा।

शीश पट्टी—यह भी शीश फूल के स्थान पर उपयुक्त किया जाने वाला एक गहना है, किन्तु यह बनावट में शीश फूल की भांति मन-भावक नहीं होता। इसका स्वरूप बहुत साधारण होता है। शीश फूल की भांति इसका अधिक प्रचलन नहीं है।

मस्तक

बोरला—यह अत्यन्त पुराना शिरोभूषण है। महाकाव्य रामायण एवं महाभारत जैसे हमारे प्राचीन ग्रन्थों में भी इसका उल्लेख मिलता है। राजस्थानी महिलाओं का तो यह अतीव प्रिय आभरण है। वे बड़े चाव से इसे सिर व मस्तक की सन्धि पर धारण करती हैं। इसके बीच में कांच या हीरों आदि का जड़ाव करवाया जाता है, जिनसे यह प्रकाश में बहुत चमकता है। यह आकार में बड़ा या छोटा भी होता है।

सरी—यह बहुत पतली होती हैं और बोरले के पास से दोनों कानो तक बांधी जाती है।

फीणी—यह अंगुल चौड़ी होती हैं और सरी के नीचे बांधी जाती है। यह सरी के जितनी ही लम्बी होती है।

सांकली—यह यहां के लोक गीतों में अपने दूसरे नाम—मैमद से बहुत ज्यादा प्रसिद्ध है और माथे की शोभा बढ़ाने वाला अद्वितीय आभूषण है। यह दो अंगुल चौड़ी होती है और फीणी के नीचे बांधी जाती है। इसके बीच में एक लड़ लगी रहती है, जो बोरले में डाली जाती है। यह भी सरी व फीणी जितनी लम्बी होती है।

सेंचा—(खांचा) यह मोतियों का बनाया जाता हैं और सांकली के स्थान पर उपयुक्त किया जाने वाला यह दूसरा आभूषण है। इसकी बनावट बड़ी मनभावन होती है।

मांग-टीको—यह बड़ा सुन्दर गहना है। इसे बोरले के स्थान पर बांधा जाता है। इसके एक गोल टिकड़ा आगे होता है और पीछे एक लड़ लगी रहती है, जिसे चुटले से बांधा जाता है।

टीको—सुहाग की प्रतीक मानी जाती है। प्रायः सभी सुहागिन स्त्रियां रोली या हींगलू की टीकी नित्य माथे पर लगाये रहती हैं, मगर कई स्त्रियां सोने की भी छोटी-सी सोन टीकी अपने माथे पर लगाती हैं।

टीको—टीकी के स्थान पर ही लगाया जाता है। यह भी सोने का बनता है किन्तु इसका आकार पान जैसा होता है।

नाक

कांटो—सुहागिन स्त्रियां सदैव नाक पर पहने रहती हैं। यह चांदी, सोने, मोती तथा हीरे आदि का बनाया जाता है।

बालानाथ—इसे सौभाग्यवती स्त्रियां समय-समय पर अनेक उत्सवों पर धारण करती रहती हैं। यह हरदम पहिने रहने का गहना नहीं है। यह सोने की गोल तांत की बनी हुई होती है, जिसके अन्दर मोती पिराये हुए रहते हैं। बड़ी नथ में एक मोतियों की लड़ या साधारण धागे की डोरी लगी रहती है. जिसे कान से बांध दिया जाता है।

भोगली—नाक में पहनी जाती है। आज कल इसका प्रचलन नहीं रहा।

कान

पत्ती—कान का गहना है। यह या तो केवल चांदी या सोने की बनी होती है अथवा मणि की। यह विभिन्न रूपों में निर्मित की जाती है।

लूंग—यह केवल सोने या मोती–हीरे का बना होता है। इसे कान के छिद्र में पहन-कर पीछे की डांडी पर छोटा-सा पेच कस दिया जाता है, जिससे इसके गिरने का भय नहीं रहता। इसे आदमी भी पहनते हैं।

झूमका—कान का बड़ा मन-भावन आभूषण हैं। लोक गीतों में इसका उल्लेख मिलता है। इसकी रचना में कला का अच्छा नमूना रहता है। यह सोने अथवा मोतियों का बना होता है।

सुरलिया—आजकल प्रचलित गहना नहीं है। यह चांदी या सोने का बना होता है। इसके पीछे की डांडी काफी मोटी होती है, जिसके लिए कानों के छिद्रों को अधिक बड़ा करना पड़ता है। अब इसका स्थान 'टॉप्स' ग्रहण कर चुके हैं।

वाली—यह कानों के ऊपरी भाग में तीन-तीन की संख्या में पहनी जाती है, जिनमें मोती, लाल आदि पिरोये जाते हैं।

छाती

हार—भारत का बहुत प्राचीन आभूषण है। इसका प्रचलन मुख्यतया राज-घरानों एवं धनवान लोगों में मिलता है। यह हीरे, मोती आदि कीमती पदार्थों का बनता है।

कंठी—सोने अथवा चांदी की बनती है। यह कई लड़ों की होती है। सात लड़ वाली कंठी को 'सतलड़ी' कहा जाता है तथा एक लड़ की कंठी को, जिसके नीचे हनुमान आदि की मूर्ति लगी होती है, 'डोरो' कहा जाता है।

झालर—सोने व चांदी दोनों ही धातुओं का बनता है। इसकी बनावट सुन्दर होती है, मगर यह आजकल महिला समाज में अधिक प्रिय नहीं रहा। इसके स्थान पर एक नया गहना "कालर" चल पड़ा हैं।

मटरमाला—छाती की शोभा बढ़ाने में अनूठा गहना है। यह गोल सोने के मणियों की बनी होती है।

हमेल—यह बड़ा विचित्र एवं भारी-भरकम गहना होता है। इसके एकदम बीच में जड़ावदार एक गोल टिकड़ा लगा रहता है तथा इधर-उधर सुन्दर पत्तियां लगी रहती हैं। यह सोने व चांदी दोनों का ही बनता है। आजकल यह जाटों में ही अधिक प्रचलित है।

उपर्युक्त छाती के गहने यद्यपि गले के अन्दर ही पहने जाते हैं, किन्तु छाती तक लटके रहने से छाती की अपूर्व शोभा बढ़ाते हैं। इसलिए इन्हें छाती के आभूषण कहना ही सम्यक् जान पड़ता है।

बाहु

बाजूबन्ध—आजकल निम्न जाति की स्त्रियों में अधिक प्रचलित है। पहिले तो उच्च-वर्णीय महिलाएँ भी इसे बड़े चाव से धारण करती थीं। यह चार अंगुल चौड़ा एवं वजन में भारी होता है। यह सोने व चांदी दोनों धातुओं का बनता है।

अणत—आकार में गोल होता है। यह अन्दर तांबे का होता है और ऊपर सोने या चांदी का पत्र चढ़ा रहता है।

टड्डा (टड्डा)—यह भी आकार में अणत जैसा गोल होता है। सिर्फ दोनों में भेद यही है कि 'अणत' इकहरा होता है और टड्डा तिहरा।

बट्टा—बाजूबन्ध के आगे पहनने का भूषण है। सम्प्रति यह प्रचलन से हट गया है।

तकमा—बाजूबन्ध का दूसरा रूप है। यह वजन में कम भारी एवं बनावट में अत्यन्त सुन्दर होता है। इसके अन्दर मीने और जड़ाव का बड़ा सुन्दर काम होता है।

कलाई

चूढ़ा—सभी सौभाग्यवती महिलाएँ सदैव कलाई के पास पहने रहती हैं। यह हाथी-दांत लाख या कांच का बना होता है। वहुत-सी धनवान महिलाएँ सोने का भी चूड़ा पहिनती हैं।

वन्द—चूड़े से काफी वड़ा होता है और वजन में भी वहुत भारी होता है। इसकी कटाई वड़ी अच्छी होती है। आजकल इसका चलन कम पड़ता जा रहा है।

वंगड़ी—वंगड़ी और वन्द का मेल है। यदि दो वन्दों के वीच में वंगड़ी न हो, तो उसकी शोभा का मठ मारा जाता है। वन्द और वंगड़ी का रूप कुछ साम्य होता है मगर वंगड़ी होती है उससे छोटी।

पछेली—वन्द के स्थान का दूसरा गहना है। इसका रूप करीव-करीव वैसा ही होता है, किन्तु वजन में उससे वहुत हल्की होती है। इसकी कटाई देखने योग्य होती है।

कड़ा—पछेली के पास पहनने का गहना है।

छड़—सोने की वहुत पतली चूड़ी ही होती है। यह कड़े के आगे पहनी जाती है।

नोघरी—पुरानी पीढ़ी की नारियों की कलाइयों का प्रिय आभूषण रह गया है—जैसा कि अनेक पुराने लोक-गीतों से प्रगट होता है, मगर अव तो इस आभूषण का महिला समाज में नामोनिशान ही नहीं रहा।

पूंचियो—सोने का वना होता है। इसका रूप घड़ी के फीते जैसा होता है।

हथफूल—राजस्थान का अलौकिक आभूषण है। इसकी छवि देखते ही वनती है। यह हथेली के पिछले भाग पर धारण किया जाता है। इसके वीच में एक फूल और उसमें पाँच सांकलों में पाँच छल्ले लगे होते हैं, जिन्हें पाँचों अंगुलियों में पहनना पड़ता है और इसका एक भाग कलाई में वांधा जाता है। यह सोने, चांदी और मोतियों का वनता है।

अंगुलियाँ

छल्ला—चांदी और सोना दोनों का वनता है। सभी श्रेणी की महिलाएं अपनी अंगुलियों पर धारण करती हैं। यह पैरों की अंगुलियों में भी पहना जाता है।

छाप (मूंदड़ी)—अंगुलियों का वहुत पुराना गहना है। यह चांदी, सोने, हीरे, मोती, माणक आदि की विभिन्न रूपों में वनाई जाती है।

कटि

तागड़ी—कटि का एक मात्र एवं बड़ा मनोहर गहना है। यह भी पुराने गहनों में एक है। यह सोने, चांदी, मोती आदि की बनाई जाती है और कई प्रकार की बनती है। कंदोरो, कणगती आदि इसके अन्य नाम हैं।

पिण्डली से निचला भाग (पैर)

पाजेब—बहुत हल्की होती हैं। यह पतली जंजीर जैसी होती है और इसके नीचे चारों तरफ घुंघरू लगे रहते हैं।

पैंजणी—एक तरह से चांदी का बहुत मोटा कड़ा ही होता है। इसके नीचे घुंघरू भी लगाए जाते हैं।

पायल—चांदी की बनी होती है। इसके कंगूरों की कटाई बहुत सुन्दर होती है। यह वजन में बहुत भारी होती है।

पैरों की अंगुलियां

बिछिया—घुंघरू लगाया हुआ पोला ही है। यह राजस्थानी महिलाओं का बड़ा रंगीला आभूषण है। लोक गीतों में इसका उल्लेख बहुलता से मिलता है।

धर्म

राजस्थान में मुख्यतया हिन्दू धर्म, सिक्ख धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म मानने वाले निवास करते हैं।

हिन्दू धर्म

हिन्दू धर्म में सैंकड़ों मत-मतान्तर एवं सम्प्रदाय पाये जाते हैं। राजस्थान में जो प्रमुख सम्प्रदाय एवं मत पाये जाते हैं उनमें शक्ति उपासक, रामोपासक, वैष्णव, शैव आदि मुख्य हैं। राजपूत, चारण, भाट, कायस्थ आदि के नाम से सम्बोधित की जाने वाली जातियां मुख्य रूप से आद्य शक्ति की उपासना करती हैं। वैष्णव-सम्प्रदाय में दक्षिण भारत के प्रसिद्ध धर्माचार्य वल्लभ सम्प्रदाय के उपासक मुख्य रूप से मिलते हैं। इस सम्प्रदाय की दो मुख्य गद्दियां राजस्थान में नाथद्वारा और कोटा में हैं। इस सम्प्रदाय के लोग भक्तिमार्गी होते हैं और कृष्ण भगवान की सेवा बाल रूप में करते हैं। वैसे मत में पूजा निषिद्ध है। रामोपासकों में राम स्नेही प्रमुख हैं और इनकी गद्दी बांसवाड़ा में है। कुछ रामानन्दी भी राजस्थान में पाये जाते हैं लेकिन इनकी संख्या नगण्य-सी है। शैव मत का प्रचलन राजस्थान में नहीं के बराबर-सा

है। केवल उदयपुर का राजघराना जो कि शिव की एकलिंग रूप में पूजा करता है इसका अपवाद माना जा सकता है। इस सबके अतिरिक्त बामा जी, मल्लीनाथ जी, रामदेव जी, दादू जी, पाबू जी आदि प्रसिद्ध व्यक्तियों के द्वारा स्थापित मतों के अनुयायी भी राजस्थान में मिलते हैं। कुछ संख्या में कबीर-पंथी भी राजस्थान में पाये जाते हैं। नाथ-सम्प्रदाय का भी अधिक तो नहीं लेकिन प्रचलन राजस्थान में अवश्य है और जोधपुर के राज घरानों द्वारा इसको समर्थन मिला है। जोधपुर के महामन्दिर में नाथ सम्प्रदाय की गद्दी है। इस प्रकार हिन्दुओं के प्रायः सभी प्रचलित मत और सम्प्रदाय के मानने वाले राजस्थान में बिखरे हुए हैं।

जैन धर्म

इस बात को मानने वाले मुख्यत: दो सम्प्रदायों में विभक्त हैं—(१) दिगम्बर, (२) श्वेताम्बर। मूलभूत सिद्धान्तों में विशेष भेद न होते हुए भी स्त्री मुक्ति, स्वस्त्र मुक्ति, केवली का कवलाहार, शूद्र मुक्ति आदि कई एक मान्यताओं में काफी मतभेद है। दिगम्बरों के साधु वस्त्र धारण नहीं करते और श्वेताम्बर के साधु सफेद वस्त्र धारण करते हैं। जैन धर्म के आदि तीर्थङ्कर श्री ऋषभदेव और अन्तिम चौबिसवें तीर्थङ्कर श्री महावीर हुए हैं। राजस्थान में जैन धर्मावलम्बी काफी संख्या में हैं

सिक्ख धर्म

भारत के विभाजन से पूर्व राजस्थान में सिक्खों की संख्या अधिक नहीं थी लेकिन भारत के विभाजन के बाद राजस्थान में सिक्खों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। इस धर्म के अनुयायी निराकार ईश्वर में विश्वास करते हैं और गुरु ग्रन्थ साहब की पूजा करते हैं।

बौद्ध धर्म

राजस्थान में बौद्ध धर्मावलम्बी अल्प संख्या में हैं। ऐतिहासिक अनुसन्धान से प्राप्त तथ्यों के अनुसार प्राचीन काल में जयपुर व मेवाड़ में बौद्ध-धर्म का काफी प्रचलन था लेकिन अब नितान्त लोप-सा हो गया है।

ईसाई धर्म

राजस्थान में ईसाइयों की संख्या ज्यादा नहीं है। अंग्रेजी शासन-काल में जब धर्म का परिवर्तन हुआ तब ईसाई धर्म का प्रचार हुआ था। इस धर्म के अनुयायी राजस्थान के अजमेर जिले में अधिक पाये जाते हैं। राजस्थान में मेथोडिस्ट, रोमन कैथोलिक, एंग्लीकन व प्रोटेस्टेंट ईसाई मिलते हैं।

इस्लाम धर्म

राजस्थान में इस्लाम धर्म का प्रादुर्भाव मुसलमान बादशाहों द्वारा राज-

स्थान के अनेक भागों पर विजय प्राप्त करने के साथ-साथ हुआ। हिन्दुओं में धर्म परिवर्तन के कारण भी मुसलमानों की संख्या में वृद्धि हुई है। मुसलमानों के दो वर्ग सुन्नी और सिया हैं। इस धर्म के समस्त अनुयायी राजस्थान में फैले हुए हैं।

धार्मिक सम्प्रदायानुसार जनसंख्या का वर्गीकरण
(१९४१-१९७१)

धार्मिक संप्रदाय	जनगणना वर्ष			
	१९४१	१९५१	१९६१	१९७१
कुल	१३,८६३,८५९	१५,९७०,७७४	२०,१५५,६०२	२५,७६५,८०६
	(१००)	(१००)	(१००)	(१००)
हिन्दू	१२,०७३,१०५	१४,४५४,९२६	१८,१३२,६६०	२३ ०९३,८९५
	(८७·०८)	(९०·५१)	(८९·९६)	(८९·63)
मुस्लिम	१,३४९,४२७	९९१,२४६	१,३१४,६१३	१,७७८,२७५
	(९·७३)	(६·२१)	(६·५२)	(६·९०)
जैन	३४६,४४९	३५९,७७२	४०९,४१७	५१३,५४८
	(२·५०)	(२.२५)	(२·०३)	(१·९९)
सिक्ख	८२,५०५	१,४८,२२९	२७४,१९८	३४१,१८२
	(०·६०)	(०·९३)	(१·३६)	(१·३३)
ईसाई	११,६३४	११,४२१	२२,८६४	३०,२०२
	(०·०८)	(०·०७)	(०·११)	(०·१२)
बुद्ध	२१	४,३६१	७४९	३,६४२
	(अ)	(०·०३)	(०·०१)	(०·०१)
अन्य	७१८	८१९	१,०६१	५,०६२
	(०·०१)	(अ)	(०·०१)	(०·०२)

नोट—कोष्ठक में कुल जनसंख्या में प्रतिशत भाग दिखाया गया है।

अ=अत्यल्प

Source—Population Statistics—Rajasthan 1971.

५ | शासन-तन्त्र

भारतीय संविधान के अन्तर्गत अन्य राज्यों की भांति राजस्थान का शासन-तन्त्र भी त्रिस्तरीय है। विधायिका शक्ति राज्य की विधान-सभा में निहित है। कार्यपालिका के अन्तर्गत चुने हुए जन-प्रतिनिधियों की सरकार प्रशासन का संचालन करती है तथा न्यायपालिका शक्ति विभिन्न न्यायालयों के माध्यम से अपना कार्य करती है।

राजस्थान विधान-सभा

राजस्थान में विधानमण्डल का स्वरूप एक सदनीय है। राज्य में एक ही सदन है जिसे विधान-सभा कहते हैं। सामान्यतः विधान-सभा का कार्यकाल ५ वर्षों का होता है, बशर्ते कि संविधान के अन्तर्गत विशेष परिस्थितियों में इस अवधि से पूर्व ही इसे भंग न कर दिया जावे। लोकसभा की भांति इसका कार्यकाल भी आपात्-कालीन स्थिति में एक बार में अधिक से अधिक १ वर्ष के लिए बढ़ाया जा सकता है।

राज्य विधान-सभा वयस्क मताधिकार पर निर्वाचित होती है। वर्तमान में इसके सदस्यों की कुल संख्या १८४ हैं। चुनाव सुविधा की दृष्टि से सम्पूर्ण राजस्थान को इस तरह निर्वाचन-क्षेत्रों में बांटा गया है कि जनसंख्या का अनुपात प्रत्येक निर्वाचन-क्षेत्रों में लगभग एक-सा है। सामान्यतः ७५००० तक की जनसंख्या एक निर्वाचन-क्षेत्र में है।

विधान-सभा का सदस्य होने के लिए भारतीय नागरिक, २५ वर्ष से अधिक उम्र एवं उसमें वे सभी अर्हताएं हों, जो संसद निर्धारित करे।

राजस्थान विधान-सभा का प्रमुख कार्य राज्य के लिए कानून बनाना है। राज्यपाल द्वारा जारी किये गये अध्यादेशों पर आगामी अधिवेशन में विधान-सभा की स्वीकृति लेना अनिवार्य है। राज्य बजट में विधान-सभा की स्वीकृति होने पर ही

नये कर लगाए जा सकते हैं तथा धन खर्च किया जा सकता है। मन्त्रिमण्डल के कार्यों पर विधान-सभा प्रश्न, कामरोको प्रस्ताव, कटौती प्रस्ताव व अविश्वास प्रस्ताव द्वारा नियन्त्रण रखती है।

पंचम राजस्थान विधान-सभा की दलीय स्थिति

दल	१९७२ चुनाव
कांग्रेस	१४५*
स्वतन्त्र	११
जनसंघ	८
साम्यवादी	४
समाजवादी	४
कांग्रेस (पु०)	१
निर्दलीय	११
कुल स्थान	१८४

* एक व्यक्ति स्पीकर चुने जाने पर उसे पार्टी से पदत्याग करना पड़ा अतः अब कांग्रेस में कुल १४४ हैं। उसे हम निर्दलीय में जोड़ सकते हैं।*

लोकसभा में प्रतिनिधित्व

राजस्थान से लोकसभा के लिये २३ स्थान हैं। १९७१ के चुनावों में विभिन्न दलों की स्थिति इस प्रकार रही।

कांग्रेस	१४
जनसंघ	५
स्वतन्त्र	२
निर्दलीय	२
कुल	२३

*देखें भारत सरकार का प्रकाशन, 'India 1973'.

लोकसभा में विभिन्न प्रतिनिधि :

कांग्रेस			जनसंघ		
अजमेर	—	विश्वेश्वरनाथ भार्गव	भीलवाड़ा	—	हेमेन्द्रसिंह बनेड़ा
अलवर	—	हरिप्रसाद शर्मा	चित्तौड़गढ़	—	विश्वनाथ झुंझुनूं वाला
+बांसवाड़ा	—	हीरालाल डोडा	झालावाड़	—	ब्रजराजसिंह कोटा
बाड़मेर	—	अमृत नाहटा	+कोटा	—	ओंकारलाल बैरवा
भरतपुर	—	राजबहादुर	+उदयपुर	—	लालजी भाई
दौसा	—	नवलकिशोर शर्मा	स्वतन्त्र पार्टी		
+गंगानगर	—	पन्नालाल बारुपाल	जयपुर	—	श्रीमती गायत्रीदेवी
+हिन्डौन	—	जगन्नाथ पहाड़िया	+ टौंक	—	रामकंवर
जालौर	—	एन० के० सांघी	निर्दलीय		
झुंझुनूं	—	एस० एन० सिंह	बीकानेर	—	डा० करणीसिंह
नागौर	—	नाथुराम मिर्धा	जोधपुर	—	श्रीमती कृष्णाकुमारी
पाली	—	मूलचन्द डागा			
+सवाईमाधोपुर	—	छुट्टनलाल			
सीकर	—	श्रीकृष्ण मोदी			

राज्य सभा में प्रतिनिधित्व

इस समय राज्य सभा के लिये राज्य से दस प्रतिनिधि हैं जो सर्वश्री एम.के. मेहता, जगदीश प्रसाद माथुर, जमनालाल बेरवा, मोहम्मद उस्मान अरीफ, रामनिवास मिर्धा, कुम्भाराम आर्य, बालकृष्ण कौल, गणेशलाल माली तथा श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चुड़ावत एवं श्रीमती नारायणीदेवी मानकलाल वर्मा हैं।

कार्यपालिका

राज्य की कार्यपालिका की शक्ति राज्यपाल में निहित है। राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति अपने हस्ताक्षरित तथा मुद्रांकित अधिपत्र द्वारा करता है। राज्यपाल अपने पद पर ५ वर्ष तक बना रहता है, बशर्ते कि वह पद-त्याग न करदे अथवा उसका पद अवधि की समाप्ति के पूर्व ही समाप्त न कर दिया जाय। केवल ३५ वर्ष की उम्र प्राप्त कर लेने वाले भारतीय नागरिक ही इस पद पर नियुक्त किये जा सकते हैं।

राज्यपाल को ५,५०० रुपये का मासिक वेतन तथा निःशुल्क सरकारी निवास के अतिरिक्त अन्य भत्ते व विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं।

+सुरक्षित स्थान

राज्यपाल मुख्यमंत्री की और उसके परामर्श से अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति करता है। वह महाधिवक्ता (एडवोकेट जनरल) को भी नियुक्त करता है। वह राज्य सरकार की कार्यवाही के लिये नियम बना सकता है। उसे कुछ अवस्थाओं में दण्ड को क्षमा करने, प्रविलम्ब करने, परिहार करने अथवा कुछ अवस्थाओं में दण्डादेशों को स्थगित करने का अधिकार प्राप्त है। वह राज्य की विधान सभा की बैठक बुलाता अथवा स्थगित करता है और विधान सभा को भंग कर सकता है। वह प्रत्येक विधेयक को स्वीकृति देता है अथवा राष्ट्रपति के विचारार्थ किसी भी विधेयक को रोक सकता है। वह किसी भी विधेयक को विधान सभा में पुर्नविचार के लिए वापस भेज सकता है, संदेश भेज सकता है अथवा सदन में अभिभाषण कर सकता है। राष्ट्रपति की भाँति विधान-मण्डल की बैठक न होने के दिनों में वह अध्यादेश जारी कर सकता है। उसकी सिफारिश के बिना कोई भी धन-विधेयक अथवा धन सम्बन्धी धाराओं से युक्त विधेयक विधान सभा में न तो प्रस्तुत किया जा सकता है और न ही किसी अनुदान की मांग रखी जा सकती है।

राजस्थान के वर्तमान राज्यपाल सरदार जोगेन्द्र सिंह हैं। ये चौथे राज्यपाल हैं। प्रथम राज्यपाल सरदार गुरुमुख निहाल सिंह, द्वितीय राज्यपाल डा० संपूर्णानंद, एवं तृतीय राज्यपाल सरदार हुकुमसिंह थे।

मन्त्रि-परिषद्

राजस्थान के मन्त्रि-परिषद् में दो श्रेणियों के मन्त्री हैं। (अ) मन्त्रि-मण्डल या कैबीनेट में सदस्य, (ब) राज्यमन्त्री। मन्त्रि-परिषद् का प्रधान मुख्यमन्त्री है। वर्तमान मुख्यमन्त्री विधान सभा में कांग्रेस दल का नेता है।

वर्ततमान समय में राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री हरिदेव जोशी हैं। मन्त्रि-मण्डल के अन्य सदस्य इस प्रकार है* :—

१. श्री हरिदेव जोशी (मुख्यमन्त्री)	कार्मिक, सामान्य प्रशासन, राजनैतिक, मंत्रि-मण्डल, गृह (नागरिक सुरक्षा सहित) उद्योग, जन अभियोग, अकाल व बाढ़ सहायता, पर्यटन।
२. श्री परसराम मदेरणा	राजस्व व भूमि-सुधार, उपनिवेशन, वन, सैनिक कल्याण, देव-स्थान, वक्फ, सहायता व पुनर्वास।
३. श्री चन्दनमल बैद	वित्त, आयोजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी, आबकारी व करारोपण, जन-स्वास्थ्य, भूजल-मण्डल, राजकीय उपक्रम।

* १२ नवम्बर १९७३ से।

४. श्री शिवचरण माथुर	कृषि, पशुपालन, भेड़ व उन, खाद्य व नागरिक रसद ।
५. श्री हीरालाल देवपुरा	सिंचाई, सार्वजनिक निर्माण, विद्युत, राजस्थान नहर ।
६. श्री खेतसिंह	शिक्षा, भाषा, भाषाई अल्पसंख्यक, कानून व न्याय, विधान-सभाई मामले, निर्वाचन ।
७. श्री मोहनलाल छंगाणी	चिकित्सा व स्वास्थ्य (परिवार नियोजन), आयुर्वेद, यातायात, समाज कल्याण, श्रम व नियोजन ।
८. श्री रामनारायण चौधरी	सहकारिता, स्वायत्तशासन, नगर आयोजना, पंचायत व सामुदायिक विकास, मुद्रण व लेखन सामग्री और जेल ।
राज्यमन्त्री :	
१. श्रीमती कमला बेनीवाल	जनसम्पर्क (स्वतन्त्र चार्ज), स्वास्थ्य व चिकित्सा (परिवार नियोजन), आयुर्वेद, श्रम व नियोजन, समाज कल्याण ।
२ श्री जुझार सिंह	खनिज (स्वतन्त्र चार्ज), वित्त, आयोजना, आर्थिक व सांख्यिकी, आबकारी व करारोपण ।
३. श्री मूलचन्द मीणा	खादी व ग्रामोद्योग (स्वतन्त्र), राजस्व व भू-सुधार, उपनिवेशन, वन, सैनिक कल्याण व देव-स्थान ।
४. श्री फारुक हुसैन	शिक्षा, भाषा, भाषाई अल्पसंख्यक, वक्फ, विधि एवं न्याय, कानूनी मामले, निर्वाचन ।
५ श्री मुन्शीलाल महावर	कृषि, पशु-पालन, भेड़ व ऊन, स्वायत्तशासन, नगर आयोजना ।
६. श्री गुलाबसिंह शक्तावत	कार्मिक, सामान्य प्रशासन, गृह (नागरिक सुरक्षा सहित) उद्योग, जन अभियोग, अकाल व बाढ़ सहायता, पर्यटन ।
७. श्री बनवारी लाल	सहकारिता, पंचायत व सामुदायिक विकास, मुद्रण व लेखन सामग्री, जेल ।

सचिवालय

मन्त्रि-मण्डल राज्य का शासन सचिवों की सहायता से चलाता है। इनका कार्यालय सचिवालय कहलाता है। राजस्थान सरकार का सचिवालय राजधानी जयपुर में स्थित है। मुख्यमन्त्री का कार्यालय सचिवालय में स्थित है। मन्त्रि-मण्डल की बैठकें सचिवालय में ही होती हैं। सचिवालय में शासन के अनेक विभाग हैं। वर्तमान में राज्य सरकार के निम्नलिखित प्रमुख विभाग हैं :—

(१) सामान्य-प्रशासन विभाग, (२) वित्त विभाग, (३) गृह विभाग, (४) शिक्षा विभाग (५) राजस्व विभाग, (६) कार्मिक विभाग, (७) वन विभाग, (८) कृषि विभाग, (९) स्वायत्त शासन विभाग, (१०) श्रम विभाग, (११) लोक निर्माण विभाग, (१२) चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, (१३) कर एवं आबकारी विभाग, (१४) योजना विभाग, (१५) उद्योग एवं खनिज विभाग, (१६) चुनाव विभाग, (१७) नागरिक पूर्ति विभाग, (१८) सहकारी विभाग, (१९) पंचायत एवं विकास विभाग, (२०) न्याय विभाग, (२१) सहायता एवं पुनर्वास विभाग, (२२) शक्ति विभाग, (२३) राजस्थान नहर योजना विभाग; इत्यादि ।

प्रत्येक विभाग के सर्वोच्च शिखर पर मन्त्री होता है। इसकी सहायतार्थ राज्यमन्त्री व उपमन्त्री होते हैं। ये राजनीतिक अधिकारी हैं। इनके नीचे प्रशासनिक सेवाओं के वरिष्ठ व अनुभवी सदस्य होते हैं जैसे—सचिव, विशिष्ट-सचिव, अतिरिक्त-सचिव, उप-सचिव, सहायक-सचिव इत्यादि । इनके नीचे अनुभाग अधिकारी, वरिष्ठ लिपिक, लिपिक आदि होते हैं। राजस्थान के सभी विभागों का गठन इसी प्रकार का है।

प्रशासकीय सुधार आयोग के प्रतिवेदन के अनुसार वर्तमान में राजस्थान सचिवालय के विभागों को कई कोष्ठों (Cells) में विभक्त कर दिया गया है और इसका अधिकारी सहायक सचिव होता है। इस प्रकार का विभाजन कार्य को शीघ्रता से सम्पन्न करने के लिए किया गया है।

जिला प्रशासन

राजस्थान-निर्माण की प्रक्रिया पूरी होने पर शासन की सुविधा के लिए राज्य को ५ डिविजनों—अजमेर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर और कोटा में बांटा गया। डिविजन का सबसे बड़ा अधिकारी कमिश्नर कहलाता था। परन्तु अब डिविजन कार्यालय तथा कमिश्नर का पद समाप्त कर दिया गया है।

जिलाधीश

डिविजनों की समाप्ति के साथ ही, जिलों का सीधा सम्बन्ध राज्य सरकार से हो गया है। राजस्थान में २६ जिले हैं जिनका अधिकारी जिलाधीश कहलाता है। यह भारतीय प्रशासनिक सेवा का सदस्य होता है। जिले में मालगुजारी वसूल करना एवं शान्ति एवं व्यवस्था बनाए रखना इसका प्रमुख कार्य है। न्याय सम्बन्धी अधिकार भी इसे होते हैं। इस दृष्टि से यह प्रथम श्रेणी का मजिस्ट्रेट भी होता है। फौजदारी

मुकदमे इसकी अदालत में भी पेश किए जाते हैं। वह द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी के मजिस्ट्रेटों के निर्णय के विरुद्ध अपीलें भी सुनता है। इसे २ वर्ष तक की कैद एवं १००० रु० तक जुर्माना करने का अधिकार है। वह जिले में राजस्व सम्बन्धी मुकदमों की सबसे बड़ी अदालत है। राजस्थान के लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण के अन्तर्गत जिलाधीश जिले के विकास के लिए योजना बनाता है एवं जिला विकास अधिकारी के रूप में भी जाना जाता है।

जिलाधीश के नीचे निम्न प्रमुख विभागों के जिलास्तरीय अधिकारी कार्य करते हैं :—

(१) पुलिस विभाग, (२) शिक्षा विभाग, (३) कृषि विभाग, (४) चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, (५) न्याय विभाग, (६) सार्वजनिक निर्माण विभाग, (७) सहकारी विभाग, (८) जन-सम्पर्क विभाग, (९) वन विभाग, (१०) सिंचाई विभाग, (११) जिला उद्योग विकास विभाग इत्यादि। इनका मुख्य कार्यालय सामान्यतः जिलाकेन्द्र पर ही होता है।

सहायक प्रशासनिक अधिकारी

(१) सबडिविजनल ऑफिसर—राजस्थान में प्रत्येक जिले को कई उपखण्डों एवं तहसीलों में, बांट दिया गया है। जिलाधीश की सहायता के लिए प्रत्येक उप-खण्ड में राज्य की प्रशासनिक सेवा का सदस्य उपखण्ड अधिकारी के रूप में होता है। इसके नीचे दो या कम-अधिक तहसीलें होती हैं। तहसीलदारों के कार्यों का निरीक्षण करना इसका प्रमुख कार्य है। राजस्थान में ८३ उपखण्ड (सब-डिविजन) हैं।

(२) तहसीलदार—प्रत्येक जिला कई तहसीलों में बंटा हुआ है। तहसील अधिकारी को तहसीलदार कहते हैं। वह द्वितीय श्रेणी का मजिस्ट्रेट होता है एवं तहसील में मालगुजारी वसूल करता है। यह राजस्थान तहसीलदार सेवा का सदस्य होता है। राजस्थान में कुल १९६ तहसीलें हैं।

(३) अन्य अधिकारी—तहसीलदार की सहायता के लिए उसके नीचे नायब तहसीलदार, कानूनगो व भू-लेख निरीक्षक होता है। सबसे नीचे ग्राम स्तर पर दो या अधिक गांवों के मध्य एक पटवारी होता है। यह एक प्रकार से गांव का अधिकारी होता है। गांव की भूमि का लेखा-जोखा रखना, मालगुजारी वसूल करना एवं गांव की हर रिपोर्ट तहसील के अधिकारी को भेजना इसके प्रमुख कार्य हैं।

स्वायत्त शासन

भारत में सत्ता के विकेन्द्रीकरण और पंचायती राज की स्थापना में राजस्थान का स्थान अग्रणी है। भारत सरकार ने सन् १९५७ में स्व० श्री बलवंतराय

मेहता की अध्यक्षता में एक समिति की नियुक्ति की थी। मेहता कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में पंचायती राज की स्थापना पर बल दिया और ग्राम पंचायत, पंचायत समितियां एवं जिला परिषदों की स्थापना की सिफारिश की। इसी कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान सरकार ने १९५९ में "राजस्थान पंचायत समिति तथा जिला परिषद् अधिनियम" पारित किया और इसके अन्तर्गत २ अक्टूबर १९५९ को नागौर में स्व० श्री जवाहरलाल नेहरू ने भारत में सर्व प्रथम इस व्यवस्था का उद्घाटन किया। इस समय राजस्थान में कुल ७३६१ पंचायतें, २३२ पंचायत समितियां तथा २६ जिला परिषदें हैं। १९६० में इस कानून में संशोधन करके न्याय-पंचायतों की भी स्थापना की गई। शुरू में इन स्वायत्त संस्थाओं का कार्यकाल ३ वर्ष का था परन्तु १९६९ में इनका कार्यकाल बढ़ाकर ५ वर्ष कर दिया गया है।

स्वायत्तशासी संस्थायें

१९५१ में राजस्थान के गठन के तुरन्त बाद शहरों एवं कस्बों में नगर पालिकाओं की व १९५४ में ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायतों की स्थापना की गई। १९५९ में राजस्थान राज्य द्वारा लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त को अपनाने से सम्पूर्ण राज्य में पंचायती राज व्यवस्था लागू हुई। विकास खण्ड स्तर पर पंचायत समितियों व जिला स्तर पर जिला-परिषदों का गठन हुआ। बड़े शहरों व नगरों के विकास तथा सुधार हेतु 'नगर विकास न्यासों' की स्थापना की गई। इस प्रकार वर्तमान में राजस्थान में स्वायत्त शासन की निम्नलिखित स्थानीय संस्थायें हैं :—

(१) नगर पालिकाएं—नगरीय शासन प्रबन्ध व व्यवस्था हेतु।

(२) नगर सुधार न्यास—बड़े शहरों के विकास हेतु।

(३) ग्राम पंचायतें—गांवों का शासन प्रबन्ध व व्यवस्था हेतु।

(४) न्याय पंचायतें—गांवों में न्याय व्यवस्था हेतु।

नगर पालिकायें

राजस्थान के प्रत्येक शहर अथवा कस्बे में, जिनकी जनसंख्या दस हजार या अधिक हैं, नगर पालिकायें हैं। राज्य की समस्त नगर पालिकायें 'राजस्थान नगर पालिका अधिनियम', १९५९ के अन्तर्गत संगठित एवं कार्य करती हैं। १९६९ से पूर्व इनका कार्यकाल ३ वर्ष था परन्तु १९६९ के संशोधन द्वारा इनका कार्यकाल बढ़ाकर ५ वर्ष कर दिया गया है। इस समय राज्य में १४६ नगर-पालिकायें हैं।

नगर पालिकाओं में जनता के चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं। निर्वाचन के लिए प्रत्येक नगर/कस्बे को वार्डों में बांट दिया जाता है और सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार

प्रणाली से सदस्यों का निर्वाचन होता है। नगर पालिका के सदस्य होने के लिए व्यक्ति की २१ वर्ष की उम्र, उस स्थान में रहते हुए ६ माह से अधिक का समय हो एवं उसका मतदाता सूची में नाम होना अनिवार्य अर्हताएं हैं। निर्वाचित सदस्यों में से गुप्त मतदान प्रणाली के आधार पर एक अध्यक्ष का चुनाव किया जाता है।

नगर पालिका के प्रमुख कार्य सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं सफाई व्यवस्था, सड़कें बनाने व सुधरवाने सम्बन्धि कार्य, जल एवं प्रकाश की व्यवस्था, शिक्षा व सांस्कृतिक कार्यों के आयोजनों के साथ-साथ नगर में विकास की योजनाएं लागू करना, आग बुझाने के प्रबन्ध, कुत्तों तथा अन्य हानि पहुँचाने वाले पशुओं को पकड़ना एवं जन्म व मृत्यु के आंकड़े रखना आदि आदि हैं।

नगर पालिकाओं की आय के साधन विभिन्न प्रकार के कर-चूंगी एवं राज्य सरकार से प्राप्त अनुदान है। मकानों पर कर एवं नगर पालिका की भूमि का किराया इसके आय के प्रमुख स्रोत हैं।

बहुत बड़े स्थानों पर इनका नाम नगर-परिषद् भी कर दिया जाता है। राजस्थान में ११ नगर परिषदें हैं।

राज्य में नगर-पालिकाओं का वर्गीकरण

श्रेणी/पद	वर्गीकरण का आधार	संख्या
१	नगर परिषदें	११
२	वार्षिक आय २ लाख रु० से अधिक	१४
३	वार्षिक आय १ लाख से २ लाख रु०	२३
४	वार्षिक आय ४० हजार से १ लाख रु०	४२
५	वार्षिक आय ४० हजार से कम	४६
६	अवर्गीकृत नगर-पालिकायें	७
	कुल	१४६

नगर सुधार न्यास

'राजस्थान शहरी क्षेत्र सुधार अधिनियम १९५९' के अन्तर्गत उदयपुर, जयपुर, अजमेर, बीकानेर, अलवर, जोधपुर भरतपुर, गंगापुर तथा हिण्डौन आदि शहरों में नगर सुधार न्यासों की स्थापना की गई है। न्यास का गठन दो प्रकार के सदस्यों से होता है—राज्य सरकार द्वारा मनोनीत एवं नगरपालिका या परिषद् या निगम द्वारा निर्वाचित। सुधार न्यास का अध्यक्ष सरकार द्वारा मनोनीत होता है। नगर विकास न्यास नगर के योजनाबद्ध विकास, पुनर्निर्माण, जन स्वास्थ्य एवं पर्याप्त पेयजल आदि के लिए प्रयत्न करता है।

आवासीय भवनों एवं बेकार भूमि की नीलामी से प्राप्त होने वाला धन ही इन न्यासों की आय का साधन है। विशेष कार्यों के लिये सरकार द्वारा भी इन्हें आर्थिक सहायता मिलती है। यह राज्य सरकार की स्वीकृति पर ऋण भी ले सकता है।

आवासीय व्यवस्था के संदर्भ में राजस्थान आवासन-बोर्ड का उल्लेख करना भी अप्रासंगिक न होगा। राज्य के विभिन्न नगरों में प्रत्येक श्रेणी के नागरिकों को मकान की सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से सरकार द्वारा इस बोर्ड की स्थापना की गई है। विभिन्न आय वर्ग के लोगों को 'किराया-क्रय-पद्धति' अथवा 'नकद-भुगतान' पद्धति से बोर्ड द्वारा बने बनाये मनपसंद मकान लोगों को उपलब्ध कराये जाते हैं। वर्तमान में आवासन बोर्ड की योजनाएं जयपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, कोटा, जोधपुर, उदयपुर तथा बीकानेर एवं अलवर में चालू हैं। विभिन्न आय वर्गों की दृष्टि से बोर्ड द्वारा चार प्रकार से विभाजन निम्न प्रकार किया गया है:—

१. जनता आय वर्ग	२,४०० रु० प्रतिवर्ष
२. अल्प आय वर्ग	२,४०१ रु० से ७२०० रु० प्रति वर्ष तक
३. मध्यम आय वर्ग	७,२०१ रु० से १८,००० रु० प्रति वर्ष तक
४. उच्च आय वर्ग	१८,००० रु० प्रति वर्ष के अधिक

उपर्युक्त चारों वर्गों के लिए विभिन्न प्रकार के क्षेत्र व सुविधा वाले मकानों की योजनाएँ हैं। इच्छुक व्यक्ति निर्धारित शर्तों के अन्तर्गत इच्छित श्रेणी का मकान प्राप्त कर सकता है।

राज्य में राजस्थान आवासन बोर्ड तथा एपेक्स हाउसिंग सोसाइटी की स्थापना से गृह-निर्माण का एक बड़ा कार्यक्रम हाथ में लिया जा सका है। १९७३ के शुरू तक हाउसिंग बोर्ड करीब ९ करोड़ रुपयों का इन्तजाम कर सका है। करीब ७३०० व्यक्तियों ने बोर्ड द्वारा जयपुर, अजमेर, कोटा, उदयपुर, बीकानेर, भीलवाड़, अलवर और जोधपुर में बनाये जा रहे मकानों की खरीद के लिए अपने को पंजीकृत कराया है। १९७३–७४ के चालू वर्ष में २००० मकानों पर कार्य चल रहा है और अगले वर्ष बोर्ड करीब ३ हजार मकान बनाने की योजना बनायेगा।

ग्राम पंचायत

राजस्थान में एक या एक से अधिक गांवों को मिलाकर एक ग्राम पंचायत की स्थापना की गई है। वर्तमान में राजस्थान में ७३६१ ग्राम पंचायतें हैं। इसके निर्वाचित सदस्य पंच एवं मुखिया सरपंच कहलाता है। पंचों का चुनाव गांव को छोटे २ वार्डों में बांट कर किया जाता है। सरपंच का चुनाव पंचायत क्षेत्र के समस्त वयस्क मतदाओं द्वारा गुप्त मतदान प्रणाली से होता है। निर्वाचित पंच अपने बहुमत से कुछ सदस्यों को मनोनीत करते हैं जिन्हें सहवृत सदस्य कहा जाता है। सहवृत सदस्यों में दो स्त्रियाँ, एक अनुसूचित जाति का सदस्य तथा एक अनुसूचित जन-जाति का सदस्य होता है। प्रत्येक पंचायत क्षेत्र में सेवा सहकारी समिति के अध्यक्ष ग्राम पंचायत के सह-सदस्य होते हैं।

पंच व सरपंच की आयु २५ वर्ष होनी चाहिए एवं वह किसी राजकीय सेवा में नहीं होना चाहिए। सरपंच के लिए साक्षर होना आवश्यक है।

कार्य

नगरपालिका की तरह ग्राम स्तर पर सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, सार्वजनिक निर्माण, कृषि एवं वन विकास एवं शिक्षा के सम्बन्ध में कार्य करना, कुटीर उद्योगों का विकास करना एवं जन्म-मृत्यु के आंकड़े रखने की व्यवस्था करना तथा अपने क्षेत्र के विकास के लिए श्रमदान योजनाओं का आयोजन करना ग्राम पंचायतों का प्रमुख कार्य है।

इनकी आय के प्रमुख साधन निम्न है—

मनोरंजन कर, तीर्थ यात्री कर, सवारी कर, मकान कर, चुंगी, विभिन्न जुर्माने एवं चरागाहों से होने वाली आय है।

पंचायत समिति

ग्राम पंचायतों का स्वरूप बहुत छोटे होने के कारण एक ऐसे कुछ बड़े संगठनों की आवश्यकता महसूस हुई जो अपने अधिक साधनों से ग्रामीण क्षेत्रों का पूर्ण विकास कर सके एवं अपने अधीन ग्राम पंचायतों पर नियंत्रण रख सके। इसी उद्देश्य को लेकर 'राजस्थान पंचायत समिति व जिला परिषद् अधिनियम १९५९, के अन्तर्गत साधारणतया १०० गांवों के लिए एक पंचायत समिति बनाई गई है। इस समय राजस्थान में २३२ पंचायत समितियां हैं।

पंचायत समिति क्षेत्र की सभी ग्राम पंचायतों के सरपंच इसके सदस्य होते हैं। एक कृषि विशेषज्ञ, दो महिलाएँ, एक अनुसूचित जाति तथा एक अनुसूचित जन-जाति का व्यक्ति सहवृत (Coopted) सदस्य के रूप में लिए जाते हैं। ग्राम पंचायत में सरपंच का स्थान रिक्त होने पर उपसरपंच एवं उप-सरपंच भी रिक्त होने पर ग्राम पंचायत द्वारा नियुक्त पंच अपनी ग्राम पंचायत का प्रतिनिधित्व इस समिति में करता है। पंचायत समिति के सदस्य सरपंचों में से पंचायत समिति का अध्यक्ष चुना जाता है जिसे प्रधान कहते हैं। प्रधान या उप-प्रधान चुनने की दशा में उसे सरपंच के पद से त्याग करना होगा। पंचायत समिति के निर्वाचन क्षेत्र से चुना हुआ विधायक भी पंचायत समिति की स्थायी बैठकों में भाग लेने का अधिकार रखता है, इसे सहायक सदस्य कहते हैं। परन्तु इसे मत देने का अधिकार नहीं होता है।

ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए चार उप-समितियां बनायी जाती हैं-उत्पादन समिति, समाज सेवा समिति, शिक्षा समिति तथा धन, कर व प्रशासन समिति। प्रत्येक पंचायत समिति में एक विकास अधिकारी व विभिन्न कर्मचारी होते हैं। पंचायत समिति पर अपने ग्रामीण क्षेत्रों का विकास करने का पूरा उत्तरदायित्व है। सामुदायिक विकास, कृषि उन्नति, पशुपालन, स्वास्थ्य एवं सफाई, शिक्षा, यातायात, सहकारिता, कुटीर उद्योगों का विकास एवं पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए ये समितियां कार्य करती हैं। विभिन्न समंकों का संग्रह कर जिला-परिषद् एवं राज्य को पहुँचाना भी इसका कार्य हैं। यह विभिन्न ग्राम पंचायतों पर नियंत्रण रखती है एवं समय समय पर उन्हें आर्थिक तकनीकि एवं अन्य सहायता प्रदान करती है।

अपने प्रशासनिक व्यय के लिए इन्हें जिला-परिषदों से धन भी मिलता है। वैसे इनका स्वतन्त्र बजट होता है।

जिला परिषद्

जिले की सभी पंचायत समितियों पर नियंत्रण रखने के लिए जिला स्तर

पर जिला परिषदों का गठन किया गया है। पंचायती राज की सबसे बड़ी कड़ी यही है। जिले की पंचायत समितियों के प्रधान जिले से निर्वाचित सांसद व विधायक, केंद्रीय सहकारी बैंक का अध्यक्ष आदि इसके सदस्य होते हैं। एक महिला, एक अनुसूचित व एक अनुसूचित जन-जाति, दो ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के सदस्य इसके सहवृत सदस्य होते हैं। इस परिषद् का कार्यकाल ५ वर्ष का होता है।

जिला परिषद् का अध्यक्ष जिला-प्रमुख कहलाता है। इसका चुनाव पंचायत समितियों के सदस्य व प्रधान करते हैं। उप-प्रमुख का चुनाव जिला परिषद् के सदस्य करते हैं। प्रमुख चुन लिए जाने पर सम्बन्धित व्यक्ति को प्रधान-पद त्यागना पड़ता है।

परिषद् का एक सचिव होता है जो परिषद् की बैठकों एवं आय-व्यय का समुचित लेखा-जोखा रखता है।

राज्य सरकार द्वारा प्राप्त अनुदान को पंचायत समितियों में बांटना एवं उनके बजट पर नियंत्रण रखना जिला परिषद् का प्रमुख कार्य है। पंचायत समितियों की विभिन्न विकास योजनाओं का निरीक्षण करते हुए सरकार को रिपोर्ट भेजना एवं विभिन्न आंकड़ों का संग्रहण करना भी इसके कार्य हैं। पंचवर्षीय योजनाओं को जिले स्तर पर कार्यान्वित करने के लिए जिला-परिषदें राज्य सरकार को परामर्श कर देती हैं।

प्रशासन से सम्बद्ध अन्य इकाइयां :

लोक सेवा आयोग

राजस्थान में सरकारी पदों पर नियुक्तियां राजस्थान लोक सेवा आयोग के माध्यम से की जाती है। राजस्थान लोक सेवा आयोग का प्रधान कार्यालय अजमेर में है। यह राज्य सेवाओं की नियुक्तियों हेतु विभिन्न परीक्षाओं की व्यवस्था करता है एवं उम्मीदवारों के नामों की सिफारिश करता है। इस आयोग के अध्यक्ष एवं सदस्यों की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा की जाती है। राजस्थान लोक सेवा आयोग के प्रत्येक सदस्य का कार्यकाल ६ वर्ष अथवा साठ वर्ष की उम्र तक निर्धारित किया गया है।

इस आयोग की स्वतन्त्रता सुनिश्चित करने के लिए इनके व्यय (वेतन, भत्ते तथा पेंशन) संचित निधि में से किये जाते हैं। लोक सेवा आयोग की सिफारिशें सरकार मनमाने ढंग से अस्विकार नहीं कर सकती हैं। भारतीय संवैधानिक व्यवस्था ऐसी है कि लोक सेवा आयोग की सिफारिशों के विपरीत कार्य करने के लिए मन्त्री जवाबदेह होंगे। लोक सेवा आयोग से सरकारी पदों पर नियुक्तियों में योग्यता की मान्यता निश्चित हो जाती है।

प्रशासनिक संस्थायें : एक नजर में

क्रम संख्या	जिला	उप खण्ड	तहसील	नगर पालिकाएँ	पंचायत समितियाँ	ग्राम पंचायतें	न्याय-पंचायतें	विधान सभा की सीटें
	१	२	३	४	५	६	७	८
१	अजमेर	४	५	६	८	२७३	५१	९
२	अलवर	४	९	४	१४	४३९	८३	१०
३	उदयपुर	६	१७	६	१८	५५४	१०३	१३
४	कोटा	४	१२	५	११	३०२	५७	८
५	गंगानगर	५	१२	११	९	३५०	६३	९
६	चित्तौड़गढ़	५	११	६	१२	३०७	६२	७
७	चूरू	३	७	११	७	२०२	३५	६
८	जयपुर	५	१५	१०	१७	५९४	११४	१७
९	जालौर	२	४	२	७	२१६	३९	५
१०	जैसलमेर	२	२	२	३	९५	१७	१
११	जोधपुर	२	५	३	९	२४६	५३	८
१२	झालावाड़	२	६	४	६	२११	३९	५
१३	झुंझुनू	३	४	१२	८	२४६	४१	७
१४	टोंक	२	६	६	६	१९२	३५	५
१५	डूंगरपुर	१	३	२	५	१७३	३१	४
१६	नागौर	४	८	८	११	३६०	६९	९
१७	पाली	४	७	४	१०	२९८	५४	७
१८	बांसवाड़ा	२	५	२	८	१९०	३१	४
१९	बाड़मेर	२	५	२	८	२४७	४५	६
२०	बीकानेर	२	४	५	४	१२३	२६	४
२१	बूंदी	२	४	४	४	१३६	२५	३
२२	भरतपुर	४	१२	९	१३	४५२	८३	१०
२३	भीलवाड़ा	४	११	४	११	३४४	६०	८
२४	सवाईमाधोपुर	४	११	६	१०	३८७	७१	९
२५	सिरोही	२	५	५	५	१३२	२५	३
२६	सीकर	३	६	७	८	२९२	५५	७
	कुल	८३	१९६	१४६	२३२	७३६१	१३६७	१८४

महालेखाकार

महालेखाकार अपने कार्य-क्षेत्र में केन्द्रीय एवं राज्य सरकार के लेखों का नियन्त्रन करता है।

सरकार के विभिन्न विभागों के व्यय बजट के अनुसार है या नहीं तथा उनका उपयोग सही मदों के लिए किया गया है आदि बातों की जांच व अंकेक्षण महालेखापाल द्वारा किया जाता है। यह राज्य सरकार को वार्षिक प्रतिवेदन देता है जो विधानसभा में प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार महालेखाकार से सरकारी धन के उचित प्रयोग में सहायता मिलती है। राजस्थान का महालेखाकार-कार्यालय जयपुर में है।

लोक लेखा समिति

भारतीय संसद की तरह राज्य विधान-सभा भी सरकार के राजस्व एवं व्यय की उच्च-स्तरीय जाँच के लिए लोक लेखा समिति का गठन करती है। इस समिति के सदस्यों के लिए किसी दल-विशेष का होना जरूरी नहीं है। प्रायः विरोधी दल के महत्त्वपूर्ण विधायक को इसका अध्यक्ष बना दिया जाता है। यह विभिन्न विभागों के आय-व्यय की जाँच एवं क्षेत्र विशेष की जरूरतों के सन्दर्भ में अपनी रिपोर्ट विधान-सभा में प्रस्तुत करती है। इस आधार पर विभागों की भविष्य की वित्तीय-नीतियाँ निर्धारित की जाती है।

लोकायुक्त

एक नया कदम जो राज्य सरकार ने इसी वर्ष उठाया है वह है—लोकायुक्त एवं उप-लोकायुक्त की नियुक्ति। राज्य में भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए सरकार ने इस पद पर पहली वार नियुक्ति की घोषणा की है। लोकायुक्त के अधिकार-क्षेत्र में मन्त्रीगण, जिलाप्रमुख, प्रधान, सरकारी कर्मचारी आदि सभी आते हैं। इन सभी व्यक्तियों के विरुद्ध में लगाये गये अभियोगों की जांच लोकायुक्त करेंगे। लोकायुक्त की नियुक्ति मुख्यमन्त्रो तथा विरोधी पक्ष के नेता के परामर्श से राज्यपाल द्वारा की जाती है।

न्याय पालिका :—

उच्च न्यायालय

भारतीय संविधान में प्रत्येक राज्य के लिए एक उच्च न्यायालय की व्यवस्था रखी गई है। अन्य राज्यों की तरह राजस्थान न्याय पालिका का स्वरूप शृङ्खलाबद्ध है। उच्च न्यायालय राज्य का सबसे बड़ा न्याय अंग है। इसका प्रमुख कार्यालय जोधपुर में स्थित है। उच्च न्यायालय के अधीन जिला सत्र न्यायालय और मुन्सिफ न्यायालय हैं।

राजस्थान उच्च-न्यायालय में एक मुख्य न्यायाधीश तथा ८ न्यायाधीश हैं।

भारत का कोई भी नागरिक, जो १० वर्ष तक किसी न्यायिक पद पर रह चुका हो अथवा जो १० वर्ष तक किसी उच्च-न्यायालय का अधिवक्ता (एडवोकेट) रह चुका हो, न्यायाधीश पद पर नियुक्त किया जा सकता है। उच्च-न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति को ४,००० रुपये तथा अन्य प्रत्येक न्यायाधीश को ३,५०० रुपये मासिक वेतन मिलता है। इनकी नियुक्ति राष्ट्रपति भारत के मुख्य न्यायाधिपति तथा राज्य के राज्यपाल के परामर्श से करता है। मुख्य न्यायाधिपति से भिन्न अन्य न्यायाधीश की नियुक्ति के समय उच्च-न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति से भी परामर्श लिया जाता है। अपर तथा कार्यकारी न्यायाधीशों को छोड़कर सब न्यायाधीश ६२ वर्ष की उम्र तक अपने पद पर बने रहते हैं।

प्रमुख रूप से न्यायिक मामलों को तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है :

(१) दीवानी—इन न्यायालयों में लेन-देन, जमीन-जायदाद सम्बन्धी मुकदमें आते हैं। इसमें सिविलजज, लघुवाद-न्यायालय, मुन्सिफ न्यायालय एवं न्याय पंचायतें आती हैं।

(२) फौजदारी—यह न्यायालय मार-पीट, हत्या, चोरी, गबन आदि से सम्बन्धी मामले सुनता है। प्रथम, द्वितीय, एवं तृतीय श्रेणी दण्डाधिकारी तथा न्याय-पंचायतें इसके अन्तर्गत आते हैं।

(३) राजस्व—इस प्रकार के न्यायालय कृषि भूमि तथा लगान सम्बन्धी मामलों के लिए हैं। राजस्व मण्डल, राजस्व अपील अधिकारी, जिलाधीश न्यायालय, उप-जिलाधीश न्यायालय एवं तहसीलदार न्यायालय इसके अन्तर्गत हैं।

न्याय पंचायत

'राजस्थान पंचायत अधिनियम १९५९' ने ग्राम पंचायतों को स्थानीय क्षेत्र में समस्त अधिकार प्रदान किए, लेकिन न्यायिक अधिकार तहसीलों में ही थे। १९६० में राजस्थान सरकार ने 'राजस्थान पंचायत अधिनियम' में संशोधन कर तहसील पंचायतों की जगह न्याय पंचायतों की स्थापना की। इनको स्थानीय क्षेत्रों में न्याय के समस्त अधिकार दे दिए गये। प्रायः एक न्याय पंचायत की स्थापना ४ से ७ ग्रामों के बीच की जाती है। जितनी ग्राम पंचायतें इसके अन्तर्गत होती हैं, उतने ही सदस्य न्याय पंचायत में होते हैं। प्रत्येक अधीन ग्राम पंचायत अपने क्षेत्र का एक प्रतिनिधि बहुमत से चुनकर भेजती है। जो 'न्याय पंच' कहलाता है। सभी 'न्याय पंच' अपना अध्यक्ष चुनते हैं। न्याय पंच की उम्र ३० वर्ष व उसमें पढ़ने-लिखने की योग्यता होना जरूरी है। न्याय पंचायत का कार्यकाल ५ वर्ष होता है।

न्याय पंचायत को एक निश्चित सीमा तक दीवानी एवं फौजदारी दोनों ही प्रकार के मामलों की सुनवायी कर निर्णय देने का अधिकार है। दीवानी मामलों में न्याय पंचायत अधिकतम ५०० रु० तक की सम्पत्ति के मामलों का फैसला दे सकती है। फौजदारी मामलों में इसे ५० रु० तक जुर्माना करने का अधिकार है। न्याय पंचायत के निर्णयों के विरुद्ध अपील नहीं की जा सकती फिर भी फैसलों से असन्तोष होने पर इसके फैसलों के पुनर्विचार के लिए मुन्सिफ मजिस्ट्रेट की अदालत में प्रार्थना-पत्र दिया जा सकता है।

६ | राज्य वित्त

राज्य-वित्त के दृष्टिकोण से राजस्थान सरकार के लेखे तीन भागों में बांटे जा सकते हैं। (१) राजस्व लेखा, (२) पूंजीगत लेखा और (३) सार्वजनिक लेखा। इन तीनों भागों के अन्तर्गत लेन-देन के व्यौरों का वर्गीकरण भारत के नियन्त्रक एवं महाअंकेक्षक द्वारा निर्धारित लेखे के दीर्घ एवं लघु शीर्षकों में किया जाता है तथा आवश्यकतानुसार उनका और विभाजन छोटे शीर्षकों में कर लिया जाता है।

राज्य-वित्त का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग बजट होता है। राज्य का वित्त-मन्त्री विधान-सभा के अनुमोदन हेतु, बजट प्रलेख प्रस्तुत करता है, जिसमें राज्य सरकार की आय तथा राज्य के संचित निधि में से व्यय का विवरण होता है।

बजट

राज्य का बजट ४ भागों में विभक्त है :

भाग (१) का सम्बन्ध राज्य की राजस्व आय तथा राजस्व में से होने वाले व्यय से है। यह तकनीकी रूप में "राजस्व लेखा" अथवा "राजस्व लेखे पर व्यय" के रूप में जाना जाता है।

भाग (२) पूंजीगत व्यय को बताता है, जैसे सड़कों, तालाबों, नदी-घाटी योजनाओं, चिकित्सालय तथा स्कूल भवन के निर्माण कार्यों, जागीरदारों को मुआवजा आदि पर व्यय। पूंजीगत व्यय ऐसे मदों पर किये जाने की आशा की जाती है जिनसे राज्य की सम्पत्ति में वृद्धि होती हो अथवा उससे शीघ्र या देर से कुछ लाभ होने की सम्भावना हो। ऐसा व्यय सामान्यतः राज्य सरकार द्वारा एकत्रित किये जाने वाले ऋणों में से किया जाता है।

भाग (३) में सार्वजनिक ऋण, आयोजना तथा आयोजना भिन्न व्यय हेतु भारत सरकार से प्राप्त ऋण तथा सहकारी संस्थाओं में हिस्से खरीदने व अन्य कार्य

के लिए रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया और जीवन बीमा निगम से लिए जाने वाले ऋणों का अभिलेखांकन होता है।

भाग (४) में वे ऋण सम्मिलित किये जाते हैं जो राज्य सरकार द्वारा विभिन्न कार्यों हेतु किसानों, नगरपालिकाओं, पंचायत समितियों आदि को दिए जाते हैं। इस भाग में इन व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा ऐसे ऋणों के वापिस चुकाने का विवरण भी लेखांकित किया जाता है।

राजस्थान बजट

१९७३-७४

एक सिंहावलोकन

[लाख रुपये]

क—संघनित निधि :

१. राजस्व प्राप्तियाँ	२५,२०५·६०
२. राजस्व व्यय	३०,०६०·४३
३. बचत (+) अथवा घाटा (—) राजस्व लेखे में	(—) ४,८५४·८३
४. पूंजीगत व्यय	३,९६८·३२
५. कुल राजस्व एवं पूंजीगत व्यय	३४,०२८·७५
६. राज्य ऋण, उधार एवं अग्रिम	
(अ) राज्य ऋण	
(i) प्राप्तियाँ	२३,२२९·५५
(ii) भुगतान	१६,३७९·३४
शुद्ध (अ)	**(+) ६,८५०·२१**
(ब) राज्य सरकार द्वारा दिया गया ऋण व अग्रिम	
(i) प्राप्तियाँ	५६७·७९
(ii) भुगतान	२,७०४·६३
शुद्ध (ब)	**(—) २,१३६·८४**
शुद्ध (६)	(+) ४,७१३·३७
७. शुद्ध संघनित निधि	(—) ४,१०९·७८

(ख) संभ्भाव्यता निधि : (+) २००·००

(ग) सार्वजनिक लेखा :

(i) प्राप्तियाँ	२५,५६९·६९
(ii) भुगतान	२४,०७८·७४
शुद्ध [ग]	**१,४९०·९५**
सर्वोपरि शुद्ध	(—) २,४१८·८३

राजस्व एवं व्यय

राजस्थान सरकार का वजट प्रायः हमेशा ही घाटे का रहा है। पिछले कुछ वर्षों की वजट-स्थिति इस प्रकार रही है: -

(लाख रुपये)

वर्ष	प्राप्तियाँ	व्यय	घाटा
१९५१-५२	१६०६·०६	१७२३·६८	११७·६२
१९६०-६१	४३९६·३१	४५४६·०९	१४९·७८
१९६९-७०	१५७००·८३	२१७६०·६२	६०५९·७९
१९७०-७१	१६८८४·९५	२२००९·५५	५१२४·६०
१९७१-७२	१८५१०·७९	२०२९९·५५	१७८८·७६
१९७२-७३ (संशोधित अनुमान)	२२८१३·२८	२६२२०·३६	३४०७·०७
१९७३-७४ (वजट अनुमान)	२५२०५·६०	३००६०·४३	४८५४·८३

राजस्व–आय

लेखे का शीर्षक	१९६९-७०	१९७०-७१	१९७१-७२	१९७२-७३ संशोधित अनुमान	१९७३-७४ बजट अनुमान
१	२	३	४	५	६
(क) केन्द्रीय करों का अंश	२८८७·३२	३४९२ ७८	४३३०·१६	४८८०·९७	५२३६·६१
(ख) राज्य कर राजस्व	५३७८·५५	६०४६·४४	६५६६·४९	७३६५·६५	८२५०·८६
(१) भूराजस्व	८१४·७१	१०७१·३१	८५६·९३	६११·३०	११०५·८०
(२) राज्य आवकारी	८०९·३१	८७६·७३	९३७·६१	१२००·००	१२००·००
(३) विक्रीकर	२६१३·०९	२७९६·७७	३३०९·७४	३८४३·००	४२२७·००
(४) मुद्रांक व पजीयन शुल्क	२७७·४५	३०३·३६	३४७·४८	३९८·००	३५१·५०
(५) वाहनों पर कर	३१६·५५	३४८·३६	३७७·९३	४६८·००	५०५·४४
(६) कृषि आय पर कर	०·८२	०·५६	०·३९	०·३५	०·३५
(७) अन्य	५४६ ६२	६४९·३५	७३६ ४१	८४५·००	८६०·७७
(ग) अ–कर राजस्व	७४३४·९६	७३४५·७३	७६१४·१४	१०५६६·६७	११७१८·१३
(१) राजकीय उपक्रमों से प्राप्तियाँ	३४६·७१	४१८·२७	४१८·८६	५०६·२६	५०८·३२
(२) सहायतार्थ अनुदान	४३३१·१४	३८९६·३९	४२०१·७५	६२५९·२०	७८२४·९७
(३) अन्य	२७५७·११	३०३१ ०७	२९९३·५३	३८०१·२१	३३८४·८४
योग	१५७००·८३	१६८८४·९५	१८५१० ७९	२२८१३·२९	२५२०५·६०

स्रोत:—आय-व्ययक अध्ययन १९७३–७४, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर ।

राजस्व–व्यय

लेखे का शीर्षक	१९६९-७०	१९७०-७१	१९७१-७२	१९७२-७३ संशोधित अनुमान	१९७३–७४ बजट अनुमान
१	२	३	४	५	६
(क) विकास					
व्यय	९३३९·१५	१०७०९ ६३	११८०७ २५	१४२४५·८३	१४६९० ५५
(१) आर्थिक					
विकास पर					
व्यय	३६३२ २५	४०८४·९३	४३५२·५०	५२१६·७३	५३६६·७९
(२) सामाजिक					
सेवाओं पर					
व्यय	५७०६·९०	६६२४·७०	७४५२·४०	९०२९·१०	९३२३·७६
(ख) अविकास					
व्यय	१२४२१·४७	११२९९·९२	८४९४ ६५	११९७४·५३	१५३६९·८८
(१) सुरक्षा					
व्यय	१७४२·१३	१८५५·९९	२०७३·९९	२२७१·५४	२१९२·११
(२) अन्य	१०६७९·३४	९४४३·९३	६४२०·६६	९७०२ ९९	१३१७७ ७७
योग	२१७६० ६२	२२००९ ५५	२०२९९·७०	२६२२०·३६	३००६०·४३

स्रोत:–आय-व्ययक अध्ययन १९७३–७४, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर।

पूंजीगत–व्यय

पूंजीगत लेखे के अन्तर्गत किये गये कुल पूंजीगत व्ययों को मोटे तौर पर दो भागों में वांट सकते हैं : (१) विकास योजनाएं, एवं (२) अ–विकास योजनाएं। विकास योजनाओं के अन्तर्गत सिंचन, जन स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, बहुप्रयोजन नदी योजनायें, सार्वजनिक निर्माण कार्य एवं विद्युत योजनायें आती है। अ–विकास योजनाओं के अन्तर्गत, राजकीय व्यापार तथा राजस्व खाते के बहिर्गत अन्य निर्माण कार्यों पर पूंजी की लागत, सड़क तथा जल-परिवहन योजनायें, निवृत्ति वेतन के एक मुश्तदान के भुगतान, सम्भाव्यता निधि के नियोजन तथा भूमि धारकों इत्यादि को जमींदारी प्रथा की समाप्ति के फलस्वरूप क्षतिपूर्ति देय तथा सहकारी उपभोक्ता संस्थाओं पर पूंजी की लागत आदि-आदि बातें शामिल की जाती हैं।

राजस्थान सरकार का पिछले कुछ वर्षों का पूंजीगत व्यय इस प्रकार से रहा है।

पूंजीगत–व्यय

वर्ष	विकास योजनाएं	अविकास योजनाएं	कुल
१९५१–५२	१४३·३०	४६३·८७	६०७·१७
१९६०–६१	२०८३·२०	३३८·०७	२४२१·२७
१९६९–७०	२९९६·८७	(—) १३२·९७	२८६३ ९०
१९७०–७१	२८९७·०३	(—) १३६·०९	२७६०·९४
१९७१–७२	३४२१·०३	(—) ८५ ५२	३३३५·५१
१९७२–७३ (संशोधित अनुमान)	३८३८·९३	(—) २४·७०	३८१४·२३
१९७३–७४ (बजट अनुमान)	४२०४·३५	(—) २३६·०३	३९६८·३२

राज्य-ऋण

(केन्द्र सरकार व अन्य से लिया गया ऋण)

शीर्षक	१–४–७१ को प्रारम्भिक शेष	१९७१–७२ में प्राप्त ऋण राशि	१९७१–७२ में प्रतिशोधित राशि	३१–३–७२ को संवरण शेष
१. केन्द्र सरकार	५,३२,४७,६६,६२८·२८	१,४०,९०,७७,१६८·००	१,०८,००,१०,३२०·५८	५,६५,३८,३६,४७५·७०
२. भारतीय जीवन-बीमा निगम	६,२२,४६,५१९·८५	८०,००,०००·००	४१,७८,२४०·५१	६,६०,६८,२७९·३४
३. नेशनल कोआॅपरेटिव-डेवलपमेंट निगम	२,११,७५,३११·५८	३२,२६,१७५·००	१७,१५,५२९·१२	२,२६,८५,९५७·४६
४. नेशनल वेयर हाउसिंग निगम	२,४६,२२०·२१	—	३९,८४० ४७	२,०६,३७९·७४
५. भारतीय रिजर्व बैंक	२,२०,८६,२५०·००	७९,२१,५००·००	२१,५३,५५०·००	२,७८,५४,२००·००
६. खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग	१,४५,०१७ ५०	—	—	१ ४५,०१७·५०
७. भारतीय दुग्ध निगम	—	७,००,०००·००	—	७,००,०००·००
योग	५,४६,०६,६८,९४७·४२	१,४२,८९,२४,८४३·००	१,०८,८०,९७,४८०·६८	५,८०,१४,९६,३०९·०४

राजस्थान सरकार का विभिन्न कम्पनीज में विनियोग

(१ अप्रेल १९७३ को)

क्रम संख्या	कम्पनी का नाम	हिस्सों का विवरण			लगी हुई कुल राशि	चुकाई गई राशि	विशेष विवरण
		सामान्य	अधिमान	विलंबित			
	१	२	३	४	५	६	७
१.	मैटल कारपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड	२५,००,०००	—	—	२५,००,०००	२५,००,०००	
२.	आदित्य मिल्स लि० कलकत्ता	१०,००,०००	१०,००,०००	—	२०,००,०००	२०,००,०००	
३.	बूंदी इलेक्ट्रिक सप्लाई कं० लि०, बूंदी	४,३४,८२०	—	—	४,३४,८२०	२,६९,१८०	विघटन १,६५,६४० रु. मिल गये
४.	भवानी मण्डी इलेक्ट्रिक सप्लाई एण्ड डवलपमेंट कम्पनी लि०, भवानी मण्डी	१०,०००	—	—	१०,०००	६,०००	विघटन ४००० रु. मिल गये
५.	आबूरोड इलेक्ट्रिसिटी एण्ड-इण्डस्ट्रीज कं० लि०, आबूरोड	१,२५,०००	—	—	१,२५,०००	१,२५,०००	
६.	झालावाड़ ट्रांसपोर्ट सर्विस लि०, झालावाड	५०,०००	—	—	५०,०००	५०,०००	
७.	कोटा ट्रांसपोर्ट कं० लि०, कोटा	१,१०,०००	८०,०००	१०,०००	२,००,०००	२,००,०००	
८.	हाई-टैक प्रिसिजन ग्लास लि०	७,६०,०००	—	—	७,६०,०००	७,६०,०००	
९.	एसोसियेटेड आयरन एण्ड स्टील इण्डस्ट्रीज लि०, रामगंज मण्डी	१,००,००००	—	—	१,००,०००	१,००,०००	

१	२	३	४	५	६	७
१०. फतवा इस्लामपुर लाइट रेल्वे कं० लि०, कलकत्ता	६५००	—	—	६,५००	६,५००	
११. दी सैंट्रल प्रोविंसेंज रेल्वे कं. लि., बम्बई	७६००	—	—	७,६००	७,६००	
१२. दी छागरमुख सिलघाट रेल्वे कं. लि., कलकत्ता	६५००	—	—	६,५००	६,५००	
१३. जयपुर उद्योग लि., सवाई माधोपुर	—	७५,००,०००	—	७५,००,०००	७५,००,०००	
१४. गंगानगर शुगर मिल्स लि., जयपुर	३८,२२,४५०	१०,३०,६५०	५,००,०००	५३,५३,१००	४,७८०,७८६	
१५. मान इन्डस्ट्रीयल कोरपोरेशन लि., जयपुर	५,००,०००	१०,००,०००	—	१५,००,०००	१५.००,०००	
१६. श्री उदयमान इन्डस्ट्रीज लि० धोलपुर	४०,०००	४०,०००	५०,०००	१,३०,०००	१,३०,०००	विघटन में
१७. रामपुर इन्डस्ट्रीज लि०, रामपुर	३,०००	—	—	३,०००	६,६६२·२५	मूल्य जिस पर
१८. बीकानेर जिप्सम लि०, बीकानेर	२४,००,००	—	—	२४,००,०००	२४,००,०००	हिस्से हस्तांतरित किये गये हैं।
१९. धोलपुर ग्लास वर्क्स लि०, धोलपुर	२५,०००	२५,०००	—	५०,०००	५०,०००	विघटन में
२०. श्री हरिशचन्द्र इण्डस्ट्रीज पोटरी वर्क्स लि०, झालावाड़	—	१०,०००	—	१०,०००	१०,०००	विघटन में
२१. श्री सादुल टेक्सटाइल लिमिटेड, श्री गंगानगर	५,९०,०००	५,९०,०००	—	११,८०,०००	११,८०,०००	
२२. जयपुर स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०; जयपुर	४,९८,७००	१२,४७,१००	—	१७,४५,८००	१७,४५,८००	

१	२	३	४	५	६	७
२३. काटन प्रेस कं०, मदनगंज, किशनगढ़	—	—	—	—	२०,८३३·३३	फर्म में २८% हिस्सा
२४. इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कं० लि०, कलकत्ता	५,७६०	—	—	,७६०	१८,००९·२६	मूल्य जिस पर हिस्से हस्तांतरित किये गये हैं।
२५. ओरियण्टल पावर केबिल्स लि०, इन्दौर	३,६६,५००	९,६९,२००	—	१३,३५,७००	१३,३५,७००	
२६. टाटा आयरन एण्ड स्टील कं० लि०, बम्बई	—	५९,२००	—	५९,२००	७४,००९·६६	मूल्य जिस पर हिस्से हस्तांतरित किये गये हैं।
२७. स्टोन वेयर पाइप एण्ड सेनेटरी फिटिंग मैन्यूफैक्चरिंग कं० लि०, जयपुर	२५,०००	—	—	२५,०००	१२,५००	विघटन में
२८. हिन्द फार्म एण्ड डेयरी वर्क्स लि., आगरा	५,०००	—	—	५,०००	४,३०५	विघटन में ६९५/- रु० प्राप्त हो चुके हैं।
२९. न्यूज पेपर्स लि०, इलाहाबाद	१०,०००	—	—	१०,०००	१०,०००	
३०. नेसनल प्रोजेक्ट्स कंस्ट्रक्शन कार्पोरेशन, लि०, नई दिल्ली	१०,००,०००	—	—	१०,००,०००	१०,००,०००	
३१. राजस्थान वित्त निगम, जयपुर	३६,२०,०००	—	—	३६,२०,०००	३६,२०,०००	
३२. राजस्थान स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०, भीलवाड़ा	२,६०,०००	४,००,०००	—	६,६०,०००	६,६०,०००	
३३. राज० लघु उद्योग निगम लि०, जयपुर	२०,०९,७००	—	—	२०,०९,७००	२०,०९,७००	

१	२	३	४	५	६	७
३४. सांभर साल्ट्स लि०, सांभर	४०,००,०००	—	—	४०,००,०००	४०,००,०००	
३५. समाचार भारती, नई दिल्ली	५,००,०००	—	—	५,००,०००	५,००,०००	
३६. राजस्थान स्टेट होटल्स कोर्पो० लि०, जयपुर	३१,०४,०००	—	—	३१,०४,०००	३१,०४,०००	
३७. राजस्थान स्टेट इण्डस्ट्रीयल एण्ड मिनरल डेवलोपमेंट कार्पोरेशन लि०, जयपुर	१,८०,००,०००	—	—	१,८०,००,०००	१,८०,००,०००	
३८. राजस्थान स्टेट रोड़ ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन	—	—	—	२,१७,८३,३५७	२,१७,८३,३५७	
३९. राजस्थान राज्य कृषि उद्योग निगम प्रा० लि०	१,४८,६२,७००	—	—	१,४८,६२,७००	१,४८,६२,७००	
४०. राजस्थान राज्य टेनरीज लि०	२,५२,५०,०००	—	—	२०,००,०००	२०,००,०००	
कुल					९,८३,४४,४४२·७९	

राजस्थान सरकार का विभिन्न सहकारी संस्थाओं में विनियोग

(१ अप्रेल १९७३ को)

क्र० सं०	नाम	चुकाई गई राशि (सामान्य हिस्से)
१	२	३
१.	राजस्थान स्टेट कोपरेटिव बैंक लि०, जयपुर	४०,००,०००
२.	राजस्थान राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक लि०, जयपुर	३,९७,१७,४६४
३.	राज० इण्डस्ट्रीयल कोऑपरेटिव बैंक लि०, जयपुर	१०,००,०००
४.	राजस्थान स्टेट वेयर हाउसिंग कोर्पोरेशन, जयपुर	३१,५०,०००
५.	सैंट्रल कोऑपरेटिव बैंक्स	१,८०,०४,५००
६.	राजस्थान राज्य सहकारी क्रय-विक्रय संघ लि०, जयपुर	५५,००,०००
७.	क्रय-विक्रय सहकारी समितियाँ	६१,८५,४८०
८.	प्राथमिक सहकारी समितियाँ	२,०८,१६,४४५
९.	राजस्थान अपैक्स वीवर्स कोऑपरेटिव सोसाइटी लि०, जयपुर	२,४७,०००
१०.	केशोरायपाटन सहकारी सूगर मिल्स लि०	४०,००,०००
११.	प्राथमिक सहकारी भूमि विकास बैंक्स	३,७५,०००
१२.	राजस्थान कोऑपरेटिव स्पिनिंग मिल्स लि०, गुलाबपुरा	४२,३०,०००
१३.	राजस्थान स्टेट कोऑपरेटिव हाउसिंग फाइनेन्स सोसाइटी लिमिटेड	९,००,०००
१४.	अजमेर डिस्ट्रिक्ट सहकारी दुग्ध वितरण यूनियन	६,४०,०००
१५.	जिला दुग्ध वितरण सहकारी यूनियन, कोटा	५,००,०००
१६.	जिला दुग्ध वितरण सहकारी यूनियन, भीलवाड़ा	६,००,०००
१७.	जिला दुग्ध वितरण सहकारी यूनियन, उदयपुर	५,००,०००
		११,०३,६५,८८९

७ | पंचवर्षीय योजनाएँ

भारत के गणतन्त्र घोषित हो जाने के बाद जनजीवन की सुख और समृद्धि के लिये आयोजित विकास की दिशा में पहल की गई और देश के सर्वांगीण विकास के लिये पंचवर्षीय योजनायें बनाई गईं।

राजस्थान की पंचवर्षीय योजनाओं की कहानी वस्तुतः केन्द्रीय योजनाओं की ही कहानी का एक भाग है। राज्य की योजनायें केन्द्रीय योजनाओं के समानांतर व सहायक के रूप में चलती हैं।

प्रथम तीन पंचवर्षीय योजनाएं :

भारतीय प्रथम योजनाओं के समरूप ही १ अप्रेल १९५१ से ३१ मार्च १९५६ तक की अवधि के लिये राजस्थान की प्रथम पंचवर्षीय योजना बनाई गई। इसका उद्व्यय ६४·५० करोड़ रु० था परन्तु वास्तव में ५४·१४ करोड़ रुपये ही खर्च हुआ।

ठीक इसी प्रकार क्रमशः दूसरी और तीसरी योजनायें १९५६–६१ एवं १९६१–६६ में बनाई गईं। इनका प्रस्तावित व्यय क्रमशः १०५·२७ एवं २३६·०० करोड़ रु. था परन्तु वास्तविक खर्च दोनों में ही कम अर्थात् १०२·७४ एवं २१२·७० करोड़ रुपये हुआ।

१९६६ में, वैसे तो तीसरी योजना की समाप्ति पर सिद्धांतत. चौथी योजना शुरू हो जानी चाहिये थी परन्तु कुछ एक समस्याओं, जैसे–पाक युद्ध, अकाल, बढ़ते मूल्य स्तर एवं वित्तीय अनिश्चितता के कारण चौथी योजना भारत सरकार समय पर लागू नहीं कर सकी, फलस्वरूप राजस्थान सरकार ने भी अपनी चौथी योजना कुछ समय के लिये स्थगित कर दी एवं उन वर्षों में एक-एक वर्ष के बजट-नियोजन बनाये गये। १९६६–६७, १९६७–६८ एवं १९६८–६९ की योजनाओं को हम १९६६–६९ की योजना भी कह सकते हैं। इन वर्षों के लिये कुल १३२·७१ करोड़ रुपयों का प्रावधान किया गया था जबकि वास्तविक खर्च १३६·७५ करोड़ रुपया हुआ।

प्रथम तीन पंचवर्षीय योजनाओं का उद्व्यय तथा व्यय

(करोड़ रुपये)

विभाग	प्रथम योजना (१९५१-५६)			द्वितीय योजना (१९६६-६१)			तृतीय योजना (१९६१-६६)			१९६६–६९		
	उद्व्यय	व्यय	प्रतिशत व्यय	उद्व्यय	व्यय	प्रतिशत व्यय	उद्व्यय	व्यय	प्रतिशत व्यय	उद्व्यय	व्यय	प्रतिशत व्यय
१. कृषि कार्यक्रम	३·२४	३·६८	३·८१	८·६४	११·१९	१०·९५	२३·००	२३·७१	११·१८	२१·०१	२०.११	१४·७१
२. सहकारिता एवं सामुदायिक विकास	३·४०	३·३०	६·०९	८·३८	१४·२६	१३·८८	२१·८०	१६·९१	७·८७	५·१२	५·०८	३·७१
३. सिचन एवं शक्ति	३९·४२	३१·४८	५८·१४	४८·१३	३८·३४	३७·३१	१२१·००	११५·९१	५४·४३	७६·२३	८२·५४	६०·३७
४. उद्योग तथा खनन	०·५५	०·४६	०·८५	५·७७	३·३८	३·२९	८·९५	३·३२	१·५६	२·३४	२·०७	१·५०
५. यातायात एवं संचार	६·२७	५·५५	१०·२६	९·४२	१०·१७	९·९०	१३·२०	९·७५	४·५९	३·७४	४·४१	३·२३
६. सामाजिक सेवायें	११·०६	९·१२	१६·४८	२३·९२	२४·३१	२३·६७	४५·९५	४२·०८	१९·७९	२२·९०	२१·३०	१५·५८
७. विविध	०·५६	०·५५	१·०१	१·०१	१·०९	१·०६	२·१०	१·०२	०·४८	१·३७	१·२४	०·९०
योग	६४·५०	५४·१४	१००	१०५·२७	१०२·७४	१००	२६६·००	२१२·७०	१००	१३२·७१	१३६·७५	१००

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का उद्व्यय तथा व्यय

(करोड़ों में)

विभाग (१९६९–७४)	कुल उद्व्यय	वर्ष १९६९–७४ में संभावित व्यय						कॉलम ८ का कालम २ से प्रतिशत
		६९–७० (लेखे)	७०–७१ (लेखे)	७१–७२ (प्रोविजनल)	७२–७३ संशोधित अनुमान	७३–७४ (वजट अनुमान)	योग	
१	२	३	४	५	६	७	८	९
१. कृषि कार्यक्रम	२५·१९	३·२६	४·४२	५·०१	५·४८	५·६३	२३·७९	९४·४४
२ सहकारिता एवं सामुदायिक विकास	६·४५	१·३२	१·७०	२·०६	२·०६	२·१०	९·२५	१४३·४१
३. सिंचन एवं शक्ति	१९४·९३	३५·१३	४०·२३	३६·१६	३६·९२	४०·४७	१८८·९१	९६·९१
४. उद्योग तथा खनन	६·६५	०·८८	१·७१	२·०१	१·५५	२·०५	८·२०	१२३·३१
५. यातायात एवं संचार	१२·००	१·२३	१·७२	२·६०	१·२१	२·६५	९·४१	७८·४२
६. सामाजिक सेवायें	६३·७२	७·११	१०·७२	१५·३७	१८·६२	२१·०७	७२·८९	१०७·६३
७. विविध	०·८५	०·०७	०·१२	०·२५	१·३९	१·१३	२·९६	३४८·३४
योग	३१३·७९	४९·००	६०·६२	६३·४६	६७·२३	७५·१०	३१५·४१	१००·५२
विश्व खाद्य कार्यक्रम कोष	+२·२१							
	३१६·००							

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना :

१ अप्रेल १९६९ से इस योजना को शुरू किया गया है। यह ३१ मार्च १९७४ तक चलेगी। इसका प्रस्तावित व्यय ३१६ करोड़ रुपये है जिसमें २·२१ करोड़ रुपया विश्व खाद्य कार्यक्रम कोष से सम्बन्धित भी है। विकास के कार्यक्रमों को सुचारू रूप से चलाने के लिये इस योजना के व्यय-पदों को वार्षिक योजनाओं के रूप में बांट दिया गया है। प्रथम दो वर्ष १९६९–७० तथा १९७०–७१ का वास्तविक व्यय क्रमशः ४९·०० करोड़ रुपये एवं ६०·६२ करोड़ रुपये हुआ है। १९७१–७२ का अन्तिम व्यय ६३·४६ करोड़ रुपये एवं संशोधित अनुमान के अनुसार १९७२–७३ में ६७·२३ करोड़ रुपये व्यय होगा। १९७३–७४ के वर्ष का बजट अनुमान ७१·१० करोड़ रुपये व्यय करने का है जिनमें ८·६५ करोड़ रुपये राज्य विद्युत मण्डल तथा १·३२ करोड़ रुपये नगरपालिकायें अपनी-अपनी योजनाओं पर व्यय करेंगे। चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का प्रस्तावित व्यय पीछे तालिका में दर्शाया गया है।

पांचवी पंचवर्षीय योजना :–

राजस्थान की पांचवीं योजना की रूपरेखा १८०० करोड़ रुपये की तैयार की गई है। योजना आयोग के निदेशों के अनुसार पांचवीं योजना की रूपरेखा चौथी योजना से दुगुनी होगी। राज्य में चौथी योजना ३२० करोड़ रुपये की है अतः पांचवीं योजना में राज्य की योजना ६४० करोड़ रु. की होगी। इस योजना में १८८ करोड़ रुपये की आधारभूत न्यूनतम जरूरतें पूरी करने का कार्यक्रम भी शामिल किया गया है।

योजना की रूपरेखा में प्रतिवर्ष ५ से ६ प्रतिशत की प्रगति-दर में वृद्धि का अनुमान लगाया गया है। योजना में राजस्थान नहर और चम्बल परियोजना के सिंचाई क्षेत्रों के विकास पर मुख्यतः जोर दिया जायेगा। इस योजना में मरुस्थल के विकास पर ८७ करोड़ रुपया खर्च किये जाने की सम्भावना है। पशु-धन की दशा में सुधार तथा खनिज संपदा का ज्यादा से ज्यादा उत्खनन और कृषि व औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि पर भी जोर दिया गया है। कोटा के पास ४४० मेगावाट का ताप बिजली घर की स्थापना का भी योजना में प्रावधान है। इसी योजना में ही २७५० मध्यम क्षमता के नलकूप, ४८०० कम क्षमता के तथा १५०० खुदाई व बोर करने के नलकूप खोदने के लिये ३७ करोड़ रु. की योजना बनाई गई है। दक्षिणी व दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान के जिलों में 'बाला' की बीमारी रोकने के लिये राज्य सरकार ने ८ करोड़ रुपया खर्च करने का प्रस्ताव किया है। यह रुपया एक केन्द्र संचालित कार्यक्रम के तहत दिया जायेगा।

८ | भूमि-सुधार

राजस्थान के एकीकरण से पूर्व जमीन का लगान तत्कालीन रियासतों के राज्यकोष में आता था। देशी रियासतें एक निश्चित रकम की अदायगी अंग्रेज सरकार को करती थी तथा इनके अधीन ठाकुर, माफीदार आदि बिचौलिये होते थे जो जमींदार, बिस्वेदार, इस्तमरारदार और खेवटदार आदि कहलाते थे। राजस्थान एकीकरण के समय इन लोगों ने अपने आश्रित किसानों को जमीनों से बेदखल इस भय से करना चालू किया कि कहीं ये जमीनों के मालिक न बन बैठें। राजस्थान में 'प्रोटेक्शन ऑफ टीनेन्सी आर्डीनेन्स' जारी किया गया। सन् १९५२ में 'जागीर अबो-लीशन एक्ट' पास किया गया तथा १९५५ में राजस्थान टीनेन्सी एक्ट पारित किया गया और इसके लागू होने के साथ ही हर किसान को खातेदारी हक प्राप्त हुए। जो भी जमीन पर काश्त करता था वह जमीन का मालिक हो गया और उसका सम्बन्ध सीधा प्रादेशिक सरकार से हो गया। ये लगान सीधा प्रादेशिक सरकार को देने लगे। पुराने बिचौलिये एवं भू-स्वामियों की जागीरी खतम होने के कारण राज्य सरकार ने उनके अस्तित्व के लिए मुआवजा देने का फैसला किया। सरकार के पास जितनी भी जमीन सिवाय चक, खेती के काबिल उपलब्ध रही, उसे भूमिहीन किसानों को बांटने का निर्णय लिया गया। साथ ही सारे राज्य भर में जहाँ भू-प्रबन्ध नहीं हुआ था, वहाँ भू-प्रबन्ध करवाया गया। सन् १९५६ में 'राजस्थान लैंडरेवेन्यु एक्ट' पारित किया गया और किसानों को उनका जायज हक दिलाने के लिए राजस्व-मण्डल से तहसील स्तर तक राजस्व न्यायालयों की सुचारु व्यवस्था की गई।

सन् १९५९ में जमींदारी व बिस्वेदारी का खात्मा किया गया। परन्तु उसके बाद भी कई बड़े भूमिधारी शेष रह गये। इनकी भूमि के अधिग्रहण के सम्बन्ध में कानून बनाया गया। भूमि की सीलिंग के लिए राज्य सरकार ने 'राजस्थान कृषि भूमि की अधिकतम सीमा अध्यादेश, १९७३' जारी किया है। जमीन को छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटने से रोकने के लिए कन्सोलीडेशन एक्ट बनाया गया है।

राज्य सरकार का 'राजस्थान कृषि भूमि की अधिकतम सीमा अध्यादेश, १९७३' भूमि सुधार एवं सामाजिक न्याय तथा समता की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कदम है। भूमिहीनों को भूमि आवंटन करना सरकार की प्रमुख नीति रही है। अब तक ८६३४५६ भूमिहीनों को ५८४९७९१ एकड़ भूमि आवंटित की जा चुकी है। राजकीय भूमि पर अतिक्रमण के मामलों को भी सहानुभूतिपूर्वक निपटाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं।

सिंचित क्षेत्र में भूमि आवंटन कार्य के अन्तर्गत राजस्थान नहर के पहले चरण में १९७३ के शुरू में १५३०४ व्यक्तियों को २८६२४७ एकड़ भूमि स्थायी रूप से और २७४८५ भूमिहीन व्यक्तियों को ३९८२३५ एकड़ भूमि एक वर्षीय आवंटन में अस्थायी रूप से आवंटित की गई है।

भूमि के स्थायी आवंटन के दूसरे चरण में उपनिवेशन विभाग, राजस्थान नहर परियोजना क्षेत्र के गंगानगर जिले के ३८९३०१ एकड़ भूमि के स्थायी आवंटन करने की पूरी तैयारी कर चुका है। इस चरण में करीब १९ हजार भूमिहीन व्यक्तियों को स्थायी रूप से भूमि आवंटित किये जाने की आशा है। इस स्थायी आवंटन के लिए अनुसूचित जाति/जन जाति के लिए विजयनगर तहसील तक ९७७६१ एकड़ भूमि आरक्षित कर दी गई है। भूमि के स्थायी आवंटन के साथ १५५ पुरानी आबादियों के विस्तार की योजना और वीरान क्षेत्रों में १९६ नवीन आबादियों के चयन का काम भी पूरा कर लिया है।

९ | कृषि

राजस्थान कृषि प्रधान राज्य है। लगभग ७०% जनसंख्या प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष में कृषि से ही जीवन यापन करती है। राज्य का क्षेत्रफल लगभग ३४२ लाख हेक्टर है। इसमें लगभग ४२ प्रतिशत भाग पर खेती होती है। प्रथम, द्वितीय व तृतीय योजना के आरम्भ में क्रमश: ९३·१९ लाख हेक्टर, ११४·५४ लाख हेक्टर व १३१·१२ लाख हेक्टर भूमि पर खेती की गई। राज्य का बहुत बड़ा भाग 'थार की मरुभूमि' है, जहाँ अधिकांश भूमि बेकार पड़ी रहती है। बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, चूरू तथा नागौर जिलों में राज्य का ५८% भू-भाग आता है लेकिन इस भू-भाग के केवल २७% भाग में ही खेती की जाती है। बीकानेर तथा जैसलमेर राज्य के सूखे जिले हैं। यहाँ केवल ८·८% भाग पर ही खेती की जाती है, जबकि यह भू-भाग राज्य का पांचवा भाग है।

फसलें

राज्य में प्रमुख रूप से दो फसली मौसम खरीफ व रबी हैं। खरीफ की फसल बाजरा, ज्वार, मक्का, चावल, कपास, गन्ना, तिल, मूंगफली, मूंग, मोठ व गवार हैं तथा रबी की प्रमुख फसलें गेहूँ, जौ, चना, तारामीरा, अलसी व सरसों आदि हैं। भौगोलिक विभाजन के अनुसार प्रमुख फसलें इस प्रकार हैं—

मरुस्थली—बाजरा, मूंग, मोठ, ग्वार आदि।

अरावली पर्वत श्रृङ्खला—मक्का, गेहूँ, जौ, मूंगफली व गन्ना आदि।

उत्तर-पूर्वी मैदानी प्रदेश—गेहूँ, जौ, बाजरा, मक्का, चना, दालें व तिलहन।

पठारी प्रदेश—गेहूँ, जौ, ज्वार, तिलहन, दालें, तम्बाकू, कपास व गन्ना आदि।

कृषि उत्पादन

१९५१–५२ में राजस्थान में खाद्यान्नों का उत्पादन २९ लाख टन था। उस समय राज्य की आंतरिक मांग ३३ लाख टन के करीब थी। कृषि-प्रणाली में

उन्नति एवं सिचाई की सुविधा बढ़ने से राज्य में खाद्यान्नों के उत्पादन में बढ़ोतरी हुई और १९७०–७१ के वर्ष में ८८ लाख टन उत्पादन हुआ, जो राज्य की माँग के लिये पर्याप्त ही नहीं, अपितु राज्य निर्यात करने की स्थिति में हो गया था। परन्तु १९७१–७२ में मौसम स्थिति अनुकूल नहीं रही, फलस्वरूप उत्पादन में गिरावट आयी। कुल खाद्यान्न उत्पादन १९७१–७२ में ६३·७५ लाख टन हुआ।

वर्ष १९७२–७३ की अनिश्चित मानसून का प्रभाव भी प्रतिकूल रहा है और यह अनुमान लगाया जा रहा है कि १९७२–७३ का कुल खाद्यान्नों का उत्पादन ५४·०८ लाख टन ही होगा, जो १९७१–७२ से लगभग १५% कम होगा और राज्य को पर्याप्त मात्रा में अन्न का आयात करना पड़ेगा।

फसलों के अनुसार देखने पर सन् १९७१–७२ का गेहूँ का उत्पादन १९·०४ लाख टन था जो १९७०–७१ के १९·५१ लाख टन के लगभग बराबर ही था। परन्तु जौ के क्षेत्रफल में गिरावट के कारण इसका उत्पादन ७·६४ लाख टन से घटकर १९७१–७२ में ५.९० लाख टन ही रह गया। सबसे अधिक कमी बाजरे की फसल में हुई जिसका उत्पादन २६.७५ लाख टन से घटकर १३·७१ लाख टन हुआ जबकि क्षेत्रफल दोनों वर्षों में लगभग ५१ लाख हैक्टर रहा। इसी प्रकार ज्वार व मक्का का उत्पादन ५·७३ लाख टन व ९.३० लाख टन से घटकर २·५५ लाख टन व ७·५२ लाख टन हुआ। इन फसलों की कमी का कारण असामयिक वर्षा रही। खरीफ व रबी की दालों का उत्पादन भी १७·७७ लाख टन के स्थान पर १३·१९ लाख टन हुआ। चने का उत्पादन ११·९५ लाख टन से गिरकर ८.८५ लाख टन रह गया।

तिलहनों का उत्पादन ५·३३ लाख टन से ३·८७ लाख टन रह गया जबकि इसके अन्तर्गत क्षेत्रफल में १०·४६ लाख हेक्टर के स्थान पर १३·४८ लाख हेक्टर की वृद्धि हुई थी। मूंगफली का उत्पादन १·४२ लाख टन से १·५८ लाख टन हुआ।

कपास का उत्पादन संतोपजनक रहा। क्षेत्रफल व उत्पादन दोनों में वृद्धि हुई। १९७०–७१ में २·२५ लाख हेक्टर क्षेत्रफल में २·२९ लाख गांठें उत्पन्न हुई थीं जो १९७१–७२ के ३·३५ लाख हेक्टर क्षेत्रफल में ३·९४ लाख गांठें हो गई। क्षेत्रफल में ४९% वृद्धि से उत्पादन ७२% बढ़ गया। गन्ने के उत्पादन में २६% कमी हुई। ०·३८ लाख हेक्टर के स्थान पर ०·२८ लाख हेक्टर में गन्ना बोया गया था। परन्तु गन्ने की किस्म अच्छी होने की वजह से गुड़ के उत्पादन में १·२३ लाख टन से १·२० लाख टन यानी ३% की ही कमी आयी। इसके अतिरिक्त चावल व तुर दोनों

के अन्तर्गत क्षेत्रफल में वृद्धि के कारण उत्पादन में वृद्धि हुई। चावल का उत्पादन १ ३५ लाख टन से बढ़कर १.५६ लाख टन व तुर का उत्पादन ०.१३ लाख टन से ०.२० लाख टन हो गया।

१९७२–७३ की स्थिति का अवलोकन विचारणीय है। राज्य के तीन जिलों को छोड़कर शेष सभी में वर्षा सामान्य से १५–२० सेन्टीमीटर तक कम हुई। इसके अतिरिक्त वर्षा का वितरण भी असमान रहा, जिसका खरीफ फसलों पर प्रतिकूल असर पड़ा। चूंकि खरीफ राजस्थान की मुख्य खाद्यान्न फसल है अतः इसमें कमी का पूरी अर्थ-व्यवस्था पर भी प्रतिकूल असर होगा। केवल खरीफ की फसल पिछले वर्ष से २५% कम होगी। कुल खाद्यान्नों में १५% कमी है। तीन वर्षो १९७०–७१, १९७१–७२ व १९७२–७३, के खाद्यान्न उत्पादन की स्थिति निम्न तालिका में स्पष्ट की गई है।

खाद्यान्न उत्पादन

फसलें	खाद्य उत्पादन ('००० टन)			प्रतिशत परिवर्तन	
	१९७०–७१	१९७१–७२	१९७२–७३	१९७०-७१ से १९७१-७२ में	१९७१-७२ से १९७२ ७३ में
१	२	३	४	५	६
I अनाज	७०६३	५०५६	४२६८	(—)२८.४१	(—)१५.५८
(अ) खरीफ	४३४६	२५६०	१९१६	(—)४१ ०९	(—)२५.१५
(ब) रबी	२७१७	२४९६	२३५२	(—) ८.१३	( ) ५.७६
II दालें	१७७७	१३१९	११४०	(—)२५.७७	(—)१३.५७
चना	११९५	८८६	७५०	(—)२५.८६	(—)१५ ३४
तुर	१३	२०	१२	(+)५३.८५	(—)४०.००
अन्य रबी दालें	१४	१८	१०	(+)२८.५७	(—)४४.४४
,, खरीफ दालें	५५५	३९५	३६८	(—)२८.८३	(—) ६ ८४
कुल खाद्यान्न	८८४०	६३७५	५५०८	(—)२७ ८८	(—)१५ १६

पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि उत्पादन

राजस्थान में विभिन्न योजनाओं में कृषि का वार्षिक औसत उत्पादन इस प्रकार रहा है :—

फसलें	इकाई	प्रथम योजना	द्वितीय योजना	तृतीय योजना
१. खाद्यान्न	लाख टन	३६·८८	४६·३७	४६·४०
२. तिलहन	,,	२ ०६	२·१२	२·६१
३. कपास	लाख गांठें (प्रति गांठ १८० किलो)	१·३२	१·६४	१ ७४
४. गन्ना (गुड़)	लाख टन	०·४५	०·६६	०·७०

राजकीय कृषि : यंत्रीकृत फार्म

सूरतगढ़ में केन्द्रीय यंत्रीकृत फार्म लगभग १२,२६८ हेक्टेयर भूमि को घेर कर बनाया गया है। १६५६ के अन्त में सोवियत सरकार द्वारा विभिन्न आवश्यक यंत्रों एवं विशेषज्ञों के रूप में प्राप्त सहायता से यह फार्म शुरू किया गया था। यहां हर साल २६,००० क्विटल गेहूँ का बीज तैयार हो सकेगा और ४,००० क्विटल उन्नत किस्म कपास का बीज एवं संकर-मक्का इत्यादि भी। इस फार्म की नर्सरियों (वनस्पति शालाओं) में स्थानीय वितरण के लिए हर साल लगभग ५०,००० पौधे भी तैयार होंगे। जैतसर में भी एक केन्द्रीय यंत्रीकृत फार्म कार्य कर रहा है।

उर्वरक

तृतीय योजना काल में राज्य में ४४ हजार मैट्रिक टन सुपरफास्फेट एवं १५५ हजार मैट्रिक टन नाइट्रोजीनियस उर्वरक कृषकों में वितरित किये गये। दूसरी योजना काल में १०,४६५ मैट्रिक टन नाइट्रोजीनियस एवं २५४० मैट्रिक टन फोस्फेटिक उर्वरक वितरित किये गये। पहली योजना में ७१२३ मैट्रिक टन एमोनियम सल्फेट एवं ६२५ मैट्रिक टन सुपर फास्फेट उर्वरक वितरित किये गये।

१९६८–६९, १९६९–७० व १९७०–७१ में विभिन्न उर्वरकों की खपत राज्य मे इस प्रकार हुई :—

राजस्थान में उर्वरक–खपत
(टनों में)

खाद	१९६८–६९	१९६९–७०	१९७०–७१
१. नाइट्रोजन	१,१४,५००	१,२६,०५६	१,८५,०००
२. फास्फेरिक	३६,५४८	४०,१२३	५४,०००
३. पोटास	२,१६५	२,४२९	१,०००

उन्नत बीज एवं यंत्र

प्रथम योजना अवधि में ९१४२ मैट्रिक टन उन्नत बीज वितरित किये गये एवं यांत्रिक कृषि को प्रोत्साहित करने के लिए १९९ ट्रैक्टरों की खरीद के लिए १४·१६ लाख रुपये का ऋण दिया गया। दूसरी योजना में ३८ बीज उत्पादन फार्म तथा १७४ बीज गोदामों की स्थापना की गई। १६·७५ लाख हेक्टेयर भूमि में उन्नत बीजों का प्रयोग किया गया। कृषकों को २०,००० उन्नत कृषि यन्त्र दिये गये। तीसरी योजनावधि में ४५·७० लाख हेक्टेयर भूमि पर उन्नत बीजों का प्रयोग किया गया। योजनाकाल में २७·८८ लाख क्विंटल उन्नत बीजों का वितरण किया गया। १२ बीज उत्पादन फार्मों की स्थापना की गई एवं ५० बीज गोदामों का निर्माण किया गया। राज्य में १·४३ लाख विभिन्न कृषि-यन्त्रों का वितरण किया गया।

विशेष किस्म का उत्पादन–कार्यक्रम

१९६६–६७ से एक नई किस्म के बीज की खोज की गई है जो सामान्य बीज से ३–४ गुणा उत्पादन करता है। विभिन्न संकर जाति के बीजों की पैदावार राजस्थान में इस प्रकार से प्राप्त हुई।

(क्षेत्र हेक्टेयर में)

फसलें	१९६६–६७	१९६९–७०	१९७०–७१	१९७१–७२ (लक्ष्य)
१. संकर बाजरा	१,१६४	१,९१,२६३	२,८१,०००	४,००,०००
२. संकर मक्का	४,८८५	२६,९४०	२२,८००	२०,०००
३. संकर ज्वार	१,२६१	६३,८५४	११,२००	३०,०००
४. धान (Paddy)	२२२	१०,२६६	१७,१००	३०,०००
५. गेहूँ	६,५००	२,८८,५९५	३,६०,०००	४,००,०००

उच्च उत्पादन किस्म बीजों की प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता औसत इस प्रकार रही है : मक्का ७,८३५ किलो; ज्वार ७,५०० किलो; बाजरा ६,५२७ किलो; धान २,१०० किलो से ५,५०० किलो तक उत्पादन विभिन्न स्थानों पर रहा है।

सघन कृषि कार्यक्रम

सघन कार्यक्रम राजस्थान में दूसरी योजना अवधि से पाली जिले में शुरू किया गया। तीसरी योजना के अन्त में बाजरे के लिए अलवर जिले में, ज्वार के लिए कोटा जिले व झालावाड़ जिले में गेहूँ के लिए जयपुर, भरतपुर, गंगानगर, चित्तौड़गढ़ एवं उदयपुर जिलों में एवं सरसों व राई के लिए अलवर, भरतपुर और गंगानगर जिलों में चालू किया गया है।

कृषि अनुसंधान

कृषि उत्पादन पर अनुसंधान कार्य हेतु १९५७ में पाली व अजमेर में दो शुष्क कृषि प्रदर्शन केन्द्र स्थापित किये गये हैं। १९५५ में उदयपुर कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। राज्य में चार जगह—जोधपुर, झुंझुनू, सरदारशहर एवं पाली में वनस्पति-शालाएँ स्थापित की गई हैं जिनमें मरुस्थल के अनुकूल पेड़-पौधे उगाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं।

भूमि-संरक्षण के अनुसंधान-कार्य में केन्द्रीय-भूमि-संरक्षण-परिषद का कोटा में स्थापित अनुसंधान-केन्द्र चम्बल व अन्य नदियों के तटों पर होने वाले कटावों का अध्ययन करता है।

मिट्टी परीक्षण की प्रयोगशालाएँ राज्य में ४ जगह कार्य कर रही हैं—दुर्गापुरा (जयपुर), जोधपुर, कोटा एवं गंगानगर। इसके अतिरिक्त कृषि विभाग की ओर से 'चलती-फिरती मिट्टी व पानी परीक्षण प्रयोगशालाएँ' भी शुरू की गई हैं जो मिट्टी व पानी का परीक्षण करके किसानों को फसल उगाने के तरीकों एवं उर्वरकों की आवश्यकताओं के बारे में सुझाव देती है।

कृषि-उद्योग निगम

कृषि-क्षेत्र को उन्नत मशीनें एवं उपकरण प्रदान करने के लिए विभिन्न राज्यों में कृषि-उद्योग निगम की स्थापना केन्द्र व राज्य सरकार के पूँजी में ५१ : ४६ के अनुपात में साझेदारी में स्वायत संस्था के रूप में की गई है। राजस्थान में इसका प्रमुख कार्यालय जयपुर में है। इसके ८ शाखा केन्द्र—कोटा, हनुमानगढ़, नागौर, चित्तौड़गढ़, भरतपुर, अलवर, पाली व जोधपुर में है। ट्रेक्टर 'जीटर–२५११' की राज्य में बिक्री का एकाधिकार इसी के पास है। अलवर, भरतपुर, पाली, विजयनगर व भीलवाड़ा में इसके सर्विस सेन्टर हैं तथा शीघ्र ही राज्य में ८० नये सर्विस सेन्टर खोलने की योजना कृषि-उद्योग निगम की है। निगम द्वारा बुलडोजर, हारवेस्टर-कम्बाइनर व ट्रेक्टर आदि की सेवायें उपलब्ध हैं।

एन० एस० सी० बीज

विभिन्न प्रकार की फसलों के लिए नये व अधिक उत्पादन देने वाले बीजों को उपलब्ध कराने के लिए भारत सरकार ने नेशनल सीड्स कार्पोरेशन लि० की स्थापना की है। राजस्थान में इसका कार्यालय जयपुर में है तथा श्री गंगानगर, जोधपुर, अजमेर, उदयपुर व कोटा में इसकी उप-क्षेत्रीय इकाइयाँ हैं। यहाँ से गेहूँ-कल्याण, सोना, एच.डी.एम १५६३, हीरा तथा मोती आदि एवं सरसों-सुफला, डी.एस. १७ एवं अन्य विभिन्न प्रकार की सब्जियों की सुधरी व उत्तम किस्म एवं हर किस्म के फूलों के बीज उपलब्ध होते हैं।

◆◇◆◇◆◇◆◆

१० | पशु-धन
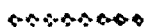
गाय-बैलों की कुछ सर्वश्रेष्ठ नस्लें राजस्थान में पायी जाती हैं, जिनमें प्रमुख हैं— नागौरी, साँचोर, थारपाकर, राठी, हरियाणा और मालवी।

नागौरी नस्ल नागौर जिले में होती है। तेज चलने वाले भारवाही पशुओं में नागौरी बैलों का प्रथम स्थान है। साँचोरी नस्ल की गायें बहुत दूध देती हैं तथा बैल भारी कामों के लिए अच्छे हैं। ये जालौर और पाली जिले में पाये जाते हैं। राठी नस्ल के पशु अलवर, भरतपुर और धौलपुर में पाये जाते हैं। इस नस्ल की गायों की खुराक कम होती है एवं दूध अधिक देती हैं।

राजस्थान में भेड़ों की सबसे मशहूर नस्ले हैं। बीकानेर की नाली, चौकला और मगरा; जैसलमेर की जैसलमेरी और जोधपुर की मारवाड़ी चौकला भेड़ कपड़ा बनाने वाली ऊन के लिए बहुत प्रसिद्ध है।

ऊँटों की मशहूर नस्लें राजस्थान में ही पायी जाती है। जैसलमेरी ऊँट हल्के बदन व तेज चाल का होता है। बीकानेरी नस्लें भारी बोझ ढोने के लिए मशहूर है।

घोड़ों की मशहूर नस्ल मुलानी, बाड़मेर और जालौर जिलों में पायी जाती है।

राजस्थान में पशु-धन

पशु-धन	१९६६ की पशु-गणनानुसार (हजारों में)
१. गाय-बैल	१३,१२३
२. भैंस-भैंसा	४,२२२
३. भेड़	८,८०६
४. बकरी	१०,३२३
५. घोड़े व टट्टू	६३

पशु-धन	१९६६ की पशु-गणनानुसार (हजारों में)
६. खच्चर	१
७. गधे	२००
८. ऊँट	६५४
९. सूअर	८३
कुल पशुधन	३७,४७५
कुक्कुट इत्यादि	८६५

पशु-धन की उन्नति

अलवर, बस्सी और नागौर में तीन पशु प्रजनन केन्द्रों की स्थापना की गई है। बीकानेर में एक पशु-चिकित्सा कॉलेज चालू किया जा चुका है। १९५९ में बीकानेर में एक अखिल भारतीय ऊँट-प्रजनन फार्म स्थापित किया गया है। भेड़ों के विकास के लिए एक 'भेड़ विकास योजना', विश्व बैंक के पास विचार के लिए पड़ी हुई है।

१९६९–७० में राज्य में ३९ गोशालाएँ थीं। पशु-चिकित्सालयों की संख्या २०९, डिस्पेंसरी १२३ व भ्रमणशील इकाइयां ३१ थीं। कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र ३७ एवं की-ग्राम्य-केन्द्र १३५ थे।

दुग्ध योजनाएं

राज्य सरकार ने सर्वप्रथम जयपुर में १९६२–६३ में पाइलेट-प्रोजेक्ट के रूप में दुग्ध वितरण की योजना आरम्भ की थी। उसके तत्काल पश्चात् ही न्यूजीलैण्ड सरकार से आधुनिक उपकरण प्राप्त होने पर फरवरी १९६५ में दुग्ध वितरण योजना को प्रारम्भ किया गया। इस प्लांट में २०,००० लीटर दूध के पाश्चुराइजेशन की क्षमता है।

राज्य के अन्य बड़े नगरों में भी डेरी खोलने की दिशा में प्रयत्न किये जा रहे हैं। जोधपुर में डेरी का कार्य शुरू हो गया है। अजमेर व कोटा की डेरी योजनाएं भी स्वीकृत हो चुकी हैं। अलवर, भरतपुर, भीलवाड़ा आदि की डेरी योजनाओं पर भी वार्ता चल रही है।

दुग्ध योजनाएं ग्रामीण जनता का आर्थिक स्तर ऊंचा उठाने में काफी सहायक होंगी ।

मत्स्य

राजस्थान में मछली की आंतरिक खपत बहुत कम होने के कारण यहां बहुत अधिक मछलियां नहीं पकड़ी जाती । यहाँ पर औसतन २२०० टन मछलियां सालाना पकड़ी जाती है । राज्य सरकार ने मछली विकास के लिए मत्स्य विभाग की अलग से स्थापना की है । यहां मछलियां नदियों व तालाबों में पकड़ी जाती हैं । विभिन्न बांधों में भी मछलियों को विकसित करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं । राज्य में मछली पकड़ने व पालने के लिए उपयुक्त नदियां—चंबल, बनास, पार्वती, कालीसिंध तथा माही है । अन्य सभी नदियां छिछली होने के कारण अनुपयुक्त है । झीलों व तालावों की मछलियां अलवर, जयपुर, अजमेर, पाली, उदयपुर, भीलवाड़ा, कोटा, टोंक, सवाईमाधोपुर व धौलपुर में पकड़ी जाती हैं । राजस्थान नहर के पूर्ण तैयार होने पर इसमें भी काफी मात्रा में मछलियां पकड़ी जा सकेंगी । वर्तमान में मछलियों का निर्यात दिल्ली व आगरा आदि स्थानों पर किया जाता है ।

कुक्कुट

राजस्थान में १९६६ की गणनानुसार ८६५ हजार कुक्कुट आदि थे । राज्य-सरकार दो मुर्गी-पालन केन्द्र जयपुर व अजमेर में वर्तमान में चला रही है तथा जयपुर में अण्डा विक्री की भी एक नई योजना शुरू की गई है जिसके अन्तर्गत शहर के महत्वपूर्ण स्थानों पर खुदरा विक्री की बूथें खोल दी गई हैं। इसके अलावा कुक्कुट विकास के अन्य कार्य भी किए जा रहे हैं ।

११ | वन एवं वन्य पशु

राजस्थान में शुष्क जलवायु होने के कारण वन बहुत ही कम है। मुख्यतया मरुस्थलीय वन एवं उष्णघास के क्षेत्र राज्य मे मिलते हैं। यहाँ १३ लाख हेक्टेयर भूमि पर वन है जो कुल राज्य के भू-भाग का ३·५% हिस्सा है।

वनों के प्रकार

(१) मरुस्थलीय वन :—वार्षिक ५० से० मी० से कम वर्षा वाले भागों में ये वन पाये जाते हैं। राजस्थान के दक्षिणी-पूर्वी भाग को छोड़कर सम्पूर्ण राज्य में ये वन पाये जाते हैं। इनमें कांटेदार झाड़ियाँ पायी जाती हैं। प्रमुख पाये जाने वाले वृक्ष 'बबूल' हैं। आबू व जोधपुर क्षेत्र में आंवले की झाड़ियाँ होती हैं। जिनकी पत्तियाँ वर्ष भर हरी रहती हैं। इसके अतिरिक्त कीकर, करील, खेजड़ा, कैर आदि के पेड़ पाये जाते हैं।

(२) उष्ण घास के क्षेत्र :— इसके अन्तर्गत कांस मूंज, सवाईघास व इसी प्रकार की दूसरी घासें पायी जाती हैं। इन घासों के मध्य में आम जामुन, नीम, पीपल व बरगद आदि के वृक्ष पाये जाते हैं। राजस्थान के उत्तरी-पूर्वी भागों में यह क्षेत्र प्रमुख रूप से पाया जाता है।

वनों की उपज

यद्यपि राजस्थान में वन बहुत सीमित हैं तथापि उनसे विभिन्न प्रकार की बहु-उपयोगी वस्तुएं प्राप्त होती है। जलाने की लकड़ी व कोयला, इमारती लकड़ी, बाँस, कत्था, गोंद, आंवला तेंदु की पत्तियाँ, खस, घास व महुआ आदि उत्पादन प्रमुख रूप से प्राप्त होते हैं। शहद व मोम भी वनों के माध्यम से उपलब्ध होता है।

वन उत्पादन का राजकीय व्यापार

१९६८–६९ मे राज्य सरकार ने एक नया कदम उठाया है। पहले वनों को ५ वर्षों के लिए सरकार निलामी कर देती थी, परन्तु अब सरकार अपने विभाग

के अन्तर्गत यह व्यापार स्वयं करने लग गई है। इमारती लकड़ी, तेंदु के पत्ते व बांस आदि सभी चीजों का अब सरकारी विभागीय इकाई के अन्तर्गत व्यापार होता है। १९६९–७० में सरकार ने ऐसे व्यापार से २६·०८ लाख रुपये कमाये।

राजस्थान में वनों से प्राप्त राजस्व

(लाख रुपये में)

विवरण	वर्ष	
	१९६८–६९	१९६९–७०
१. प्रमुख उत्पाद	३·२९	६·३५
२. सहायक उत्पाद	५९·६१	४१·३२
(१) बांस	११·९०	३·४०
(२) आंवला	१·५०	१·२३
(३) गोंद	४·८८	५·२९
(४) घास	१६·४६	१३·४७
(५) कत्था	१८·७०	८·८०
(६) तेंदुकी पत्तियाँ	४·८०	३·३७
(७) अन्य	१·३७	५·७६
३. अन्य स्रोत	३०·४०	२६·४८
४. राजकीय व्यापार	—	२६·०८
योग	९३·३०	१००·१८

अनुसंधान :

केन्द्रीय भूमि संरक्षण संस्था राजस्थान में दो केन्द्रों, कोटा एवं जोधपुर में परीक्षण कर रही है।

मरुस्थल में पेड़-पौधों के विकास के लिये चार प्रयोगशालाएँ—जोधपुर, जोधपुर, झुंझुनूं, सरदारशहर एवम् पाली में स्थापित की गई हैं।

केन्द्रीय मरुस्थलीय अनुसंधान शाला भी जोधपुर में मरुभूमि के विकास के लिये कार्य कर रही है। चारागाह विकास योजना भी राजस्थान में ६ जिलों में शुरू की गई है। जैसलमेर-मालवपुर सीमा स्थित मरुभूमि की एक ६४ किलोमीटर लम्बी एवं ८ किलोमीटर चौड़ी पट्टी पर वनस्पति पैदा कर हरियाली की गई है।

वन्य पशु

राजस्थान वन्य पशुओं का चिड़ियाघर है। यहाँ सिंह, व्याघ्र, चीता, हाथी, हरिन, जंगली सुअर, सियार, भैंसा, भेड़िया, बन्दर, बारहसिंगा, तेंदुआ, कालाहरिन, आदि अनेकानेक पशु मिलते हैं। विभिन्न प्रकार के पक्षी भी यहाँ की भूमि पर देखे जा सकते हैं जैसे बत्तक, बाज, बुलबुल, मोर, सारस, सुग्गा, चमगादड़, उल्लू, कठफोड़वा, कौवा, कबूतर, गिद्ध व विभिन्न चिड़ियाँ आदि आदि।

इन पशु-पक्षियों के संरक्षण एवं पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये राजस्थान में सेंक्चुरिज भी हैं। प्रमुख वन्य पशु-पक्षी सेंक्चुरियां निम्न हैं:—

१. सरिस्का (टाइगर के लिए)—जयपुर-दिल्ली मार्ग पर दिल्ली से २०० किलोमीटर दूर राजस्थान में ४६६२० हेक्टर क्षेत्र में सरिस्का सेंक्चुरी टाइगर देखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। यहाँ रात्रि में सड़क पर टाइगर, साभर व हरिण आदि आसानी से देखे जा सकते हैं। सरिस्का एक बहुत बड़ी घने जंगलों की घाटी है। जिसमें मुख्य सड़क से ४० किलोमीटर अन्दर हजारों वर्ष पुराना नीलकण्ठ का मंदिर भी है।

२. केवलादेव घना का पक्षी विहार—भरतपुर के पास २९०० हेक्टर क्षेत्र में यह सेंक्चुरी फैली हुई है। यहाँ लगभग २५० किस्म/जाति के विभिन्न पक्षी हैं जिनमें ६५ विदेशी भी हैं। यहाँ साइबेरिया के पक्षी भी आते हैं सफेद बत्तक, सारस और हँस यहाँ महत्वपूर्ण हैं।

३. वन विहार एवं रामसागर सेंक्चुरी (धौलपुर)—धौलपुर से २० किलोमीटर दूर वन विहार है। यहाँ एक झील है जिसमें विभिन्न पक्षी रहते हैं। वहाँ से १८ किलोमीटर दूरी पर रामसागर सेंक्चुरी है जहाँ धौलपुर के महाराजा आते थे।

४. तालछापर (काला हरिण) सेंक्चुरी—बीकानेर-जयपुर मार्ग पर सुजानगढ़ से १२ किलोमीटर दूर ८२० हेक्टर क्षेत्र में विस्तृत काले हरिणों की सेंक्चुरी है। दुर्लभ हरिण यहाँ आसानी से देखे जा सकते हैं।

५. सवाईमाधोपुर सेंक्चुरी—यह सेक्चुरी पशु व पक्षियों दोनों की मिश्रित है। यहाँ पर जंगली चीता, भालू, सूअर, सांभर पशुओं के अतिरिक्त अन्य चिड़ियाँ भी देखी जा सकती हैं। यहाँ १३वीं शताब्दी का एक किला व २ बड़े तालाब हैं।

६. दारा सेंक्चुरी(कोटा)—कोटा से ४० किलोमीटर दूर कोटा-इन्दौर सड़क पर घाटी के अन्दर यह सेक्चुरी है। यहाँ विभिन्न पशु व पक्षी हैं। यहाँ वन विभाग का एक रेस्टहाऊस भी है।

७. जयसमंद वन्य जीव सेंक्चुरी (उदयपुर)—उदयपुर से ५० किलोमीटर दूर यह एक कृत्रिम झील है जिसमें कोई २४० जाति की चिड़ियाँ है। विभिन्न हरिन भी यहाँ प्राप्य हैं।

८. माऊंट आबू सेक्चुरी—लगभम ११२ वर्ग किलोमीटर में फैले इस पर्वत प्रदेश में वन्य पशुओं का वाहुल्य है। चीता, शेर, भालू, सांभर तथा पक्षियों में विभिन्न किस्म यहाँ पाये जाते हैं। यह वन विभाग द्वारा आरक्षित क्षेत्र है।

१२ | सिंचाई

कृषि के उद्देश्य से जहां आवश्यक हो, कृत्रिम रूप से पानी देने को सिंचाई कहते हैं। राजस्थान में सिंचाई के प्रमुख साधन नहरें, तालाब व कुएँ हैं। लगभग २० लाख ऐक्टर क्षेत्र में राजस्थान में सिंचाई की जाती है। राज्य के सिंचाई के विभिन्न साधन और उनका सिंचित क्षेत्र निम्न तालिका में अंकित किया गया है :—

राजस्थान में सिंचित क्षेत्र

साधन	सिंचित क्षेत्र ('००० हेक्टर)	
	१९६७-६८	१९६८-६९
नहरें	६०६	७०१
तालाब	२५२	२१६
कुएँ	९९८	११८८
अन्य साधन	९	११
कुल	१८६५	२११६

सिंचाई परियोजनाएं

राज्य की प्रमुख महती सिंचाई परियोजनाएं एवं उनकी अनुमानित लागत इस प्रकार है :—

परियोजना	कुल अनुमानित लागत (करोड़ रुपये)	सिंचित क्षेत्र ('००० हेक्टर)	
		पूरी होने पर	१९६९–७०
१. चम्बल	३९·४३	२८३·३	१३७·६०
२. गंगानहर	सम्पूर्ण	—	२४५·३७
३. जवाई	२·५०	८·७०	०·८०
४. बनास	१०·०७	६४·८०	शुरू नहीं
५. भाखरा नांगल	२३·४०	२३०·७०	२५९·००
६. माही	४·९५	३०·८०	शुरू नहीं
७. राजस्थान नहर	२७१·००	११६३·००	१३८·४०

राजस्थान में विभिन्न सिंचाई परियोजनाएँ निम्नलिखित हैं :—

१. गंग नहर—बीकानेर एवं श्रीगंगानगर क्षेत्र में गंगनहर से लगभग ३,२०,००० हेक्टेयर भूमि को सिंचाई की सुविधा प्राप्त होती है। यह १९२७ में बनकर तैयार हो गई थी। बीकानेर के तात्कालीन महाराज गंगासिंह ने इसका निर्माण कराया था। यह सतलज नदी से पानी लेकर आती है।

२. भाखरा नहर—पूर्वी पंजाब के साथ राजस्थान सरकार ने १५·२% साझेदारी में सतलज नदी से भाखरा नहर का निर्माण करवाया है। इस योजना में गंगानगर जिले की भादरा, नौहर, सूरतगढ़, हनुमानगढ़, रायसिंहनगर, पदमपुर, और गंगानगर की तहसीलों में सिंचाई हो सकेगी। कुल सिंचित क्षेत्र लगभग ६ लाख एकड़ भूमि हो सकेगा।

३. राजस्थान नहर—इस नहर का मुख्य प्रवाह क्षेत्र हनुमानगढ़, सूरतगढ़, अनूपगढ़, रायसिंहनगर, बीकानेर, जैसलमेर तथा रामगढ़ तहसीलों की भूमि है। इस योजना के पूरे होने पर लगभग ३३ लाख एकड़ क्षेत्र में सिंचाई हो सकेगी। राजस्थान नहर के बारे में विशेष जानकारी अगले अध्याय में प्रस्तुत की गई है।

४. चम्बल घाटी परियोजना—इस योजना का उद्देश्य राजस्थान और मध्यप्रदेश की भूमि के ५,६६,००० हेक्टेयर क्षेत्र को सींचना और २,१५,००० किलोवाट

विजली का उत्पादन करना है । इसे तीन चरणों में पूरा करने की योजना बनाई गई है । प्रथम चरण में गांधीसागर बांध, कोटा बैरेज, बांध पर जल विद्युत गृह तथा सिंचाई के लिये नहरों का निर्माण करना था । यह चरण १९६० में पूरा हो गया । दूसरे चरण में राणाप्रताप सागर बांध व इस पर जल विद्युत गृह का निर्माण करने की व्यवस्था की गई है । यह बांध भी बन चुका है । कोटा बांध और उसका विजली घर तीसरे चरण में बनाये जावेंगे । इन पर कार्य चल रहा है । इस योजना से राजस्थान के कोटा, बूंदी, भरतपुर और सवाई माधोपुर जिलों की १९ तहसीलों व मध्यप्रदेश की १२ तहसीलों में सिंचाई होगी । तथा इससे लगभग ३८६ मेगावाट जल-विद्युत तैयार हो सकेगी । इस योजना पर कुल व्यय १ अरब रुपये के करीब होने का अनुमान है ।

५. व्यास परियोजना—यह पंजाब, हरियाणा व राजस्थान तीनों की संयुक्त परियोजना है । जाड़े के दिनों में राजस्थान नहर को पानी की पूर्ति कम हो जाती है उस पूर्ति को बनाये रखने के लिये व्यास नदी पर पोंग स्थान पर ११६ मीटर ऊँचा बांध बनाया जा रहा है । इससे तीनों राज्यों के २१ लाख एकड़ अतिरिक्त क्षेत्र पर सिंचाई सुविधा मिलने लगेगी । इस पर २·६ लाख किलोवाट क्षमता का शक्ति गृह भी बनाया जावेगा । कुल लागत १९८ करोड़ का अनुमान है । बांध के १९७३ में ही पूरे होने की आशा है ।

६. जवाई परियोजना—मई १९४७ में जवाई परियोजना का कार्य शुरु किया गया । जवाई नदी राजस्थान के दक्षिण-पश्चिम में पाली जिले में प्रवाहित होती है । जवाई बांध की लम्बाई ९२३·५० मीटर व ऊँचाई ३४·७५ मीटर है । इस बांध का क्षेत्रफल १० वर्ग मील है । इस योजना से ४६ हजार एकड़ भूमि में सिंचाई हो सकेगी ।

७. माही परियोजना—माही नदी पर बांसवाड़ा के पास बोरखेड़ा ग्राम में एक बांध बनाकर इस योजना से सिंचाई व विद्युत् दोनों लाभ प्राप्त करने की योजना है । इस परियोजना के अन्तर्गत बनने वाली मुख्य नहर १०४ किलोमीटर लम्बी होगी । इससे बांसवाड़ा जिले की लगभग ७६ हजार एकड़ भूमि में सिंचाई हो सकेगी । पांचवी योजना के अन्त तक इसका कार्य पूरा होने की आशा है ।

८. पार्वती परियोजना—पार्वती नदी पर धौलपुर से ५० किलोमीटर दूरी पर एक जलाशय बनाकर नहर निकाली गयी है । इससे ३५ हजार एकड़ भूमि पर सिंचाई हो सकेगी । योजना १९६१ में पूरी हो चुकी है । लागत १·१० करोड़ रु० हुई है ।

९. मोरेल परियोजना—मोरेल नदी पर सवाईमाधोपुर जिले के लालसोट के करीब एक मिट्टी का बाँध बना कर १४ हजार एकड़ भूमि पर सिंचाई के लिये नहरों का निर्माण किया गया है ।

१०. सरेरी परियोजना—मासी नदी पर सरेरी गाँव के पास एक मिट्टी का बाँध बनाया गया है । इस पर ३० लाख रु० व्यय हुए हैं । निर्माण १९६० में हुआ ।

११. नमानो परियोजना—१९५९ में बनास नदी पर नाथद्वारा से लगभग ८ किलोमीटर दूरी पर यह मिट्टी का बाँध है ।

१२. काली सिल परियोजना—करौली क्षेत्र में, मोरेल की सहायक नदी काली-सिल नदी पर मिट्टी का बाँध बनाकर नहरें निकाली गयी है, इससे १४,००० एकड़ भूमि पर सिंचाई होगी ।

१३. गुढ़ा परियोजना—मेजा नदी पर बूंदी से २० किलोमीटर दूर मिट्टी का एक बाँध बना कर नहरें निकाली गयी है । जिससे ३७ हजार एकड़ भूमि में सिंचाई हो रही है । इसका कार्य १९६१ में पूरा हो गया । कुल लागत ७१ लाख रु० हुई ।

१४. गम्भीरी परियोजना—चित्तौड़गढ़ से ३२ किलोमीटर पर गम्भीरी नदी पर एक बाँध बनाया गया है । इसमें ३८५० किलो फीट पानी एकत्र होता है ।

१५. जुग्गर परियोजना—जुग्गर नदी पर हिंडौन के समीप मिट्टी का एक बाँध बनाकर ९ हजार एकड़ भूमि पर सिंचाई की व्यवस्था की गई है ।

१६. मेजा बाँध—भीलवाड़ा जिले में मण्डल ग्राम के पास कोठारी नदी पर बनी यह एक बड़ी योजना है । इससे मण्डल को अतिरिक्त पानी मिल सकेगा । इससे ९.७ हजार हेक्टर भूमि में सिंचाई हो सकेगी ।

१७. बाँकली परियोजना—सूकड़ी नदी, जो लूनी नदी की सहायक नदी है, पर एक मिट्टी का बाँध बनाया गया है । इससे जालौर क्षेत्र में सिंचाई हो रही है ।

१८. भरतपुर नहर—यह आगरा नहर से निकाली गयी है । इससे ११ हजार एकड़ भूमि पर सिंचाई होती है । इसे गोवर्धन शाखा नहर भी कहते हैं ।

१९. अन्य—इनके अलावा कुछ अन्य महती व मध्य सिंचन परियोजनायें हैं जिनके लिए राज्य सरकार ने स्वीकृति देदी है तथा १९७३-७४ के 'बजट अनुमान'

में जिनका ब्यौरा है। ऐसी परियोजनाएँ निम्नांकित हैं—(१) झाखम परियोजना, (२) नारायण सागर परियोजना, (३) बड़गाँव पाल, (४) वल्लभनगर पाल, (५) ओराई सिंचन-परियोजना, (६) गुड़गाँव नहर, (७) जेतपुरा परियोजना, (८) खारी फीडर, आदि-आदि। इनके अतिरिक्त कुछ और मझली परियोजनाएँ जो सम्पूर्ण हो चुकी हैं तथा उनसे सिंचाई की जाती है ये निम्न हैं—(१) सुखाल, (२) लोडीसरी का नाला, (३) गाडोल, (४) सखानिया, (५) अखार, (६) खारी, (७) मासी, (८) गलवा, (९) परवान, (१०) काली सिंध, (११) भीमसागर तथा (१२) बूंदी का गोथरा आदि।

राजस्थान में उपलब्ध जल-स्रोत

नदी घाटी योजना	कुल जल ग्रहण क्षेत्र (वर्ग मील)	कुल उपलब्ध जल (मेगाघनफुट)	जल-प्रयोग (मेगाघनफुट)	अतिरिक्त जल (मेगाघनफुट)
१	२	३	४	५
१. बनास नदी घाटी	१७,६४५	१,२३,२२६	९०,२८५	३२,९४१
२. चम्बल नदी घाटी	१०,६९१	१,३८,३६२	३५,८१९	१,०२,५४३
३. माही नदी घाटी	७,९०६	२,६९,८०२	१,८१,८९१	८७,९११
४. साबरमती नदी घाटी	१,४८५	२२,६२८	२,४७३	२०,१५५
५. साबी नदी घाटी	१,७५०	५,४९०	४,४४१	१,०४९
६. बाणगंगा नदी घाटी	२,६०५	१४,६२०	७,७०५	६,९१५
७. बरान (रूपरैले) घाटी	१,२४५	५,१९३	४,१३५	१,०५८
८. गम्भीरी नदी घाटी	१,९००	१४,०१०	५,८१६	८,१९४
९. पार्वती नदी घाटी	७०७	७,०००	६,१८४	८१६
१०. पश्चिमी बनास घाटी	७२२	७,९७४	२,२४२	५,७३२
११. सूकली नदी घाटी	३६५	२,०४७	४५६	१,५९१
१२. लूनी नदी घाटी	१३,३८०	३०,६७१	१३,६११	१७,०६०
१३. जालोर के अन्य नाले	१८२	४४४	१७६	२६८
१४. शेखावाटी क्षेत्र	२,२७३	६,७७०	४,४६८	२,३०२
योग	६२,८५६	६,४८,२३७	३,५९,७०२	२,८८,५३५

अन्य राज्यों से महत्वपूर्ण जल समझौते

परियोजना	लाभान्वित क्षेत्र (लाख एकड़)	विवरण
१. भाखरा व गंग नहर	११·७०	पंजाब सरकार से समझौता, योजना कार्य-रूप में परिणत हो चुकी है।
२. राजस्थान नहर	३०·००	पंजाब सरकार के साथ समझौता, परियोजना का निर्माण कार्य चालू है।
३. चम्बल परियोजना	७·००	मध्यप्रदेश सरकार से समझौता व सहयोग।
४. सिधमुख योजना	१·५०	पंजाब तथा हरियाणा सरकारों से समझौता। परियोजनाओं का कार्य प्रगति पर है।
५. नोहर योजना	१·७०	
६. गुड़गाँव नहर तथा भरतपुर फीडर	१·५०	उत्तरप्रदेश सरकार से समझौता, कार्य प्रगति पर है।
७. यमुना स्कीम	—	— — —
८. नर्वदा एवं कड़ाना नहरें	६·००	नर्वदा ट्रिबुनल के निर्णयाधीन।

राजस्थान की कुछ प्रमुख नदियों के नाम

१. चम्वल (कोटा), २. वनास (सिरोही), ३. कोठारी (उदयपुर), ४. खारी (उदयपुर) ५. मासी (उदयपुर), ६. वड़ेच (उदयपुर), ७. ढ़िल (उदयपुर), ८. मोरेल (सवाईमाधोपुर), ९. लूनी (जोधपुर), १०. सूकड़ी (जालौर), ११. जवाई (मारवाड़), १२, जोजरी (जोधपुर), १३. घग्घर (गंगानगर), १४. पार्वती (कोटा), १५. माही (वांसवाड़ा), १६. काली सिंध (झालावाड़), १७. परवन (झालावाड़), १८. आहू (कोटा), १९. वाणगंगा (जयपुर), २०. काकनी (जैसलमेर), २१. सावी (जयपुर), २२. सोम (उदयपुर), २३. गम्भीरी (उदयपुर), २४. मेजा (वूंदी), २५. सावरमती (जालौर) ।

राजस्थान की प्रमुख झीलें एवं जलाशय

मीठा पानी :

अजमेर—आनासागर, फाईसागर, पुष्कर

अलवर—सिलीसेढ

वूंदी—नवलखा सागर

वीकानेर—गजनेर, अनूपसागर, सूरसागर, कोलायत

भरतपुर—वरैठा वँध

धौलपुर—तालावशाही

जयपुर—रामगढ़ वँध

जोधपुर—वाल समंद, सरदार समंद, प्रतापसागर, उम्मेदसागर, कैलानाझील

उदयपुर—जयसमुद्र, राजसमंद, पिछोला, फतेहसागर, उदयसागर

जैसलमेर—घारसी सागर

माऊंट आबू—नक्की झील, ट्रैवलताल

खारा पानी :

१. साँभर झील

२. डीडवाना झील

३. पंचभद्रा झील

४. लूणकरणसर झील

१३ | राजस्थान नहर

पाकिस्तान के साथ हुए समझौते 'सिंधु-जल-संधि' के अनुसार भारत सतलज, रावी और व्यास तीनों नदियों के पूरे पानी का उपयोग कर सकता है। इन नदियों के अतिरिक्त जल का सर्वोत्तम उपयोग राजस्थान की मरूभूमि की प्यास बुझाने में समझा गया। फलस्वरूप राजस्थान नहर परियोजना अस्तित्व में आई।

उद्गम व स्वरूप

राजस्थान नहर हरिके बैराज से प्रारम्भ होकर जैसलमेर में रामगढ़ तक ६८५·४० किलोमीटर लम्बी होगी। इसमें २१५·६० किलोमीटर तो फीडर नहर है तथा ४६९·४० किलोमीटर लम्बी मुख्य नहर। इसके अतिरिक्त इसकी शाखा तथा उपशाखाओं की लम्बाई लगभग ६१४२ किलोमीटर तथा खेतों में बहने वाली नालियों की कुल लम्बाई ६४५०० किलोमीटर होगी।

राजस्थान नहर में पानी व्यास नदी से आयेगा और वर्ष पर्यन्त पानी की पूर्ति के लिए एक बहुत बड़े बांध का निर्माण किया गया है। बांध में पानी के एकत्रीकरण के समय उसका उपयोग विद्युत-शक्ति निर्माण में करने का पर्याप्त ध्यान रखा गया है, फलस्वरूप व्यास नदी पर निम्न दो बड़ी परियोजनाएं हाथ में ली गई हैं :—

(१) **प्रथम यूनिट** :—व्यास-सतलज-लिंक और बिजली घर। यह मुख्यतः विद्युत परियोजना है और इसमें सिंचाई की बहुत कम व्यवस्था है।

(२) **द्वितीय यूनिट (पौंग बांध)** :—यह मुख्यतः सिंचाई योजना है।

पौंग बांध

राजस्थान का सम्बन्ध मुख्यतः पौंग बांध से है जिसका निर्माण व्यास नदी

पर पौंग ग्राम के पास तजवीज किया गया है। यह बांध ११६ मीटर ऊंचा होगा। इसकी अनुमानित लागत १७० करोड़ रुपये होगी। १९७३–७४ में यह बांध बनकर तैयार होने की आशा है।

व्यास-सतलज-लिंक

व्यास-सतलज-लिंक पर पांडो स्थान पर एक ६१ मीटर ऊंचा बांध बनाकर १२–१३ किलोमीटर लम्बी दो सुरंगें एवं एक खुली विद्युत नहर बनायी जायेंगी। जिसमें विद्युत उत्पादन भी हो सकेगा। इस परियोजना का निर्माण कार्य पांचवी योजना के शुरू में पुरा होने की आशा है।

निर्माण व्यय

नवीनतम परिवर्तित अनुमानों के अनुसार इस परियोजना पर २८२·१८ करोड़ रुपये खर्च होंगे, जिसमें पौंग बांध व हरिके बैराज की लागत का हिस्सा भी सम्मिलित है। राशि की मुख्य मदों का विभाजन इस प्रकार है :—

१.	राजस्थान नहर के प्रथम व द्वितीय चरण पर व्यय	२०७·६८ करोड़ रु०
२.	हरिके बैराज और पौंग बांध पर खर्च का हिस्सा	७४·५० करोड़ रु०
	कुल	२८२·१८ करोड़ रु०

प्रगति की झलक

राजस्थान नहर परियोजना का निर्माण दो चरणों में करने का प्रस्ताव है। प्रथम चरण के अन्तर्गत राजस्थान फीडर का निर्माण जो २१५·६० किलोमीटर लम्बा है, जिसका निर्माण हो चुका है तथा इसके अलावा मुख्य नहर का १९६·३० किलोमीटर का निर्माण सम्मिलित किया गया है। मुख्य नहर का ११२ किलोमीटर तक निर्माण हो चुका है एवं ११२ वें से १९६वें किलोमीटर पर कार्य प्रगति पर है। इसके अलावा पहले चरण की वितरक नहरों के मामले में स्थिति इस प्रकार है :—

(१) नौरंगदेसर, रावतसर, जोरावरपुरा, मोदन, गेलावनी, पेटार और कनोड वितरक धाराओं का काम पूर्ण है।

(२) सूरतगढ़ ब्रांच पर कार्य लगभग पूर्ण है और अनूपगढ़ शाखा पर भी ७५% काम पूरा हो गया है।

(३) सरदारपुर, चुल्ली, जेस्सा, भाटी, सोमासर और भोजेवाली शाखाओं पर कार्य प्रगति पर है।

(४) बीकानेर-लूनकरणसर जलोत्थान योजना पर भी कार्य जुलाई १९६८ से चालू है।

द्वितीय चरण के अन्तर्गत मुख्य नहर का शेष भाग एवं उससे सम्बन्धित अन्य आवश्यक वितरक नहरों का निर्माण सम्मिलित है, जो पांचवीं योजना के अन्त तक पूरा होने की सम्भावना है।

लाभान्वित क्षेत्र

राजस्थान नहर गंगानगर, बीकानेर और जैसलमेर के लगभग पचास लाख एकड़ भू-भाग को सिंचाई की सुविधा प्रदान करेगी। वे क्षेत्र जहां पेय जल भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है, एक सर-सब्ज इलाके में बदल जायेंगें। आंधियों पर विजय पायी जा सकेगी और अगर यह कहा जाए कि ये जिले ही नहीं बल्कि पूरे राज्य एवं पूरे देश में राजस्थान नहर से होने वाले लाभ कल्पनातीत हैं, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। केवल कृषि का ही हिसाब लगायें तो इस नहर के पूर्ण होने पर प्रति वर्ष ३० लाख टन उपज बढ़ जायेगी। आज जैसलमेर का क्षेत्र जहां औसत आबादी घनत्व ४ हैं, एक घने आबादी वाले स्थान में परिवर्तित होते देर नहीं लगेगी। सदियों से चले आ रहे अभाव और अकाल से जनता को मुक्ति मिलेगी। इस नहर से कृषि, उद्योग, वाणिज्य, वन, पशु-पालन, मछली-पालन, उपनिवेशन, आधुनिक सुविधाओं से युक्त आदर्श-गृह आदि के निर्माण से जहां देश की आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी वहीं समूचे रेगिस्तान की कायापलट हो जायेगी और रेगिस्तान का अस्तित्व अतीत की स्मृति मात्र रह जायेगा।

१४ विद्युत-शक्ति

स्वतन्त्रता से पूर्व राजस्थान में विद्युत की सुविधा बहुत ही सीमित क्षेत्रों में उपलब्ध थी। विद्युत उत्पादन में राज्य बहुत पिछड़ा हुआ था। प्रथम पंचवर्षीय योजना के शुरू होने पूर्व यहाँ केवल १३ मेगावाट विद्युत उत्पादन क्षमता थी एवं राज्य में केवल ४२ बस्तियों का ही विद्युतीकरण हुआ था।

योजना काल में विद्युत शक्ति

पहली योजना काल में राज्य में विद्युतीकरण के प्रयत्न किये गये, फलस्वरूप योजना अन्त में प्रतिष्ठापित क्षमता ३४·६ मेगावाट हो गई एवं विद्युतीकृत गांवों की संख्या ६६ पहुँच सकी। जिससे प्रतिव्यक्ति विद्युत उत्पादन तथा प्रतिव्यक्ति उपभोग दोनों में ही वृद्धि हुई। जो १९५० में प्रतिव्यक्ति उत्पादन २·६ kwh एवं प्रतिव्यक्ति उपभोग १ ७३ kwh था वह बढ़कर क्रमशः ३·५० एवं २·८४ हो गया।

दूसरी पंचवर्षीय योजनाकाल में विद्युत में उल्लेखनीय प्रगति हुई। इस योजनाकाल में भाखरा नांगल एवं चम्बल परियोजना को तैयार किया गया एवं योजना के अन्तिम दिनों में दोनों ही परियोजनाओं से विद्युत मिलने लग गई थी। दूसरी योजनाकाल में उच्च प्रसारण की नई लाइनें भी डाली गई।

तीसरी योजना काल में विद्युत उत्पादन को बहुत अधिक बढ़ाने की आवश्यकता महसूस हुई क्योंकि राज्य में अब तक काफी बड़े व भारी उद्योग स्थापित हो चुके थे एवं मांग बहुत अधिक बढ़ चुकी थी। इस योजना काल में गांधी सागर जल विद्युत स्टेशन के अन्तिम २ यूनिट चालू किये गये और योजना के अन्त में कुल ४०६ मेगावाट उत्पादन होने लगा। प्रति व्यक्ति उत्पादन व उपभोग २०·४० तथा १६·४८ kwh बढ़कर हो गये। सभी बड़े-बड़े स्थानों पर उच्चप्रसारण लाइनें काफी तादाद में बिछाई गई।

चौथी पंचवर्षीय योजनाकाल में राणा प्रतापसागर जल विद्युत योजना की चौथी इकाई एवं सतपुड़ा थर्मल विद्युत गृह की ५वीं इकाई क्रमशः १९६९ व १९७० में चालू हो गई। इसके अतिरिक्त जवाहर सागर जल विद्युत परियोजना एवं व्यास जल विद्युत परियोजना पर काफी कार्य किया गया है। राजस्थान अणुशक्ति परियोजना ने भी अपना उत्पादन इसी वर्ष शुरू कर दिया है। अणु विद्युत की प्रसार लाइनों का कार्य भी प्रगति पर है।

विभिन्न विद्युत परियोजनाओं में राजस्थान का हिस्सा

स्टेशन का नाम	राजस्थान का हिस्सा
१. सतपुड़ा (थर्मल)	४०%
२. गांधी सागर	५०%
३. राणाप्रताप सागर	५०%
४. जवाहर सागर	५०%
५. भाखरा-नांगल	१५·२२%

राजस्थान में विद्युत उत्पादन

(उत्पादित एवं संलग्न राज्यों से क्रय की हुई मात्रा सहित)

स्रोत	उत्पादन (मिलियन कि० वा० घण्टा)			
	१९६६–६७	१९६७–६८	१९६८–६९	१९६९–७०
१. वाष्प	१११·५६	९८·४७	७६·३४	२१७·८८
२. डीजल	३१·३७	२७·६४	१९·७९	१२·२५
३. जल-विद्युत	२९२·०६	४४०·३५	७३४·६२	७४०·०३
कुल विद्युत	४३४·९९	५६६·४६	८३०·५५	९७०·१६
विद्युत–प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र	१२७१	१६५५	२४२६	२८३४

राजस्थान में विद्युत शक्ति का विकास

विवरण	यूनिट	प्रथम योजना के पूर्व	१९७२
१. प्रतिष्ठापित क्षमता	मेगावाट	१३·२७	५३७·१५
२. दृढ़ क्षमता	,,	७·४८	३२२·००
३. शक्ति उत्पादन	M.kwh	N.A.	१५०८·७०
४. प्रतिव्यक्ति शक्ति उत्पादन	kwh	२·९०	५७·३०
५. प्रतिव्यक्ति उपभोग	kwh	१·७३	४२·५०

ग्राम्य विद्युतीकरण

राजस्थान में कुल ३३,३०५ ग्राम हैं जिनमें राज्य की ८२·३७ प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। स्वतन्त्रता के समय यहाँ केवल ४२ ग्राम ही विद्युतीकृत थे। योजनाकाल में गांवों में विद्युत पहुँचाने का कार्य महत्वपूर्ण रूप से शुरू किया गया। राज्य की १९६ तहसीलों एवं २३२ पंचायत समितियों में से १९७२ तक १८० तहसील एवं १९६ पंचायत समितियों को विद्युतीकृत कर दिया गया। नवम्बर १९७२ तक विद्युतीकृत कुल गाँव ४४९४ हो गये एवं ५७४८१ कूग्रों को विद्युत संचालित कर दिया गया।

प्रदेश में ग्रामीण विद्युतीकरण के क्षेत्र में हुई प्रगति को निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है :

वर्ष	विद्युती कृत ग्राम	विद्युतीकृत कुए
१. राजस्थान के गठन के समय	४२	—
२. प्रथम योजना की समाप्ति पर	९९	—
३. द्वितीय योजना ,, ,,	१३१	१,०३८
४. तृतीय योजना ,, ,,	१,२४२	६,८६१
५. १९६८–६९	२,२४७	१८,७९५
६. १९६९–७०	२,५६१	२५,४३२
७. १९७०–७१	३,०६७	३५,०९५
८. नवम्बर १९७२	४,४९४	५७,४८१

टंगस्टन :—इसकी भारत में केवल मात्र एक ही खान है जो जोधपुर जिले में डेगना के निकट पहाड़ी में है।

यूरेनियम :—अणु शक्ति सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण खनिज है। एक पौण्ड यूरेनियम से २५ लाख टन कोयले जितनी ऊर्जा प्राप्त होती है। इसकी खानें डूंगरपुर बांसवाड़ा और किशनगढ़ में हैं। क्रय करने का एकाधिकार भारत सरकार को है।

बेराइटिस :—इसे पैंट तथा अन्य रासायनिक पदार्थों के निर्माण में काम लिया जाता है। यह सफेद तथा लाल रंग की होती है। प्रमुख क्षेत्र अलवर एवं भरतपुर हैं।

पेट्रोलियम :—राजस्थान के पश्चिमी भाग में जैसलमेर में अनेक वर्षों से पेट्रोलियम की खोज की जा रही है। यहाँ इसके बड़े भण्डार होने की सम्भावना है।

अन्य खनिज :—राजस्थान में उपरोक्त खनिजों के अतिरिक्त भी अनेक खनिज पाये जाते हैं। जैसे, चूने का पत्थर (जोधपुर में गोटन; जयपुर व सवाईमाधोपुर; कोटा में लाखेरी; उदयपुर एवं चित्तौड़ आदि); गेरू (अलवर, सवाईमाधोपुर और जैसलमेर); मुल्तानी मिट्टी (जोधपुर व बीकानेर); स्लेट का पत्थर (अलवर); एसबस्टस (भीलवाड़ा व उदयपुर); पन्ना (उदयपुर) आदि।

नमक:—राजस्थान में नमक का उत्पादन ४ लाख टन वार्षिक है। यहाँ सांभर, डीडवाना व पंचभद्रा झीलों के खारे पानी को सुखा कर बनाया जाता है। भरतपुर, फलौदी, पौकरण, लूनकरणसर आदि क्षेत्रों में भी नमक तैयार किया जाता है।

राजस्थान में खनिज-उत्पादन

वस्तु	उत्पादन (हजार टन)		विक्रय मूल्य ('०००रु०)		औसतन प्रतिदिन कार्यरतश्रमिक	
	१९७१	१९७२	१९७१	१९७२	संशोधित	अनुमान
	संशोधित	अनुमान	संशोधित	अनुमान	1971	1972
1	2	3	4	5	6	7
धात्विक खनिज :						
तांवा कच्चा	५९·१	१७६·४	अ.प्रा.	अप्रा.	२०४०	२०३२
लोहा कच्चा	०·५	२·१	५·१	अप्रा.	१२	अप्रा.
रन ऑफ माइन ओर	२९४·०	३४७·५	—	अप्रा.		
सांद्रा सीसा	४·३	४·४	५३०२·०	५८६५·०	१६३५	१८८२
जस्ता सांद्रा	१५·९	१६·९	१५७४००	१५४१६·९		
चांदी*	३५०१·४	४१८४·०	१९१७·१	२१०६·५		

* उत्पादन किलोग्राम में।

१	२	३	४	५	६	७
मेगनीज कच्चा	२·४	—	७०·२	—	१५३	—
वालफ्रामाइट	१६·४	१८·०	६८४·८	७५७ ३	३४५	४१४
अधात्विक खनिज :						
एस्वेस्टॉस	९·४	११·८	३७३·१	४१०·३	६७९	१५५६
वराइट्स	५·३	४·२	३०७·२	२९४·४	४१४	३७२
केलसाइट	११·१	१७·७	१९४·६	३३२·२	६०७	५७३
चाइना मिट्टी	४७·१	६६·३	६०५·४	११४५·७	५८२	६१२
डालोमाइट	१५·५	१९·३	८०·०	१३२·९	१९१	१२९
पन्ना (कच्चा)*	४·५	२·१	१७·१	१८·७	६५	६९
फेलस्पार	३०·६	३४·१	३५५·४	५९३·१	६२९	९४०
फायर क्ले	११·३	१५·४	१६१·८	३९९ ५	३२२	२४०
क्लोराइट	५·४	५·२	३१४८·०	८८०९·३	१२६५	१०६५
गारनेट (जेम)**	५·६	१७·३	३१·९	अप्रा.	८९	६२
गारनेट (एब्रेसिव)	१·४	१·३	७४·४	१७७·६		
जिप्सम	९७२·२	८९६·२	७५१४·०	५९७७·१	१४७६	११३९
लाइम स्टोन	२१९३·१	२४१५·१	१२४८४·२	१४५९०·१	२१५९	२०३९
माइका (कच्चा)	२·४	२·०	२६०६·२	२५८४·६	२३७७	२१८८
ओकर (लाल व पीला)	१५ ९	२३·१	८१·१	६३२·८	१४६	८५
पाइरोफिलाइट	३·१	२·३	३२·१	६७·३	९४	८६
क्वार्ट्ज	२८·५	२४·३	२८६·६	८५४·६	४२५	८४८
फास्फेट राक	२३१·७	२०९·५	२०१३९·२	१८६६६·६	३३१	३३८
सिलिका सेंड	५१·५	६५·४	९१८·६	१०४१·३	८६८	२८७६
सोपस्टोन	२६७·०	१८४·३	४९५७·९	६१११·५	५३०५	५९८९
सले नाइट	७·७	१००·१	४६५·३	१८२५·६	१५	३०
वाल्स्टीनाइट	२·०	२२·३	४६·०	४४·८	४०	५५
स्लेट स्टोन	०·३०	०·२५	३०१·२	६२.९	३६	४३

* उत्पादन किलोग्राम में ।   ** उत्पादन टनों में ।

१६ | उद्योग

भारत के औद्योगिक मानचित्र पर राजस्थान शनैः शनैः अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाता जा रहा है।

एकीकरण के तत्काल बाद राज्य सरकार द्वारा औद्योगीकरण के लिए रूप-रेखा बनाने और कल-कारखाने विकसित करने की दिशा में पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से ठोस प्रयास किये गये। इन प्रयत्नों में औद्योगिक क्षेत्रों का विकास, विद्युत, सड़कों का निर्माण, ऋण सुविधा, परियोजनाओं का सर्वेक्षण कार्य तथा विकास निगमों की स्थापना आदि ऐसे कार्य शामिल थे जो उद्यमकर्ताओं को काफी सहायता और प्रोत्साहन देने वाले थे।

तृतीय योजनाकाल में औद्योगिक बस्तियों और औद्योगिक क्षेत्रों के विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत ११ औद्योगिक बस्तियां—जयपुर, माखुपुरा (अजमेर), भीलवाड़ा, उदयपुर, पाली, सुमेरपुर, जोधपुर, बीकानेर, भरतपुर, श्रीगंगानगर और कोटा स्थापित की गई। इन के अतिरिक्त ६ औद्योगिक क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र कानून १९६० के अन्तर्गत-जयपुर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर, भरतपुर और अलवर में स्थापित किये गये हैं।

राज्य में पंजीकृत कारखानों की संख्या

वर्ष	पंजीकृत कारखानों की संख्या	श्रमिक संख्या	उत्पादक पूंजी (लाख रु०)	विद्युत खपत (कि. वा.)
१९६१	६४८	४९,३०१	२,५२९	४४०८
१९७१	१२९०	१,१३,८०४	१४,५६२	६८६०६

राजस्थान के प्रमुख उद्योग

सूती वस्त्र उद्योग

राजस्थान में प्रथम सूती मिल ब्यावर में सन् १८८९ में (दी कृष्णा मिल्स लि०) स्थापित की गई। वर्तमान समय में १९७० के अन्त में सूती वस्त्र मिलें १७ हो गई हैं। यहां की सबसे बड़ी सूती वस्त्र की मिल पाली में (महाराजा उम्मेद मिल्स) है। राज्य में सूती वस्त्र का उत्पादन वर्तमान में लगभग ६ करोड़ मीटर प्रतिवर्ष हो रहा है। १९७२ में ६४ मिलियन मीटर वस्त्र उत्पादन हुआ था। कच्चा माल इन कारखानों को गंगानगर, जयपुर, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, चित्तौड़, उदयपुर, कोटा, झालावाड़, भरतपुर, पाली और टोंक आदि जिलों से मिलता है।

प्रमुख मिलें (कुल प्रदत्त पूंजी एवं कार्यशील श्रमिक सहित) :— आदित्य मिल्स लि०, किशनगढ़ (६० लाख, ६६२); एडवर्ड मिल्स कं० लि०, ब्यावर (६·४ लाख, १२५२); जयपुर स्पिनिंग एण्ड विविंग मिल्स लि०, जयपुर (५० लाख १०३१); कृष्णा मिल्स लि० ब्यावर (१७·४८ लाख १५५४); महालक्ष्मी मिल्स कं० लि०, ब्यावर (१३ लाख, १३६६); महाराजा श्री उम्मेद मिल्स लि०, पाली (८० लाख, २६७१); मेवाड़ टेक्सटाइल मिल्स लि०, भीलवाड़ा (३० लाख, १८०२); राजस्थान स्पिनिंग एवं विविंग मिल्स लि०, भीलवाड़ा (३६ लाख, ५१६); श्री सादुल टैक्सटाईल लि०, श्रीगंगानगर (६० लाख, १३६१); उपर्युक्त मिलों में तकुओं की संख्या १५००० से ३०,००० तक अलग-अलग हैं।

सम्भावनाएं:—राज्य सरकार ने १० नई मिले स्थापित करने की स्वीकृति दे दी है। प्रत्येक मील में औसतन १२,००० तकुए होंगे, ये मिले जयपुर में दो, अलवर, धौलपुर, चितोड़, जोधपुर, डूंगरपुर, झुंझुनू, हनुमानगढ़ तथा नोहर में स्थापित की जायेंगी।

सीमेण्ट उद्योग

राजस्थान में प्रथम कारखाना लाखेरी में सन् १९१५ में स्थापित किया गया, यह ए० सी० सी० ग्रुप का है। दूसरा कारखाना डालमिया ग्रुप ने सवाईमाधोपुर में स्थापित किया। तीसरा कारखाना चितौड़गढ़ में बिड़ला बन्धुओं ने स्थापित किया है। चौथा उदयपुर में है।

उत्पादन—प्रथम पंचवर्षीय योजना के अंतिम वर्ष में ५·२५ लाख टन, द्वितीय योजना के अंत में लगभग ११ लाख टन एवं तृतीय योजना के अन्त में ११·२५ लाख टन सीमेण्ट का उत्पादन राजस्थान में हुआ। १९६७ में लगभग १२·७५ लाख टन सीमेण्ट उत्पादन हुआ। १९७२ में १६·०९ लाख टन उत्पादन हुआ।

एक कारखाना निम्बाहेड़ा में स्थापित हो रहा है जो शीघ्र ही उत्पादन शुरू कर देगा।

चीनी–उद्योग

राज्य में चीनी बनाने के तीन कारखाने हैं। प्रथम कारखाना भोपालसागर, में १९३२ में स्थापित किया गया। इसकी गन्ना पेलने की क्षमता १००० टन प्रतिदिन दो सिफ्टों में है। इसका नाम मेवाड़सूगर मिल्स लि० है। दूसरा कारखाना गंगानगर सुगर मिल्स लि०, गंगानगर में है। क्षमता १००० टन प्रतिदिन दो सिफ्ट एवं प्रदत्त पूंजी २५,३७,८०० रु० है। यह सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य कर रहा है। श्री विजय सुगर मिल्स लि०, विजयनगर जिला अजमेर में ३५० टन क्षमता का एक तीसरा कारखाना है। एक चौथा कारखाना सहकारी क्षेत्र में केशोरायपाटन में है।

उत्पादन—१९५०-५१ में लगभग ८ हजार टन, १९५५-५६ में १३·५ हजार टन, १९६०-६१ में १८ हजार ठन, १९६५-६६ में १८.२५ हजार टन हुआ, १९७१ का उत्पादन ११·२ हजार टन था। १९७२ में उत्पादन घटा है जो ९·७ हजार टन है।

तेल एवं वनस्पति उद्योग

राजस्थान में प्रथम वनस्पति फैक्ट्री भीलवाड़ा में राजस्थान वनस्पति प्रोडक्टस (प्रा०) लि० २५ टन प्रतिदिन क्षमता की स्थापित की गई। दूसरा कारखाना जयपुर में १०० टन प्रतिदिन क्षमता का प्रीमियर वेजिटेबल प्रोडक्टस लि० शुरू हुआ। इसके अलावा जयपुर में २ और कारखानें 'आर० सी० एस० वनस्पति कं० लि०' एवं 'हेमराज उद्योग' हैं। एक अन्य कारखाना उदयपुर में है। राज्य में चित्तौड़गढ़, एवं जोधपुर में भी कारखाने स्थापित करने के प्रयत्न हो रहे हैं। कए अन्य कारखाना जयपुर में निर्माणाधीन है इस उद्योग में कच्चेमाल के रूप में मूंगफली, तिल एवं कपास का तेल प्रयोग किया जाता है। १९७१ में राजस्थान में २० हजार टन उत्पादन हुआ, इसमें लगभग १००० श्रमिक काम में लगे हुए हैं। १९७२ में उत्पादन लगभग १६ हजार टन हुआ।

काँच-उद्योग

धौलपुर में धौलपुर ग्लास वर्क्स ९०० टन वार्षिक क्षमता का कारखाना कार्य कर रहा हैं। इसमें ७०० श्रमिक लगे हैं। दूसरा सार्वजनिक क्षेत्र में 'हाई-टेक प्रोसीजन ग्लासवर्क्स' है। इसकी अधिकृत पूंजी ५० लाख रु० हैं। इसमें भी ७०० श्रमिक काम करते हैं।

उत्पादन—१९६८ में उत्पादन ४०० टन हुआ।

इन्जीनियरी उद्योग

जयपुर का 'नेशनल इंजीनियरिंग इण्डस्ट्रीज' कारखाना बालबेयरिंग और रोलर बेयरिंग बनाने में एशिया में एक प्रमुख स्थान रखता है। जयपुर के मान इंडस्ट्रियल कारपोरेशन लिमिटेड में गृह-निर्माण सम्बन्धी सामान जैसे—छड़ें, सलाखें और इस्पात की खिड़कियां, दरवाजे इत्यादि बनते हैं, जयपुर मेटल्स एण्ड इलेक्ट्रिकल्स लि० में अलौह मिश्रित धातुओं और बिजली के मीटरों का निर्माण होता है। जयपुर में पानी के मीटर एवं टैक्सी के मीटर बनाने के कारखाने भी हैं।

सोडियम सल्फेट

डीडवाना की खारे पानी की झील से सोडियम-सल्फेट प्राप्त करने के लिये जर्मन सहयोग से २० टन प्रतिदिन क्षमता का एक कारखाना डीडवाना में शुरू किया गया है। डीडवाना की नमक की झील में सोडियम-सल्फेट का अंश बहुत अधिक है।

नमक उद्योग

राजस्थान में नमक के तीन प्रमुख स्रोत हैं—सांभर, डीडवाना और पचपदरा। सांभरझील पर अक्टूबर १९६४ से सांभर साल्टस लि० का अधिकार है। पचपदरा और डीडवाना स्थित 'सेंट्रल गवर्नमेंट वर्क्स' राजस्थान सरकार द्वारा चलाये जा रहे हैं।

अन्य उद्योग

उपर्युक्त के अतिरिक्त राजस्थान में अन्य अनेक महत्त्व के उद्योग हैं। जैसे: कोटा में श्रीराम फर्टिलाइजर्स, खाद का कारखाना; नाइलोन के धागे बनाने का कारखाना—श्रीरामकैमिकल इण्डीस्ट्रीज; श्रीराम रेयन; जे० के० सिन्थैटिक्स आदि। भरतपुर में रेल के वैगन बनाने का कारखाना, बीकानेर चूरू व लाडनू में ऊन के कारखाने; टोंक में चमड़े का कारखाना, अजमेर में मशीनटूल्स का कारखाना एवं भीलवाड़ा में अभ्रक साफ करने एवं अभ्रक की ईंटों का कारखाना आदि प्रमुख हैं।

राजस्थान में कुछ प्रमुख उद्योगों का औद्योगिक उत्पादन १९७१ व १९७२ में तथा प्रतिशत परिवर्तन आदि आगे तालिका में दिखाये अनुसार है:—

राजस्थान में औद्योगिक वस्तुओं का उत्पादन

वस्तु का नाम	इकाई	१९७१	१९७२	वर्ष १९७१ से १९७२ में % परिवर्तन
१	२	३	४	६
१. चीनी	'००० टन	११·२	९·७*	(–) १३·३९
२. मदिरा—				
(अ) सभी प्रकार का स्प्रिट	हजार लीटर	११८७	११८०*	(–) ०·५९
(ब) भारत निर्मित विदेशी शराब	हजार लीटर	१७३१	४४६*	(–) ७४·१२
३. वनस्पति घी	हजार टन	२०	१६*	(–) २०·००
४. नमक	,, ,,	५४९	६३७*	(+) १६·०३
५. वस्त्रोद्योग :				
(अ) सूती वस्त्र	लाख मीटर	५४९	६६८*	(+) २१·६८
(ब) सूती धागा	हजार टन	२९	३६*	(+) २४·१४
६. उर्वरक :				
(अ) यूरिया	हजार टन	२६०	२५४	(–) २·३१
(ब) सिंगिल सुपर फास्फेट	,, ,,	४५	४४	(–) २·२२
७. कागज व पट्ठा	,, ,,	०·०३	०·०५*	(+) ६६·६७
८. सीमेंट	,, ,,	१३९९	१६०९*	(+) १५·०१
९. ह्यूम-पाइप	हजार मीटर	६	२	(–) ६६·६७
१०. माइका इन्स्युलिटिंग इटें	,, संख्या	६८०	१५२१	(+) १२३·६८
११. जिंक स्लेब	,, टन	१०	११	(+) १०·००
१२. कैडमियम	,, ,,	१८	२०	(+) ११·११
१३. रेल के डिब्बे :				
(अ) वाक्स जैसे	संख्या	३९४	३७१	(–) ५·८४
(ब) बी० वी० ओ० जैसे	,,	२०७	१०२	(–) ५०·७२
(स) बी० डब्लू० टी०	,,	१४	२१४	(+) १४२८·५७

* अनुमानित ।

१	२	३	४		५
१४. वाल-बियेरिंग	लाख संख्या	७३	७४	(+)	१·३७
१५. पानी के मीटर	हजार संख्या	१४	१७	(+)	२१·४३
१६. रेडिएटर्स	„ „	६	८*	(+)	३३·३३
१७. लेपित एवं पुनर्लेपित पत्थर	हजार व०मी०	३९९	४०६	(+)	१·७५
१८. बिजली के मीटर	हजार संख्या	४९१	३८०	(+)	२२·६१
१९. कृत्रिम रेशे :					
(अ) नायलान धागा	हजार टन	३·४	३·६	(+)	५·८८
(ब) रेयन किस्म का धागा	„ „	२·२	२·८	(+)	२७·२७
२०. रसायन :					
(अ) कास्टिक सोडा	हजार टन	१७	१८	(+)	५·८८
(ब) कैलशियम कारबाइड	„ „	२१	२२	(+)	४·७६
(स) पी० वी० सी० रेयन	„ „	१०·७	१०·९	(+)	१·८७
(द) पी०वी०सी० कंपाउण्ड	„ „	९·६	४·६	(−)	५२·०८
(य) गन्धक का तेजाब	„ „	२९·४	३३·८	(+)	१४·९६
(र) जिंक सल्फेट	टन	२०६	२०४	(−)	०·९७
(ल) सोडियम सल्फेट	हजार टन	२४	६·१*	(+)	१५४·१७

* अनुमानित ।

राजस्थान में उद्योगों से सम्बन्धित संस्थान

(१) राजस्थान वित्त निगम:—

राज्य में उद्योगों को प्रोत्साहन देने एवं उन्हें आर्थिक सहायता देने के उद्देश्य से रियायती शर्तों पर लम्बी अवधि के लिए निगम द्वारा ऋण दिया जाता है । प्रदत्त ऋण की रकम १०,००० रु० से २० लाख रुपये तक हो सकती है । बेरोजगार इंजनियरों को काम देने में भी निगम ने एक महत्त्वपूर्ण योजना शुरू की है जिसके अन्तर्गत १९७२ में ६० इंजिनियरों को ७५ लाख रुपये उद्योग कायम करने के लिए दिये गये । निगम का मुख्य कार्यालय जयपुर में है तथा कोटा जोधपुर, उदयपुर एवं अलवर में इसकी शाखायें हैं ।

(२) राजस्थान औद्योगिक एवं खनिज विकास निगम—

राज्य में औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन देने के लिए यह निगम विभिन्न प्रोजेक्टों को स्थापित करने का कार्य करता है। इस समय निगम के पास लगभग १० विभिन्न आशय-पत्र हैं। अलवर की स्कूटर प्रोजेक्ट इसी निगम की है। इसका प्रधान कार्यालय, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर में हैं।

(३) राजस्थान राज्य लघु उद्योग निगम—

राज्य में लघु उद्योगों के विकास में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसका प्रधान कार्यालय सहदेव मार्ग, अशोक नगर, जयपुर में है।

(४) लघु उद्योग सेवा संस्थान—

लघु व कुटीर उद्योगों की सहायता के उद्देश्य से इसकी स्थापना की गई है। यहाँ पर लघु उद्योगों को तकनीकी सहायता एवं नई योजनाएं प्राप्त होती हैं। जयपुर में इसका कार्यालय एम० आई० रोड़ पर है।

(५) डाइरेक्टर ऑफ इण्डस्ट्रीज—

राजस्थान सरकार की उद्योग सम्बन्धी विभिन्न नीतियों के बारे में पूरी जानकारी इसी के यहां से मिलती है। उद्योगों से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की पुस्तकें एवं पत्रिकाओं का प्रकाशन यहीं से ही होता है।

राज्य सरकार द्वारा उद्योग स्थापना में प्रदत्त सहायता

१. औद्योगिक क्षेत्रों में सस्ती दर पर भूमि।

२. औद्योगिक बस्ती में निर्मित शेड तथा सस्ती दरों पर भू-खण्ड। साथ ही बिजली, पानी, सड़कें, बैंक आदि की सुविधा।

३. सस्ते ब्याज एवं आसान किस्तों पर ऋण।

४, बड़े एवं मध्यम श्रेणी के उद्योगों को वित्तीय संस्थाओं द्वारा दिये जाने वाले ऋण पर गारण्टी।

५. उधार पट्टे पर मशीनें प्राप्त करने में सहायता।

६. सस्ती दरों पर विद्युत शक्ति तथा लघु उद्योगों द्वारा विद्युत शक्ति के उपभोग पर वित्तीय अनुदान।

७. राजकीय जल प्रदाय योजना तथा सिंचाई परियोजना के द्वारा सस्ती दरों पर स्वच्छ पानी ।

८. चुङ्गीकर, बिक्रीकर तथा बिजली की ड्यूटी पर छूट ।

९. उत्पादित माल की बिक्री में सहायता ।

१०. कच्चे माल एवं मशीनरी प्राप्त करने में सहायता ।

११. निःशुल्क सूचना, सेवा एवं मार्ग-दर्शन ।

१७ | सहकारिता

राजस्थान में प्रथम सहकारी समिति १९०५ में भिनाय में स्थापित की गई थी। पूर्व स्वाधीनता-युग में सहकारिता के विकास का काल १९१० से १९१८ तक का रहा है। १९१८ में यहां ३६२ समितियाँ थी, जिनकी सदस्य संख्या १२५९५ थी। देशी रियासतों में सर्वप्रथम भरतपुर और कोटा में सहकारी कानून बने। वैसे प्रमुख रूप से सहकारिता का इतिहास स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का ही है। योजनाकाल में सहकारिता के विकास पर अत्यधिक बल दिया गया एवं ३० जून १९७० को समाप्त हुए सहकारी वर्ष के अन्त तक राज्य के ९२ प्रतिशत गांवों एवं ४१ प्रतिशत कृषक परिवारों को इसके अन्तर्गत ले लिया गया है।

राज्य में सहकारिता से सम्बन्धित कुछ आंकड़े

विवरण	१९७०–७१	१९७१–७२
१. समितियों की संख्या	१८२८५	१८१९८
२. सदस्यता (हजारों में)	१९८९	२०३०
३. अंश-पूंजी (लाख रु०)	२२४२·४४	२४८८·८६
४. कार्यकारी-पूंजी (लाख रु०)	१३४५६·०५	१५८१८·९६
५. ऋण वसूली (लाख रु०)	५५७८·३९	४६२९·००
६. ऋण वितरित (लाख रु०)	६६८७·४३	४४५७·०९
७. बकाया ऋण (लाख रु०)	९५२२·४४	९६४६·८७

राजस्थान मे सहकारी समितियां (१९६९–७०)

विवरण	संख्या	सदस्य ('०००)	प्रदत्त पूंजी (लाख रु०)	कार्यशील पूंजी (लाख रु०)	कोष (लाख रु०)	ऋण (लाख रु०)
प्राथमिक कृषि समितियां	८०४२	१२३४	६००·३४	२९२२·००	३२·२०	२१६७·९२
प्राथमिक विपणन समितियां	१४३	३५	६३·७३	३५२·९८	—	—
फार्म समितियां	६२४	११	२२·७७	७१·२४	३·१०	४५·३७
गृह समितियां	२७०	१७	१९·२२	१७७·०७	१·७७	—
भूमि-बंधक बैंकें	३७	८१	७५·४१	९२१·१६	१·८१	८४०·१६
उपभोक्ता भण्डार	६१०	११८	२५·०५	६५·९८	—	—
औद्योगिक समितियां	२१३७	४३	३५·२२	१२८·९६	—	७१·६९

सहकारी कानून:—

राज्य में सहकारी समितियों के नियमन हेतु राज्य सरकार ने 'राजस्थान सहकारी समितियां अधिनियम १९६५' पारित किया है जो समितियों के पंजीकरण से लेकर विघटन तक सभी मुद्दों को नियंत्रित करता है।

सहकारी आन्दोलन का प्रचार व प्रसार

सहकारी आंदोलन को विकसित करने, इस क्षेत्र में हुई उपलब्धियों की जनसाधारण को जानकारी कराने व आवश्यक मार्ग-दर्शन कराने की दृष्टि से सहकारी विभाग का प्रचार-विभाग कार्य करता है। इस विभाग के द्वारा सहकारिता के विभिन्न पक्षों एवं राज्य की विभिन्न परियोजनाओं पर सामयिक प्रचार साहित्य का प्रकाशन किया जाता है। यह साहित्य सहकारिता के क्षेत्र में कार्यकर रहे कार्यकर्ताओं में एवं विशेष रूप से जनता में वितरित किया जाता है।

प्रशिक्षण संस्थाएं:—

(१) सहकारिता ट्रेनिंग कॉलेज, कोटा—

यहां पर सहकारिता के क्षेत्र में कार्यरत निरीक्षकों (कार्यकारी एवं आडिट) को प्रशिक्षण दिया जाता है।

(२) सहकारी प्रशिक्षण केन्द्र—

ऐसे केन्द्रों पर विभागीय सहायक निरीक्षकों, प्राथमिक समितियों के व्यवस्थापकों, केन्द्रीय बैंक एवं क्रय-विक्रय समितियों के उच्च श्रेणी के कर्मचारी व औद्योगिक समितियों के व्यवस्थापकों को प्रशिक्षण दिया जाता है। ऐसे प्रशिक्षण केन्द्र राज्य में—जयपुर, जोधपुर, भरतपुर, उदयपुर व गंगानगर में हैं।

(३) सहकारिता में डिप्लोमा—

राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा जयपुर में एक रात्रि–पाठ्यक्रम के अन्तर्गत एक वर्ष का 'डिप्लोमा इन को-आपरेशन' का पाठ्यक्रम १९७२ से शुरू किया गया है। यह सहकारी संस्थाओं में कार्यरत व्यक्तियों के अतिरिक्त उनके लिए भी लाभप्रद है जो सहकारी क्षेत्र में जाना चाहते हैं। इस डिप्लोमा में प्रवेश के लिए उम्मीदवार का स्नातक होना जरूरी है।

१८ | रोजगार

राजस्थान में कुल २४ रोजगार केन्द्र हैं जिनमें जयपुर पी० एण्ड ई० तथा यू० इ० वी० केन्द्र राज्य के सभी जिलों को नियंत्रित करते हैं। जोधपुर, कोटा, सवाईमाधोपुर एवं सिरोही जिले के रोजगार केन्द्र अपने अलावा एक-एक अतिरिक्त जिलों का कार्य भार भी संभालते हैं। बाकी सभी जिलों के अपने अलग–अलग केन्द्र हैं।

नियोजन संबंधी चना जो राज्य के नियोजन केन्द्रों द्वारा एकत्र की गई है, के अनुसार सितम्बर, १९७२ के अंत में राज्य में कुल ६,१७,६०७ व्यक्ति कार्यशील थे जिसमें से ४,९९,१५६ सार्वजनिक क्षेत्र में एवं १,१८,४५१ निजी क्षेत्र में थे।

पंजीकरण, नियोजन, रिक्त स्थानों का विज्ञप्तिकरण एवं नियोजन प्राप्ति के इच्छुक व्यक्तियों की संख्या सबंधी सूचना वर्ष १९७०, १९७१ व १९७२ के बारे में निम्न तालिका में अंकित अनुसार हैं:—

नियोजन तालिका

मद	वर्ष			गत वर्ष से % वृद्धि	
	१९७०	१९७१	१९७२	१९७१	१९७२
१	२	३	४	५	६
१. पंजीकरण	१,६१,५८९	१,७३,६६२	१,९४,२६७	+७·४९	+११·८५
२. नियोजन	१३,०८३	१७,६६३	१७,०४७	+३५·०१	—३·५०
३. रिक्त स्थान विज्ञापित किये गए	२०,८९८	२५,७०६	२९,३२८	+२३·०१	+१४·०९
४. नियोजन प्राप्ति के इच्छुक व्यक्तियों की संख्या	१,२८,०९५	१,३९,८२५	१,७१,७१७	+९·१६	+२२·८१

बेरोजगारी :

पिछली तालिका से ज्ञात होता है कि वेरोजगारी की समस्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है। रोजगार पाने वाले इच्छुक व्यक्तियों की संख्या में वर्ष १९७१ में ९·१६% एवं १९७२ में २२·८१ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। साथ में व्यक्तियों को रोजगार, वेकार व्यक्तियों की प्रतिशत संख्या में वृद्धि के अनुरूप नहीं दिया गया है। नियोजित व्यक्तियों की पंजीकृत व्यक्तियों से प्रतिशत संख्या, जो कि १९७१ में १०·२ थी, कम होकर वर्ष १९७२ में ८·८ हो गई, जो कि वर्ष १९७० की ८·१ प्रतिशत से कम थी। वेकार इच्छुक व्यक्तियो की संख्या में भी वर्ष १९७२ में ११·८५% की वृद्धि हुई जबकि यह १९७१ में केवल ७·४९ थी। इन तथ्यों से ऐसा आभास मिलता है कि रोजगार की स्थिति में सुधार होने की अपेक्षा ह्रास हुआ है।

ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती हुई वेरोजगारी को कम करने हेतु भारत सरकार द्वारा ग्रामीण नियोजन योजना के अन्तर्गत राज्य सरकार को ३ करोड़ २५ लाख रुपये का आवंटन किया गया है जिससे लगभग २६,००० व्यक्तियों को राज्य में रोजगार मिल सकेगा। इसके अतिरिक्त छोटे कृषक, सीमान्त कृपक व कृषि मजदूर विकास इत्यादि योजनाओं द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में काफी मात्रा में वेरोजगारी की समस्या हल हो सकेगी।

राजस्थान में वेतन-क्रमानुसार सरकारी कर्मचारियों की संख्या

मासिक वेतन क्रम	संख्या (३१ मार्च १९७०)
५० रु० से नीचे	७०७६
५० रु० से ७५ रु० तक	४८५९९
७५ ,, १०० ,,	३१००२
१०० ,, १५० ,,	५६८०२
१५० ,, २०० ,,	२५६२२
२०० ,, ३०० ,,	१६२४६
३०० ,, ४०० ,,	४९६२
४०० ,, ५०० ,,	२९९९
५०० ,, ७५० ,,	२२४४
७५० ,, १००० ,,	५८९
१००० ,, १५०० ,,	२७५
१५०० ,, २००० ,,	९७
२००० ,, २५०० ,,	२७
२५०० ,, ३००० ,,	१७
३००० रु० से अधिक	१२
कुल	१,९६,५३९

. राजस्थान में नियुक्त केन्द्रीय कर्मचारी—१९७१ में ऐसे कर्मचारियों की संख्या १,४५,५४२ थी जिनमें २५,४८९ कर्मचारी जयपुर में काम कर रहे थे।

प्रमुख पदों के वेतन

पद नाम	वेतन प्रति माह (रुपये)
राज्यपाल	५५००
मुख्य न्यायाधीश	४०००
न्यायाधीश उच्च न्यायलय	३५००
मुख्य सचिव	३५००
आयुक्त (कमिश्नर)	२५००–१२५–२७५०
मुख्यमंत्री	१२५०+५०० अतिरिक्त भत्ता
मंत्री	१२५०+२५० अतिरिक्त भत्ता
विधानसभाध्यक्ष	१२५०
विधानसभा उपाध्यक्ष	११२५
राज्यमंत्री	११२५
विधान सभा सदस्य	३००

१९ | शिक्षा

शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान को अभी बहुत प्रगति करनी है। १९७१ में शिक्षित व्यक्तियों का प्रतिशत १९·०७ था। पुरुषों में साक्षरता प्रतिशत २८·७४ एवं औरतों में ८.४६ है। कुल ४,९१४,२९३ साक्षरों में ३,८७५,४३५ पुरुष एवं १,०३८,८५८ औरतें थीं।

पिछले दशकों में साक्षरता का प्रतिशत

वर्ष	साक्षरता प्रतिशत		
	कुल	पुरुष	औरत
१९२१	३·२५	५·७८	०·४२
१९३१	३·९६	७·०१	०·६०
१९४१	५·४६	९·३६	१·१६
१९५१	८·०२	१३·०९	२·५१
१९६१	१५·२१	२३·७१	५·८४
१९७१	१९·०७	२८·७४	८·४६

विभिन्न जिलों की तुलना करने पर अजमेर में सर्वाधिक साक्षरता ३०·३० प्रतिशत है। इसके पश्चात् क्रमशः बीकानेर, कोटा, जयपुर, झुंझुनूं और जोधपुर का स्थान आता है। सबसे कम प्रतिशत १०·१३ जालौर जिले का है।

राजस्थान की औसत साक्षरता प्रतिशत १९.०७ से उपर वाले जिले क्रमश: अजमेर, बीकानेर, कोटा, जयपुर, झुंझुनु, जोधपुर, गंगानगर, अलवर और सीकर हैं तथा औसत रेखा से नीचे क्रमश: भरतपुर, चूरू, झालावाड़, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, पाली, सिरोही, सवाईमाधोपुर, बूंदी, टौंक, भीलवाड़ा, नागौर, डूंगरपुर, जैसलमेर, बांसवाड़ा, बाड़मेर और जालौर जिले हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वाधिक साक्षरता २०.८० प्रतिशत झुंझुनु जिले एवं सबसे कम ८.३८% बाड़मेर में है। नगरीय क्षेत्रों में सर्वाधिक अजमेर ५३.९८% एवं सबसे कम ३२.६८% टौंक जिले में हैं।

शिक्षा का विकास :

योजनकाल में राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। ६-११ वर्ष की उम्र के बच्चों में स्कूल जाने वालों का प्रतिशत १९५१-५२ में १६.६ था जो बढ़कर १९७१-७२ में ५८.८ हो गया। राज्य में शिक्षण संस्थानों में भी बढ़ोतरी की गई। योजना काल में दो नये विश्वविद्यालय जोधपुर व उदयपुर में खोले गये हैं तथा प्राय: सभी महत्त्वपूर्ण स्थानों पर महाविद्यालयों की स्थापना की गई है।

वर्तमान समय में राज्य में सभी प्रकार के प्रशिक्षण देने वाले विद्यालय व महाविद्यालय हैं। प्रमुख विश्वविद्यालय राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर एवं जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर हैं। इसके अतिरिक्त उदयपुर विश्वविद्यालय, कृषि विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है। बिड़ला इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड साइन्स, पिलानी को राज्य में विश्वविद्यालय के समकक्ष दर्जा दिया गया है।

इसी वर्ष राजस्थान सरकार द्वारा एक कमेटी नियुक्त की गई है जो राज्य में नये विश्वविद्यालयों के खोलने की सम्भावनाओं का अध्ययन करके राज्य को अपनी रिपोर्ट पेश करेगी। इसे श्रीमाली कमेटी के नाम से जाना जाता है।

१९७०-७१ में राज्य में शिक्षण संस्थाओं की स्थिति निम्न प्रकार से थी :—

राज्य में शिक्षण संस्थाएँ

	संस्था	संख्या
१.	विश्वविद्यालय	३
२.	विश्वविद्यालय के समकक्ष संस्था	१
३.	शिक्षा बोर्ड	२
४.	महाविद्यालय–सामान्य शिक्षा	८३
५.	„ –व्यावसायिक शिक्षा	४१
६.	„ –संस्कृत शिक्षा व अन्य	४४
७.	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	४२५
८.	माध्यमिक विद्यालय	६०९
९.	उच्च प्राथमिक विद्यालय	२०३५
१०.	प्राथमिक विद्यालय	१९१९०
११.	बुनियादी अध्यापक प्रशिक्षण विद्यालय	१२
१२.	पोलिटेक्निक्स	६
१३.	औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान	१५
१४.	संगीत, कला एवं उद्योग विद्यालय	८
१५.	विकलांगों के लिए विद्यालय	३
१६.	संस्कृत विद्यालय	९४
	कुल	२२५७१

२० | जन-स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन

राज्य के सभी भागों में, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद चिकित्सा सुविधा पर्याप्त मात्रा में, व्यापक रूप से उपलब्ध कराई गई है जिसके परिणामस्वरूप मृत्यु दर प्रति हजार जनसंख्या के पीछे १९ से घटकर ११ हो गई है। १९४७ में इस राज्य के निवासी की जो औसत आयु थी वह अब दुगुनी हो गई है।

जनस्वास्थ्य सुविधा

आज प्रदेश में ५ मेडिकल कॉलेज हैं, जहां से लगभग पांच-सौ डाक्टर प्रतिवर्ष तैयार होकर निकलते हैं। अस्पतालों में रोगी-शैय्याओं की जो संख्या १९५१ में ५७२० थी वह १९७० में बढ़कर १४,८५४ हो गई है। इसके साथ साथ एलोपैथिक अस्पतालों तथा डिस्पेन्सरियों की संख्या भी बढ़कर क्रमशः १९५१ में २३४ तथा १५६ से बढ़कर १९७० में ४०२ तथा २८७ हो गई हैं।

ग्रामीण शल्य चिकित्सा चल इकाई भारत में अपने प्रकार की पहली योजना है, जिसके अन्तर्गत सुदूर गांवों के निवासियों को डाक्टरों के व्यवस्थित दल की शल्य चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। राजस्थान, प्रति एक हजार जनसंख्या के पीछे रोगी शैय्याओं की जो राष्ट्रीय औसत है, उससे भी आगे निकल गया है।

१९७२–७३ वर्ष में इस क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कार्य किये गये हैं जैसे प्रारम्भिक चिकित्सा के लिए २ एड पोस्ट जोधपुर में, ११८ शैय्याओं का क्षयरोग अस्पताल जयपुर में, ११३ शैय्याओं का कर्मचारी राज्य बीमा योजना अस्पताल कायम किये गये। नकली दवाओं पर रोक के लिए एक औषधि-नियंत्रण संगठन कायम किया गया है।

राज्य में एलोपेथिक अस्पताल आदि

विवरण	कुल संख्या		शहरी		ग्रामीण*	
	१९६९	१९७०	१९६९	१९७०	१९६९	१९७०
१. अस्पताल	४०२	४०२	२३१	१०१	१७१	३०१
२. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	२३२	२३२	५६	—	१७६	२३२
३. डिस्पेंन्सरियाँ	२७१	२८७	१४२	१०१	१२९	१८६
४. M. C. W. केन्द्र	७५	७७	६५	२३	१०	५४
५. शैय्याएँ	१४५७४	१४८५४	१२२७९	९७००	२२९५	५१५४

*१९६९ में ग्रामीण का तात्पर्य ५,००० से कम जनसंख्या वाले स्थानों से है जबकि १९७० में ग्रामीण का तात्पर्य २०,००० से कम जनसंख्या वाले स्थानों से है।

राजकीय एलोपेथिक चिकित्सालयों में मरीजों की संख्या

वर्ष	मरीजों की संख्या	
	इन-डोर	आउट-डोर
१९६५	५०७२८९	१२५०२५६२
१९६६	४५१४०५	१३०३६९८५
१९६७	४५९३८८	१३२७४६६१
१९६८	३६७१५१	१३५५८२३६
१९६९	३८३४५९	१३७७०००८

राजकीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी संस्थाएँ
(राजस्थान)

विवरण	१९६८–६९	१९६९–७०
१. आयुर्वेदिक अस्पताल	१९	३८
२, आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरियाँ	१६४१	१६४९
३. शैय्याएँ	३४५	३४५
४. चिकित्सक :—		
(१) वैद्य तथा हकीम	१७५३	१८७६
(२) कम्पाउण्डर एवं नर्सें	१४९५	१६३०

परिवार नियोजन

परिवार नियोजन आंदोलन ने राज्य में प्रारम्भिक कठिनाई के वावजूद काफी प्रगति की है। इस आंदोलन को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार की तरफ से समय-समय पर विशेष आयोजन किए जाते हैं, जिनमें परिवार नियोजन पखवाड़ा आयोजित करना तथा समितियों में परस्पर प्रतियोगिता आयोजित कराना प्रमुख है। सितम्बर १९६९ में आयोजित परिवार नियोजन पखवाड़े में ७८३३ आपरेशन किए गये तथा २७९१ लूप प्रविष्ट किये गये थे। राज्य में इस समय तक एक लाख से भी अधिक लूप प्रविष्ट किये जा चुके हैं।

राज्य में, परिवार नियोजन के लिए प्रयोग में आने वाले उपकरणों का उपयोग भी पिछले वर्षों में एक अच्छी संख्या में किया जाने लगा है। १९६६–६७ के मुकाबले १९६९–७० में इनकी संख्या ६०० प्रतिशतबढ़ गई है। १९७०–७१ वर्ष के प्रथम तीन माह में ५१३० से अधिक परिवार नियोजन संबंधी शल्य क्रिया की जा चुकी थीं। तथा इसी अवधि में ३२०० लूप प्रविष्ट किये जा चुके हैं। 'निरोध' का ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से प्रचार किया जा रहा है। राज्य में डिपो होल्डर स्कीम के अंतर्गत अबतक निरोध वितरण के लिए ६२४ डाक-घरों का पंजीयन किया जा चुका है।

२१ | राजकीय उपक्रम एवं कम्पनियाँ

राजस्थान सरकार के राजकीय उपक्रम विभाग के अन्तंगत निम्नलिखित संस्थान कार्य कर रहे हैं।

(१) दी गंगानगर सुगर मिल्स लि०, जयपुर:—

गंगानगर सुगर मिल्स. एक सरकारी कम्पनी के रूप में कार्य कर रही है। इसका प्रधान कार्यालय जयपुर में है एवं चीनी की फैक्ट्री श्री गंगानगर में। इसकी अधिकृत पूंजी १ करोड़ एव परिदत्त पूंजी ४० लाख रुपये है। राज्य सरकार के ७१.८ प्रतिशत शेयर हैं। कम्पनी के पास १२०० एकड़ क्षेत्रफल का हनुमानगढ़ में एक कृषि फार्म भी है। कम्पनी के अन्तंगत अजमेर, अटरु (कोटा), प्रतापगढ़. गंगानगर एवं मंडोर (जोधपुर) में डिस्टीलरियां हैं जहाँ मदिरा एव स्प्रिट वनती हैं।

(२) हाइटेक प्रिसिजन ग्लास लि०, धौलपुर—

सार्वजनिक कं० के रूप में यह कारखाना धौलपुर में है। इसकी अधिकृत पूंजी ५० लाख रुपये है। तथा अधिकृत पूंजी केवल १० लाख रु० ही है। यहां परीक्षण में काम आने वाले कांच के समान, वैज्ञानिक उपकरण तैयार किये जाते हैं। जुलाई १९६८ को एक वर्ष के लिए इस कंपनी को गंगानगर सुगर मिल्स को लीज पर दिया गया था परन्तु दुर्भाग्यवश इस अवधि के पूर्ण होने के पूर्व ही १ मई, १९६९ को फैक्ट्री में भीषण तूफान से काफी क्षति हुई एवं उत्पादन कार्य वंद हो गया। इसके बाद फैक्ट्री के पुर्ननिर्माण का कार्य हाथ में लिया गया। इस कार्य के पूर्ण होने पर फैक्ट्री में उत्पादन ५ अक्टूबर १९७० से पुन: प्रारम्भ किया गया। यहां प्रतिमाह लगभग डेढ़ लाख रुपये के माल का उत्पादन हो रहा है तथा औसतन २७५ श्रमिकों को इसमें कार्य मिला हुआ है। एक वर्ष की लीज की अवधि समाप्त होने पर इसे ५ वर्ष के लिए और वढ़ा दिया गया है।

(३) राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स, डीडवाना:—

यह एक विभागीय संगठन है। इसके अन्तर्गत निम्नांकित कारखाने कार्य कर रहे हैं:—

(क) सोडियम सल्फेट प्लांट (पाइलेट):—

सन् १९६४ में पश्चिमी जर्मनी के सहयोग से १६·५ टन प्रतिदिन क्षमता का यह प्लांट सोडियम सल्फेट प्राप्त करने के लिए डीडवाना में स्थापित किया गया हैं। इस पर ४० लाख रुपये विनियोजित हुए।

(ख) ४० टन प्रतिदिन क्षमता का नया सोडियम सल्फेट संयंत्र—

पुराने वाले प्लांट के पास ही १९६७-६८ में एक नया ४० टन क्षमता का प्लांट लगाया गया है। इसकी सारी मशीनरी व डिजाइन दोनों भारत में ही वनी है। इस संयत्र पर भी ४० लाख रु० खर्चा हुए हैं।

(ग) शुद्ध नमक—

पाइलेट प्लांट में सोडियम सल्फेट वनाने के वाद वचे हुए खारे पानी से शुद्ध नमक का उत्पादन करने के लिए ४० टन क्षमता का एक नया संयंत्र लगाया गया है। प्रयोगात्मक रूप में यह १९६६ में शुरू हुआ था। इस (डी-सल्फेट ब्राइन, जिससे यह शुद्ध नमक वनाया जाता है,) पर आधारित विभाग ने मैसर्स क्रैक्स कम्पनी (इण्डिया) लिमिटेड के द्वारा कास्टिक सोडा वनाने की योजना तैयार करवाई है। इस योजना पर करीब ८ करोड़ रुपये की लागत का अनुमान है। अर्थाभाव के कारण इस योजना पर अभी कोई कार्य प्रारम्भ नहीं किया गया है।

(घ) सोडियम सल्फाइड प्लांट—

डीडवाना नगर से ८ किलोमीटर दूर दक्षिण में यह संयत्र सितम्वर १९६५ से चल रहा है। इसमें ठोस सोडियम सल्फाइड तथा फ्लेक्स वनते हैं। यह रसायन मुख्यत: चमड़ा उद्योग में काम आता है।

(ङ) नमक स्रोत डीडवाना:—

डीडवाना नमक स्रोत-डीडवाना शहर के २ किलोमीटर दक्षिण की ओर स्थित है। यह १९१० एकड़ में फैला हुआ है जिसमें नमक अभी केवल ४५० एकड़ भूमि पर ही वनाया जाता है। यह नमक स्रोत १८७९ से अंग्रेजी शासन के पास और स्वतंत्रता प्राप्ति के वाद भारत सरकार के पास २ लाख रुपये सालाना लीज पर था। १९६० में इस स्रोत को राजस्थान सरकार को सौंप दिया गया है तभी से यहां विभागीय तौर पर नमक का उत्पादन किया जा रहा है। यहां २००० मजदूर काम कर रहे हैं।

(४) नमक स्रोत, पचपदरा:—

पचपदरा नमक स्रोत ३२ वर्ग मील क्षेत्र में बाड़मेर जिले में फैला हुआ है। इसमें ४२८ पिटों में नमक उत्पादित किया जाता है। पिटों में नमक का घोल (ब्राइन) स्वतः ही आसपास की दीवारीय सुराखों से उपलब्ध होता है जो लूनी नदी से आता रहता है। पहले यह स्रोत भारत सरकार के नमक विभाग की देखरेख में था परन्तु पहली अप्रेल १९६० से यह राजस्थान सरकार के अधिकार में आ गया है। १९६० से १९६३ तक इस स्रोत की निगरानी संचालक, उद्योग व रसद विभाग, राजस्थान, जयपुर द्वारा की गई। १९६४ से यह स्रोत विभागीय देखरेख में नमक का उत्पादन व बेचान करता है।

यहां का दानेदार व हीरे की तरह चमकदार नमक पूरे भारत में अपनी विशेष किस्म के लिए मशहूर है।

(५) राजकीय ऊनी मिल, बीकानेर:—

इस मिल ने बीकानेर में ११ अप्रेल १९६८ से कार्य प्रारम्भ किया। इसमें १२४० तकुए लगे हुए हैं एवं सभी उपकरण जापान से आयात करके लगाये गये हैं। इस मिल पर कुल ७४ लाख रुपया खर्च हुआ। इस मिल की विस्तार की योजना भी है। वर्तमान में लगभग २२५ व्यक्ति इस मिल में कार्यरत हैं। मिल के उत्पादित धागे से बीकानेर में गलीचे बनाने का उद्योग भी विकसित हो रहा है।

(६) राजस्थान स्टेट टेनरीज, टौंक:—

राजकीय उपक्रम विभाग द्वारा चमड़ा उद्योग को बढावा देने हेतु दिसम्बर १९६५ में एक टेनरी प्रोजेक्ट लगाने का विचार किया गया। इस टेनरी को टौंक में स्थापित करने की कार्यवाही की जा रही है। इस उद्योग के लिए लाइसेंस प्राप्त कर लिया गया है एवं फ्रांस की एक फर्म से मशीनें प्राप्त करने का अनुबन्ध भी कर दिया गया है। १९७३ के वर्ष में ही फर्म द्वारा मशीनें भेज देने की बात है एवं मशीनें प्राप्त होने के अगले ६ मास में मशीनें लगकर फैक्ट्री उत्पादन प्रारम्भ कर देगी। इस उद्योग के लगने में लगभग ६५ लाख रुपया खर्चा होने का अनुमान है जिससे करीब ७० लाख रुपये का चमड़ा प्रतिवर्ष तैयार किया जावेगा एवं ४० लाख से ५० लाख रुपये के मूल्य का चमड़ा प्रतिवर्ष निर्यात किया जा सकेगा।

केन्द्र सरकार के उपक्रम

राज्य में पाँच महत्त्वपूर्ण उद्योग केन्द्रीय सरकार के हैं। जो निम्नलिखित हैं—

(१) हिन्दुस्तान साल्ट्स लि०, जयपुर—

सांभर झील पर नमक का उत्पादन इस कं० द्वारा किया जाता है। यहां

खाने एवं उद्योगों के लिए उपयोगी नमक एवं सोडियम सल्फेट उत्पादित होता है। कं० का प्रधान कार्यालय जयपुर में है। यहां से नमक का निर्यात भी होता है।

(२) हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, उदयपुर—

मेटल कोर्पोरेशन ऑफ इंडिया के स्थान पर नई कं० हिन्दुस्तान जिंक लि० १९६५ में स्थापित की गई। जावरा से प्राप्त जस्ता और सीसा के शोधन हेतु उदयपुर के समीप एक संयंत्र लगाया गया है। यहां पर स्थित जिंक स्मेल्टर प्लांट में १८,००० टन शुद्ध जस्ता प्रतिवर्ष तैयार होता है। प्रधान कार्यालय उदयपुर में है।

(३) हिन्दुस्तान कॉपर लि०, खेतड़ी—

हिन्दुस्तान कॉपर लि० की स्थापना १९६७ में की गई। अन्य राज्यों के अतिरिक्त राजस्थान में खेतड़ी में यह दो परियोजनाओं को संचालित करती है। खेतड़ी के दो तांवे के भण्डारों-माधन-कूचन तथा कोलिहान में इलेक्ट्रोलिटिक तांवा उत्पादित किया जाता है। यह एक बहुत बड़ी योजना है। इस पर पूरी होने पर ९६ करोड़ रु० खर्च होने का अनुमान है।

(४) इन्स्ट्रूमेंटेशन लिमिटेड, कोटा

कोटा स्थित इस कारखाने का निर्माण १९६८ में हुआ। यहां थर्मोकपल्स, थर्मामीटर तथा बीजली व चुम्बकीय गुण वाले औजार तैयार होते हैं।

(५) मशीन टूल कोर्पोरेशन ऑफ इण्डिया लि०, अजमेर

अजमेर स्थित इस फैक्ट्री में घर्षण मशीन उपकरणों का निर्माण किया जाता है। इस कारखाने में तकनीकी सहायता चेकोस्लोवेकिया से मिली है। कुल ९ करोड़ रुपया लगने का अनुमान है।

सहकारी क्षेत्र के उद्योग

(१) सहकारी कीट नाशक औषधि का कारखाना (जयपुर)

राजस्थान राज्य सहकारी क्रय विक्रय संघ द्वारा जयपुर में पेस्टी-साईड, इन्सेक्टीसाईड का प्लांट चलाया जा रहा है। इसकी क्षमता १०० टन प्रतिदिन की है।

(२) पशुआहार कारखाना (जयपुर)

राजस्थान राज्य सहकारी क्रय विक्रय संघ द्वारा ही यह कारखाना जयपुर में

स्थापित किया गया है। जैसाकि इसका नाम है पशुओं एवं कुक्कुट के लिए यहां आहार तैयार किया जाता है। १९७० में इसकी स्थापना हुई।

(३) सहकारी शीतभंडार

राजस्थान राज्य सहकारी क्रय-विक्रय संघ द्वारा ही जयपुर व अलवर में एक-एक शीत भंडारों की स्थापना की गई है।

(४) सहकारी चीनी मिल (केशोरायपाटन)

१९७० में इस मिल की स्थापना की गई। इसकी क्षमता प्रतिदिन १२५० टन गन्ना पेलने की है। इसमें २·४० करोड़ रुपये लगे हैं।

(५) सहकारी स्पिनिंग मिल (गुलाबपुरा)

यह सहकारी क्षेत्र की एक बड़ी उपलब्धि है। यह कारखाना अपने निर्माण के अंतिम चरण में है। इसमें २५ हजार तकुओं की व्यवस्था है।

(६) सहकारी ग्वार गम प्लांट

राजस्थान राज्य सहकारी क्रय-विक्रय संघ द्वारा नागौर में इस कारखाने को स्थापित करने कीं योजना है। यह एक वृहत योजना है जिसमें २४ लाख रुपये खर्च होंगे।

(७) सहकारी चावल मिलें

राजस्थान में ६ चावल मिले—बारां, उदयपुर, बूंदी, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, तथा हनुमानगढ़ में स्थापित होंगी। बारां (कोटा) की मिल शुरू हो चुकी हैं। ये चावल मिलें स्थानीय क्रय-विक्रय सहकारी समिति एवं राजस्थान राज्य सहकारी क्रय-विक्रय संघ लि० की देख रेख में लगाई जा रही है।

(८) दाल मिलें

दो दाल मिलें जयपुर व केकड़ी में क्रय-विक्रय संघ द्वारा लगाई जा चुकी हैं। दो अन्य मिलों की हिन्डौन व नीम का थाना के लिए कोग्रापरेटव डवलपमेंट कार-पोरेशन द्वारा स्वीकृति मिल गई है। ये शीघ्र ही बैठेंगी।

(९) मूंगफली डिकोरटिकेटर प्लांट :—

गंगापुर क्रय-विक्रय सहकारी समीति लि० द्वारा मूंगफली छीलने का प्लांट लगाया गया है, इसके अतिरिक्त एक तेल मिल का प्लांट भी गंगापुर में लगाया गया हैं।

(१०) कॉटन जिनिंग एवं प्रेसिंग यूनिट :—

दो, कॉटन जिनिंग एवं प्रेसिंग प्लांट विलाड़ा क्रय-विक्रय सहकारी समिति एवं किसान कॉटन जिनिंग एण्ड प्रेसिंग सोसाइटी लि०, वड़ोदिया द्वारा स्थापित किये गये है। इन प्लांटों में कपास के जिनिंग एवं प्रेसिंग का कार्य किया जाता है।

अन्य सरकारी संस्थानों के उद्योग

(१) वर्स्टेड स्पिनिंग मिल्स, चूरू तथा लाडनूं :—

इन दोनों जगहों पर दो कारखाने राजस्थान लघु उद्योग निगम द्वारा लगाये गये हैं। दोनों मिलों में वर्स्टेड ऊनीधागा तथा ऊनी टाप्स तैयार किया जाता है। इनमें ४०० तकुए प्रत्येक में कार्य कर रहे हैं।

(२) अरावली स्वचालित वाहन लि० :—

राजस्थान औद्योगिक व खनिज विकास निगम के द्वारा अलवर में एक स्कूटर प्रोजेक्ट लगाया जा रहा है। कारखाने की स्थापना का कार्य काफी प्रगति पर है। यहाँ 'चेतक' नाम से स्कूटर शीघ्र ही तैयार हो जायेगा।

(३) 'मयूर' बीड़ी इण्डस्ट्रीज :—

राजस्थान लघु उद्योग निगम द्वारा ही टोंक में यह उद्योग खोला गया है। यहाँ ४ लाख बीड़ियों का दैनिक उत्पादन होता है। इसमें ३५० कामगार हैं।

कम्पनियाँ

जून १९७३ के अंत तक राजस्थान में १२४ पब्लिक लिमिटेड कम्पनियां काम कर रही थी, जिनकी अधिकृत पुंजी ७६ करोड़ ११ लाख ७१ हजार रुपये और चुकता पूंजी २६ करोड़ ६४ लाख ३९ हजार २३ रुपये थी। इसी समय तक ४४१ प्राइवेट लिमिटेड कम्पनियां भी काम कर रही थी जिनकी अधिकृत पूंजी १ अरब ३८ करोड़ ४१ लाख ६३ हजार ४ सौ रुपये और चुकाता पूंजी ७० करोड़ ४४ लाख ५ हजार ४४१ रुपये थी। इसके अलावा विना हिस्सा पूंजी की गारन्टी द्वारा लिमिटेड २८ कम्पनियां भी काम कर रही थीं।

पिछले एकदशक की जांच करने पर यह तथ्य प्रकाश में आता है कि पब्लिक लिमिटेड कम्पनियों की संख्या में थोड़ी कमी होते हुए भी चुकता पूंजी में लगभग दुगनी वृद्धि हुई है। प्राइवेट लिमिटेड कंपनियों की संख्या बढ़कर डेढ़ गुनी हुई है जबकि इनकी चुकता पूंजी लगभग दस गुनी बढ़ी है। आगे दी गई तालिका में विभिन्न वर्षों में कम्पनियों की संख्या व चुकता पूंजी दिखायी गई है।:—

राजस्थान में संयुक्त स्कन्ध कम्पनियाँ

वर्ष	पब्लिक लि० कम्पनियाँ		प्राइवेट लि० कम्पनियाँ	
	संख्या	चूकता पूंजी (लाख रु०)	संख्या	चूकता पूंजी (लाख रु०)
१९६०–६१	१४४	१४०३·३७	२५४	६६४·८१
१९६१–६२	१३७	१४३३·७०	२५८	६७८·००
१९६२–६३	१४६	१४४४·५१	२८६	६९४·३९
१९६३–६४	१३७	१३९८·८३	२७३	६९२ ५६
१९६४–६५	१३२	१३७७·९९	२६८	७०८·८६
१९६५–६६	१२५	१३०५·३०	२५७	६८८·०७
१९६६–६७	११८	१३४८·४८	२४९	६६९·७१
१९६७–६८	११५	१४२०·६८	२६७	८०८·९९
१९६८–६९	११८	१४००·७५	२७२	१५०७·०८
१९६९–७०	११२	१३८४·७०	२७९	२५१५·६६
१९७०–७१	११५	२१८७·१२	३१७	३४०३·३५
१९७१–७२	११९	२५१५·३१	३६१	५२१७·८४
१९७२–७३ (३१ जनवरी तक)	१२२	२६०९·९१	४२१	६९१२·१५
१९७३ (जून तक)	१२४	२६६४·३९	४४१	७०४४·०५

२२ | बीमा

राजस्थान में जीवन बीमा निगम का व्यवसाय काफी उन्नति पर रहा है। पिछले आधेदशक में जीवन बीमा का व्यवसाय राज्य में लगभग दुगना हो गया है। यह वृद्धि शहरी व ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में हुई है। अगले पृष्ठ पर दी गई तालिका से राज्य में जीवन बीमा निगम के व्यापार की स्थिति ज्ञात हो सकती है।

जीवन बीमा निगम का राज्य में विनियोग—

जीवन बीमा निगम ने अपनी आय में से राजस्थान के विकास हेतु १९७१-७२ में ५९·२६ करोड़ रुपये विनियोजित किये हैं। प्रमुख विनियोजन गृह निर्माण, जल वितरण, विद्युत एवं उद्योगों में किया गया है। प्रस्तुत सारणी में जीवन बीमा निगम का राजस्थान में १९७० ७१ एवं १९७१–७२ का कुल विनियोजन बताया गया है।:—

क्षेत्र	कुल विनियोजन (लाख रु०)	
	१९७०–७१	१९७१–७२
१. राजकीय गृह निर्माण	७४५·१०	९७१·९६
२. राज्य सरकार एवं नगरपालिकाओं को जल वितरण हेतु	५२७·५७	५९८·७४
३. राज्य विद्युत-मण्डल	८४१·२५	११७५·००
४. औद्योगिक सम्पदा	२७३	४·१०
५. सहकारी चीनी निर्माण	३७·५०	३७·५०
६. स्कन्ध विपणि	२८८७·८३	३०६८·७८
७. कम्पनियां	—	७०·००
योग	५०४१·९८	५९२९·०८

जीवन बीमा निगम का राजस्थान में व्यापार

वर्ष	कुल व्यापार		शहरी व्यापार		ग्रामीण व्यापार	
	पालिसी संख्या	बीमाराशि (लाख रु०)	पालिसी संख्या	बीमाराशि (लाख रु०)	पालिसी संख्या	बीमाराशि (लाख रु०)
१	२	३	४	५	६	७
१९६५–६६	६७००३	३२३१·२५	४२४८५	२२७१·२३	२४५१८	९६०·०२
१९६६–६७	४९८३४	२५०६·०८	३२२७६	१७६१·६४	१७५५८	७८३·३९
१९६७–६८	५४३८५	२९२६·६४	३४४३१	२०३४·६२	१९९५४	८९१·८२
१९६८–६९	५५५००	३२९८·८२	३६७३१	२३६५·४६	१८७७९	९३३·३५
१९६९–७०	५३९८०	३६१४·५४	२६६६८	२६६४·७३	१७३१२	९४९·८१
१९७०–७१	६२०२१	४४९४·००	४३०६२	३३५८·००	१८९५९	११३६·००
१९७१–७२	८०६७१	५४७१·९०	५५८२८	४०३८·७४	२४८४३	१४३३·१६

२३ | बैंकिंग

राजस्थान में आधुनिक प्रकार की बैंकों की शुरूआत १९१६ में अजमेर में 'एलिएन्स बैंक ऑफ सिमला' की शाखा खुलने के साथ हुई। १९२० में, अजमेर में दूसरी, 'इण्डस्ट्रियल एण्ड एक्सचेंज बैंक ऑफ इण्डिया' की शाखा खुली। १९२३ में दोनों ही बैंकों का समापन हो गया। इसी वर्ष जयपुर व अजमेर में इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया की शाखायें खुलीं। १९२५ में यूनिट बैंकिंग के रूप में डीडवाना में 'दी डीडवाना इण्डस्ट्रियल बैंक' की स्थापना हुई। १९६५ में इस बैंक को 'न्यू बैंक ऑफ इण्डिया' के द्वारा ग्रहण कर लिया गया। १९२६ में बूंदी में 'पिपल्स बैंक ऑफ नदर्न इण्डिया' की शाखा खुली परन्तु १९३५ में बैंक के बंद होने के कारण यह शाखा भी बंद हो गई। १९२७ में जयपुर तथा सांभरलेक में इम्पीरियल बैंक एवं सैंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया की शाखायें खुलीं। १९३३ में सिंघ प्रोस्पेरिटी बैंक (करांची) की शाखा अजमेर में खुली जो बैंक के असफल होने के कारण १९३७ में बंद हो गई। १९३४ में अजमेर में एक नयी बैंक, 'दी दीनबंधु इन्स्योरेंस एण्ड बैंकिंग कम्पनी,' की स्थापना हुई परन्तु कं० बाजार में अपने शेयर्स पर्याप्त मात्रा में बेचने में असफल रही, फलस्वरूप १९३६ में बंद हो गई। १९३९ में अजमेर में ही 'दी बैंक ऑफ राजपूताना एण्ड सैंट्रल इण्डिया' पंजीकृत की गई, परन्तु यह भी पूंजी के अभाव में शुरू नहीं हो सकी।

इसी समय द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने से बैंकों के विकास में गति आयी। दी भारत बैंक (दिल्ली) ने अपने ६ कार्यालय राजस्थान में इसी काल में खोले। इस काल में नयी बैंकों की स्थापना में 'बैंक ऑफ जयपुर' प्रथम थी जिसका पंजीयन फरवरी १९४३ में हुआ। मई १९४३ में दूसरी बैंक 'बैंक ऑफ राजस्थान' की स्थापना उदयपुर में हुई। जून १९४४ में 'जोधपुर कॉमर्शियल बैंक' तथा दिसम्बर १९४४ में 'बैंक ऑफ बीकानेर' की स्थापना हुई। इसी काल में कई छोटी २ बैंके

भी स्थापित हुई जिनमें पारीख कॉर्मसियल बैंक, बीकानेर, श्री गोपाल इण्डस्ट्रियल बैंक, भरतपुर, लक्ष्मी सेफ डिपॉजिटे बैंक, जयपुर तथा बेंगानी बैंक, लाडनू आदि प्रमुख थे।[1]

राजस्थान एकीकरण के पश्चात् विभिन्न कारणों से इनमें से अधिकांश बैंके बंद हो गई तथा 'बैंक ऑफ जयपुर' एवं 'बैंक ऑफ बीकानेर' स्टेट बैंक की सहायक बैंकें बनी। १ जनवरी १९६० से इन दोनों बैंकों को मिलाकर 'स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर' बैंक बनाया गया। 'बैंक ऑफ राजस्थान' पूर्ववत् निजी बैंक के रूप में कार्य कर रहा है।

राजस्थान में व्यापारिक बैंकों की शाखायें

क्र० सं०	बैंक का नाम	३१ मई, १९७३ को संख्या
१.	स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया	१९
२.	स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर	२९८
३.	इलाहाबाद बैंक	५
४.	बैंक ऑफ बड़ौदा	५५
५.	बैंक ऑफ इण्डिया	६
६.	केनरा बैंक	१
७.	सैंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया	४३
८.	देना बैंक	२
९.	इण्डियन ओवरसीज बैंक	१
१०.	पंजाब नेशनल बैंक	७१
११.	सिंडीकेट बैंक	२
१२.	यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया	६
१३.	यूनाइटेट कॉर्मसियल बैंक	४५
१४.	बैंक ऑफ राजस्थान लि०	८२
१५.	हिन्दुस्तान कॉर्मसियल बैंक लि०	२
१६.	न्यू बैंक ऑफ इण्डिया लि०	९
१३.	लक्ष्मी कार्मसियल बैंक लि०	२
१८.	ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स लि०	६
१९.	पंजाब एण्ड सिंध बैंक लि०	७
२०.	विजया बैंक लि०*	१
	योग	६६३

1. Sharma, (DR.) Harish C., : Growth of Banking in a Developing Economy.

*विजया बैंक जयपुर में अगस्त १९७३ में खुली है।

वर्तमान स्थिति:—

इस समय राजस्थान में २० विभिन्न वैंकों की शाखायें है। १४ राष्ट्रीयकृत वैंकों में ११ वैंकों की शाखायें राज्य में है। राजस्थान के जयपुर शहर को यह सौभाग्य प्राप्त हैं कि राज्य में कार्य कर रही प्रत्येक वैंक की शाखा इस शहर में है। इस समय (अप्रेल १९७३) राज्य में कुल ६५५ ब्रांचें कार्य कर रही है। जिसका वर्गीकरण पीछे दी गई तालिका के अनुसार है।

लीड वैंक

प्रत्येक जिला क्षेत्र में वैंकों के विकास के लिए रिजर्व वैंक ने दिसम्बर १९६९ में एक 'लीड वैंक योजना' शुरू की जिसके अन्तर्गत चुने हुए वड़े वैंकों को उनके लिए निर्धारित किये गये जिले में वैंकिंग विकास का कार्य सौंपा गया है। राजस्थान में ६ वैंकों को विभिन्न जिलोंवार यह दायित्व सौंपा गया है। ये विभिन्न वैंकें तथा उनको सौंपे गये जिले नीचे तालिका में दिखाये अनुसार हैं:—

लीड वैंक	जिले	जिलों के नाम
१. स्टेट वैंक समूह (स्टेट वैंक ऑफ इण्डिया एवं स्टेट वैंक ऑफ वीकानेर एण्ड जयपुर)	८	वाड़मेर, वीकानेर, गंगानगर, जैसलमेर, जालौर, पाली, सिरोही, उदयपुर (वैंक ऑफ राजस्थान के साथ)।
२. सैंट्रल वैंक ऑफ इण्डिया	२	झालावाड़, कोटा।
३. पंजाव नेशनल वैंक	३	अलवर, भरतपुर, सीकर।
४. वैंक ऑफ वड़ोदा	१०	अजमेर, वांसवाड़ा, भीलवाड़ा, वूंदी, चूरू, टौंक, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, झुंझुनू, सवाई-माधोपुर।
५. यूनाइटेड कामर्शियल वैंक	३	जयपुर, जोधपुर, नागौर।
६. वैंक ऑफ राजस्थान लि०	१	उदयपुर (स्टेटवैंक समूह के साथ)।

२४ | यातायात

सड़क निर्माण क्षेत्र में राजस्थान उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है। १९७०–७१ के शुरू में यहां विभिन्न प्रकार की सड़कों की कुल लम्बाई ३१५२७ किलोमीटर थीं। सड़कों के विस्तार में उदयपुर जिला प्रथम है जहां ३२६२ किलोमीटर सड़क थी। तत्पश्चात् क्रमशः जोधपुर नागौर और कोटा जिलों का स्थान आता है। सबसे कम सड़क झुंझुनू जिले में ५३६ किलोमीटर थीं। राजस्थान के ९ जिलों में से होकर राष्ट्रीय राजमार्ग भी गुजरते हैं। राष्ट्रीय पथ नं० ८ जो दिल्ली से बम्बई को जोड़ता है, राजस्थान के जयपुर, अजमेर, उदयपुर होता हुआ अहमदाबाद, बड़ौदा के रास्ते से बम्बई पहुँचता है। राष्ट्रीय पथ नं० ११ आगरा को बीकानेर से जयपुर के रास्ते जोड़ता है।

राज्य की विभिन्न सड़कों की लम्बाई निम्न तालिका में दी गई है:—

राज्य में सड़कों की लम्बाई

(किलोमीटर)

	सड़कों की किस्म	१९७१–७२	१९७२–७३ अनुमान
१.	राष्ट्रीय पथ	२,०८९	२,०८९
२.	राज्य पथ	८,६६८	८,७०२
३.	मुख्य जिला सड़क	४,५०९	४,५३१
४.	अन्य जिला एवं ग्राम सड़क	१७,६३९	१७,६८३
	योग	३२,९०५	३३,००५

महत्वपूर्ण स्थानों की सड़क से दूरियाँ

	से	तक	वाया	दूरी (किलोमीटर)
१.	जयपुर	दिल्ली	कोटपूतली	२५६
२.	„	„	अलवर	३१०
३.	„	अलवर	—	१४६
४.	„	अजमेर	—	१३२
५.	„	उदयपुर	ब्यावर	३६२
६.	„	„	चित्तौड़गढ़	४३५
७.	„	माऊँट आबू	अजमेर	५०८
८.	„	जोधपुर	„	३१८
९.	„	कोटा	„	३२७
१०.	„	„	टोंक	२४५
११.	„	नागौर	दूदू	२७५
१२.	„	„	सुजानगढ़	३१७
१३.	„	बीकानेर	रतनगढ़	३३६
१४.	„	गंगानगर	रतनगढ़	४४६
१५.	„	भरतपुर	—	१७८
१६.	उदयपुर	अहमदाबाद	—	२५०
१७.	„	माऊँट आबू	बाली	३२०
१८.	„	डूंगरपुर	—	१०६
१९.	डूंगरपुर	बांसवाड़ा	—	१०५
२०.	बीकानेर	नागौर	—	११२
२१.	नागौर	जोधपुर	—	१३६
२२.	गंगानगर	बीकानेर	—	२४२
२३.	भरतपुर	अलवर	डीग	११७
२४.	कोटा	झालावाड़	—	८५

सड़कों पर वाहन:—

१६७१ के शुरू में राज्य में सर्वाधिक संख्या निजीकार एवं जीपों की थीं जो कुल ८६,६४४ वाहनों में २३,१५५ थे। दूसरा स्थान मोटर साईकिल एवं ऑटो-साइकिल का था जो २३,०२५ थे। लोक वाहन ट्रक १६,७०७, निजी वाहन ट्रक ३,७७५ एवं ट्रैक्टर १३,५६० थे। निजी बसें ४४२ थीं। १६७१ एवं १६७२ के अंत में कुल वाहनों की संख्या में काफी वृद्धि हुई एवं इन वर्षों के दिसम्बर मास में सड़क पर वाहनों की संख्या क्रमश: १,००,६८२ एवं १,११,१८१ हो गई।

सड़क दुर्घटनाएं:—

१६७० में राज्य के प्रत्येक जिले में सड़क दुर्घटना हुई। सर्वाधिक दुर्घटनाएं जयपुर जिले में ३६२ तथा सबसे कम झालावाड़ जिले में ५ दुर्घटनाएं हुई। कुल १७६० दुर्घटनाएं हुई जिनमें ६४० व्यक्तियों की मृत्यु हुई एवं २०६२ व्यक्ति घायल हुए।

रेल–मार्ग

राजस्थान में भारत के तीन रेल-मण्डलों—उत्तरी, पश्चिमी तथा मध्य के रेल मार्ग हैं। पश्चिमी जोन के मार्ग की लम्बाई लगभग २५०० कि० मी० है जो सर्वाधिक है। इसके अतिरिक्त राज्य में तीनों ही प्रकार के रेल-मार्ग—'मीटर गेज', 'ब्रॉड गेज' तथा 'नैरोगेज' हैं। राज्य में कुल ६२३० किलोमीटर लम्बा रेल-मार्ग है। राज्य के बीकानेर, जोधपुर, गंगानगर, चूरू आदि जिलों में उत्तरी रेल्वे हैं। यहां सम्पूर्ण मार्ग 'मीटर गेज' के हैं। अलवर, जयपुर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर व आबू में पश्चिमी रेल्वे के 'मीटर गेज' मार्ग हैं तथा कोटा व सवाईमाधोपुर में इसी रेल्वे का 'ब्रॉड गेज' मार्ग भी है। मध्य रेल्वे का 'ब्रॉड गेज' मार्ग धौलपुर में है तथा इसी रेल्वे का 'नैरोगेज' मार्ग भरतपुर में है।

वायु-मार्ग

राजस्थान में नागरिक उड्डयन के लिए जयपुर, जोधपुर, उदयपुर व कोटा के हवाई अड्डे हैं। इनके अलावा सामरिक-दृष्टि से जोधपुर व बीकानेर के हवाई अड्डों का बहुत महत्त्व है। 'ग्लाइडिंग' के लिए पिलानी तथा वनस्थली की हवाई पट्टीयों का भी बहुत उपयोग होता है। जयपुर व उदयपुर के हवाई अड्डों को 'बोईंग ७४७' के उतरने-चढ़ने के योग्य व विकसित करने की योजना है।

२५ | संचारवाहन व प्रसारण

डाक-तार-टेलीफोन

राजस्थान में १९७१ के अन्त में कुल ६३११ डाकघर एवं ६५४ तारघर थे। सर्वाधिक जयपुर जिले में ५२५ डाकघर एवं ६३ तारघर थे। जबकि सबसे कम जैसलमेर जिले में ६३ डाकघर एवं ५ तारघर थे। राजस्थान के २९२४६ गांव अभी तक डाकघर रहित हैं।

राज्य के सभी जिलों में टेलीफोन की सुविधा प्राप्य है। सर्वाधिक टेलीफोन-केन्द्र श्री गंगानगर जिले में १६ एवं सबसे कम बांसवाड़ा में एक है। राज्य में कुल टेलीफोन केन्द्र १९७१ में १६८ थे।

रेडियो-टेलीविजन

राजस्थान में ५ रेडियो स्टेशन—जयपुर, अजमेर, जोधपुर, उदयपुर और बीकानेर में है। छठा रेडियो स्टेशन सूरतगढ़ में खुलने की योजना है। पांचवीं पंच-वर्षीय योजनाकाल में जयपुर में टेलीवीजन केन्द्र स्थापित होने की योजना है।

राजस्थान में प्रमुख स्थानों के पिन कोड नम्बर

जयपुर—१	३०२००१	जयपुर—२	३०२००२
जयपुर—३	३०२००३	जयपुर—४	३०२००४
जयपुर—५	३०२००५	जयपुर—६	३०२००६
जयपुर—७	३०२००७	अजमेर	३०५००१
आमेर	३०३१०१	अलवर	३०१००१
वनस्थली	३०४०२२	बांदीकूई	३०३३१३
भरतपुर	३२१००१	बीकानेर	३३४००१
बूंदी	३२३००१	चौमू	३०३७०२
दौसा	३०३३०३	झुंझुनूं	३३३००१
जोधपुर	३४२००१	कोटा	३२४००१
कोटपूतली	३०३१०८	सांभरलेक	३०३६०४
सावाईमाधोपुर	३२२००१	शाहपुरा	३०३१०३
सीकर	३३२००१	टोंक	३०४००१
उदयपुर	३१३००१		

२६ | पर्यटन

राजस्थान अपनी रमणीयता के कारण पर्यटकों और सैलानियों के लिए निरन्तर सम्होहन का केन्द्र रहा है। ऐतिहासिक महत्त्व के समृद्ध किलों के दर्शन हमें राजस्थान में ही होते हैं। जयपुर, अजमेर, चितौड़गढ़, उदयपुर, एकलिंगजी, कंकरोली, नाथद्वारा, रनकपुर, आबू, जोधपुर, जैसलमेर व बीकानेर प्रमुख ऐतिहासिक दर्शनीय स्थान हैं।

राज्य सरकार पर्यटन विकास में सतत् योगदान दे रही है। पर्यटकों की सुविधा के लिए जयपुर, उदयपुर, अजमेर, माऊँट आबू, जोधपुर, पुष्कर, चितौड़गढ़ तथा सरिस्का में ४२१ सीट क्षमता के सरकारी डाक बंगले हैं। इनके अतिरिक्त भरतपुर और जैसलमेर के ट्यूरिस्ट डाक बंगले भी तैयार हो रहे हैं। जयपुर में ट्यूरिस्ट रिसेप्शन सेंटर का कार्य प्रगति पर है जिसके इसी वर्ष पूरे हो जाने की आशा है। राज्य सरकार द्वारा गेम सैन्चुरीज के विकास के लिये भी कोशिश की जा रही है।

डाक बंगलों के अतिरिक्त राज्य में सरकारी व निजी होटलों में ३८८१ सीटों की व्यवस्था है। राज्य का पहला '५ स्टार' होटल जयपुर में इसी वर्ष चालु हो चुका है। राज्य में पर्यटकों की सहायतार्थ कुशल 'ट्यूरिस्ट गाईड सेंटर' तथा यातायात का समुचित प्रबन्ध है।

१९७१ के वर्ष में ४२,५०० विदेशी तथा १४ लाख देश के अन्य भागों के पर्यटकों ने राजस्थान के महत्त्वपूर्ण स्थान देखे। जबकि १९५५ में पर्यटकों की संख्या विदेशी १५०० तथा देश के लोग ६ लाख थे।

पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में १ २१ लाख विदेशी व १८ लाख से अधिक देश के लोगों को यहाँ आकर्षित करने का लक्ष्य बनाया जा रहा है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निम्न प्रयत्न किये जा रहे हैं। (१) २०० बैड-क्षमता प्रत्येक वर्ष विभिन्न स्थानों पर बढ़ाना, (२) यातायात में विस्तार, (२) अलवर, चितौड़गढ़, सवाईमाधोपुर, अजमेर, जैसलमेर आदि स्थानों पर हवाई पट्टी का निर्माण करना, (४) विभिन्न सैंक्चुरीज का विकास करना, (५) जैसलमेर, सरिस्का व भरतपुर में 'गुलमर्ग-स्की' की तरह विकास करना, (६) राज्य में एक ट्यूरिस्ट विकास निगम की स्थापना करना, (७) उपरोक्त कार्यों के लिए राज्य की योजना में २·५० से ३·० करोड़ रु. का पर्यटन कार्य हेतु प्रावधान करना आदि आदि।

सात दिनों में राजस्थान-भ्रमण

दिवस	स्थान	दर्शनीय स्थल
पहला	जयपुर	(१) आमेर किला, (२) सिटी पैलेस, (३) जंतर-मंतर, (४) हवा महल, (५) अजायब घर, (६) गलताजी, (७) नाहरगढ़ का किला।
दूसरा	अजमेर	(१) पुष्करराज, (२) दरगाह, (३) ढाई-दिन का झोंपड़ा, (४) आना सागर-झील।
तीसरा	चितौड़गढ़	(१) किला, (२) विजयस्तम्भ, (३) कीर्ति-स्तम्भ, (४) मीरा-मन्दिर, (५) रानी पद्मनी का महल।
चौथा	उदयपुर	(१) जगदीश मन्दिर, (२) शाही-महल (३) अजायब घर व चिड़िया घर, (४) सहेलियों की वाड़ी, (५) फतेह सागर, (६) लेक-पैलेस।
पाँचवा	आबू के रास्ते में	(१) एकलिंगजी, (२) नाथद्वारा, (३) कंकरोली (४) रनकपुर।
छठा	माऊँट आबू	(१) देलवाड़ा का जैन मन्दिर, (२) अचलगढ़, (३) गुरु शिखर, (४) नक्की झील, (५) सन-सैट-प्वांइट, (६) गोमुख, (७) ट्रेवर-ताल।
सातवाँ	जोधपुर	(१) किला, (२) उम्मेद भवन, (३) जसवंत थड़ा, (४) मन्दोर, (५) बाल-समंद झील तथा महल।

वापसि :—

सीधे—जोधपुर से दिल्ली

या

जोधपुर से आगरा वाया जयपुर, भरतपुर

या

जोधपुर से बम्बई वाया अहमदाबाद

२७ | दर्शनीय-स्थल

अजमेर

अजमेर की गणना राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक नगरों में की जाती है। मध्ययुग में मुगल बादशाहों द्वारा सँवारे गये इस नगर की सीमाओं में निम्नलिखित दर्शनीय स्थान हैं :—

ख्वाजा साहब की दरगाह :—यह मुसलमानों के प्रमुख तीर्थ स्थानों में से एक है। सन् १४६४ में सर्वप्रथम ख्वाजा साहब की कब्र पर सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी ने नागौर के ख्वाजा के कहने पर एक पक्की कब्र और उस पर छोटा सा गुम्बज बनाया था। इसका विस्तार सम्राट अकबर ने किया और तभी से यह प्रसिद्ध हो गयी। दरगाह अकबरी मस्जिद, शाहजहां की जुमा मस्जिद, बुलंद दरवाजा, बेगमी दालान, संदलखाना, महफिलखाना आदि स्थान हैं। यहां सम्राट अकबर के समय के दो बड़े देग हैं जिनमें १०० मन चावल एक साथ पकाया जा सकता है। रजब माह की १ तारीख से ६ तारीख तक विशाल रूप में उर्स का मेला लगता है जिसमें भारत, पाकिस्तान तथा अन्य मुस्लिम राष्ट्रों से हजारों की संख्या में लोग सम्मिलित होते हैं। इस दरगाह में प्रत्येक जाति का व्यक्ति प्रवेश पा सकता है।

नसियां :—यह स्वर्गीय सेठ मूलचन्द सोनी द्वारा निर्मित दिगम्बर जैन मन्दिर है जो सिद्धकूट चैत्यालय के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। इसका निर्माण सन् १८६५ में हुआ था। यह भवन पूर्णतः लाल पत्थर का बना हुआ है। इसकी छत पर लगे स्वर्ण काफी ऊंचाई पर हैं। इस मन्दिर के पीछे ४० फीट चौड़ा और ८० फीट लम्बा एक भव्य कमरा है जिसमें रंग-बिरंगे मनमोहक चित्रों का प्रदर्शन किया गया है। इसकी दीवारें और छत कांच की पच्चीकारी से ढ़की हुई है। इस कमरे में प्रदर्शित दृश्य दो भागों में विभाजित है। वर्तुलाकार भाग में जैन मतानुसार गोल आकृति में सृष्टि की रचना का दृश्य है जिसके बीच में "सुमेरू" नामक ऊंचा

पर्वत है। कमरे के दक्षिणी भाग में अयोध्या नगरी का दृश्य है। इसके दक्षिण में प्रयाग, त्रिवेणी और पवित्र वट वृक्ष का मनमोहक दृश्य और श्री ऋषभदेव जी की मूर्ति है और दूसरे भाग में श्री महावीर भगवान के जन्म का दृश्य प्रतिपात्रों द्वारा दिखाया गया है। मन्दिर के अगले हिस्से में मकराने के पत्थर का एक सुन्दर मानस्तम्भ है।

पुष्कर :—यह अजमेर से सात मील उत्तर-पूर्व में हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ स्थान है। झील के चारों ओर लगभग ६० पक्के घाट बने हुए हैं। यहां ब्रह्माजी तथा सावित्री के मन्दिर भी हैं। रंगनाथ जी के दो मन्दिर एक पुराना तथा एक नया और बराह का प्राचीन मन्दिर है। ब्रह्माजी तथा सावित्री जी के मन्दिर समस्त विश्व में एक मात्र पुष्कर जी में ही विद्यमान है। पुष्कर में कार्तिक की पूर्णिमा को पर्व-स्नान का मेला भरता है। इस महत्त्वशाली मेले की गणना भारत के विशाल पशु मेलों में प्रथम स्थान पर की जाती है। कहा जाता है कि पांडवों ने अपने वनवास के कुछ वर्ष यहां व्यतीत किये थे। यहां अगस्त्य और भृर्तृहरि का स्मरण करने वाली गुफाएं आज भी विद्यमान है। सरस्वती नदी के टांके में जो पांच पुष्कर माने जाते हैं उनमें बूढ़े पुष्कर का स्थान महत्त्वपूर्ण है। इसकी झील रेतीले क्षेत्र में कुण्ड के समान है। इसी के पास ही एक दूसरा पुष्कर सुदाधाम के नाम से सम्बोधित किया जाता हैं। इसकी गणना भी पांच पुष्करों में की जाती है। अजमेर से यहां जाने का रास्ता सुन्दर पहाड़ियों में होकर एवं काफी टेड़ा-मेढ़ा है। इसकी प्राचीनता का कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता। अजमेर से पुष्कर जाने के लिए बसें व कारें अजमेर स्टेशन पर उपलब्ध रहती हैं।

तारागढ़ :—अजमेर के दक्षिण-पश्चिम में समुद्र सतह से लगभग २८५५ फीट ऊंची पहाड़ी पर लगभग ८७ एकढ़ भूमि में फैला हुआ यह गढ़ राजा अजयदेव द्वारा सातवीं शताब्दी में बनाया गया था। इस गढ़ में अनेकों युद्धों की कथाएं छिपी हुई हैं। दीवार में १४ बडे-बड़े बुर्ज हैं और स्थान-स्थान पर विशाल तोपें रखी हुई हैं। गढ़ के अन्दर पानी का पच-कुण्ड और एक नाना साहब का झालरा है आयताकार इमारत के रूप में यहां इक मीरां साहब की दरगाह है जो शिया मुसलमानों के प्रबन्ध में है।

ढाई दिन का झोंपड़ा :—अजमेर के सम्राट श्री विशालदे (बीसल देव) द्वारा जैन धर्म के प्रचारार्थ निर्मित यह मन्दिर स्थापत्य कला का एक उत्कृष्ट नमूना है। सन ११९२ में मोहम्मदगौरी ने इसे गिरवाकर मस्जिद का रूप दे दिया था। तभी से यहां मुसलमान फकीरों का ढाई दिन का उर्स होने लगा और इसे ढाई दिन के झोंपड़े के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। इसके दरवाजे पर कुरान की

आयतें खुदी हुई हैं । इसके आंगन की खुदाई में कई प्राचीन मूर्तियां तथा शिलालेख मिले हैं । नक्काशी की मनोहर प्रचुरता, कमनीय कटाई का निखार, कारीगरी की कष्ट-साध्य यथार्थता का श्रेय हिन्दू कारीगरों को है ।

आनासागर झील :—नगर के दक्षिण में सुन्दर पहाड़ियों के बीच ८ मील की परिधि में स्थित यह कृत्रिम झील बड़ा ही आकर्षक दृश्य उपस्थित करती है । इसके जल में संध्या के समय किनारे पर खड़े विशाल नाग पहाड़ का प्रतिबिम्ब झलकता है । इस झील का निर्माण सम्राट पृथ्वीराज के पितामह अरणों राज (अनाजी) द्वारा सन् ११३५ में करवाया गया था । कला रसिक जहांगीर ने इस झील की सौन्दर्यता से प्रभावित होकर निकट में ही एक शाह बाग लगवाया जो आजकल दौलत बाग के नाम से सम्बोधित किया जाता है । सम्राट शाहजहां ने सन् १६२७ में लगभग १२४० फीट लम्बा कटहरा लगवाकर और चिकने संगमरमर की पांच बारह दरियां बनवाकर इसकी रमणीयता में चार चांद और लगा दिये ।

मेगजीन तथा राजपूताना म्यूजियम :—नगर के बीच स्थित यह इमारत ऐतिहासिक महत्त्व से भरपूर है और मेगजीन के नाम से प्रसिद्ध है । इसे अपने निवास के लिए सम्राट अकबर ने सन् १५७१–७२ में बनवाया था । इस इमारत में चार बड़े-बड़े बुर्ज हैं । बीच में म्यूजियम विद्यमान है जिसे राजपूताना म्यूजियम के नाम से सम्बोधित किया जाता है । इसमें राजस्थान की स्थापत्य कला तथा मूर्तिकला के नमूनों का दर्शनीय संग्रह प्रदर्शित किया हुआ है ।

मेयो कालेज :—लार्ड मेयो के जमाने में सन् १८७५ में राजकुमारों को शिक्षा ग्रहण करवाने के लिए इसका निर्माण कराया गया था । कालेज की इमारत सफेद संगमरमर से हिन्दू-सरासीनी वास्तुकला के ढंग पर बनी हुई है । इमारत के ऊपर लगभग १२७ फीट ऊंचा कलापूर्ण घण्टाघर लगा हुआ है । यह शिक्षण-संस्थान अपनी गौरवमयी परम्पराओं के लिए विख्यात है ।

उक्त प्रमुख स्थानों के अतिरिक्त हटुंडी का महिला शिक्षण सदन, ब्यावर का जैन गुरुकुल तथा अजमेर का डी० ए० वी० कालेज आदि ऐसे शिक्षण संस्थान हैं जिन्होंने शिक्षा के प्रसार में अत्यधिक योगदान देकर दूरदर्शिता का परिचय दिया है ।

किशनगढ़

किशनगढ़ चारों ओर परकोटे से घिरा हुआ है । यहां दो बड़े तालाब हैं । नव ग्रहों का प्राचीन मन्दिर एवं शहर से लगभग तीन मील दूर मंझेला नामक झील

दर्शनीय हैं। किशनगढ़ के पास ही सलेमाबाद में भारत के एक महान् दार्शनिक निम्बार्काचार्य की परम्परा चली आने वाली गद्दी है। लगभग १६ मील उत्तर में रूपनगर है जहां भारत प्रसिद्ध पृथ्वीराज की घुड़शाला है। वालेचों के टीवों पर ११वीं शताब्दी के शिलालेख भी हैं।

अलवर

यह पहाड़ी और सुन्दर वनों का प्रदेश है। शहर में देखने योग्य स्थानों में पहाड़ पर बना किला, फतहगंज की गुम्बज और बाजार के बीच का त्रिपोलिया प्रसिद्ध है। किले में निकुम्भों के महल, सलीम द्वारा बनवाया गया सलीम सागर, महल, सूरज कुण्ड तथा जलाशय भवन दर्शनीय स्थानों में मुख्य हैं। यहां के नये राजमहल तथा मन्दिर दर्शनीय हैं। प्रदेश के राजगढ़ और भानगढ़ आदि स्थान भी प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है।

राजगढ़ :—यह पहिले अलवर की राजधानी थी। यहां के पुराने मन्दिर, बावड़ी, तालाब तथा खण्डहर प्राचीन काल के जीवित उदाहरण हैं। भारतवर्ष में सबसे वड़ी जैन मूर्ति नागोजा इसी प्रदेश में है।

भानगढ़ :—अलवर के दक्षिण-पश्चिम में लगभग ५० मील दूर पर भानगढ़ है जो इस समय खण्डहर के रूप में है।

पांडुपोल :—यहां पर पांडवों ने अज्ञातवास के कुछ दिन बिताए थे। यहां हनुमान जी का प्रसिद्ध मेला भी लगता है। यहां के प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त मनोहारी हैं।

ऐतिहासिक महत्त्व का स्थान नीलकण्ठ बड़गुजरों की राजधानी थी। यहां शिवजी का १२वीं शताब्दी के प्रारम्भ का एक मन्दिर है।

बीकानेर

यह नगर चारों ओर से परकोटे से घिरा हुआ है। यहां एक नया और प्राचीन किला है। किले में अनेक भाषाओं के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। प्राचीन अस्त्र-शस्त्रों, पीतल की मूर्तियों और मिट्टी की वस्तुओं का सुन्दर संग्रह है।

करणी माताजी का मन्दिर :—बीकानेर से लगभग १६ मील दूर देशनोक में स्थित यह एक प्रसिद्ध मन्दिर है। यह मन्दिर महाराजा सूर्यसिंह के राज्य काल में

वनाया गया था। इस मन्दिर का बाहरी गेट जो मारबल कटिंग (संगतराशी) का एक अद्वितीय नमूना है, महाराजा गंगासिंहजी द्वारा बनवाया गया था और मन्दिर में सोने की छतरी महाराज जोरावरसिंहजी द्वारा भेंट की गयी थी।

लालगढ़ महल :—शहर के बाहर पूर्णतः लाल पत्थर से बना हुआ एक किला है। जो चित्रकला का विशेष संग्रह प्रस्तुत करता है और दर्शनीय है। भवन निर्माण की दृष्टि से देखने वालों के लिए यह महल एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

कोलायतजी का मन्दिर :—दक्षिण-पश्चिम में लगभग ३० मील दूर कोलायत का तालाब है ऐसा कहा जाता है कि यह कपिल मुनि का आश्रम स्थान था और इसी से पुण्य तीर्थों में इसकी गणना की जाती है। कार्तिक की पूर्णिमा को यहां मेला लगता है। हजारों यात्री यहां दर्शनार्थ आते हैं। तालाब के किनारे पर अनेकों छोटे-छोटे मन्दिर व छतरियाँ बनी हुई हैं।

गंगानिवास पार्क :—किले के सामने यह एक सार्वजनिक उद्यान है। जिले के प्रमुख सरकारी कार्यालय इसी उद्यान में हैं। सर्किट हाउस तथा अजायबघर इसके पूर्वी दरवाजे के बाहर है। इस नगर की समस्त इमारतें प्रायः लाल पत्थर की बनी हुई हैं। लालगढ़ के महल में खुदाई का सुन्दर काम है।

भरतपुर

यह प्राचीन काल में ब्रज का हिस्सा था। इस नगर का नाम श्री रामचन्द्र के लघु भ्राता भरत के नाम पर पड़ा बताया जाता है। इसके चारों ओर गहरी खाई है जो मोती झील के पानी से भरी जाती है। यहां के कुछ दर्शनीय स्थान निम्नांकित हैं :—

डीग का किला :—भरतपुर से २१ मील उत्तर की ओर यह प्रसिद्ध ऐतिहासिक किला है। इसके चारों ओर खाई है। किले में प्राचीन महल बने है। यहां दो झीलों के बीच भव्य महल बने हुए हैं जिनमें अठाहरवीं शताब्दी की कारीगरी के सुन्दर नमूने उपलब्ध हैं।

बयाना का किला :—मध्यकाल में इस किले की गणना भारतवर्ष के प्रसिद्ध किलों में की जाती थी। वि० सं० ४२८ में वारीक विष्णुवर्धन पुण्डरीक द्वारा जो यज्ञ किया गया था उसके स्मारक के रूप में भील लाट के नाम से इस किले में एक खम्भा है।

अन्य स्थानों में पास ही कामा में यदुवंशियों के चौरासी कीर्ति स्तम्भ हैं। इनमें से एक पर आठवीं शताब्दी का खुदा हुआ संस्कृत का एक लेख है जो इसकी प्राचीनता को प्रमाणित करता है।

बूंदी

पार्वतीय उपात्यका में वसा हुआ बूंदी का लघु-नगर अपनी प्राकृतिक सुषुमा एवं चित्रकला के लिए सुविख्यात है। बूंदी एक पुराना शहर है जिसके चारों तरफ परकोटा है। यहां की बावड़ियां बड़ी कलापूर्ण हैं। बूंदी का नवलखा तालाब, चौरासी खम्भों की छतरी और बूंदी का किला प्रमुख दर्शनीय स्थान हैं।

बांसवाड़ा

बांसवाड़ा के चारों ओर पत्थर का परकोटा है तथा राजमहल ७४०० फीट ऊंची पहाड़ी पर बना हुआ है। तलवाड़ा और कलिजरा दो प्रमुख दर्शनीय स्थान हैं।

तलवाड़ा :—बांसवाड़ा से ८ मील पश्चिम में स्थित है। यहां पर गुजराज के महाराजा श्री सिद्धराज जयसिंह सोलंकी का बनाया गया गणपति का मन्दिर और विक्रम की ग्याहरवीं शताब्दी के लगभग बना सूर्य का मन्दिर दर्शनीय है।

कलिजरा :—यह बांसवाड़ा के १६ मील दक्षिण-पश्चिम में हारन नदी के किनारे के एक छोटा गांव है। यहां दिगम्बर जैनियों का एक श्री ऋषभदेव का बड़ा मन्दिर है।

चित्तौड़गढ़

इसे मौर्य वंश के राजा चित्रांगद ने बनाया था। पहले इसका नाम चित्रकूट था लेकिन कुछ दिन बाद ही बिगड़ कर चित्तौड़ हो गया। चित्तौड़ का किला जिसमें पद्मिनी सती हुई थी दर्शनीय हैं। किले तक पहुँचने के लिए सात दरवाजे पार करने पड़ते हैं। मालवा विजय करने के पश्चात् महाराजा कुम्भा द्वारा बनवाया गया १२० फुट ऊंचा विजय स्तम्भ इसी चित्तौड़ के किले में ही है। विजय स्तम्भ में घूम जाती हुई १७० सीढ़ियां हैं तथा राजपूती कला की खुदाई के नमूने भी मिलते हैं। विजय स्तम्भ के साथ ही जैनियों के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव के नाम से बनाया गया कीर्ति स्तम्भ भी है जिसके चारों कोनों पर ५–५ फीट ऊंची श्री ऋषभदेव की मूर्तियां भी खुदी हुई हैं।

डूंगरपुर

डूंगरपुर में शहर के पास ही जैब सागर झील के तट पर स्थित उदयविलास नामक राजमहल है। जैब सागर के भीतर का बादल महल और उसके तट पर

गोवर्धननाथ का विशाल मन्दिर, राजधानी से ६ मील दूर स्थित एडवर्ड समन्द नामक विशाल तालाब, उत्तर-पूर्व में १४ मील दूर सोम नदी के तट पर सोमनाथ का प्राचीन मन्दिर दर्शनीय स्थान है।

जयपुर

गुलाबी नगर के नाम से सम्बोधित किया जाने वाला जयपुर नगर अपनी भव्यता तथा सुन्दरता के लिए समूचे भारत के नगरों में बेजोड़ ख्याति रखता है। जयपुर की सड़कें अपनी चौड़ाई तथा सीधाई के कारण प्रसिद्ध है। सब रास्ते एक दूसरे को समकोण पर काटते हैं। प्रमुख बाजारों की दुकानों और मकानों की बनावट एक-सी है तथा रंग भी एक ही (गुलाबी) है। नगर के चारों ओर परकोटा है जिसमें आठ दरवाजे हैं। अब नगर का फैलाव परकोटे के बाहर भी हो गया है।

जयपुर के पुराने राजमहल, जन्तर-मन्तर, पुरानाघाट, गलता, हवामहल, नाहरगढ़, आमेर का किला, जगत शिरोमणी का मन्दिर, गैटोर, सांगानेर का जैन मन्दिर आदि कई दर्शनीय स्थानों का विवरण इस प्रकार है :—

पुराने राजमहल :—यहां प्राचीन पुस्तकों एवं कलात्मक सामग्री का संग्रह है जो पोथीखाने के नाम से जाना जाता है। महलों की दीवारों को मुस्लिम वास्तुकला के अनुरूप सुन्दर पुष्पों से सजाया गया है। विशेष रूप से जाली झरोखे का काम अनोखा है।

सिटी पैलेस :—यहाँ के दर्शनीय स्थानों में चन्द्र महल सर्वश्रेष्ठ है। यह आकर्षक भवन सात मंजिला और भीतरी सजावट की दृष्टि से अद्वितीय है। चन्द्र-महल के विभिन्न कमरों में राजपूत शैली के प्राचीन चित्र, भित्ति चित्र तथा कांच की कारीगरी दर्शनीय है। मुबारक महल जिसमें महाराजा का निजी पुस्तकालय और शस्त्रागार है और जिन्हें क्रमशः पोथीखाना व सिलहखाना के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है इसी सिटी पैलेस में स्थित है। पुस्तकालय में पुरानी पुस्तकों, ग्रन्थों, नक्शों, चित्रों व ज्योतिष यन्त्रों का संग्रह अवलोकनीय है। शताब्दियों पुराने शस्त्रों के भारी संग्रह युक्त शस्त्रागार भी सामरिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है।

सिटी पैलेस के दक्षिणी द्वार का नाम, त्रिपोलिया है। यह द्वार ईसरलाट (सरगासूली) से कुछ ही दूर है जो सिर्फ राज्य परिवार के सदस्यों के लिए ही काम में आता है। ईसरलाट (सरगासूली) तथा त्रिपोलिया द्वार की कारीगरी दर्शनीय है।

जन्तर मन्तर (ज्योतिष यन्त्रालय) :—यह गणितज्ञ एवं ज्योतिष प्रेमी महाराजा जयसिंह द्वितीय द्वारा बनवाया गया था। इसकी स्थापना जयपुर शहर के निर्माण के साथ ही खगोल विद्या के पारखी एवं वैज्ञानिक श्री विद्याधर द्वारा की गयी थी। जन्तर-मन्तर सूर्य एवं चन्द्र की गति, तारों की परिक्रमा तथा अन्य खगोल सम्बन्धी समस्याओं की गवेषणा शाला के रूप में एक महत्वपूर्ण स्थान है।

हवामहल :—शहर के ठीक मध्य में बड़ी चौपड़ के निकट सिरहड्योढ़ी बाजार में आकर्षक ढंग का हवा महल बना हुआ है। गोल और आगे निकले हुए झरोखे एवं खिड़कियों से युक्त ये महल पिरामिड की तरह है। झरोखों में काफी जालियां हैं, जिनमें सदैव काफी तेज हवा आती रहती है। यह गुलाबी रंग का ६ मंजिला महल है तथा जयपुर के प्रमुख दर्शनीय स्थानों में है।

पुराना घाट :—पहाड़ों के बीच लगभग १ मील लम्बा यह घाट जयपुर से आगरा जाने वाली सड़क पर स्थित है। मार्ग के दोनों ओर आदि से अन्त तक देवालय, उद्यान, छतरियां, अवकाश गृह आदि बने हुए हैं। अन्त में खानियां है। वहां का जैन मन्दिर सुनहरी पच्चीकारी के लिए काफी प्रसिद्ध है। यह मन्दिर जयपुर निवासी राणा परिवार के पूर्वजों द्वारा बनवाया गया था। यहां का रानी सिसोदिया का महल एवं गोलेछा गार्डन भी दर्शनीय, आकर्षक एवं काफी सुन्दर है।

गलता :—जयपुर के पूर्व में पहाड़ियों के बीच स्थित हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ गलता सैलानियों की आकर्षण स्थली है। यहां पर अनेकों कुण्ड और मन्दिर हैं। प्रमुख कुण्ड में गऊ मुख से जल धारा पड़ती रहती है। इस धारा का स्रोत जानने के लिए अनेकों प्रयत्न किये गये लेकिन आज तक यह ठीक पता नहीं लगाया जा सका है कि यह कहां से आती है। प्राचीन काल में गालव ऋषि की तपस्या के परिणामस्वरूप यह धारा शुरू हुई थी। ऐसा मानना है कि गंगा की एक धारा यहां तक आई है। इसी कारण धार्मिक पर्वों पर हजारों की तादाद में लोग यहां स्नान करने आते हैं। गलता से पहिले पहाड़ की चोटी पर राव कृपाराम द्वारा निर्मित एक सूर्य मन्दिर है जिसमें सूर्य भगवान की स्वर्णिम प्रतिमा है। यहां से प्रतिवर्ष माघ शुक्ला सप्तमी (सूर्य सप्तमी) को समारोहपूर्वक शोभा यात्रा गाजेबाजे के साथ शहर में निकाली जाती है।

अजायब घर (म्यूजियम) :—जयपुर का अजायब घर राजस्थान के ही नहीं अपितु समूचे भारत के मुख्य एवं महत्वपूर्ण स्थानों में से एक है। इसकी नींव बादशाह एडवर्ड सप्तम (तत्कालीन प्रिन्स ऑफ वेल्स) द्वारा ६ फरवरी १८७६ को रखी

गयी थी। अनेकों गैलेरियों से युक्त यह अजायब घर जयपुर के रामनिवास बाग में स्थित है। इमारत में भारतीय व अरबी शैली की सौन्दर्यमयी पत्थर की खुदाई का काम निश्चय ही हृदयग्राही है। इस संग्रहालय में चीन, जापान, असीरिया, परसीपीलिस के प्रख्यात तेल चित्रों के अतिरिक्त मिश्री, हिन्दू, रोमन, बाइजेन्टाइन और प्राचीन यूनानी शैली की कला कृतियां संग्रहीत हैं। यह म्यूजियम एलबर्ट हाल के नाम से भी प्रसिद्ध है।

रामनिवास बाग में स्थित जन्तुशाला और चिड़िया घर भी दर्शनीय है। जिनमें विभिन्न किस्म के जानवरों व पक्षियों का अच्छा संग्रह है।

नाहरगढ़ :—यह विशाल दुर्ग शहर के उत्तर-पश्चिम में ऊंची पहाड़ी पर सन् १७३४ में बनवाया गया था। ऐसा मानना है कि राजाओं का खजाना इसी दुर्ग में रखा जाता था और स्वयं राज्य परिवार के सदस्यों को भी दुर्ग-रक्षक आंख पर पट्टी बांध कर भीतर ले जाते थे। और अब ये दुर्ग जन साधारण के लिए खुला है। दुर्ग पर जाने के लिए काफी चढ़ाई पार करनी पड़ती है। तलहटी से दुर्ग तक बढ़िया सड़क बनी हुई है।

आमेर :—यह जयपुर शहर से ६ मील दूर उत्तर-पूर्व में स्थित है। जयपुर शहर को तीन ओर से घेरे हुए अरावली की श्रेणी पर आमेर का किला बना हुआ है। इसके अतिरिक्त मावठा झील, राजाओं के महल, शिला माता का मन्दिर व सागर आदि प्रमुख दर्शनीय स्थान है। जगतशिरोमणि के मन्दिर में मीराबाई द्वारा पूजी जाने वाली कृष्ण की मूर्ति है। यहां संगमरमर के पत्थर का तोरण द्वार एवं गरूड़ की मूर्ति बड़ी कलात्मक है।

सांगानेर :—यह जयपुर के दक्षिण में लगभग ८ मील दूर स्थित है। यहां से हवाई अड्डा सिर्फ आधा मील दूर है। लगभग एक हजार वर्ष पूर्व निर्मित संघीजी द्वारा बनाया गया जैन मन्दिर यहां का मुख्य दर्शनीय स्थान है। कला की दृष्टि से राजस्थान के प्रमुख जैन मन्दिरों में इसकी गणना की जाती है। अभी पिछले कुछ वर्षों में बाल संग्रहालय की भी यहां स्थापना की गयी है। यहां कपड़ों की छपाई का श्रेष्ठतम कार्य होता है तथा हाथ से कागज बनाने का यह एक प्रमुख केन्द्र है।

गेटोर—यह जयपुर नरेशों का दाह स्थल है। यहां पर जयपुर के मृत राजाओं की स्मृति में छतरियां बनी हुई हैं। इन छतरियों पर खुदाई का काम बहुत बारीक वा लुभावना है और जयपुर की स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण है। इनमें जयपुर के निर्माता जयसिंह की छतरी श्रेष्ठ है। इसका एक माडल लन्दन के केंसिंगटन म्यूजियम में भी रखा हुआ है।

जोधपुर

नगर के चारों ओर परकोटा है और सात बड़े-बड़े दरवाजे हैं। नगर को महाराजा मालदेव के समय में ऐतिहासिक महत्व प्राप्त हुआ। जोधपुर का नवीन ढंग से विकास किये जाने का श्रेय महाराजा श्री उम्मेदसिंहजी को है। जोधपुर निकटस्थ दर्शनीय स्थानों का विवरण इस प्रकार है :—

किला :—युद्ध के समय काफी लम्बे मैदानों को एक ही स्थान से नियन्त्रित किये जा सकने वाले इस किले का काफी महत्व है। सौन्दर्य, शक्ति और पुरातन की याद में खड़ा, किला सुन्दर महल, शस्त्रागार, पुस्तकालय एवं चित्रशाला से सुसज्जित है। यह किला ४०० फीट ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। इसे मेहरान गढ़ के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

मंडोर एवं बालसमंद :—जोधपुर शहर से क्रमशः ६ व ५ मील की दूरी पर स्थित है। मंडोर मारवाड़ा की प्राचीन राजधानी थी। अब यह नगर उजाड़ सा हो गया। इसके कुछ तोरण द्वार जिन पर कृष्ण लीला अंकित है चौथी शताब्दी के मिले हैं। रावण की पत्नी मन्दोदरी यहीं की बतायी जाती है तथा मन्दोदरी की चंवरी इसी पहाड़ पर है। यहां अनेक छतरियां व मन्दिर प्राचीन कला के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। मंडोर के प्राचीन उद्यान को फिर से सुरम्य बनाया गया है। यह वर्षा ऋतु में मनोरंजन का प्रमुख आकर्षण है।

बाल-समन्द एक कृत्रिम झील है। दो लम्बे पहाड़ों की घाटी के बीच यह झील सारे शहर को मीठा पानी देती है। झील का दृश्य देखने योग्य है।

सरदार समन्द :—जोधपुर से लगभग ३५ मील दूर यह एक रमणीय झील है। यहां पर महाराजा श्री उम्मेदसिंह द्वारा निर्मित राज महल है। इसे सरदार समन्द पैलेस के नाम से सम्बोधित किया जाता है। महल पहाड़ी पर है। समतल भूमि पर एक बहुत बड़ा एवं सुन्दर बगीचा है। गर्मी की मौसम में सैकड़ों लोग यहां बिहार के लिये आते हैं।

उम्मेद भवन :—महाराजा श्री उम्मेदसिंहजी द्वारा निर्मित यह भवन आधुनिक भवन निर्माण कला का अद्भुत नमूना है। इस भवन पर लगभग ३ करोड़ रुपये के व्यय का अनुमान है। इस महल में पाश्चात्य एवं पूर्वीय वास्तु कला का सुन्दर सामंजस्य देखने को मिलता है।

पब्लिक पार्क :—जोधपुर शहर का यह एक सुन्दर बगीचा है। इसी में अजायब घर, चिड़िया घर तथा एक पुस्तकालय भी है। पब्लिक पार्क के निकट ही एक ऐतिहासिक छतरी गोरा धाय की है। गोरा धाय ने औरंगजेब की कट्टरता से बचाने के लिए अजीतसिंह को पालने का जिम्मा लिया था। इनके अतिरिक्त जसवंत कालेज, महाराज कुमार कालेज, सिविल इंजीनियरिंग कालेज, रातानाड़ा महल, महात्मा गांधी अस्पताल एवं उम्मेद अस्पताल दर्शनीय है। भवन में कुराई का काम काफी बारीकी का है। यहां पुराने राजाओं के चित्र लगे हुए हैं। जसवन्त सिंह जी के बाद राजाओं का दाह संस्कार यहीं होता है।

पोलोग्राउन्ड :— सर प्रताप पैलेस के पास पोलोग्राउन्ड बना हुआ है। पहले यहां पर पांच पोलोग्राउन्ड थे। जोधपुर के रावराजा हणुवंतसिंह तथा जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह भारत के प्रमुख पोलो खिलाड़ियों में से हैं तथा भाई जी श्री केशवराम पोलो स्टिक बनाने में भारत में प्रसिद्ध है तथा भारत की टीमों के साथ योरोप गये हैं।

हवाई मैदान :—भारत के प्रथम तीन हवाई मैदानों में से एक जोधपुर का हवाई मैदान भी है। द्वितीय महायुद्ध के बाद इसका विस्तार हुआ है और भारत की आजादी के बाद इसे भारतीय वायु सेना का महत्वपूर्ण केन्द्र बनाया गया है।

रणकपुर

फालना जंकशन से १४ मील दूर एक छोटे से शहर सादड़ी से लगभग ६ मील पर रणकपुर नामक स्थान है। यह स्थान कोटा जोधपुर से लगभग १०० मील दूर है तथा उदयपुर से ६० मील दूर है। रणकपुर की प्रसिद्धि का कारण यहां का जैन मन्दिर है। यह जैन मन्दिर ४०,००० वर्ग फीट क्षेत्र में फैला हुआ है तथा मन्दिर में ४२० खम्भों युक्त २६ बड़े-बड़े हाल है। वहां की कारीगरी, खम्भों की बनावट रोशनी व सजावट का दृश्य दर्शनीय है।

जैसलमेर

भारत की प्रकृति ने जहां हिमालय सा सौन्दर्य प्रदान किया है वहां रेगिस्तान का भी अपना सौन्दर्य है। इस शहर के चारों ओर करीब ३ मील घेरे का पांच से सात फुट चौड़ा और १० से १५ फीट ऊंचे पत्थर का पक्का परकोटा है। जैसलमेर का छीटेदार पत्थर विश्व में अपनी किस्म का एक ही है। परकोटे के भीतर २८० फीट ऊंची पहाड़ी पर किला भी बना हुआ है जिसमें ९९ बुर्जे हैं। यहां कई महल यथा रंग महल, राजस विलास एवं मोती महल आदि है। राजस्थान में प्राचीनता की दृष्टि से चित्तौड़गढ़ के बाद जैसलमेर का ही नम्बर आता है।

जैसलमेर में जैनियों के प्रसिद्ध मन्दिर सुन्दर व आकर्षक पच्चीकारी के लिए बेजोड़ हैं। जैन मन्दिर के एक हिस्से जिन भद्र सूरी ज्ञान भण्डार में भारत प्रसिद्ध कई प्राचीन पांडुलिपियों का अमूल्य संग्रह है। ऐसा अनुमान है कि बारहवीं शताब्दि पूर्व ही उनके महत्वपूर्ण पांडुलिपियां यहाँ उपलब्ध हैं। जैन ग्रन्थों के अतिरिक्त पुस्तकालय में अनेकों उच्चकोटि के ग्रन्थ भी उपलब्ध हैं, जिनमें कौटिल्य का अर्थशास्त्र विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

लौद्रवा पाटन :—जैसलमेर की प्राचीन राजधानी लौद्रवा पाटन है और यह शहर से लगभग १० मील दूर स्थित है। यहां जैनियों के प्रसिद्ध मन्दिर हैं जो देखने योग्य हैं। जैन धर्मावलम्बी इसे तीर्थ स्थान मानते हैं। यहां पर उच्चकोटि के पत्थर से प्राचीन कारीगरी तथा आकर्षक ढंग से बनाया गया मन्दिर व तोरन द्वार भी दर्शनीय है। इसके अलावा यहां के किले, महल, जवाहर विलास व पटवों की हवेली आदि भी आकर्षक व सुन्दर है।

कोटा

कोटा के सरस्वती भण्डार में हजारों पांडुलिपियां सुरक्षित हैं जिनमें कई तो बहुत ही सुन्दर लिखी हुई हैं। पब्लिक गार्डन, चम्बल पर बना वाटर वर्क्स और कोटा बांध आदि कई दर्शनीय स्थान हैं।

कोटा के आसपास भी कई स्थान पुरातात्विक महत्व के हैं। रामगढ़ के भिन्ड-देवड़ा मन्दिर ग्यारहवीं शताब्दी की शिल्प-कला के सुन्दर नमूने हैं। भक्तिकालीन युग के महत्वपूर्ण स्थान, अटरू के भवन और मन्दिर, शेरगढ़ में मुस्लिम शासन काल का बना हुआ एक क़िला जिसमें पंवार राजाओं के प्राचीन शिलालेख उपलब्ध हुये है महत्वपूर्ण हैं। तहखाने में स्थित खानपुर का जैन मंदिर भीमपुरे का सप्त मात्रिकाओं का प्राचीन मन्दिर तथा श्री दंष्ट्रदेवी और डेरू माता के सुप्रसिद्ध मन्दिर जो कोटा नगर के १२ मील के घेरे में स्थित हैं और इस क्षेत्र की प्राचीन संस्कृति का आभास देते हैं। कोटा के राजमहल, सीताबाड़ी का पावन तीर्थ, चम्बल का सिंघाड़िया घाट, अधर शिला और अमर निवास इस क्षेत्र के प्रमुख दर्शनीय स्थान हैं।

कोटा से लगभग ५० मील दूर झालरापाटन है। यह चन्द्रभागा के नाम से भी जाना जाता है। सातवीं शताब्दी में भी पूर्व का बना हुआ यहां का सबसे बड़ा मन्दिर शीतलेश्वर महादेव का है। एक छोटे संग्रहालय युक्त नवग्रहों का मन्दिर भी पाटन का एक महत्वपूर्ण एवं दर्शनीय स्थान है।

कोटा से लगभग तीस मील दूर बारोली ग्राम में जंगल में प्रकृति के सुन्दर स्थल पर स्थित आठवीं शताब्दी के देवालय भी दर्शनीय हैं ।

झालावाड़

झालावाड़ का इलाका पहले कोटा का हिस्सा था । यहां के राजा राजपूतों की झाला खांप के हैं और अपने आपको चन्द्रवंशी मानते हैं । झालावाड़ का नया विस्तृत राज्य सन् १८९९ ई० में स्थापित हुआ था । झालारापाटन इसकी राजधानी थी । झालावाड़ शहर हरियाली से परिपूर्ण हैं । यहां प्राचीन शिला-लेख, अनेकों सुन्दर मूर्तियां तथा हस्तलिखित ग्रन्थों का बहुत अच्छा संग्रह हैं । झालावाड़ के पास पाटन तथा चन्दावती के खंडहर हैं । यहाँ की मूर्तियों पर सूक्ष्म खुदाई प्राचीन कला की उत्कृष्टता के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करती है जो देखने योग्य है । दर्शनीय स्थानों में सूर्य मन्दिर महत्वपूर्ण है ।

उदयपुर

झीलों की नगरी उदयपुर पहाड़ियों से घिरी होने के कारण अत्यन्त रमणीय प्रतीत होती है । यहां के दर्शनीय स्थानों का विवरण निम्न प्रकार है :—

जग मन्दिर :—इसे महाराणा जगतसिंह (प्रथम) ने १५ लाख रुपये की लागत से बनवाया था । चारों ओर पानी और बीच में जग मन्दिर का सौन्दर्य अनिर्वचनीय है । यह भी पिछौला झील के बीच स्थित है ।

जग निवास :—यह पिछौला झील के एक टापू पर बना हुआ आकर्षक महल है । इसे महाराणा जगतसिंह (द्वितीय) ने वि० संवत् १७४८ में बनवाया था । यहां के फव्वारों की छटा अदभुत है ।

सहेलियों की बाड़ी :—फतहसागर की ऊंची पाल के नीचे फलों, सुन्दर पुष्पों एवं ऊंचे-ऊचे हरे-भरे पेड़ों का यह बाग राजस्थान के प्रसिद्ध रमणीक बगीचों में से एक है । यहां के फव्वारों का दृश्य दर्शनीय है ।

फतहसागर एवं स्वरूप सागर :—पिछौला झील के बाद की छोटी सी झील को स्वरूप सागर तथा बड़ी झील को फतहसागर के नाम से सम्बोधित किया जाता है । फतहसागर का तट बहुत फैला हुआ है तथा दो पहाड़ियों के बीच आया हुआ है । तट के साथ सड़क बनी हुई है तथा बीचों-बीच मकराने का एक महल बना हुआ है फतहसागर में पिछले कुछ वर्षों से नौका विहार का भी प्रबन्ध है ।

पिछोला झील :—इसे विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी में किसी बनजारे ने बनवाया था। यह ढाई मील लम्बी तथा डेढ मील चौड़ी झील है और इसके किनारे पर सुन्दर महल बने हुए हैं। पिछोला गांव के निकट होने के कारण इसका नाम पिछोला झील पड़ा हुआ है।

एकलिंगजी का मन्दिर :—उदयपुर के राजाओं के कुलदेव का यह मन्दिर उदयपुर से १२ मील उत्तर में कैलेशपुरी में स्थित है। मन्दिर के पास एक सुन्दर तालाब और महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित विष्णु का मन्दिर है जिसे आजकल मीरा-बाई का मन्दिर कह कर भी सम्बोधित किया जाता है। ११वीं शताब्दी का बना सास-बहू का मन्दिर भी दर्शनीय है। एकलिंगजी के मन्दिर की छतरियों पर मूर्ति-कला का उत्कृष्ट काम है।

नाथद्वारा :—उदयपुर से ३० मील उत्तर-पूर्व में बनास नदी पर स्थित वल्लभ सम्प्रदाय का यह महान् तीर्थ है। बनास नदी पर श्री नाथजी का प्रसिद्ध मन्दिर है। ऐसा कहा जाता है कि मन्दिर में श्री नाथजी की मूर्ति औरङ्गजेब के समय में वृन्दावन से लाई गई थी। लाखों स्त्री-पुरुष प्रतिवर्ष यात्रा के लिए आते हैं।

कांकरोली :—यहां पर वल्लभ सम्प्रदाय का एक प्रसिद्ध मन्दिर है। इस मन्दिर में द्वारकाधीश की मूर्ति स्थापित है। हस्तलिखित पुस्तकों का एक बहुमूल्य संग्रह है। कांकरोली के दस मील पूर्व में प्रसिद्ध चारभुजा का मन्दिर है जहां नौ चौकी नामक एक बहुत बड़ा तालाब है।

राजसमन्द :—कांकरोली से सम्बद्ध चार मील लम्बी और ३-४ मील चौड़ी यह झील महाराणा राजसिंह ने बनवाई थी। आज-कल इससे नहरें निकाल कर सिंचाई कार्य किया जा रहा है। राजसमन्द का बांध कला का उत्कृष्ट नमूना है।

ऋषभदेव (केशरियानाथ जी) :—उदयपुर से ३६ मील दक्षिण में धूलेव कस्बे में स्थित यह एक प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। यहां प्रतिवर्ष हजारों यात्री दर्शन के लिए आते हैं। इस मन्दिर में चूंकि केशर चढ़ाई जाती है, अतः इसको केशरियानाथ जी भी कहते हैं। यहां वर्षा के दिनों में काफी हरियाली रहती है।

जयसमन्द :—उदयपुर से लगभग ३४ मील दक्षिण में नौ मील लम्बी तथा पांच मील चौड़ी यह झील एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम झील है। इस झील का बांध राणा जयसिंह ने बनवाया था। आजकल इससे विभिन्न नहरें निकाल कर सिंचाई

कार्य किया जाता है। आसपास के पहाड़ों व घने वनों में खुंखार पशु रहते हैं तथा बीच के टापुओं में भीलों की वस्तियां हैं। बांध की वनावट देखने योग्य है।

सिरोही

सिरोही का शहर 'सिरणवा' नामक पहाड़ी के नीचे वसा होने के कारण सिरोही कहलाया। सिरोही के पहाड़ पर बने राजमहल देखने योग्य हैं। राजमहलों से थोड़ी ही दूर जैन मन्दिरों का समूह है जो कि "देरीसेरी" के नाम से विख्यात है। इन मन्दिरों में लगभग ४०० वर्ष पुराना चौमुखा जी का जैन मन्दिर, वामणवार का श्री महावीर स्वामी का मन्दिर तथा भाड़ौली का श्री शांतिनाथ का मन्दिर मुख्य है।

बसन्तगढ़ :—पिंडवाड़ा स्टेशन से ६ मील दूर है। यहां की पहाड़ी पर क्षेमवटी देवी का मन्दिर दर्शनीय है।

चन्द्रावती :—आबू रोड़ स्टेशन से चार मील पर चन्द्रवती नामक प्रसिद्ध और प्राचीन नगरी के खण्डहर हैं। यहाँ पहले आबू के परमारों की राजधानी थी। परमारों के बाद वि० संवत् १४८२ में सिरोही बसने तक यह देवड़ा चौहानों की भी राजधानी रही। यद्यपि इतिहास में इसका स्थान नगण्य सा है फिर भी खण्डहर इसके अतीत गौरव का स्मरण कराते हैं।

आबू पर्वत :—अरावली पर्वत पर यह शहर वसा हुआ है। यहीं पर अरावली का सर्वोच्च शिखर 'गुरु शिखर' है। यहां खूब ठण्डक रहती है। यहां के कई मन्दिर व प्राकृतिक झीलें प्रसिद्ध हैं। पहाड़ की चोटी पर खड़े होकर सूर्य अस्त होने का दृश्य देखने योग्य है। आबू पर्वत पर स्थित देलवाड़ा के प्रसिद्ध जैन मन्दिर, अचलगढ़ का विशिष्टों का मन्दिर तथा अर्बुदा देवी का स्थान प्रमुख दर्शनीय स्थानों में से है। आबू सैलानियों का प्रमुख आकर्षक केन्द्र है। राज्य सरकार द्वारा इसे और भी आकर्षक बनाने तथा विविध सुविधाएं उपलब्ध कराने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। राजस्थान के आसपास के रहने वाले लोग गर्मी की ऋतु में यहीं रहते हैं। राज्य कर्मचारियों को आवास आदि की विशेष सुविधा उपलब्ध है।

अर्बुदा देवी :—अर्बुदा अर्थात् अम्बिका देवी का एक प्रमुख मन्दिर है। जो कि ऊंची पहाड़ी के बीच स्थित है। यहां की प्राचीन गुफा देखने योग्य है।

वशिष्ट का मन्दिर :—आबू के लगभग १॥ मील दूर वशिष्ट का मन्दिर है। यहां वशिष्टजी के साथ ही भगवान राम व लक्ष्मण की भी मूर्तियां हैं तथा वशिष्ट का प्रसिद्ध अग्निकुण्ड यहीं है। जिसमें से क्षत्रियों के परमार, परिहार, सोलंकी और चौहान वंशज के मूल पुरुषों का उत्पन्न होना कहा जाता है।

अचलगढ़ — परमार राजाओं द्वारा बनवाया हुआ यह स्थान देलवाड़ा से लगभग ५ मील दूर है। यहां कुम्भा के महल तथा भृतृहरि की गुफा दर्शनीय है।

देलवाड़ा

देलवाड़ा :—राजस्थान के सर्वश्रेष्ठ और अत्यन्त कलात्मक मन्दिर देलवाड़ा में ही हैं। यहां के भगवान आदिनाथ और नेमिनाथ के मन्दिर वास्तु कला की दृष्टि से उत्कृष्ट माने जाते हैं। भगवान आदिनाथ का मन्दिर सन् १०३१ ई० में विमलशाह ने लगभग १९ करोड़ रुपये की लागत से बनवाया था। इस मन्दिर में मुख्य मूर्ति जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव की है जिसमें हीरे और पन्ने जड़े हुए हैं। मन्दिर के पास ही विमलशाह की अश्वरूढ़ पत्थर की मूर्ति है। यहां हस्तशाला भी है जिसमें पत्थर के दस हाथी बने हुए हैं। मन्दिर के स्तम्भ, तोरण, गुम्बज, छत आदि सभी हिस्से वास्तुकला के विभिन्न नमूनों से भरे पड़े हैं। पत्थर की कटाई कला मध्यकाल की कलाप्रियता की प्रतीक है। इसी मन्दिर के पास वस्तुपाल एवं तेजपाल का मन्दिर है। यह मन्दिर भी विमलशाह के मन्दिर के समान ही सुन्दर है। सूक्ष्म नक्काशी का काम तो और भी सुन्दर बन पड़ा है। इस मन्दिर की मुख्य मूर्ति भगवान नेमिनाथ की है। वस्तुपाल के मन्दिर के निकट भीमशाह का मन्दिर है। इसमें १०८ मन वजन की पीतल की भगवान नेमिनाथ की मूर्ति काफी सुन्दर है। मन्दिरों के सौन्दर्य के साथ-साथ प्रकृति का अच्छा सामञ्जस्य होने के कारण देलवाड़ा का आकर्षण और भी बढ़ जाता है।

---

२८ | साहित्य-सम्पदा

राजस्थान में आज जो साहित्यिक निधि उपलब्ध है, उसका वर्गीकरण स्थूल रूप से निम्न प्रकार किया जा सकता है :—

(१) राजस्थानी साहित्य
(२) हिन्दी साहित्य
(३) हिन्दीतर साहित्य

राजस्थानी साहित्य

राजस्थानी भाषा का विकास भी अन्य भारतीय भाषाओं की भांति अपभ्रंश से ही हुआ है। स्वतन्त्र भाषा के रूप में राजस्थानी का प्रादुर्भाव कब हुआ, इसके बारे में तो कुछ निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता किन्तु इतना असंदिग्ध है कि सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ तक राजस्थानी समस्त उत्तरी-पश्चिमी भारतवर्ष की बोलचाल और साहित्य सृजन की भाषा थी। राजस्थान, गुजरात और मालवा ये तीनों प्रदेश इसके अधिकार क्षेत्र में थे, किन्तु पिछली तीन चार शताब्दियों में इसका अधिकार क्षेत्र केवल राजस्थान रह गया। मुगल शासन-काल में जबकि फारसी भाषा ने समस्त भारतीय भाषाओं पर अपना प्रभाव डालना प्रारम्भ किया, राजस्थान अपनी भाषा और साहित्य की सुरक्षा और संवर्द्धन के लिए और भी सजग हो उठा और परिणामतः इस अवधि में अत्यन्त समृद्ध साहित्य की सृष्टि की गई। किन्तु दुर्भाग्यवश बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में इस भाषा में साहित्य सर्जना की गति इतनी शिथिल हो गई कि उसका अस्तित्व मात्र एक विभाषा अथवा बोली का ही रह गया।

राजस्थानी भाषा के अन्तर्गत पांच प्रमुख बोलियां हैं :—(१) मारवाड़ी, (२) ढूंढाडी, (३) मालवी, (४) मेवाती, और (५) बागड़ी।

*राजस्थान का सारा अर्वाचीन साहित्य इन्हीं बोलियों में अपनी स्थानीय विशिष्टताओं के साथ लिखा जा रहा है। प्राचीन राजस्थानी साहित्य के बारे में आगे के पृष्ठों में विस्तार से विचार किया गया है।

---

* डा० मोतीलाल मैनारिया—राजस्थानी भाषा और साहित्य।

हिन्दी साहित्य

हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में तो राजस्थान ने इतना योगदान दिया है कि यदि साहित्य के इतिहास से वह सब निकाल दिया जाय, जिसकी रचना राजस्थान के साहित्यकारों ने की थी, तो हिन्दी भाषा का साहित्य निश्चित ही बहुत विपन्न स्थिति को प्राप्त हो जाएगा। इसका कारण यह है कि हिन्दी का जितना भी आदिकालीन साहित्य प्राप्त होता है वह सब तो राजस्थान की देन है ही किन्तु संयोगवश मध्ययुगीन साहित्य के भी अनेक महान् सृष्टा इस प्रदेश में हुए हैं।

वीर-गाथा काल के बहुचर्चित महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' की रचना राजस्थान में ही हुई। भक्तिकाल के अनेक प्रमुख कवियों, जैसे—सुन्दरदास, दादूदयाल और मीरां आदि ने अपनी साहित्य-साधना का फल राजस्थान को ही दिया।

रीति काल के रस सिद्ध कवि बिहारीलाल ने अपनी काव्य-मंजरी से सर्वप्रथम राजस्थान को ही सुरभित किया। महाकवि पद्माकर ने अपने नायिका भेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'जगत-विनोद' की रचना राजस्थान में ही की। इसका उल्लेख उन्होंने स्वयं इस प्रकार किया है—

> जय जय शक्ति शिलामई, जय जय गढ़ आम्बेर।
> जय जयपुर सुरपुर सदृश, जो जाहिर चहु फेर।
> जगतसिंह नृप हुक्म ते पद्माकर लहि मोद।
> रसिकन के बस करन को रचिहैं जगत-विनोद॥

इसके अतिरिक्त वीर रस के प्रसिद्ध कवि सूदन और वृन्द सतसई के लेखक कविवर वृन्द ने भी अपनी साहित्य सर्जना का केन्द्र राजस्थान को ही बनाया। अर्वाचीन युग में द्विवेदी परम्परा के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री गिरधर शर्मा 'नवरत्न' जैसे व्यक्तियों ने राजस्थान के साहित्य भण्डार को भरा है। नई पीढ़ी के भारत विश्रुत साहित्यकार डा० सुधीन्द्र और डा० रांगेय राघव जिनका दुर्भाग्यवश कुछ वर्षों पूर्व स्वर्गवास हो गया, राजस्थान के ही निवासी थे। वर्तमान समय में भी राजस्थान के बीसियों साहित्यकार हिन्दी की साहित्यिक सम्पदा की श्रीवृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

हिन्दीतर साहित्य

राजस्थान के हिन्दीतर साहित्य के अन्तर्गत राजस्थानी और हिन्दी के अतिरिक्त उन सभी भाषाओं का साहित्य लिया जा सकता है, जिनकी रचना

राजस्थान में हो रही है। इन भाषाओं में संस्कृत, उर्दू और सिन्धी प्रमुख हैं। संस्कृत साहित्य की तो राजस्थान में बड़ी विशद परम्परा रही हैं। वैदिक काल से लेकर आज तक इस प्रदेश की प्रतिभाओं ने अनेक संस्कृत ग्रन्थों की रचना की हैं। संस्कृत भाषा के सुप्रसिद्ध कवि माघ तो मारवाड़ के गांव भीनमाल के ही निवासी थे।

उर्दू भाषा के भी अनेक साहित्यकार इस प्रदेश में साहित्य साधना कर रहे हैं। विभाजन के बाद राजस्थान में अजमेर सिन्धी लोगों का प्रमुख गढ़ हो गया है। फलतः सिन्धी के अनेक जाने-माने लेखक भी यहां आ गये हैं।

प्राचीन राजस्थानी साहित्य

प्राचीन हस्तलिखित राजस्थानी साहित्य प्रधानतया निम्नलिखित चार रूपों में विभाजित किया जा सकता है—

(१) चारणी-साहित्य (२) जैन-साहित्य
(३) ब्राह्मणी-साहित्य (४) संत-साहित्य

(१) चारणी साहित्य

इसे हम अपनी भाषा का प्रधान साहित्य कह सकते हैं। यह मुख्यतया वीर रसात्मक है पर शृङ्गार और शान्त-रसादि की रचनाएँ भी कम नहीं हैं। इसी साहित्य के कारण राजस्थानी साहित्य की इतनी अधिक सराहना देशी एवं विदेशी विद्वानों ने की है। विशेषकर चारण कवियों और लेखकों की रचनाएँ ही उक्त वर्ग के अन्तर्गत आती हैं, अतः उन्हीं के नाम पर इसका नामकरण कर दिया गया है अन्यथा ढाढी, डूम, ढोली, भाट इत्यादि जातियों की रचनाएँ भी इसी श्रेणी की हैं और इसी वर्ग में सम्मिलित हैं। कुछ राजपूतों ने भी इस कोटि की रचनाएँ की हैं।

यह साहित्य निम्नलिखित रूपों में उपलब्ध है :—

(१) प्रवन्ध काव्यों के रूप में

(२) गीतों के रूप में (Commemorative songs)—साख री कविता

(३) दोहों, सोरठों, कुण्डलियों, छप्पयों, कवित्तों, त्रोटकों, झूलणों, सवैयों इत्यादि विभिन्न स्फुट छन्दों के रूप में।

(१) प्रवन्ध-काव्यों के रूप में मिलने वाले जिस साहित्य की खोज आज तक हो चुकी है उसके कुछ प्रधान ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं :—

(१) वेलि क्रिसन रुकमणी री – राठोड़ प्रिथीराज

(२) जइतसी रउ छन्द—वीठू सूजा नगराजीत

(३) रामरासो—माधोदास चारण

(४) सूरसिंह रउ छन्द

(५) महादेव पारवती री वेली—किसनो (आढा ?)

(६) नागदमण—सायां झूला

(७) रतन महेशदासोत री वचनिका—खिडियो जागो

(८) अचलदास खींचीरी वचनिका—चारण सिवदास

(९) प्रिथीराज रासो—चन्द वरदाई

(१०) वीरमायण—ढाढी वहादर

(११) ग्रन्थराज—गाडण गोपीनाथ

(१२) वरसलपुरगढ़विजय—जोगीदास

(१३) सूरजप्रकाश—करणीदान

(१४) वंशभास्कर—सूर्यमल्ल

(१५) रतनजसप्रकाश—सागरदान

(१६) जसरत्नाकर— ?

(१७) रुकमणीहरण—वीठलदास

(१८) अजीतविलास— ?

(१९) गुण जोधायण—गाडण पसाइत

(२०) सूरदातार रो संवाद—बारठ सांकर

(२१) गुणविजै व्याह—बारहठ मुरारिदान

(२२) पाबूजी रउ छन्द—वीठू महा

(२३) विवेकवार निसाणी—केसवदान

(२४) जैतसी रास— ?

(२५) निमंगावंध—गधवाड़ियो चूंडो

(२६) बांकीदास ग्रन्थावली—बांकीदास

(२) 'गीत' छन्द में मिलने वाली ऐतिहासिक कृतियां संख्यातीत कही जा सकती है। एक-एक गुटके में ऐसे हजारों गीत मिलते हैं और न जाने कितने ऐसे गुटके गांव-गांव और घर-घर के कोने-कोने में मटकों, आलों और खड्डों में पड़े सर्वनाश की प्रतीक्षा कर रहे हैं। राजस्थान के सच्चे इतिहास का पुष्ट प्रमाण देने वाली जितनी सामग्री इन गीतों में मिल सकती हैं, उतनी अन्यत्र कहीं भी नहीं। हमारी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता का वास्तविक अध्ययन इन गीतों से ही हो सकता है। गीत प्राय: प्रत्येक ऐतिहासिक व्यक्ति के विषय में मिलते हैं। सच्ची घटनाओं के चित्रांकन के साथ-साथ इन गीतों में आश्रयदाताओं का अत्यधिक गुणगान अवश्य मिलता है जो कि कभी-कभी इतिहासकार को भ्रम में डाल देता है, पर अधिकतर वह इतना स्पष्ट है कि एक अच्छे आलोचक की दृष्टि से बच नहीं सकता। प्राय: प्रत्येक कवि एवं लेखक ने ये गीत लिखे हैं, जिसमें कहीं निष्पक्ष भाव से किसी राष्ट्रीय नेता का व्यक्तित्व वर्णन है, कहीं उसके जीवन की किसी सुप्रसिद्ध घटना का चित्र है, कहीं किसी वीर के उत्तेजनात्मक युद्ध की प्रशंसा है तो कहीं किसी स्वामिभक्त का युद्धभूमि में प्राणदान, कहीं किसी कवि के आश्रयदाता की दानशीलता, वीरता आदि सद्गुणों का यशगान है, कहीं किसी संत एवं देवता के महान् कार्यों की वन्दना है, और कहीं किसी स्त्री के मुख से उसके पति की व्याजस्तुति अलंकारान्तर्गत सराहना। इस प्रकार जन्म से लेकर मृत्यु तक, जीव की प्रत्येक वर्णनीय घटना को इन रचनाओं में स्थान मिल गया है। जिस प्रकार इन गीतों की निश्चित संख्या का पता लगाना दुष्कर है उसी प्रकार इन गीतकारों की पूरी-पूरी सूची बनाना भी उतना ही दुष्कर है। अद्यावधि ज्ञात कुछ प्रसिद्ध गीत-लेखकों के नाम इस प्रकार हैं—

(१) बारहठ चौहथ (२) सिढयाच चौभुजो (३) आढो किसनो (४) आढो दुरसो (५) गाडण पसाइत (६) फरसो (७) आसियो करमसी (८) दूदो (९) खिडियो जगमाल (१०) गाडण केसवदास (११) बारठ ईसर (१२) हरसूर (१३) सांदू भालो (१४) घधवाडियो मौको (१५) ठाकुरसी देवावत (१६) डूंगरसी (१७) तेजसी (१८) सांकर (१९) रतनू धर्मदास (२०) वीठू मेहो (२१) राठोड़ प्रिथीराज (२२) आसियो रतनसी (२३) धधवाडियो खींवराज (२४) बारहठ कल्याणदास (२५) लालस खतसी (२६) मगरो ढाढी (२७) पद्मा चारणी (२८) झीमी चारणी (२९) बारठ नरहरदास (३०) माधोदास (३१) कवियो तिलोकदास (३२) लूणकर्ण (३३) साइंया झूला (३४) नेतो (३५) गाडण झांझण (३६) नारायणदास (३७) बगसो गोवरधन (३८) हरदास (३९) गोइन्दास (४०) गाडण चोलो (४१) धधवाडियो माधवदास (४२) गेपो तूंकारो (४३) लाखो (४४) सांदू कुंभो (४५) गाडण खेतसी (४६) गाडण रामसिंह (४७) मीसण आनंद (४८) भाट चन्द (४९) भाट लल्ल (५०) दानी (५१) सुरताण (५२) बारठ चतुरो (५३) वीठू घड़सी (५४) राजसिंह (५५) लिखमीदास।

३. दोहों, सोरठों, कुण्डलियों आदि के रूप में मिलने वाला साहित्य गीत, साहित्य से भी अधिक विस्तृत एवं असीमित है। दोहा, छंद राजस्थानी-साहित्य का सबसे प्राचीन प्रकार है, जिसके उदाहरण विक्रम की दूसरी एवं तीसरी शताब्दी की रचनाओं तक में भी मिलते हैं। प्राचीन होने के साथ-साथ यह अत्यधिक प्रचलित भी है। जनसाधारण की मौखिक रचनायें भी जितनी दोहा-छंद में है उतनी अन्य किसी छंद में नहीं। सारांश यह है कि राजस्थानी साहित्य का एक बहुत बड़ा अंश दोहों के रूप में है। विद्वानों का अनुमान है कि यदि उचित अनुसंधान किया जाये तो दोहों का संग्रह एक लाख से भी ऊपर तक किया जा सकता है, जो सत्य ही है। राजस्थानी की बहुत सी रचनाएँ ही एकमात्र दोहा-छंद में है।

कुछ प्रसिद्ध दोहा-संग्रहों के नाम इस प्रकार हैं:—

(१) किवलास रा दूहा, (२) सत्रसाल रा दूहा, (३) मरोत रा दूहा, (४) नागडा रा दूहा, (५) परिहां रा दूहा, (६) जवानी रा दूहा, (७) ढोलै मारू रा दूहा, (८) जेठवै रा दूहा, (९) खीवरै रा दूहा, (१०) जमले रा दूहा, (११) सोहणी रा दूहा, (१२) धवल रा दूहा, (१३) सुहप रा दूहा, (१४) रामचन्द्र रा दूहा, (१५) पीठवै रा दूहा, (१६) वींझरे रा दूहा, (१७) सोरठ रा दूहा, (१८) रसालू रा दूहा, (१९) ठाकुरजी रा दूहा, (२०) गगाजी रा दूहा, (२१) प्रिथीराज रा दूहा, (२२) सज्जन रा दूहा।

कुछ प्रसिद्ध दूहा लेखकों के नाम इस प्रकार है :—

(१) उदैराम, (२) जसराम, (३) सूरीयो, (४) प्रिथीराज, (५) जमाल (६) फरसो, (७) सुहव, (८) सोनल, (९) अग्रदास।

सोरठा, कुण्डलिया, त्रोटक आदि अन्य छन्दों की रचनाएँ भी परिभाषा में बहुत अधिक हैं। कुछ प्रसिद्ध संग्रहों के नाम देखिए:—

(१) राजियै रा सोरठा, (२) जसै धवलोत रा कुण्डलिया, (३) केहर रा कुण्डलिया (४) मयण रा कवित्त, (५) गजसिंह रा झूलणा (६) अमरसिंह रा सवैया (७) रत्नसिंह रा त्रोटक (८) करमसेण री झमाल इत्यादि।

इसके अतिरिक्त हमारे गद्य साहित्य का सारा श्रेय भी लगभग उक्त वर्ग के लेखकों को ही है। ख्यात, वात, विगत, पीढ़ी, पट्टापत्नि, शिरियावली, वंशावली हाल, हकीकत, वृत्तान्त, इतिहास, कथा, कहानी, दवाजी, दवावेत इत्यादि नामों से संचित राजस्थानी गद्य का भण्डार प्रचुर है। इनमें निर्मित चारणी-साहित्य के समावेश,

महाभारत तथा पौराणिक अनुवादों, जैन साहित्य के कथा संग्रहों एवं ज्योतिष, वैद्यक, संगीतादि के स्फुट ग्रन्थों को छोड़ कर हमारे गद्य साहित्य में और कुछ है ही नहीं। बांकीदास की ऐतिहासिक बातों का संग्रह और सिढायच दयालुदास की "राठोड़ां री ख्यात" राजस्थानी गद्य-साहित्य की दो महान् कृतियाँ हैं। यदि ये दो रचनाएं और प्रसिद्ध चारण विद्वान सूर्यमल्ल के वंशभास्कर का गद्य भाग हमारे भंडार में से निकाल लिए जाये तो नैणसी की ख्यात के अतिरिक्त और रह ही क्या जाता है। बांकीदास और दयालदास चारणी गद्य-साहित्य के दो अमर कलाकार हैं। आज उन्हीं की कृतियों के बल पर हम अपने गद्य-साहित्य की सराहना करने जा रहे हैं। बांकीदास, दयालदास और सूर्यमल्ल की कृतियां राजस्थानी के सरस गद्यांशों की अमूल्य निधियां ही नहीं राजस्थान के इतिहास की अत्यधिक प्रामाणिक रचनाएं भी हैं।

राजस्थान के राजपूत राज्यों में चारण का स्थान बहुत उच्च था। चारण ही इतिहासकार, चारण ही राजकवि और चार चारण ही मन्त्री भी हुआ करते थे। अतः राजपूत राजाओं के आश्रय में रह कर चारण ने जितना लिखा उतना जैन यतियों के अतिरिक्त और किसी ने नहीं। राजा के जन्म की बधाई गाई तो चारण ने, राज्याभिषेक का गीत गाया तो चारण ने, विवाह का मंगल-गान गाया तो चारण ने, सौन्दर्य की, कायरता की, वीरता की और दानशीलता की विवेचना की तो चारण ने। राजपूत के जीवन में चारण प्राण बन कर समाया हुआ था। मध्य युग में तो राजपूत और चारण इतने घुलमिल गए थे कि इन दो शब्दों में अत्यधिक साम्य ही नहीं, एक दूसरे का बोध भी स्वतः ही होने लग गया था। इसी घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण राजपूत के राज्य का सम्पूर्ण विवरण लिखना भी चारण ही का कार्य बन गया था। इसी कारण प्रायः सभी राजपूत राज्यों के इतिहास चारणों के ही द्वारा लिखे गए हैं। इन साहित्य सेवियों की ऐसी ही कुछ प्रसिद्ध कृतियों का नामोल्लेख हम यहाँ कर देना चाहते हैं।

(१) देशदर्पण—दयालदास (२) आर्याख्यानकल्पद्रुम-दयालदास (३) उदैपुर री ख्यात (४) जोधपुर रै राठोड़ां री ख्यात (५) नागौर री हकीकत (६) हिन्दुस्तान रै सहरां री विगत (७) मारवाड़ री ख्यात (८) दलपतविलास (९) दिल्ली रै पातसाहां री विगत, (१०) जैपुर में सैव वैष्णवांरो झगडो हुवा तैरो हाल, (११) सांखला दहिया सूं जांगलू लियौ तै रो गल, (१२) औरंगजेब री हकीकत, (१३) जोधपुर रै राठौड़ां री पीढ़ियां, (१४) पडिहारा री पीढियां, (१५) नरसिंहदास गौड री दबावेत ।

(२) जैन-साहित्य

भगवान महावीर के उपासकों ने भारतीय साहित्य की जो अमूल्य सेवाएं की हैं उनके मूल्य का प्रतिपादन नहीं किया जा सकता। जैन आचार्यों, यतियों, मुनियों एवं श्रावकों ने भारत के कोने-कोने में संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं के साहित्य की रचना की है, और प्राचीन साहित्य को लिपिबद्ध कर उसे अपने भण्डारों में सुरक्षित भी किया है। लोक भाषा के साहित्य को जितना प्रोत्साहन जैन धर्मावलम्बियों के द्वारा मिला उतना अन्य किसी वर्ग के द्वारा नहीं। एक राजस्थान ही नहीं सभी प्रान्तों में जहां जैन धर्म का प्रचार प्राचीन काल से ही चला आ रहा है, जैनियों ने वहां की भाषा के भण्डार को अपनी रचनाओं द्वारा अवश्य भरा है। राजस्थानी और हिन्दी के तो प्राचीनतम उदाहरण ही जैन ग्रन्थों में मिलते हैं और जब तक जैन भण्डारों का समयक् पर्यवेक्षण नहीं होगा तब तक हिन्दी और राजस्थानी भाषाओं का पूरा इतिहास तैयार नहीं हो सकता। गुजरात के विद्वानों ने इन्हीं भण्डारों में से अपनी भाषा का इतिहास खोज निकाला है।

आधुनिक जैन-समाज धार्मिक श्रद्धा-भक्ति में सर्वोपरि है। अत: जैन यतियों के विद्याव्यसनी होने का इस समाज पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। इसी के फल-स्वरूप इस समाज ने भारती साहित्य को उच्चकोटि के साहित्यकार दिए हैं। हमने सैकड़ों की संख्या में ऐसे ग्रन्थ देखे हैं जिनकी रचना तथा लिपि जैनों के संरक्षकत्व में हुई। इतना ही नहीं जैन यति और उनके शिष्य अब भी, मुद्रणालयों के इस युग में प्राचीन पुस्तकों की प्रतिलिपियां करते और करवाते रहते हैं। उनका इस दिशा में इतना अच्छा अभ्यास हो गया है कि सुन्दर से सुन्दर लिपि में वे सुबह से लेकर सांय-काल तक लगभग ५०० श्लोक लिख लेते हैं। जितने प्राचीन ग्रंथ मिलते हैं उनमें भी सुन्दर प्रतियां जैनियों की ही लिखी हुई होंगी। जैनियों में सेवग जाति के लोग बहुत अच्छे लिपिकार होते हैं। इन्हीं कारणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि प्राचीन भारतीय साहित्य की सुरक्षा का जितना श्रेय जैन धर्मावलम्बियों को है, उतना और किसी वर्ग विशेष को नहीं। जैनियों के उपाश्रय और भण्डार हमारे देश के जादू भरे पिटारे हैं। कितने ही अज्ञात लेखकों की कला-कृतियां दिन के उजाले में अपनी मर्मभरी कथाएं सुनाने को उद्यत हो उठती हैं।

राजस्थान के लोक-साहित्य को लिपिबद्ध करने का भी अधिकांश श्रेय जैनियों को ही है। लोक-साहित्य के दूहे, कथाएं और गीत इन भण्डारों में ही मिलते हैं अन्यत्र नहीं। जैन साहित्य में प्रबन्ध, काव्य, कथाएं, रास, फाग, सज्झाय और गीत ही प्रमुख विषय हैं। इनके अतिरिक्त धर्म सम्बन्धी रचनाएं तथा विभिन्न ग्रन्थों के

भावार्थ एवं टीकाएं भी प्रचुर परिमाण में उपलब्ध हैं। यदि जैन भण्डारों का उचित पर्यवेक्षण किया जाये तो हजारों की संख्या में ऐसे गीत मिल सकते हैं जो हिन्दी संसार में सूरसागर और रामचरितमानस के मधुर से मधुर पदों की समानता का दावा कर सकते हैं। इन गीतों में पाई जाने वाली भक्ति, संयोग और वियोग की कल्पनाएं भारतीय साहित्य की चिरकल्पित निधियां होकर भी मौलिकता से ओत-प्रोत है। राजस्थानी-भाषा के गीतो का तो सर्वस्व ही नवीन है, सरस है, सुन्दर है और आल्हादकारी है।

(३) ब्राह्मणी साहित्य

ब्राह्मणी-साहित्य में वैताल पच्चीसी, सिंघासन वत्तीसी, सूआ वंहोत्तरी, हितोपदेश, पंचाख्यान आदि कथाओं, भागवत पुराण, नासिकेत पुराण, मार्कण्डेय पुराण, सूरज पूराण तथा पद्म पुराण आदि पुराणों एवं भागवद्गीता रसतरंगिनी, विल्हण पांशिका, रसरत्नाकर, रामायण और महाभारत आदि ग्रन्थों के अनुवाद ही प्रधान हैं। वैद्यक, ज्योतिष, संगीत एवं मन्त्र शास्त्र के स्फुट ग्रन्थ भी ब्राह्मणों के द्वारा लिखे गए थे। ब्राह्मणों का स्थान सदैव से ही धर्म गुरुओं का रहा है, अतः भारतीय धर्म-शास्त्र से ही इनका विशेष सम्वन्ध रहा है, और इसीलिए धर्मशास्त्र विपयक जितने ग्रन्थ हैं, उनमें अधिकांश ब्राह्मणों के ही लिखे हुए हैं। ब्राह्मणों की प्रधान भाषा संस्कृत रही है अतः संस्कृत के साथ इनका अविच्छिन्न सम्वन्ध रहा है। संस्कृत के परिपोषकों के रूप में भारतीय साहित्य इनका चिर-ऋणी रहेगा। विदेशी विद्वान तो सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य को ही ब्राह्मणी-साहित्य के नाम से से पुकारते हैं।

भारतीय इतिहास के उत्तर काल में ब्राह्मण युग की प्रधानता का अवसान होते ही भारतीय समाज में ब्राह्मण की स्थिति का भी पतन हो गया। चारणों को राजपूत राजाओं का आश्रय मिल रहा था और जैन यतियों को धनिकों का। परन्तु ब्राह्मणों को उसकी पूजा-पाठ और धार्मिक विश्वास के अतिरिक्त और किसी का आश्रय न था। अतः साहित्य से उनका नाता प्राचीन संस्कृत काव्य, दर्शन ग्रन्थ और रामायण महाभारत आदि के पठन-पाठन तक ही सीमित रह गया था। मृतक के सम्वन्धियों को गरुड़ पुराण सुनाना, नूतन जात वालक की जन्मपत्री वनाना, विवाह कराना और व्रत कथाएँ सुनाना, यही क्रियाएं ब्राह्मण की आजीविका के साधन थे। अतः ब्राह्मण को साहित्य सेवा के लिये अवकाश न था। लिपिकार ब्राह्मण अवश्य थे। जो प्रतिलिपि कर अपना पेट पालते थे। राजस्थान में ब्राह्मण की सामाजिक स्थिति का जितना अधःपतन मुगल काल में हुआ उतना और कभी नहीं। हिन्दी के साहित्य

सेवी ब्राह्मणों का उल्लेख हम यहां नहीं कर रहे हैं। कहने का आशय यह है कि उपरिनिर्दिष्ट विषयों के अतिरिक्त ब्राह्मणों की मौलिक रचनाएं हमारे साहित्य में नहीं के बराबर हैं।

(४) संत-साहित्य

सन्त-साहित्य का जितना अच्छा संग्रह राजस्थान में है उतना अन्य कहीं भी नहीं। इसके कई कारण हैं। पहला तो यह है कि राजस्थान हिन्दू नरेशों के आधीन रहने के कारण यहां हिन्दू धर्म को सदैव वांछित प्रोत्साहन मिलता रहा है। मुगलों की यातनाओं से त्रस्त सन्त समाज जब राजस्थान के भ्रमण के लिए आया तो यहां की शान्तिप्रिय जनता और शान्त वातावरण ने उनको बहुत प्रभावित किया। फलतः उन्होंने यहाँ बहुत काल तक निवास किया। गोरख, दादू, कबीर और रैदास आदि महात्माओं ने इस भूमि पर विचरण किया है और अपनी वाणियों से राजस्थानी समाज को जागरित किया है। गिरिधर की दीवानी मीरां, ब्रह्मज्ञानी सुन्दरदास और महात्मा जसनाथ इत्यादि की जन्मभूमि होने के कारण भारतीय सन्तों के लिए राजस्थान एक तीर्थस्थल सा बन गया है। संतों की पवित्र स्मृति में लगने वाले कई मेले अब तक चले आ रहे हैं जिनमें दूर-दूर से हजारों की संख्या में साधु लोग आते हैं। राजस्थान के इस सम्बन्ध के कारण अन्यान्य भारतीय सन्तों की वाणी में भी राजस्थानी भाषा का यथेष्ट पुट विद्यमान है। कबीर की साखियों और पदों में राजस्थानी के सैंकड़ों मुहावरे, कहावतें और शब्द घुल मिल गए हैं। मीरां की अमर वाणी समूचे भारत की गौरवमयी ध्वनि बनकर गूंज रही है। राजस्थान में सन्त समाज का अब भी अत्यधिक प्रचार है। नाथपंथी और दादूपंथी साधु जोधपुर और जयपुर राज्यों के आश्रय में पलते आ रहे हैं। इसके अतिरिक्त रामस्नेही, निरंजनी आदि अन्य सम्प्रदायकों के लोग भी यहां निवास करते हैं। सन्त साहित्य में दादू, कबीर, गोरख, मीरा, रैदास, जसनाथ, सुन्दरदास, सोढ़ीनाथी, बाजीन्द, महमद, नरसी आदि की वाणियों के अतिरिक्त महाराजा प्रतापसिंह, प्रतापकुंवरि जनगोपाल, बालकदास इत्यादि लेखकों की पौराणिक चरित्र-गाथाएं भी बहुत हैं। राजस्थान का सन्त साहित्य भरापूरा है। इस साहित्य की बहुतसी मानयों विचरते हुए एवं गृहस्थी साधु सन्यासियों के तंबूरों, सितारों और खड़तालों पर भी सुनी जा सकती है। इस मौखिक साहित्य को लिपिबद्ध करना और इस विषय के प्राचीन साहित्य का अनुसन्धान करना अत्यन्त महान् एवं उपकार की वस्तु होगी। राजस्थान अपने चारण साहित्य और सन्त साहित्य के बल पर ही गर्वभरी वाणी में गर्जना कर रहा है।

राजस्थानी का गद्य-साहित्य भारतीय इतिहास की अमर निधि के रूप में चिरस्मरणीय रहेगा। देशी एवं विदेशी विद्वानों ने अत्यन्त समादृत भरे शब्दों में

इसकी प्रसंशा की हैं। नैणसी की ख्यात, दयालदास की ख्यात, बांकीदास की ऐतिहासिक बातें, वंशभास्कर के गद्यांश तथा आइने अकबरी, तवारीख फरिश्ता, अखलाक मौहसनी, भागवतपुराण (दशमस्कन्ध) और रामचरितमानस आदि ग्रन्थों के अनुवाद राजस्थानी गद्य की महानता का ढिंढोरा पीट रहे हैं। आज से सैंकड़ों वर्ष पहले इस भाषा का गद्य भण्डार इतना भरापूरा था। राजस्थानी का बात-साहित्य भी अपनी एक निराली विशिष्टता लिए हुए है जिसकी टक्कर में किसी दूसरी भाषा का प्राचीन कथा-साहित्य नहीं ठहर सकता।

५. गद्य साहित्य :

राजस्थानी साहित्य में वात, गीत और दूहा ये तीन प्रकार की रचनाएं संख्यातीत कही जा सकती है। लिखित रूप में मिलने वाली ये कृतियाँ हजारों की संख्या में देखी जा सकती हैं। इनमें से बहुत कम ऐसी है जिनके रचियताओं के नाम ज्ञात हैं। वात-साहित्य के सम्यक् पर्यवेक्षण के बाद विभिन्न दृष्टियों से इसके विभिन्न विभाग कर सकते हैं। प्रत्येक विभाग के अन्तर्गत आने वाली कतिपय वातों का नामोल्लेख करके यहां राजस्थानी वात-साहित्य की विशेषताओं का दिग्दर्शन कराने का प्रयत्न किया गया है।

(१) कथानक की दृष्टि से :

(क) ऐतिहासिक—राव रिणमल री वात, पाबूजी री वात, कानड़दे री वात, पताई रावल री वात, राव सलखैरी वात, मेंहदरै राठौड़ री वात, नापै सांखले री वात, लाखैं जाम री वात, राव अमरसिंह री वात, सिद्धराज जयसिंहदे री वात।

(ख) अर्द्ध ऐतिहासिक—गोगैजी री वात, सयणी चारणी री वात, जोगराज चारण री वात, राजा मानधाता री वात, पीरोजसाह पातिसाह री बात, मूमल री वात, पातिसाह री वात।

(ग) काल्पनिक—वात ठग री बेटी री, चांदकुंवर री वात, पदमकला री वात, फोगसी ऐ वाल री वात, कोड़ीधज री वात, चंदनमलयागिरि री वात, माल्हाली री वात, आसारी वात।

(घ) पौराणिक—सोमवती अमावस री कथा, रिषीपांच्या री कथा, निर्जला, जोगणी एकादसी री कथा (ब्रह्मवैवर्त्त पुराण), बुधाष्टमी व्रत कथा, दत्तात्रेय २४ गुरु किया तैंरी वात, राजा नल री वात, जन्माष्टमी री कथा, रामनवमी री कथा, गोविंदमाधोजी री कथा, दुआरका-महातम री वात।

(२) विषय की दृष्टि से :

(क) प्रेम—सोरठ री वात, वींझरै अहीर री वात, ऊमादे भटियाणी री वात, ढोला मारवणी री वात, पंमै घोर अन्धार री वात, जलाल गहाणी री वात, राणै खेतैरी रीं वात, सोना री वात, रायधण भाटी री वात,

(ख) वीर—कूंगरै वचोल री वात, जगदे पंवार री वात, नाराइणदास-मीढा खां री वात, सोनिगरै मालदे री वात, राव चूंडै री वात, गौड़ गोपालदास री वात, गोरा बादल री वात, वात खडगल पुंवार री, छाहड़ पंवार री वात, राजा प्रिथीराज चौहाण री वात।

(ग) हास्य—च्यार मूरखां री वात, गोदावरी नदी रै जोगी री वात, खुदाय वावलो री वात, विसनी वे-खरच री वात, मामै भाणेज री वात, वीरबल री वात, राजा भोज खाफरै चोर री वात।

(घ) शांत—रावल मलीनाथ पथ में आयो तैं री वात, राजा नक्षत्र जातीक अर विक्रमादीत री वात, राजा भोज री पनरमी विद्या री वात, भांडण गांम रै पीर री वात, रामदास वैरावत री आखड़ियां, रामदे तुंवर री वात।

(३) भाषा की दृष्टि से :

(क) राजस्थानी—नागोर रै मामले री वात, खीवै वीजै धाड़वी री वात, रायसिंह खींचावत री वात, सूरां अर सतवादियां री वात, नक्यूं हरै नक्यूं सेखै तैं री वात, आय ठहको भाहिमै तैं री वात, सांइ री पलक खलक वसै तैं री वात, हाडुल हमीर भोलै राजा भीम सूं जुध कियो तैं री वात।

(ख) उर्दू मिश्रित—कुतबदी साहिजादै री वात, देहली की वात, वड्ढलिमा की वात, लुकमान हकीम की अपणै वेटे कूं नसीहत।

(ग) व्रज भाषा मिश्रित—नासिकेत री कथा, पूरणमासी री कथा।

(घ) गुजराती मिश्रित—अन्जना सती री वात।

(४) रचना प्रकार की दृष्टि से :

(क) गद्यात्मक—सूरिजमल हाडै री वात, राजा करणसिंहजी रै कवरां री वात, राव रिणमल खावड़ियै री भावना, सिखरो महेलवै रहै तैं री वात।

(ख) गद्य-पद्यात्मक—रतना हमीर री वात, सदैवछ सावलिंग री वात, नागजी नागमती री वात, पना वीरमदे री वात, ससिपून्यूं री वात, लैलै-मजनूं री वात ।

(ग) पद्यात्मक—विद्या विलास चौपाई, नल-दमयन्ती चौपई, शनिश्चरजी की कथा, चित्रसेन-पद्मावती चौपई, गौरा-बादल चौपई, ढोला-मारवणी चौपई ।

(५) शैली की दृष्टि से :

(क) घटनात्मक—पातिसाह औरङ्गजेब री हकीमत, जैपुर में संव वैष्णवां रो झगड़ो हुयो तैंरो हाल ।

(ख) वर्णनात्मक—खीची गंगेव नींबावत रो बैपोरी, लूण साह री वात रो वखाण ।

(ग) विचारात्मक—मांघ पिंडत, राजा भोज, डोकरी री वात, जसनाथ जाट री वात ।

(६) उद्देश्य की दृस्टि से :

(क) व्यक्ति चित्रण—हरराज रै नैणां री वात, हरदास ऊहड़ री वात, ऊदै उगणावत री वात, महाराज पद्मसिंह री वात ।

(ख) समूह दर्शन—भायलां री वात, बून्देलां री वात, सांचोर रै चहुवाणां री वात, गढ़ बांधव रै धणियां री वात, भाटियां री वात ।

(ग) समय व स्थान विशेष का वर्णन—राव बीकै बीकानेर वसायो तैं समै री वात, रा उदैसिंह उदयपुर वसायो तैं समै री वात, नरवद सतावत सुपियारदे लायो तैं समै री वात, अणहलवाड़ा पाटण री वात, जैसलमेर री वात ।

वात साहित्य की कुछ अपनी निजी विशेषताएं भी हैं जिनकी सूक्ष्म आलोचना किए बिना राजस्थानी साहित्य के इस प्रधान अंग का पूर्ण परिचय प्राप्त नहीं हो सकता । किन्तु इसके पहिले हमको पक्षपात रहित होकर यह बात सोच लेनी चाहिए कि हम आज से ३०० वर्ष पहले लिखे हुए प्राचीन साहित्य की चर्चा कर रहे हैं । अत: आधुनिक कहानियों के विशाल क्षेत्र में होने वाले सूक्ष्म-तत्त्वों के चित्रण पात्रों के वैज्ञानिक चरित्र लेखन तथा कहानी-लेखक के विस्तृत अध्ययन की सारगर्भित

मार्मिक उक्तियों का अस्तित्व यहाँ न होगा । पर फिर भी पाश्चात्य-साहित्य की इस भड़कती हुई वेश-भूषा से परे, बीसवीं शताब्दी के यान्त्रिक जीवन की कटु सच्चाइयों से भरे अन्वेषणों से निर्लिप्त, राजस्थानी वातों ने 'राजा-रानी' की प्राचीन कहानियों के उसी विशुद्ध भारतीय वातावरण का झीना-परिधान पहिन रक्खा है तथा इनके अन्तःकरण में देश-प्रेम और आत्मगौरव पर जीवन लुटा देने वाली वीरात्माओं का उबलता हुआ रक्त अब भी वेगपूर्ण गति से संचरण कर रहा है ।

घटना-बाहुल्य इनकी सबसे पहली विशेषता है । राजस्थानी लेखकों ने पहले-पहल बात लिखना नहीं पर कहना सीखा था । अतः सुनने वाले के लिए यहां सामग्री अधिक है, पढ़ने वाले के लिए कम । पढ़ने वाले को ऐसा ही अनुभव होता है मानों वह किसी पुराने चारण या भाट के मुख से स्वयं सुन रहा हो । यही कारण है कि इन बातों में पाठकों को मंत्रमुग्ध करने की क्षमता है । यहां एक के बाद दूसरी घटना चलचित्र की घूमती हुई तस्वीरों की भांति आती और चली जाती है । सम्पूर्ण जीवन-काल में व्याप्त होने वाले जिस घटना समूह को लेकर हिन्दी लेखक उपन्यास लिखने बैठते हैं, वे सब घटनाएं राजस्थानी बात का कहने वाला अपनी बात में बड़े मजे से कह जाता है । इसके विपरीत वर्णनात्मक कहानियों में कहने वाले की दृष्टि इतनी पैनी हो गई है कि वह अत्यन्त सूक्ष्म तत्वों का निर्देश करना भी नहीं भूला है । जहां मृगया का वर्णन हो रहा है, वहाँ एक-एक क्षण के परिवर्त्तन के सुन्दर चित्र हैं । जहां युद्ध का चित्रण हो रहा है, वहां किस सिपाही ने कितने वार किए किस वीर के शरीर पर कितने घाव लगे तथा किसने किससे और किसने किससे युद्ध किया आदि छोटी से छोटी बात का उल्लेख भी किया गया है । इसका प्रधान कारण यही है कि हमारे बात कहने वालों को समय की कमी न थी । जहां विषय सरस होता था वहां अपनी वाक्शक्ति के प्रभाव से तथा मार्मिक वार्तालापों के संयोजन से वे उसे और भी मनोरंजक बना दिया करते थे । पर जहां विषय स्वयं शुष्क होता था वहां वे भी अन्य बातों से उदासीन होकर घटनाओं का सीधा-सादा वर्णन मात्र कर देते थे ।

उक्त दोनों प्रकार की रचनायें ही यहां प्रचुर परिणाम में उपलब्ध हैं । एक बात वह है जिसमें शताब्दियों का इतिवृत्त ठूंस कर भर दिया गया है, दूसरी वह जिसमें एक दिन में घटित होने वाली बातों का अत्यन्त विशद वर्णन है । 'पंवारां री उतपत' तथा 'खीची गंगेव नींबावत रो बेरोरो' नामक बातें इस विषय के सर्वोत्तम उदाहरण हैं ।

क्लिष्टता विहीन छोटे-छोटे वाक्यों की योजना से राजस्थानी बातों का वर्णन अत्यन्त मधुर हो गया है । यहां कहानी और उपन्यास पढ़ने के लिए भाषा के

पर्याप्त ज्ञान की आवश्यकता नहीं, खोज-खोज कर रक्खी हुई संस्कृत शब्दावली के कारण आ जाने वाली संदिग्धता का प्रश्न यहां नहीं, केवल साधारण बोल-चाल की भाषा में कही हुई इन बातों का रसास्वादन आबाल-वृद्ध सभी कर सकते हैं। इस विशेषता का एक नमूना देखिये—

"बरसालै रा दीह छै। दीवाण सिकार चढ़िया छै। हल वहै छै, भाद्रवो मास छै। खातिण भातो ले ज्यावै छै। दोइ पाडी छै, सू बिन्है हाथे पकड़ी छै, लियां जावै छै, पाळ्यां नाचै छै, थेई-थेई करत्यां जावै छै, भातो माथै छै, बे-परवाह चली जावै छै।'
(राणै खेतै री बात)

बात के सुबोध होने के अतिरिक्त इस पद-योजना से वर्णन में एक विचित्र सरसता आ जाती है। इसके बल पर हम यह सिद्ध करने का भी प्रयत्न कर सकते हैं कि गम्भीर भावों की आलोचना तथा सूक्ष्म तत्त्वों का चित्रण करने के लिए छोटे-छोटे सरल वाक्य भी कितने उपयुक्त हैं।

'आगै जाल रो रूंख हुतौ, ओथ जाइनै ऊभा रहिया। कहियो, ओ ठाकुर सुणै, औ लोक सुणै, ओ नीलो रूख छै, जे छै मास ताई नायौ तौ तैं कहियो न मैं सुणियो, मैं कहियो न तैं सुणियो, वाचा अवाचा छै। तांहरा वीझाणंद आघौ हालियौ, सैणी पाछी चाली।"
(सयणी)

प्रकृति–चित्रण की अपूर्व छटा के लिए नीचे लिखी पंक्तियां देखिए—

"वरखा रितु लागी, विरहिणी जागी। आभा झरहरै, बीजां अवास करै, नदी ठेवा खावै, समुद्रे न समावै। पहाडां पाखर पड़ी, घटा ऊपड़ी। मोर सोर मंडै, इन्द्र धार न खंडै। दादुर डहडहै, सावण भादुवै री सधि कहै। इसौ समइयौ वण रह्या छै। आभो गाजै, सारंग वाजै। द्वादस मेघ नै दुवो हुवो सू दुखियारी री आंख हुवो। झड़ लागो, प्रिथी रो दलद्र भागो।

बरखा मंडनै रही छै, बिजली झिलोमल करनै रही छै। बादलां झड़ लायो छै। सेहरां सेहरा बीज चमकनै छै, जांणे कुलटा नायका घर सूं नीसर अंग दिखाय, दूसरे घर प्रवेस करै छै। मोर कुहकै छै। भाखरां रा नाला बोलनै रह्या छै, पाणी नाडा भरनै रह्या छै। चोटड़ियांल डहकनै रही छै। वनसपती सूं वेलां लपटनै रही छै परभात रो पोहर छै। गाज आवाज हुयनै रही छै। जाणे घटा घणै हरख सूं जमी मिलण आई छै।
(वेपौरो)

वर्णन परम्परागत होते हुए भी सरसता में कम नहीं। इसी शैली के अन्तर्गत किये हुए व्यक्ति-चित्रण एवं वातावरण के चित्रण भी अत्यन्त सजीव हुए हैं। दो-तीन वाक्यों में ही सम्पूर्ण व्यक्तित्व का रेखा-चित्र हमारे सामने उबर आता है।

"जैसल देश रै देश मांहे जोगराज चारण वसै । वड़ो चतुर, होसनाइक, वड़ा रूपक जोड़ै । मोटो चारण । नामजादीक । साह-सिके भलो । रूप भलो । सू उदास रहे । घरै अस्त्री स्वरूप नहीं, गुण नहीं, तियैं करि उदास रहे ।"

(जोगराज चारण)

वातावरण के सौन्दर्य के लिए युद्ध-क्षेत्र में पड़े हुए घायल सैनिक का चित्रण देखिये—

सांवतराय री चिता सूं पांवड़ा दोय सैंक माथै घावां सू भार हुआ माराज बैठा है, घायलियै सिंघ ज्यूं घूमै है । सावचेत हुवै छै जद तौ एक-दोय पिंडरु घर रा भरै छै । रुधर री धारा सरीर मांय सूं प्रवाल री सीकां वहनै रही है । एक आंगली टिकै जैती जागा घावां लूं सावत रही नहीं है । वेचेतै वैठा घूमै है । वा ढाल तलवार हाथां छिटक पड़ी है । एक कटारी कमर में वंध रही है । (पदमसिंहजी री वात)

प्रतिपाद्य विषय, भाषा और शैली की सरलता तथा गम्भीरता के साथ-साथ इन वातों में एक रोमाञ्चक तत्त्व का अस्तित्व भी मिलता है । काल्पनिक तथा ऐतिहासिक दोनों ढंग की वातों में ही इसका उन्मादकारी समिश्रण है । कहीं-कहीं यही तत्त्व अतिरंजित किया जाकर अप्राकृतिक वन जाता है, परन्तु अधिकतर तो इसके कोमल स्पर्श से वात में एक नूतन मादक स्फुरण-सा हो उठता है ।

वात-साहित्य के इस दिग्दर्शन के साथ ही प्राचीन राजस्थानी साहित्य का यह प्रकरण समाप्त हो जाता है । यूं राजस्थान में आज हिन्दी और राजस्थानी दोनों भाषाओं में उच्चकोटि का साहित्य लिखा जा रहा है । किन्तु चूंकि वे सभी सृजनधर्मी हमारे समसामयिक एवं सहयोगी हैं, अतः उनके वारे में चर्चा करना अभी वांछित प्रतीत नहीं होता ।

२६ | लोक साहित्य

राजस्थान लोक-साहित्य की दृष्टि से भी बहुत सम्पन्न है। लोक-साहित्य के अन्तर्गत (१) लोक कथाएं (२) पवाड़े (लोक कथा काव्य), (३) लोक गीत तथा (४) कहावतें, मुहावरे, पहेलियाँ इत्यादि आते हैं।

राजस्थानी लोक कथाएँ मुख्यतः नीति, वृत, प्रेम, मनोरंजन तथा पुराण सम्बन्धी हैं। राजस्थान में कहानी कहने वाली विभिन्न जातियां हैं और वे अपने विशिष्ट ढंग से कथाएँ कहती हैं। ये लोक कथाएँ, विविध प्रकार की हैं। बालकों की कथाएँ, बालिकाओं की कथाएँ, स्त्रियों के लिए कथाएँ तथा पुरुषों के लिए कथाएँ। बाल कथाओं को दादी या नानी की कहानियाँ कह सकते हैं जिन्हें बूढ़ी औरतें घर के बच्चों को सोने से पहले सुनाती हैं। इन कहानियों की दुनियां बड़ी रंगीन है। इसमें जड़-चेतन का भेद समाप्त हो जाता है। पेड़-पहाड़, नदी-निर्झर सभी बोलते हैं। मनुष्य की भाषा में अपना दुःख-सुख प्रकट करते हैं। परियां आकाश में उड़ती हैं। देवता और राक्षस भी कहानियों के पात्र मिलते हैं।

बाल कथायें

बाल कथाओं में सबसे पहिले वे कहानियां आती हैं जो एक दम छोटे शिशुओं को सुनाई जाती हैं। इन कहानियों की दुनियां भी बच्चों की उम्र की तरह छोटी ही रहती है। इनके सभी पात्र बच्चों के परिचय से बाहर की वस्तु नहीं होते। ये कहानियां होती भी बहुत छोटी हैं। प्रायः इनमें किसी प्रकार की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता। इनमें सरस कौतूहल मात्र रहता है। ऐसी जन-कथाओं का मनोवैज्ञान आधार बड़ा सबल होता है। पत्तो और डगलियो, बिल्ली अर चीड़ो, भैंस को पोटो अर चीड़ी, चीड़ो-चीड़ी, बांदरो-बांदरी अर नार, जूं, कीड़ी को जुंवाई, घेरणी, चिरचियो मिरचियो, चीड़ी अर चुस्सी, खुरपली, टींटण चुस्सी मुस्सी भायली,

गादड़ो अर कागलो, कीड़ी अर कमेड़ी, मींड़को अर चीड़ी, मटकाचर, कागलो अर कोचरी आदि-आदि कहानियां इसी प्रकार की हैं। इनमें से उदाहरण के लिए "पत्तो अर डगलियो" नामक कहानी प्रस्तुत की जाती है—

"एक पत्तो अर डगलियो भायला हा। दोनूं एक वाडी में रहता। आंधी आती तो डगलियो पत्ते नै ढक लेतो। मेह आतो तो पत्तो डगलिए न ढक लेतो। न वो उडतो अर न वो गलतो। एक दिन आंधी अर मेह दोनूं सागै आया। पत्तो उडगो अर डगलियो गलगो।"

इन बाल कथाओं में बहुत सी कहानियां पद्यमय होती हैं। इन पद्यों की भाषा बड़ी सरस होती है। साथ ही इनमें गजब की गति होती है। इन कहानियों में भी शिक्षा की तरफ विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। रोचकता ही इनकी खूबी होती है। कमेड़ी अर चुस्सो, चुस्सो चुस्सी, भैंस की जूं, झिडियो, कागलो अर चिड़ी, राजाजी की बिल्ली, चुस्सी अर मींढकी, गादड़ो अर लूंकड़ी, आदि-आदि कहानियां इस श्रेणी की हैं। इनमें से उदाहरण स्वरूप में "राजाजी की बिल्ली" नामक कहानी प्रस्तुत की जाती है।

"एक बिल्ली गैलै पर आकर बैठगी। थोड़ी सी वार में गुड़ को गाडो आयो। गाड़ीवान बोल्यो-बिल्ली बिल्ली ए, बलद्या मारैगा। बिल्ली बोली—मैं तो राजाजी की बिल्ली, मैं तो चावूं सक्कर तिल्ली; मेरो बांयो कान भर दे। गाडीवान बोल्यो—गेरो रे रांड के कान में गुड़ की डली।

पछै सक्कर को गाडो आयो। गाडीवान बोल्यो—बिल्ली-बिल्ली ए, बलद्या मारैगा। बिल्ली बोली—मैं तो राजाजी की बिल्ली, मैं तो चावूं सक्कर तिल्ली, मेरो बांयो कान भर दे। गाडीवान बोल्यो—गेरो रे रांड के कान में सक्कर की चूंटी।

थोड़ी देर पछै तेल को गाडो आयो। गाडीवान बोल्यो—बिल्ली बिल्ली ए, बलद्या मारैगा। बिल्ली बोली—मैं तो राजाजी की बिल्ली, मैं तो चावूं सक्कर तिल्ली, मेरो बांयो कान भर दे। गाडीवान बोल्यो—गेरो रे रांड के कान में तेल को टोपो।

बिल्ली आपका दोनूं कान डाटा भरा कर आपकै बचियां कनै आयी अर गुड़, शक्कर, तेल आगै गेर कर बोली—ल्यो रे बचियों, पाप बाप कर खाल्यो।"

राजस्थान की लोक प्रचलित बाल कथाओं में एक वर्ग उन कहानियों का है जिनके अन्त में कोई पद्य कहा जाता है उस पद्य में उस कहानी का सार समाया रहता है। ये कहानियां संस्कृत के हितोपदेश एवं पंचतंत्र की कहानियों के समान है। इनमें शिक्षा की प्रधानता रहती है। ऐसी कहानियों का नाम भी उस पद्य के रूप में ही बताया जाता है। कुछ पद्य इस प्रकार हैं—

बाप चराई केरड़ी, माय उगाही भीख।
तूं के जाणै बावली, बड़ै घरां की सीख ? ।।१।।
बाजीगर को बांदरो, छोड़ सक्यो ना जाल।
तेरै लागै कामड़ी, मेरै ऊठै झाल ।।२।।

इनके अतिरिक्त और भी बहुत ज्यादा शिक्षाप्रद बाल-कथाएं लोक प्रचलित हैं। ऐसी जनप्रिय कहानियों के नाम यहां दिये जाते हैं—

ना'र अर गऊ, बिल्ली अर ना'र का बचिया, ना'र की घूरी में गादड़ो, गादड़ पट्टो, पटकलो आठ काठ को आदमी, मोतियां की खेती, च्यार कागला, ना'री को दूध जाट का पन्द्राबेटा' मूरख घोड़ो, गादड़ो-गादड़ी, सुपनै का लाडू, गुरुजी अर कागलो, स्याणों बांदरों, नेकी को बदलो, डमडमी कै डेरू, गादड़ो अर कागलो, कुत्तो अर मींडो, भोज अर गादड़ो।

परियों की कथायें

राजस्थान की लोक कथाओं में परियों की कहानियां भी काफी हैं। दुनियां भर में ऐसी कहानियों का प्रचार है। आकाश में उड़ने वाली और इच्छानुसार रूप धारण करने वाली ये परियां बालकों को बड़ी प्रिय लगतीं हैं। इन कहानियों में रोचकता बहुत होती है। बच्चे इन्हें सुनते-सुनते मुग्ध हो जाते हैं। यहां कुछ ऐसी कहानियों के नाम दिये जाते हैं :—

सोनै को फूल, रात की रानी, हिरण अर परियां, पाप को फल, राजा को सुपनो, सोनै को हिरण, सात परियां, सोनल परी, सात सहेलियां, परियां को देश आदि।

परियों की कहानियों की तरह ही बाल-जगत में जादू की कहानियों का भी प्रचार काफी है।

निम्नलिखित कहानियां इस श्रेणी में अधिक प्रचलित हैं।

मर्द को मर्द, दो अंगूर, दे दनादन, सोनी मींडो, कुमारदेव, डमडम जादूगर, चिपमचिपा, सोनै का महल, गलो, ईंट सैं सोनो, राजा भोज अर सुनेरो हिरण, लड़की अर नागदेव, ऊंट सैं बकरियां, लग लग घोटा, बैद सैं बकरो, दूध में सांप, मोती को खेत, राजा भोज सैं कुत्तो, बिना पाणी को महल, जादूराव फकीर कामरू देश आदि।

इनके अलावा बच्चों में ऐसी कहानियों का भी काफी प्रचार है, जिनमें डायन, भूत और राक्षस अपने कारनामें दिखलाते हैं। इनके अति मानवीय कर्म भी बड़े रोचक हैं।

उदाहरण स्वरूप यहां एक लोक-कथा दी जाती है, जो बड़ी ही लोकप्रिय है। इस लोक-कथा का नाम "न्योलियो राजा" है—

एक राजा के दो राणी ही। एक नैं हो सुहाग अर दूसरी ने हो दुहाग। सुहागण के च्यार बेटा जाया अर दुहागण के जायो एक न्योलियो। राजा का बेटा बड़ा होया जद घोड़ां चढता अर न्योलिए नै सवारी करण नैं देई एक बिल्ली। एक दिन च्यारूं कंवर घोड़ां पर चढ़ कर सिकार खेलण वन में गया। न्योलियो भी आपकी बिल्ली पर चढ़ कर सागै गयो। सिकार लैर भागता-भागता वै पांचू गैलो भूलगा। रात होगी जद एक छोटो सो घर देख्यो। कंवर वैं घर में जाकर वासो लियो। बो घर हो एक डाकन को। कंवरां नैं बेरो कोनी पड़्यो। डाकण भोत लाड-प्यार करकै जिमाय अर सुवा दिवा। च्यारूं कंवर तो सो गा पण न्योलियो जागतो रयो। थोड़ी देर पछी डाकण उठी अर आपकी छुरी काड कर धार करणैं वारणैं गई। न्योलियो सारी बात जाण गो। डाकण का बेटा भी वठै ही सूत्या हा। न्योलियो उठ कर आपकै भायां नैं तो डाकण कै बेटां के गावां में सुवा दिया और डाकण के बेटां नैं आपके भायाँ की जगाँ सुवा दिया। थोड़ी देर पछै डाकण छुरी लेकर आई और आपके ही बेटां के छुरी पहरा दी। न्योलियो बोल्यो—न्योलियो राजा जागै है, डाकण छुरी पलारै है। पण डाकण को काम तो पूरो होगो। न्योलियो आपके भायां नैं जगाया अर दिन ऊगगो। सगला आपके घोड़ां पर चढ़ कर चल्या गया। डाकण रोवती रहगी। दिन में गैलो लादगो। घरां पूंच कर कंवरां आपके बाप नैं रात का सारा हाल सुणाया। राजा न्योलिए पर भोत राजी हुया। न्योलिए नैं पाटवी कंवर कर्‌यो अर वैं की मा नैं सुहाग दियो।

हास्य रस की कथायें

लोक-कथाओं में हास्यरस की कहानियों की भी भरमार है। बीरबल, नाल बुझाकड़ और सेखचल्ली पर तो बहुत ही ज्यादा विचित्र-विचित्र कहानियां कही सुनी जाती हैं। साथ ही कंजूस बनिया, कायर राजपूत तथा मूर्ख सभा सदों के बारे में

असंख्य लोक प्रचलित किस्से मिलेंगे। चमार, डोम, ढाढी, नायक आदि जातियों से सम्बन्धित कहानियों की भी कोई गिनती नहीं। इनमें हास्य रस की धारा सी बहती है। ऐसी कहानियों में राजस्थानी वातावरण बड़ा ही स्पष्ट रहता है। यहाँ कुछ हास्य रस की लोक-कथाओं के नाम दिये जाते हैं— चमारी राणी, बीरबल की बेटी, घेलिए की घेली, लालाराम खाती, रमज्यान सरीफ, च्यार चोर अर डूम, पंसेरीराम, घुरिणयो, ब्हरां की भाण, राजा के च्यार कान, चकमलजी सेठ, कुछनी बांदरी, जाट अर काजी, पड़खाऊ, कठै निमट्टूं, काजी अर तेरण, जाट को चांद तौड़णो, कहाणी की मा माणी, जुंवाईजी, हांजी नांजी, गुड़मिटड़ी, झूठ बराबर मजा नहीं, बटउड़ो, फलसो कुंवाड सारा बैरी, लापसड़ो खाऊं, कंजूस जाटणी, लढाक पंडत, थानियो मलकियो, चेलसरी, जाट नोकर, सीपली कुत्ती, जाट-जाटणी, चमार-चमारी, तेजाताण, बारठजी की बेटी को ब्याह, चीड़ो अर चमार, चमार सासरै गयो, ढाढी अर जाट, कूंजड़ा को ब्याह, ढेढ हाकम, चमारां को घाड़ो, खोजां को घाड़ो, अमलदार, कुणसो ठाकर, नार मारयो, सेखसल्ली की चोरी, काजीजी का च्यार नोकर, अंधेर नगरी, मूरख राजा, तीसमारखाँ आदि।

हास्य रस की कहानियों के अतिरिक्त हँसी के चुटकले राजस्थान में असंख्य हैं। लोग बातचीत के दौरान में इनका प्रयोग करते हैं। इनसे बातचीत रंगीन बन जाती हैं। ये चुटकले छोटी-छोटी कहानियों के रूप में कहे जाते हैं। यहाँ एक उदाहरण दिया जाता है—

स्यालै की मौसम। रात की वखत। एक डूम कूवै कन्नै बैठ्यो सी मरै। कन्नै एक सोड़ अर एक सारंगी। थोड़ी देर पछै सी को जोर होयो। आपकी सोड़ अर सारंगी लेकर रीतो खेल में बड़गो। आधी रात नै एक चोर आयो। चोर भी सी मरै। करम जोग सैं खेल कानी गयो। डूम सूत्यो हो। चोर डूम की सोड़ उतारली अर सारंगी खोस कर भाजगो। डूम डरतो दाबलगो। रात नै सी मरतो करड़ो होगो।

व्रत-कथायें

सांस्कृतिक चित्रण की दृष्टि से व्रत कथाओं का अपना विशिष्ट स्थान है। व्रतों का स्थान महिला समाज में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और प्रत्येक व्रत की कथायें हैं जिन्हें महिलाएँ अवश्य सुनती हैं। राजस्थानी नारियों के लिए ये व्रत कथाएँ ही वेद-पुराण हैं और इनके माध्यम से ही संस्कृति की धारा अभी तक राजस्थानी घरों में प्रवाहित है। इन व्रत-कथाओं की विशेषता यह है कि इनके अन्त में सर्व-मंगल-कामना व्यक्त की जाती है। उदाहरण के लिए 'नागपंचमी' व्रतकथा का अन्त द्रष्टव्य है :

"हे नाग देवता, साहूकार का छोटा बेटा की भू नैं टुठ्या, जिसा सबनैं टूटियो–कहता नैं, सुणता नैं, हुँकारा भरता नैं, अंधेरे-उजालै सबकी रिच्छा करियो महाराज ।"

महिला समाज में कातिक मास की कहानियों का अलग ही साहित्य है । ये कहानियाँ भी पुण्यमयी हैं । इनसे धर्म, नीति और सदाचार की बड़ी पुनीत शिक्षाएँ मिलती हैं। साथ ही ये कहानियाँ बड़ी रोचक भी हैं । कातिक स्नान करने वाली स्त्रियाँ प्रातःकाल मन्दिर में जाती हैं । वहाँ वे हरजस गाती हैं और पवित्र 'कहानियाँ कहतीं-सुनतीं हैं । इन कहानियों में आचार के उत्तम उपदेश हैं । साथ ही ये कहानियाँ हैं भी काफी संख्या में । यहाँ कुछ कहानियों के नाम दिए जाते हैं—हाकली ताकली, लिछमीजी, सूरजनारायण, महादेव पारवती, बालाजी, बिसपतजी, सनीसरजी' कातिक, तुलसाँ, बुधजी, नगर बसेरै की, लपसी-तपसी, न्यामदे-श्यामदे, सतनारायण, राम-लिछमण, बुडिया माई, बिणजारो, नितनेम, कठियारो, गणेसजी, इल्ली घुणियो, सूरजनारायण की छोरी, सुसगे भू, पचभिखो, पचीरथी, तिलकमहाराज, रामबाई, धरम की भाणजी, अलूणी भू, धरम की भूखी अर दाम की भूखी, बिसराम देवता, बिनायक, मींडको मींडकी, पीपल पथवारी, कीड़ी नैं कण हाथी नैं मण, गंगा-जमना आदि ।

उदाहरण के लिए यहाँ "इल्ली अर घुणियो" नामक कहानी प्रस्तुत की जाती है—

एक ही इल्ली और एक हो घुणियो । इल्ली बोली—आरे घुणिया, कातिक न्हावाँ । घुणियो बोल्यो—बाई तूं न्हाले । तूं तो मेवा मिष्टान्न में रवै अर मैं मोठ बाजरै में रैवूं । सो मैं तो कोनी न्हावूं । इल्ली राजा की बाई के पल्लै के लाग कर न्हा आती अर घुणियो बैठ्यो रहतो । कातिक उतरतै की पुन्यूं नैं दोनूं मरगा ।

इल्ली राजा के घराँ बाई होई अर घुणियो राजा को मींडो होयो । बाई बड़ी होई जद राजाजी बैं को ब्याह करय्यो । बाई सासरै जावण लागी जद राजाजी बोल्या—बाई कोई चीज मांग । बाई बोली—मन्नैं तो यो थारो मींडो दे द्यो । राजाजी बोल्या—बाई मींडो तो मामूली चीज है और कोई बड़ी चीज मांग । पण बाई जिद करकैं मींडो ही लियो ।

राजा की बाई सासरै आगी । मींडं नैं बांध दियो म्हैल के तलै । मींडो बाई न देखै जद बोलै—"मिमको झिरको ए, श्याम सुन्दर बाई धोड़ो पाणीड़ो प्या ।" मींडं की बोली सुणकर राजा की राणी बोलै—"मैं कबं छी रे, तूं सुणं छो रे, भाई म्हारा घुणिया कातिकड़ो न्हा ।"

मींडै अर राणी की बात सुण कर थोराणी जिठाणी राजा नै लगायो–या के राणी, जाण जुगारी, कामण गारी । मिनखां सैं तो बात सारा करैं, या जिनावरां सैं बात करैं । राजा बोल्यो–काना सुणी कोना मानूं । आंख्या देखी मानूं । दूसरै दिन राजा लुककर बैठगो अर मींडै की तथा राणी की पाछी बा ही बात होई— "रिमको झिमको ए, श्याम सुन्दर वाई थोड़ो पाणीड़ो प्या ।" "मैं कवैं छी रे, तूं सुणैं छो रे, भाई म्हारा घुणिया कातिकड़ो न्हा ।" राजा सारी बात सुण कर बाहर आयो अर राणी नै पूछ्यो–या के बात है ? राणी सारी बात खोलकर बता दी । राजा भोत राजी होयो । आप कातिक न्हायो अर सारी नगरी नै कातिक न्हावण को हुकम दियो ।

हे कातिक का ठाकर, राई दामोदर, इल्ली नै टूट्यो जिसो सैं नै टूटिए । घुणिए नै टूट्यो, जिसो कोई नै मतना टूटिए–कहतैं सुणतैं नैं, हुंकारा भरतैं नैं ।

इसके बाद राजस्थान की लोक-कथाओं में वे कहानियां आती हैं, जिनको सुनने-सुनाने के लिए मण्डली जुड़ती हैं । इनका कथानक काफी लम्बा होता है और उनमें कई प्रकार की अनेकों घटनाएँ रहती हैं । सबसे पहले प्रेम-कथाओं पर विचार किया जाता है । ये कहानियां काफी लम्बे समय से इस प्रदेश में लोक प्रचलित हैं । इन प्रेम-कथाओं के साथ वीरता का तत्त्व मिला-सा रहता है । प्रेमी तथा प्रेमिका के मिलन के पहिले काफी दिक्कतें प्रस्तुत होती हैं और अन्त में सुख के साथ कहानी समाप्त होती है । कई कहानियां दुःखान्त भी होती हैं । यहां कुछ प्रेम-कथाओं के नाम दिए जाते हैं—

ढोलो मरवण, रिसालू नोपदे. माघवानल काम कन्दला, विक्रम ससिकला, खींवो आभल, लाछां काछवो, हीर रांझो, राणकदे खेंगार, चन्नण मलियागिरी, जगमल भारमा, सुलतान निहालदे, पूंगलगढ की पदमणी, नागमदे, सोनलदे, मोमल, मेहऊजली, बुधबुध सालंगिया, वीरमदे, सहजादी, पन्ना वीरमदे, भोज भानमती, अछमुकट पदमावती, रिसालू देलादे, कोड़मदे, तारा पिरथीराज, सयणी बीजानन्द, रूठीराणी, पदमणी रतनसेन, वीरसिंघ रतना, ससिपन्ना, नागजी नागमती, ऊमादे सांखली आदि ।

इनके अतिरिक्त ऐसी कहानियां राजस्थान में बड़ी संख्या में लोक प्रचलित हैं, जिनमें ठग, चोर तया धाड़ी लोगों का वृत्तान्त है ।

यहां कुछ ठगों की लोक-कथाओं के नाम दिए जाते हैं—बामण अर ठग नगरी, सेरिए की ठग लड़की, गफूरियो ठग, बावलो और ठग, जाट अर वाणियो, धोलिए की धेली, राजहंस, राजा भोज की लुगाई, चोधरी अर सूरतदास, लुगाई

अर च्यार ठग, ठग और राजा, सेठाणी को मरणो, राणी अर चमार, सुनेरी हीरो, राजकुमारी अर ठग, बामणी और ठग की लुगाई, डेढ़ छैल की नगरी में ढाई छैल, नागो नाइ, धोबण अर तेली को लड़को, मुसाणा में मुरदो बोल्यो, मामो भाणजो जाट अर वणियो, मूँछ मूँडी रांडड़ी, राजा भोज, राजा और नाई, दोनों अर ठग, ठग अर वणियो, नाई अर गूजर, जाट गूजर अर चमार भायला, मुरदो महात्मा आदि।

इसी प्रकार चोरों की कुछ कहानियों के नाम इस प्रकार हैं—

ग्यानी चोर, खप्परियो चोर, गंजियो चोर, खीर की चोरी, पीतल की थाली, भारमल चोर, चत्तरा की चोरी, डमडमो में चोर, कचौलै की चोरी, दिन में चोरी, मुखमल का गूदड़ा, सोनै की ईंट, दूध को कटोरो, चोर अर सेठाणी, लेलोट अर बकल बचेर, बुढिया अर चोर, दो जुंवाई, चमार के घरां चोर, मँगतियो कँवर, च्यार चोर अर फितूचन्द, गफूरखां अर जाट, सोनै को फूल, लालगरू के घर में चोर, चोरी सैं खाडो भरणो, डोकरी अर जाट, खुमारमल को घर चोपट, टांटियां के छत्तै की चोरी, दिल्ली में च्यार चोर, राजा अर चोर, खींवो बींजो आदि।

धाड़ियों की प्रसिद्ध कहानियाँ निम्नलिखित हैं—

दुल्लो धाड़ी, दयाराम धाड़ी, डूंगजी जुंहारजी, सोनै को मूंदड़ो, खपरू वजीर, बनेसिंघ, राजा भोज अर फूलांदे, वजीरमल धाड़ी, उदाराम धाड़ी, नोलखोहार, हरफूल, धाड़ी कुसपाल, बामण अर धाड़ी, धनपालसिंघ मीयो अर मीणो, हणमानपरो, खादरखां धाड़ी, धाड़ी अर सेठ, उगमसिंघ धाड़ी आदि।

उदाहरण के लिए इन लोक-कथाओं में से एक कहानी "डेढ छैल की नगरी में अढ़ाई छैल" नामक दी जाती है। इसमें एक चोर की चतुराई का वर्णन है—

एक राजा घणो स्याणो, बड़ो नामवरी हालो। एक दिन की बात राजा कनै एक कागद आयो। कागद बांच्यो—"डेढ़ छैल की नगरी में ढाई छैल आयो है, ठगैगो; ठगावैगो नहीं।" राजा विचार करयो—चोर घणा ही देख्या। गो कोई बड़ो चोर है जिको जणा कर चोरी करै। कोतवाल नै बुला कर हुकम दियो—आज नयो चोर आयो है। ढाई छैल नाम है। गांव में चोरी नहीं होवै अर आज ही चोर भी पकड्यो जावै। नहीं तो नोकरी चली जावैगी। कोतवाल अरज करी—हुकम, भोत चोर पकड़ कर कैद कर दिया, यो चोर कठै जासी।

कोतवाल रात नै घोड़ै पर गस्त देवै। एक बजी। दो एक सूनी फूटी हेली के कनै सैं निकल्यो। हेली में चाकी पीसण की आवाज सुणी। घोड़ो थाम्यो। दवर

कर हेली में गयो। देखै तो एक डोकरी फाट्या गाबा पैरय्यां चाकी पीसै है। पूछ्य्यो–माई, तूं कुण है ? सारी नगरी सोवै तूं फूटी सूनी हेली में चाकी पीसण कठै सैं आई ? डोकरी जवाब दियो—भाया, मैं के आई राम मारय्यो वो ढाई छैल गैल पड़गो। वोल्यो–डोकरी मैं आधी रात पाछै चोरी कर कै घोडै पर आवूंगा जिको दाणो दल कर त्यार राखिए, नहीं तो ज्यान नै खैर कोनी। हेली भी सूनी वो ही बताई। सो भाया, मैं तो डरती अठै दाणो दलू हूं। तूं कुण है ? कोतवाल बोल्यो–माई, तेरै भावूं कोई ही होवो। तूं एक काम कर, जगां तो मैं बैठस्यूं और तूं मेरा कपड़ा बदल कर तेरै घरां जा। डोकरी बोली–भाया, तेरी खुसी। पण मेरी ज्यान की निगह राखिए। कोतवाल बोल्यो–डोकरी, डरै मतना तन्नै कोई डर कोनी। डोकरी कपड़ा बदल कर चली गई। कोतवाल बैठ्यो सूनी हेली में डोकरी का कपड़ा पहरय्यां दाणो दलै। दो बज्या च्यार बज्या। कोई कोनी आयो। भाख फाटी कोतवाल देख्यो–भौत खारी होई। ल्हुकतो छिपतो आपके घरां गयो। घर का यो हाल देख कर डरय्या। पाछै पिछाण कर गाबा दिया।

दूसरै दिन राजा कोतवाल नै बुला कर चोर मांग्यो। चोर कठै ? कोतवाल सूं सारी हकीकत पूछी। राजा के झाल उठी और कोतवाल नै बरखास्त करय्यो। पाछै फोजदार नै बुला कर ढाई छैल नै पकड़ण को हुकम दियो। फोजदार हुकम सिर माथै लेकर गयो।

फोजदार घोडै पर चढय्यो गस्त देवै। चोर नै गस्त देवै। चोर नै जरूर पकड़णो, नहीं तो राजाजी कोतवाल हाली करसी। रात की दो बजी बाहर की बस्ती मांय एक कूवै कन्नै सैं नीसरय्यो। एक आदमी कूवै की खेल में ऊकड़ बैठ्यो सी मरै। फौजदार कनै जाकर पूछय्यो—अरै भाई, तू अठै कुण है ? रातनै एकलो बैठ्यो सी क्यूं मरै है ? आदमी बोल्यो—हजूर मैं गरीब धाणको हूं। मेरै तो ढाई छैल गैल पड़ रयो है। आज घरां जाकर बोल्यो—मैं नगरी में चोरी करकै आवूंगा जद रात नै कूवै कन्नै जरूर मिलिए अर घोडै के खोंरो करिए। जे नहीं पायो तो ज्यान की खैर नहीं। सो मैं तो डरता अठै ढाई छैल नै उडीकूं हूं। फोजदार बोल्यो–एक काम कर, तूं तो मेरा कपड़ा ले अर मैं तेरी जगां खड्यो होस्यूं। मैं फोजदार हूं अर ढाई छैल नै पकड़ण आयो हूं। वो आदमी मानगो और फोजदार का कपड़ा पहर तथा घोड़े पर चढ़ आपके घरै गयो। फोजदारजी धाणकै का गाबा पैर कर खेल में बैठगा। घण्टा होई दो घण्टा होई। कोई भी कोनी आयो। फोजदारजी सी मरता करडा होगा। भाख फाटो जद लोग देख्या। देख कर पिछाण्या। राज में खबर करी फोजदारजी की चर्चा चाली।

तीसरै दिन राजाजी बोल्यो—नोकरां सैं के होवे ? ढाई छैल नै मैं पकड़स्यूं। रात होई राजाजी एकला चवूतरै बैठ्या। कनै काठ धरायो। च्यारूं कानी गस्त देवै अर चवूतरै आकर बैठज्या। एक वजी जद एक भलै घरां की धू हाथ में थाली अर थाली में चालणी सैं ढक्यो दीयो लेकर निकली राजाजी कै कनै आई जद राजाजी उठ्या अर पूछ्यो—भाई तूं कुण अर रात नै कैयां निकली ? वा बोली–जी के करूं ? धोराण्यां-जिठाण्यां का ताना सहती-सहती आयी होगी। मेरै टाबर कोनी होवै जिको टूणो करण जावूं हूं। पण थारै कनै यो काठ को लकड़ो ओड वड़ो क्यूं पड़्यो है ? राजाजी बोल्या यो काठ है। चोर नै पकड़ कर ईमें जड़स्यां। वा बोली–जी, कैंया जड़स्यो ? एक बार मन्नै भी जड़ कर दिखावो। राजाजी बोल्या—यो लुगायां को काम कोनी, चोरां नै पकड़ कर जड़नै को काठ है। वा बोली जी, मेरो मन करै हैं क देखूं, आदमी काठ में कैंया जड़्यो जावै है। सो एक वर मन्नै जड़ कर दिखाद्यो। राजाजी देख्यो—विचारी को मन है, दिखाद्यां। पण लुगाई नै के काठ में जुड़ां, ल्यो आपां ही जड़्यां जाकर ईं को मन राखद्यां। बोल्या—भईं तन्नै कं जुड़ां, म्हे ही जुड़्या जाकर दिखा देस्यां। वा बोली–थारी मरजी। सारी तरकीव राजाजी नै पूछती गई और राजाजी नै काठ में जुड़ कर तालो ढक दियो। थाली हाथ में ली अर सटदे नीसागी। राजाजी देख्यो–भोत खारी होई। जोर के ? काठ में जड़्या पढ्या रह्या। दिन उग्यो लोग पिछाण्या। तालो तुड़ाओ। राजाजी गड में गया। नगर में चरचा चाली। लोग घवराया।

राजाजी म्हैलां जाकर हुकम दियो—नगर में डूंडी पीटद्यो ढाई छैल का सातूं गुन्ना माफ। गड में आकर मिलो अर ईनाम पावो। थोड़ी देर बाद ही एक जवान मोट्यार घोडै पर चढ कर बजारूं बजार गड में गयो। राजाजी नै नजर करी। आपको नाम बतायो। राजाजी भोत राजी होया, भोत वड़ी वकसीस करी। राजा को वडो फोजदार करय्यो।

वीरता सम्बन्धी कतिपय लोक-कथाएं निम्नलिखित हैं—

उडणो पिरथीराज, जगदेव पंवार, कहवाट सरवहियो, अमरसिंघ राठोड़, गोरा वादल, वीरमदे, सुनतान, गूगो चोहाण, पाबू राठोड़, पदमसिंघ, अनाड़सिंघ, वखतावरसिंघ, ऊंगो, ल्हालरदे, सोनचोड़ी का सूण, गरड़पंख, राणी नै देसूंटो, राजा अर कुम्हार, विणजारो भीमसिंघ, सोनै की फली, विणजारै को लड़को, हातमसिंघ चोहाण, जखड़ो-मुखड़ो, राजा वलदेव, चकवो-चकवी, कंवर नै देसूंटो, सुजानसिंघ, चुण्डोजी, सादूलो भाटी, वलूजी चांपावत, आदि-आदि। राजस्थानी वातों में एवं यहाँ की वातों में वीरता की कहानियों का तो कोई पार ही नहीं है। इनमें से एक कहानी "ल्हालरदे" नामक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत की जाती है—

"अलसी कै ल्हालर नहिं होती, अलसी जाती ऊत"

गड चूंटाले का ठाकर अलसी मांदा पड़्या । ओस्ता पाक्योड़ी । दुख पावै । भाई बंध भेला होया । ठाकराँ नै मनस्या पूछै, पण ठाकर बोलै नहीं । ठकरी कै कंवर कोनी । एक बाई, नाँव ल्हालर दे । बाई पूछ्यो–बावोसा, आपकी मनस्या बताओ । ठाकर बोल्या–के मनस्या बताऊं ? पूरी होती कोनी लागै । भाई बंध बोल्या–आप बतावो, पूरी करस्याँ । ठाकर बोल्या–मेरै दो बातां की मन में रहगी । एक तो मैं टोडरमल का कोनी गुवाया अर दूसरी मैं गुजरात में मूंगधडै का घोड़ा कोनी खेद्या । लोग बोल्या–पहली बात तो मामूली है । आप लड़की गोद लेवो अर टोडरमल का गुवावो, पण दूसरी बात की कोई हाँ कोनी भरै । मूंगधडै का घोड़ा खेदणो टेडी खीर है । ठाकर बोल्या–दोनूं बाताँ की पक्की होए विना मेरा प्राण कोनी निकलै । अन्त में ल्हालरदे बोली–बावोसा, आप चैन पावो आपका दोनूं काम मैं करस्यूं । ल्हालरदे बीड़ो चाब्यो अर ठाकर मोक्ष पाया ।

सारा काम पूरा करकै ल्हालरदे आपकै बावोसा की मनस्या पूरी करणै की सोची । रात नै मरदाना भेष धारण करय्यो । घोडै पर चढी अर गड में सैं निकलगी । कोई नै भी सागै कोनी लियो । मूंगधडै को गैलो पकड्यो । चालतां-चालतां कई दिन होगा । एक दिन एक ठाकर गैलै चालता मिल्या । ठाकराँ कै सागै खवास हो । दोनूं ल्हालरदे को तपतेज देख कर ठमक्या । पूछ्यो–आप सिरदार सिध पधारो हो । ल्हालरदे सारी बात बताई ठाकर भी मूंगधडै का घोड़ा खेदन ही जावै हा । दोनूं जणा को एक ही काम । दोनूं पक्की करी–एक जणो घोड़ा खेदसी अर दूसरो पीठ झेलसी । घोड़ा दोनूं आधा-आधा बाँटसी । ल्हालरदे कै पीठ झेलणो पांती आयो ।

आखर मूंगधडै को बीड़ आयो । बीड़ में घोड़ा देख्या । एक सैं एक सुन्ना चरै । बीड़ में नगारो पड्यो । जो कोई घोड़ा खेदै, तो जाती बरियां नगारो बजावै । पछै दो-दो हाथ होज्या । ल्हालरदे बोली–ठाकरां, आप चोखा घोड़ा लेकर चालो । गैल की भीड़ मैं झेल लेस्यूं । ठाकर अर खवास घोड़ा चुग कर गैलै गेर दिया । आप लैर हो लिया । पछै ल्हालरदे नगारै पर डंका दिया । नगारो बाज्यो, जाणै इन्दर गाज्यो हो । मूंगधडै ने अचरज होयो, आज नगाडै पर इतना डंका देवण की हिम्मत कुण करी ? भोज चढी बीड़ में गया तो एक जोवजवान रजपूत घोडै पर खड़्यो देख्यो । कोई सागै ना । मूंगधडै को ठाकर बोल्यो–भई तेरी जुवानी अर तेजदेख कर तो जी भोत राजी होवै है, पण तूं काम करड़ो कर लियो । म्हारा घोड़ा खेद लिया । ल्हालरदे बोली–वीरां को तो यो ही काम है । ठाकरां फोज नै खपावण क्यूं ल्याया । मैं घोड़ै पर खड्यो होकै मेरी नांग गाड देस्यूं । आपको कोई भी रजपूत

मेरी साँग पाछी काढ्यो अर थारा घोडा पाछा ल्यो । वात ठीक उतरी मूंगघड़ै का ठाकर मानगा । ल्हालरदे घोडै को चक्कर देकर साँग गाडी । कई जणा जोर अजमाओ, पण साँग धरती में अंग को पग होगी । मूंगघडै का ठाकर भोत राजी होया । घोड़ा ल्हालरदे का होगा ।

ल्हालरदे विदाई लेकर चाली । गैल में ठाकर अर खवास मिल्या । लार की वात ल्हालरदे सुणाई । घोड़ां की पांती होगी । एक घोड़ो वाकी वच्यो । न ठाकर लेवै अर न ल्हालरदे लेवै । जिद होगी । ल्हालरदे तलवार को हाथ मार कर घोड़ै का दो टुकड़ा कर दिया । खवास पिछाण करी । मरद कोनी, लुगाई है । ठाकरां कै कान में कह्यो । ठाकर वोल्या—आपको गाँव कुण सो ? ल्हालरदे जवाव दियो—गाँव को नाम कोनी वतावाँ । ठाकर जिद करय्यो । ल्हालरदे वोली—म्हारी वात पूरी करण का वाचाद्यो तो गाँव का नाम वतावां । ठाकर वोल्या—वाचा दिया । ल्हालरदे सारी वात सुणाई । आखर वोली—अब आप तो वणोगा कन्या अर मैं वींद वण कर जान लेकर आस्यूं । आपनै व्याह कर गड चुटालै ले ज्यासूं अर टोडरमल का गुत्रास्यूं या म्हारी वात है । सो पूरी होणी चाहे । ठाकर वाचा दे चुक्या हाँ भरी अर आपके गाँव कोटकिलूरै गया ।

व्याह को म्हूरत पक्को होयो । ल्हालरदे वींद वणी । सारा नेगचार गड चुटाले में होया । पछै जान कोटकिलूरै चाली । ठाकर वींनणी वण्या । फेरा होया जान की खातिरदारी होई । जान पाछी गड चुटालै आई । टोडरमल का गाया गया । अलसीजी की दोनूं मनस्या पूरी होई । ल्हालरदे मरदाना भेष उतारय्या । जनाना भेस लिया । सासरै गई । सुख चैन सै ठाकर रवै लागा । ल्हालरदे के कंवर होयो । नाँव कढायो हल्ल । कंवर वडो होयो । एक दिन सिकार नै गयो । वन में न्हारी को वचियो देख्यो । मन में करय्यो—यो ही तो हाऊ नहीं है के ? आज हाऊ नै पकड़स्यां आगैसी जाकर न्हार के वच्चै नै पकड़ लियो । गलै रस्तो घाल कर गड में लेगो । नगर का लोग देख्यो । गड की परगै देख्यो । आप सीधो रावलै में गयो । आपकी मा नै वोल्यो—माँ, आज मैं हाऊ पकड़ कर ल्यायो हूं । ल्हालरदे वोली—ना लाला, यो तो न्हार को वच्चो है । ईं की मा ढूंढती होसी, दिचारै नै पाछो वन में छोड़ कर आ । हल्ल पाछो गयो अर वन में न्हार कै वच्चै नै छोड़ कर आयो । नगरी का लोग वोल्या—सिंघणी के तो सिंघ ही जनमै । कोटकिलूरै के ठाकरां की वनणी थणनो सहलो होगो ।

राव गया, ल्हरालर गइ, गया जमीं सै हल्ल ।
सूरवीर तो चल्या गया, पड़ी रह गई गल्ल ॥

इस प्रकार राजस्थानी लोक-कथाएँ कई प्रकार की हैं। साथ ही हर प्रकार की जन-कथाओं की संख्या भी काफी बड़ी हैं। इन जन-कथाओं में जन-जीवन की बड़ी स्पष्ट झाँकी देखने को मिलती है। विविध प्रकार के मानव चरित्र भी अपना रूप इन लोक-कथाओं में दिखाते हैं। साथ ही इनमें शिक्षा का भण्डार भी है। इनमें सबसे बड़ा तत्व कौतूहल का रहता है। फलस्वरूप ये कथायें बड़ी ही मनोरंजक होती हैं। घटना-तत्व की महत्ता इन कथाओं को रंग देती हैं। साथ ही लोकप्रियता के कारण एक ही कहानी स्थान-स्थान पर थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ भी कही और सुनी जाती हुई मिलेगी।

अनेक राजस्थानी लोक-कथाओं में चमत्कार और मनोरंजन के साथ सांस्कृतिक निधि बिखरी पड़ी है। ऐसी ही एक लोक-कथा है, 'बुढ़िया की वात' जो आज भी विद्वानों तक को अपने लालित्य कथा से सौन्दर्य मुग्ध किये हुये है। यह वात इस प्रकार है :—

एक बार राजा भोज और महाकवि माघ रास्ता भूल गये। उन्हें उज्जैन जाना था।

उन्होंने बुढ़िया से पूछा—'यह रास्ता कहाँ जाता है?'

बुढ़िया ने कहा—'यह रास्ता तो यहीं रहेगा! तुम लोग कौन हो?

उन्होंने उत्तर दिया—'हम तो बटाऊ हैं, पथिक हैं।'

बुढ़िया ने कहा—'पथिक तो केवल सूर्य और चन्द्रमा हैं, तुम कैसे पथिक?'

तब उन्होंने कहा—'हम तो पाहुने हैं।'

बुढ़िया बोली—'पाहुने तो केवल दो हैं. एक धन, दूसरा यौवन।'

तब वे बोले—'हम तो राजा हैं।'

बुढ़िया बोली—'राजा भी केवल दो ही हैं, एक इन्द्र और दूसरा यम। तुम सच बताओ, हो कौन?'

इस पर वे बोले—'हम तो सहनशील हैं।'

बुढ़िया बोली—'सहनशील भी दो हैं, एक पृथ्वी और दूसरी स्त्री।'

तब वे बोले—'बहन! हम तो परदेशी हैं।'

बुढ़िया बोली—'परदेशी भी दो हैं; एक तो जीव और दूसरा पेड़ का पान।'

तव उन्होंने कहा—'हम तो गरीव हैं।'

बुढ़िया वोली—'गरीव भी दो हैं, एक तो वकरी का जाया (वकरा) और दूसरी लड़की।'

इस पर उन्होंने कहा—'वहन ! हम तो चतुर हैं।

बुढ़िया वोली—'चतुर भी दो हैं, एक अन्न और दूसरा पानी। तुम सचमुच बताओ, तुम हो कौन ?'

इस पर राजा भोज और माघ पण्डित ने हार कर कहा—'हम तो हारे हुए हैं।'

इस पर बुढ़िया वोली—'हारे हुए भी दो हैं, एक तो कर्जदार और दूसरा बेटी का बाप।'

अन्त में दोनों ने कहा—'हम तो कुछ भी नहीं जानते, जानकार तो तू ही है।'

इस पर बुढ़िया ने कहा—तू राजा भोज और यह माघ पण्डित है। जाओ, यही उज्जैन का रास्ता है।

लोकगीत

राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में जिस किसी को भी वहाँ के पनघटों पर जल भरती हुई ग्राम-वालाओं, मेलों में मस्ती से नाचते हुए युवक-युवतियों और विजन घन प्रान्तर में गोधन चराते हुए चरवाहों को लोक-संगीत की स्वर लहरी में वहते हुए देखा और सुना है, उन्हें यह अनुमान सहज ही हो सकता है कि राजस्थान लोक-गीतों की दृष्टि से कितना समृद्ध प्रदेश है। सहस्त्रों की संख्या में उपलब्ध इस प्रदेश के लोक-गीतों में विषयों की विविधता इतनी असाधारण है कि अन्यत्र उसका प्राप्त होना दुर्लभ-सा ही प्रतीत होता है। ब्राह्म मूहूर्त में चक्की पीसती हुई महिलाओं को देखिये या मध्यान्ह के कुएं पर चरस चलाते हुए किसानों को, वे कोई न कोई लोक-गीत गाते हुए ही मिलेंगे।

राजस्थान के लोक-गीत यहां के जन-मानस के विभिन्न पक्षों को बड़ी स्पष्टता के साथ प्रतिविम्बित करते हैं। इन गीतों में यहाँ के जन-साधारण के हास्य-रुदन, उल्लास-विषाद और करुणा तथा सौजन्य की भावनाओं का बड़ा मार्मिक चित्रण हुआ है। स्थूल रूप से इन गीतों का विषयवार वर्गीकरण निम्न प्रकार किया जा सकता है।

(१) प्रकृति सम्बन्धी लोक-गीत
(२) परिवार सम्बन्धी लोक-गीत
(३) त्यौहारों और पर्वों के लोक-गीत
(४) धार्मिक लोक-गीत
(५) विविध विषयक लोक-गीत

प्रकृति सम्बन्धी लोक-गीत

प्रकृति ने अपनी सुषमा का दान देने में राजस्थान के साथ अतिशय कृपणता की है। इसलिए सहज रूप से यहाँ के निवासी निसर्ग-सौन्दर्य के बड़े प्यासे रहे हैं और उनकी यह पिपासा लोक-गीतों में बड़े ही कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त हुई है। इस प्रकार के लोक-गीतों में सबसे अधिक लोक-गीत वर्षाऋतु से सम्बन्धित हैं, क्योंकि मरुभूमि होने के कारण यहाँ इस ऋतु का असीम महत्व है। वर्षा के मौसम में ही यहाँ आनन्द और उल्लास के अनेक त्यौहार मनाए जाते हैं। हरियाली अमावस्या और श्रावणी तीज तो इस ऋतु के सबसे बड़े प्रसिद्ध त्यौहार हैं।

वर्षा ऋतु के जो लोक-गीत प्रचलित हैं। उनमें प्रकृति की छटा का वर्णन आलंबन और उद्दीपन दोनों ही रूपों में बड़ा सुन्दर किया गया है। ऋग्वेद के सूक्तों में वर्षा का जो कल्याणकारी रूप प्रस्तुत किया गया है, उससे वर्षा ऋतु सम्बन्धी उन अनेक राजस्थानी लोक-गीतों का भाव-साम्य दिखाई देता है, जिनमें स्वतन्त्र रूप से ऋतु सौन्दर्य को चित्रित किया गया है। इस तथ्य की पुष्टि में ऋग्वेद का एक सूत्र और एक राजस्थानी लोक-गीत यहाँ उद्धृत है* :—

प्रवाता वान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधीर्जिहते पिन्वतेस्वः।
इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत् पर्जन्यः पृथिवी रेत सावति।
यस्य व्रते पृथिवी नमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति।
यस्य व्रत औषधीर्विश्वरूपाः सनः पर्जन्यः महिशर्म यच्छ ॥१॥

(पवन वेग से चलती है, बिजलियाँ गिरती हैं, औषधियाँ अंकुरित होती हैं, आकाश क्षरित होता है यह जो पन्य जल रूपी रस से पृथ्वी का सिंचन होता हैं, तो सर्व जगत कल्याण के लिए भूमि समर्थ होती है जिसकी कामना से पृथ्वी सम्यक्तया नत होती है, जिसके शुभ दर्शन से खुरवाले प्राणी उत्साहित होते हैं जिसके फलस्वरूप औषधियाँ विविध रूपों में अंकुरित होती हैं, वह पर्जन्य हमें परम कल्याण प्रदान करे।)

---

*परम्परा-राजस्थानी लोक-गीत विशेषांक।

राजस्थानी लोक-गीत

नित बरसो, मेहा बागड़ में । नित बरसो०
मोठ-बाजरो-बागड़ निपजै
गूहंड़ा निपजै खादर में । नित बरसो०
मूंग'र चंवला बागड़ निपजै
जवड़ा निपजै खादर में । नित बरसो०
टोड-टोडिया बागड़ निपजै
बैल्या निपजै खादर में । नित बरसो०
भेड़-बाकरी बागड़ निपजै
भैंस्या निपजै खादर में । नित बरसो०

उद्दीपन रूप में जहाँ प्रकृति वर्णन आया है, उसमें विप्रलंभ शृंगार की भावना प्रखर रूप से मुखरित हुई है और ऐसा होना स्वाभाविक भी है, क्योंकि मध्ययुग में यहाँ के वीर युवकों को अक्सर युद्ध स्थल में या राजाजी की किसी अन्य चाकरी में संलग्न रहना पड़ता था और उनकी अर्द्धांगिनियों को घरों में ही एकाकी जीवन व्यतीत करना पड़ता था । आज भी राजस्थान के गाँवों के जो लोग कलकत्ता, बम्बई या आसाम में व्यवसाय-रत हैं, उनकी पत्नियाँ अक्सर गाँवों में ही रहती हैं । साल में केवल १—२ माह के लिए उनके पति घर आते हैं और फिर लम्बा बिछोह देकर चले जाते हैं । वर्षा ऋतु से सम्बन्धित 'निहालदे-सोढा' नामक एक ऐसा ही लोक-गीत राजस्थान में बड़ा लोकप्रिय है । इस लोक-गीत में विरहणी नायिका अपने प्रवासी पति का आह्वान करती है । वह कहती है "प्रिय सावन भादों की रंगीन ऋतु आ गई है । छप्पर पुराने पड़ गए हैं, कमजोर बांस तड़कने लगे हैं, बादलों में बिजली चमक रही है और तुम्हारी प्रिया महल में अकेली डरती है, इसलिए हे गुलाब के फूल ! तुम जल्दी से घर आ जाओ ।" आगे चल कर वह यौवन की क्षण-भंगुरता का चित्रण करती हुई उसे जल्दी घर लौटने का आग्रह करती है । गीत इस प्रकार है :—

सावण तो लाग्यो पिया, भादवो जी कांहि बरसण लाग्यो,
बरसण लाग्यो जी मेह, हो जी ढोला मेह ।
अब घर आय जा गोरी रा रे बालमा हो जी ।। टेक ।।

छपर पुराणा पिया पड़ गया रे कोई तिड़कण लागा,
तिड़कण लागा बोदा बांस, हो जी ढोला बांस,
अब घर आय जा बरसा रुत भली हो जी ।। १ ।।
बादल में चमके पिया बिजली रे, कोई मेलां में डरपै,
मेलां में डरपै घर री नार, हो जी छोटी नार,
अब घर आय जा फूल गुलाब रा हो जी ।। २ ।।
कागद तो व्है तो ढोला बांच लूं जी ।
करम न बांच्यो, करम न बाँच्यो जाय ।
अब घर आय जा, आसा थारी लग रही हो जी ।। ३ ।।
टाबर तो व्है तो पीया राख लूं जी ढोला ।
जोबन राख्यो, जोबन राख्यो न जाय ।
अब सुध लीजो गोरी रा सायबा हो जी ।। ४ ।।
अंग में नहीं मावै काँचली जी, ढोला हिवडै नहीं मावे,
हिवडै नहीं मावे हार, हो जी ढोला ।
अब घर आय जा गोरी रा बालम ओ जी ।। ५ ।।
आवण-आवण कह गयो रे ढोला, कर गयो कवल अनेक
कर गयो कवल अनेक ।
अब घर आय जा बरसा रुत भली हो जी ।। ६ ।।

प्रकृति सम्बन्धी दूसरे लोक-गीतों में वे गीत हैं, जिनमें वृक्षों, पौधों, लताओं का और पशु-पक्षियों को प्रतीक बना कर हृदय की कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति की गई है । 'पोदीनों', 'पीपली', 'मेंहदी' और 'कुरजाँ' ऐसे ही सुप्रसिद्ध गीत हैं । 'कुरजाँ' की समानता तो एक माने में कालिदास के 'मेघदूत' के बादल से की जा सकती है, क्योंकि दोनों को ही सन्देश-वाहन का दायित्व सौंपा गया है । अन्तर केवल इतना है कि 'मेघदूत' का बादल प्रेमी के सन्देश का वाहक है, जबकि कुरजां प्रेमिका के सन्देश की वाहिका । 'कुरजां' और 'पीपली' नामक गीत हिन्दी रूपान्तर सहित यहाँ प्रस्तुत हैं ।

कुर्जां

तूं छै ये कुर्जां भायली, तू छै धरम की भैण,
एक संदेशो ये बाई म्हारो ले उडो, ये म्हारी राज ।
कुर्जां म्हारा पीव मिला दे ये ।
वीं लसकरिये नै जाय कहिये क्यूं परणी थे मोय ?

परण पिराछित क्यूं लियो ये जी रह्या क्यूं न अखन कुंवार।
कुंवारी ने वर तो घणां छा जी।
ऊठी कुर्जां ढ़लती मांझल रात,
दिनड़ो उगायो माऊजी रा देश में जी म्हांका राज।
बैठ्या पना मारू तखत बिछाय,
कागद राल्या भंवरजी की गोद में जी म्हांका राज।
आवो ये कुर्जां बैठो म्हारे पास,
कुणांजी री भेजी अठै आई जी म्हांका राज।
थारी धण की भेजी अठ आई जी,
थारी धण का कागद साथ—भंवर थे बांच लेवो म्हांका राज।
अन्न बिना रयो ये न जाय।
दूध दलां का थारी धण खण लिया जी म्हांका राज।
बिदली तो सरव सुहाग,
काजल टीकी की थारी धण खण लियो जी म्हांका राज।
सोयां बिना रह्यो ये न जाय,
हिंगलू ढोल्या को थारी धण खण लियो जी म्हांका राज।
चुनड़ी को सरव सुहाग,
गोटा मिसरू को थारी धण खण लियो जी म्हांका राज।
आज उणमणा हो रया जी, रह्यो के संदेशो आय,
के चित्त आयो थारो देसड़ो जी के चित आया माई बाप,
भायेला दिलगीरी क्यूं लायाजी।
ना चित आयो म्हारो देसड़ो जी ना चित आया माई बाप,
भायेला म्हाने गोरी चित आई जी।
म्रो ल्यो साथीड़ो थारो साथ,
म्रो ल्यो राजाजी थारी नौकरी जी।
भायेला म्हें तो देश सिधारस्यां जी।
झटसी घुड़ला कस लिया जी, करली घोड़े पर जीन,
करवा म्हाने बेग पुगाघो जी।
दांतला करो कुवा बावड़ी जी, मल-मल करो असनान।
भंवर थांने बेग पुगाद्यां जी।

कुर्जां एक छोटी चिड़िया होती है। एक विरहणी उनसे कहती है—हे कुर्जां! तू मेरी प्यारी सखी है। तू मेरी धर्म की बहन है। हे बहन! मेरा यह सन्देशा लेकर उड़ और मेरे प्रियतम को मुझसे मिला दे।

उस लश्करिये को जाकर कहना कि तुमने मुझे क्यों ब्याहा था ? तुम क्वांरे क्यों न रह गए ? मुझ क्वांरी के लिए तो बहुत से वर मिल जाते ।

आधी रात ढलने पर कुर्जां उड़ी । दिन उगते-उगते वह प्रियतम के देश में पहुँच गई ।

पति तख्त बिछा कर बैठा था । कुर्जां ने पति की गोद में स्त्री का पत्र गिरा दिया । पति ने कहा—कुर्जां ! आओ मेरे पास बैठो । किसकी भेजी हुई तुम यहाँ आई हो ? कुर्जां ने कहा—तुम्हारी स्त्री ने मुझे यहाँ भेजा है । उसकी चिट्ठी साथ लाई हूँ । उसे बाँच लो !

तुम्हारी स्त्री का यह हाल है कि जीने के लिए बेचारी को अन्न तो लेना ही पड़ता है । पर उसने दूध-दही न लेने की प्रतिज्ञा कर ली है । सुहाग-चिन्ह बिन्दी को रहने दिया है, पर काजल और टीकी न लगाने का उसने प्रण कर लिया है । सोये बिना कैसे रहा जा सकता है ? पर उसने पलंग पर न सोने का प्रण कर लिया है । सुहाग-चिन्ह चुनरी तो कैसे छोड़ी जा सकती है ? पर गोटे किनारी के रेशमी वस्त्रों के न पहनने का उसने प्रण कर लिया है ।

कुर्जां की जुबानी अपनी प्यारी का संदेशा सुन कर पति उदास हुआ है । उसके साथी पूछते हैं—आज अनमने से क्यों दिखाई पड़ते हो ? क्या बात है ? क्या कहीं से कोई संदेशा आया है ? या देश की याद आई है ? या माँ-बाप की सुध आई है ? मित्र ! चित्त पर उदासी क्यों झलक रही है ?

पति कहता है—हे मित्र ! न मुझे देश याद आ रहा है और न माँ-बाप की सुध आ रही है । मुझे मेरी प्यारी स्त्री याद आ रही है ।

लो साथियो ! तुम्हारा साथ छोड़ता हूँ । लो, राजाजी, आपकी नौकरी छोड़ता हूँ । मैं तो अपने देश जा रहा हूँ ।

झटपट घोड़ा कस कर उस पर जीन रख ली और उसने घोड़े से कहा—हे घोड़े ! मुझे जल्दी पहुँचा दो । घोड़े ने कहा—हे स्वामी ! कुंए पर दांतुन करो, बावड़ी में खूब मल-मल कर नहा लो, मैं जल्दी ही पहुँचा दूंगा ।

पीपली

बाय चल्या छा भंवरजी पीपली जी,
हां जी ढोला हो गई घेर घुमेर ।
बैठण की रुत चाल्या चाकरी जी,
ओ जी म्हांरी सास सपूती रा पूत
मतना सिधारो पूरब की चाकरी जी ॥ १ ॥

व्याय चल्या छा भंवरजी गोरड़ी जी,
हां जी ढोला हो गई जोध जुवान।
विलसण की रुत चाल्या चाकरी जी,
ओ जी म्हारी लाल नणद रा ओ वीर
मत ना सिधारो पूरब की चाकरी जी ॥ २ ॥
कुंण थारा घुड़ला भंवरजी कस दिया जी,
हां जी ढोला कुंण थाने कस दिया जीण।
कुण्या जी रा हुकमा चाल्या चाकरी जी,
ओ जी म्हारे हीवड़े रा जीवड़ा
मत ना सिधारो पूरब री चाकरी जी ॥ ३ ॥
वड़े वीरे घुड़ला गोरी ! कस दिया जी।
हां ए गोरी ! साथीड़ा कस दिया जीण।
आपाजी रा हुकमा चाल्या चाकरी जी ॥ ४ ॥
रोक रुपैयो भंवरजी मैं वणूं जी
हां जी ढोला ! वण ज्याऊं पीली-पीली म्होर।
भीड़ पड़े जद भंवरजी ! वरत ल्यो जी।
ओ जी म्हारी सेजां रा सिणगार !
पियाजी ! प्यारी ने सागै ले चालो जी ॥ ५ ॥
कदे न ल्याया भंवरजी ! सीरणी जी।
हां जी ढोला ! कदे न करी मनुवार।
कदे न पूछी मनडे री वारता जी।
ओ जी म्हारी लाल नणद रा वो वीर !
थां विन गोरी ने पलक न आवड़े जी ॥ ६ ॥
कदे न ल्याया भंवरजी ! मूतली जी।
हां जी ढोला ! कदे वी बुणी नहीं खाट।
कदेय न सूत्या रलमिल सेज में जी।
ओ जी पियाजी ! अब घर आओ।
थारी प्यारी उडीके महल में जी ॥ ७ ॥

था रे बावाजी ने चाए भंवरजी ! धन घणों जी
हां जी ढोला ! कपड़े री लोभण थारी माय।
सेजां री लोभण उडीके गोरड़ी जी।
थांरी गोरी उडावे काग।
अब घर आओ जी क धाई थारी नौकरी जी ॥ ८ ॥

अब के तो ल्यावां गोरी ! सीरणी ए।
हां ए गोरी ! अब करस्यां मनुवार।
घर आय पूछां मनडे री वारता जी ॥ ९ ॥

अब के ल्यावां गोरी सूतली जी।
हां ए गोरी ! आय बुणांगा खाट।
पछे सोस्यां रलमिल थारी सेज में जी ॥१०॥

चरखो तो ले ल्यूं भंवरजी रांगलो जी।
हां जी ढोला ! पाडो लाल गुलाल।
तकवो तो ले ल्यूं जी भंवरजी ! बीजलसार को जी।
ओ जी म्हारी जोड़ी रा भरतार !
पूणी मंगाल्यू जी' क बीकानेर की जी ॥११॥

म्होर-म्होर की कातूं भंवरजी ! कूकड़ी जी,
हां जी ढोला ! रोक रुपैए रो तार।
मैं कातूं थे बैठा विणजल्यो जी।
ओ जी म्हांरा लाल नणद रा वो वीर।
जल्दी घर आओ प्यारी ने पलक न आवड़े जी ॥१२॥
गोरी री कुमाई खासी रांडिया रे।
हां ए गोरी ! के गंधी के मणियार।
म्हें छा बेटा साहूकार का जी।
ए जी म्हारी घणी ए पियारी नार।
गोरी री कुमाई से पूरा ना पड़े जी ॥१३॥
सांवण खेती भंवरजी ! थे करी जे।

हाँ जी ढोला ! भादुड़े करयो जी नीनाए,
सीटाँ री रुत छाया भंवरजी ! परदेश में जी ।
ओ जी म्हारा घणा कमाऊ उमराव ।
थारी पियारी ने पलक न आवड़े जी ॥१४॥
उजड़ खेड़ा भंवरजी फेर वसे जी ।
हाँ जी ढोला ! निरधन के धन होय ।
जोवन गये पछे कना वावड़े जी ।
ओ जी थाँने लिखूं वारम्वार ।
जल्दी घर आओ जी'क थारी धण एकली जी ॥१५॥
जोबन सदा न भंवरजी ! थिर रहै जी ।
हाँ जी ढोला ! फिरती थिरती छाँय ।
पुल का तो वाया जीक मोती निपजे जी ।
ओ जी थारी प्यारी जी जोवै वाट ।
जल्दी पधारो देश में जी ॥१६॥

स्त्री कहती है—हे पति ! तुमने पीपल लगाया था। हे प्राणनाथ ! यह अब खूब घनी छाया वाला हो गया है। जब उसकी छाया में बैठने की ऋतु आई, तब तुम परदेश को चले। हे मेरी सुपुत्रवती सास के पुत्र ! तुम कमाने के लिए पूरब मत पधारो ॥१॥

तुमने जिस गोरी से विवाह किया था, यह यौवन मद से मतवाली हो गई है। जब विलास की ऋतु आई, तब तुम कमाने चले। हे मेरी प्यारी ननद के भाई ! कमाने के लिए पूरब मत जाओ ॥२॥

हे मेरे नाथ ! किसने तुम्हारा घोड़ा कस दिया ? किसने उस पर जीन रख दी ? किसकी आज्ञा से तुम परदेश जा रहे हो ? हे मेरे हृदय के जीव तुम कमाने के लिए पूरब मत जाओ ॥३॥

पति ने कहा—बड़े भाई ने घोड़ा कस दिया और साथियों ने उस पर जीन रख दी। बाबा की आज्ञा से मैं कमाने जा रहा हूँ ॥४॥

स्त्री ने कहा—हे नाथ मैं तुम्हारे लिए रुपया बन जाऊंगी। मैं तुम्हारे लिए पीली-पीली मोहर बन जाऊंगी। हे प्राणधन ! जब जरूरत पड़े, उसे काम में लाना। हे मेरी सेज के शृंगार ! प्रियतम ! अपनी प्यारी को भी साथ ले चलो ॥५॥

पति परदेश चला गया। स्त्री पति को पत्र लिखती है—

हे स्वामी ! तुम न कभी मिठाई लाये और न मुझे प्यार से खिलाया। न तुमने कभी मन की बात ही पूछी। हे मेरी प्यारी ननद के भाई ! तुम्हारे बिना तुम्हारी गोरी को एक क्षण भी चैन नहीं पड़ती ॥६॥

न तुम कभी सूतली लाये। न तुमने खाट ही बुनाया। न कभी हम दोनों हिलमिल कर सेज पर सोये। हे प्रियतम ! अब घर आओ। तुम्हारी प्यारी महल में तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है ॥७॥

तुम्हारे बाबाजी को तो बहुत धन चाहिये ! और हे पति ! तुम्हारी माँ कपड़े की लोभिन है। सेज की लोभिन तुम्हारी गोरी प्रतीक्षा कर रही है। तुमको बुला लाने के लिये तुम्हारी गोरी कौआ उड़ाया करती है। तुम्हारी कमाई से मैं बाज आई। तुम घर आओ ॥८॥

पति ने पत्र का उत्तर लिखा—हे गोरी ! अबकी बार मिठाई लाऊँगा और प्यार से तुमको खिलाऊँगा। घर आकर मन की बात भी पूछूँगा ॥९॥

अबकी सूतली भी लाऊँगा। खाट भी बिनूंगा और फिर हम दोनों हिलमिल कर बड़े सुख से तुम्हारी सेज में सोयेंगे ॥१०॥

पत्नी लिखती है—हे प्रियतम ! हे मेरे समान यौवन पूर्ण ! हम एक सुन्दर चरखा, एक रङ्गीला पीढ़ा और अच्छे लोहे का एक तकवा खरीद लेंगे और बीकानेर से रुई की पोणी मंगा लेंगे ॥११॥

हे पति ! मैं मोहर की कूकड़ी कातूंगी और रुपयों के मूल्य के तार मैं कातूंगी और तुम बुन लेना। यह व्यवसाय हम करेंगे। हे मेरे प्यारी ननद के भाई ! जल्दी घर आओ। पल भर के लिए भी मुझे चैन नहीं पड़ती है ॥१२॥

पति ने लिखा—स्त्री की कमाई कोई निकम्मा आदमी खायेगा या कोई इत्र बेचने वाला या कोई मनिहार। मैं तो साहूकार का बेटा हूँ। हे मेरी अत्यन्त प्यारी स्त्री ! स्त्री की कमाई से काम नहीं चलेगा ॥१३॥

स्त्री ने लिखा—सावन में तुमने खेती की थी और भादो में निराया था। जब भुट्टे खाने का समय आया, तब तुम परदेश में हो। हे मेरे बहुत कमाने वाले राजा! अब घर आओ। तुम्हारी प्यारी को पल भर भी चैन नहीं पड़ती ॥१४॥

हे पति! गांव उजड़ कर फिर वस जाता है। निर्धन को धन भी मिल जाता है। पर गया हुआ यौवन फिर नहीं लौटता। हे मेरे प्राणाधार! मैं तुमको बार-बार लिखती हूं। जल्दी आओ। तुम्हारी प्यारी अकेली है ॥१५॥

हे पति! यौवन सदा स्थिर नहीं रहता। यह तो बादल की छाया के समान है। समय पर बोया हुआ मोती उपजता है। हे पति मैं तुम्हारी बाट जोह रही हूँ, जल्दी घर पधारो ॥१६॥

उक्त गीतों के अतिरिक्त सूरज, चांद और सितारों से सम्बन्वित भी अनेक गीत हैं, जिनका भावात्मक सौन्दर्य देखते ही बनता है।

परिवार सम्बन्धी लोक गीत

समाज शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से राजस्थान के परिवार सम्बन्धी लोक-गीतों का बड़ा महत्व है। ये लोक-गीत यहाँ के पारिवारिक जीवन के साथ-साथ यहाँ के रीति-रिवाज और सामाजिक प्रथाओं पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं। परिवार सम्बन्धी लोक-गीतों में भाई-बहन के सम्बन्ध, कन्या की विदाई, पति-पत्नी के रसात्मक सम्बन्ध, ननद-भोजाई का झगड़ा, सास का दुर्व्यवहार आदि सभी पक्षों का प्रभावशाली चित्रण उपलब्ध होता है। जन्म और परिणय सम्बन्धी जो लोक-गीत प्राप्य हैं, उनमें प्रचलित परम्पराओं और प्रथाओं का विशद् विवरण प्रस्तुत किया गया है। अकेले विवाह-सम्बन्धी लोक-गीतों की संख्या ही दर्जनों में होगी। बना-बनी के गीत, फेरों के गीत, विदाई के गीत आदि अनेक गीत विवाह से सम्बन्धित हैं। यहां हम एक ऐसा बहु-प्रचलित गीत उदाहरण के लिए दे रहे हैं, इसमें पारिवारिक सुख-समृद्धि के लोकादर्श का दिग्दर्शन कराया गया है।

आंबो मोरियो

मधुवन रो ए आंबो मोरियो, ओ तो पसर्‌यो ए सारी मारवाड़।
सहेल्यां ए आंबो मोरियो ॥१॥

बहू रिमझिम महला ने उतरी, बहू कर सोला सिणगार।
सासूजी पूछ्या ए बहू थारे गैणो ए म्हाने पैरि दिखाव ॥
सहेल्यां ए० ॥२॥

सासू गहणा नै के पूछो, गहणा श्रो म्हारो सो परिवार।
म्हारा सुसरो गढ का राजवी सासूजी म्हारी रतन भण्डार।
सहेल्यां ए० ॥३॥

म्हारो जेठजी बाजूबन्द बांकड़ा, जिठानी म्हारी बाजूबन्द की लूंब।
म्हारो देवर चुड़लो दांत को, देवराणी म्हारी चुड़ला की मजीठ।
सहेल्यां ए० ॥४॥

म्हारा कंवरजी घर रो चांदणो, कुल बहू ए दिवले री जोत।
म्हारी धीयज हाथ री मूंदड़ी, जंवाई म्हारे चमेल्यां रो फूल।
सहेल्यां ए० ॥५॥

म्हारी नणद कसूंमल कांचली, नणदोई म्हारो गज मोत्यां रो हार।
म्हारा सायब सिर को सेवरो, सायबाणी म्हे तो सेजांरा सिणगार।
सहेल्यां ए० ॥६॥

म्हे तो वार्याजी बहूजी थारे बोल नै, लड़ायो म्हारो सो परिवार।
म्हे तो वार्याजी सासूजी थारी कूल नै, थे जो जाया अर्जुन भीम।
सहेल्यां ए० ॥७॥

म्हे तो वार्याजी बाईजी थारी गोद नै थे खिलाया लिछमण राम।
सहेल्यां ए आंबो मोरियो ॥८॥[1]

मधुवन में आम बौरा है। अहा! यह तो सारे मारवाड़ में फैल गया है। हे सखियो! आम में बौर आया है ॥१॥

बहू सोलह शृंगार करके छम-छम करती हुई महल से उतरी। सास ने पूछा—हे बहू! तुम्हारे पास क्या-क्या गहने हैं? पहन कर मुझे दिखाओ ॥२॥

बहू ने कहा—हे सासजी! मेरे गहने की बात क्या पूछती हो? मेरा गहना तो सारा परिवार है। मेरे ससुर जी घर के राजा हैं और सासूजी रत्नों की भण्डार हैं ॥३॥

मेरा पुत्र घर का चाँद है और मेरी पुत्र-वधू दिये की ज्योति ॥४॥

मेरी कन्या हाथ की अंगूठी है और मेरा जामाता चमेली का फूल है ॥५॥

---

१. मारवाड़ के ग्राम गीत—पं० रामनरेश त्रिपाठी।

मेरी ननद कुसुम्भी चोली है और ननदोई गजमुक्ताओं का हार। मेरे स्वामी सिर के मुकुट और मैं उनकी सेज का शृंगार हूँ ॥६॥

यह सुनकर सास ने कहा—बहू मैं तुम्हारे बोल पर न्यौछावर हूँ। तूने मेरे सारे परिवार को सुखी किया। बहू ने कहा—सासजी मैं तुम्हारी कोख पर न्यौछावर हूँ। तुमने तो अर्जुन और भीम जैसे प्रतापी पुत्र पैदा किये हैं ॥७॥

और हे ननद! मैं तुम्हारी गोद पर न्यौछावर हूँ। तुमने तो राम लक्ष्मण जैसे भाइयों को गोद में खिलाया है ॥८॥

त्यौहारों और पर्वों के लोक-गीत

राजस्थानी संस्कृति को यदि त्यौहार बहुला कहा जाय, तो कोई अत्युक्ति न होगी। दीपावली, दशहरा, रक्षा बन्धन और होली के त्यौहार तो सभी प्रदेशों में मनाये जाते हैं। किन्तु इन त्यौहारों के अतिरिक्त भी यहाँ ऐसे अनेकों पर्व और त्यौहार हैं जिनकी अपनी स्थानीय विशिष्टतायें हैं। गणगौर और तीज ये दो इसी कोटि के प्रमुख त्यौहार हैं, जो अपनी रंगीनी के लिए भारत भर में सुप्रसिद्ध हैं। उदाहरण के लिए दो गीत यहाँ प्रस्तुत हैं।

गणगौर का गीत

खेलण दो गिणगौर, भंवर म्हांने खेलण दो गिणगौर
हे जी म्हारी सइयां जोवे बाट, भंवर म्हाने खेलण दो गिणगौर।
माथै ने मैंमद लाव, भंवर म्हारे माथे ने मैंमद लाव
होजी म्हारी रखड़ी रतन जड़ाव, भंवर म्हाने खेलण दो गिणगौर।

तीज का गीत

ए माँ, चम्पा बाग में हींडो घला दे, तीज नेवली आई
ए मां, और सहेल्यां रै घर रो हींडो, म्हारे हींडो नाही
ए मां, हींडे हींडण हूं गई, कोइ मन हींडे हिडाई
सेंठा सहेल्यां म्हासूं मुख मोडियो, बिना हींडिया ई आई।
ए माँ, चम्पा बाग में हींडो घला दे, तीज नेवली आई।

धार्मिक गीत

धर्म और भक्ति की भाव-धारा राजस्थान के लोक-जीवन में स्वच्छन्द रूप से बही है। एक ओर यहाँ हिन्दुओं के सहस्रों देवी-देवताओं के मन्दिर और मंडप दृष्टिगोचर होते हैं, तो दूसरी ओर मुसलमानों की मस्जिदें, सिक्खों के गुरुद्वारे, ईसाइयों के गिर्जाघर और जैनियों के तीर्थङ्करों की प्रतिमाओं से सुसज्जित देवालय यहाँ के शासकों की धार्मिक उदारता का उद्‌घोष करते हैं। यही कारण है कि यहाँ के लोक-गीतों में भक्ति-भावना की बड़ी सरल-तरल अभिव्यक्ति हुई है। इस प्रकार के लोक-गीतों में देवी-देवताओं के गीत प्रमुख हैं, जिनमें बालाजी–भैरोंजी, गणेशजी, दुर्गा, शीतल माता तथा उन लोक-प्रतिष्ठापित वीरों के गीत हैं, जिनके महान् कार्यों के लिये जनता ने उन्हें देवतुल्य स्वीकार कर लिया। डूंगजी, जवाहरजी, तेजाजी, रामदेवजी, पावूजी राठौड़ आदि के गीत इसी कोटि में रखे जा सकते हैं। इन धार्मिक गीतों में जहाँ सम्बन्धित देवता का प्रशस्ति-गान किया गया है, वहाँ उनसे तरह-तरह की अपनी हार्दिक कामनाओं को पूरा करने का भी अनुरोध किया गया है। कर्तिक मास में गाये जाने वाले 'हरजस' (धार्मिक गीत) तो भक्ति सम्बन्धी लोक-काव्य के सबसे अधिक महत्वपूर्ण अंग हैं। इन गीतों में अक्सर राधा और कृष्ण को आधार बना कर आध्यात्मिक भावनाओं का चित्रण किया गया है। 'हरजस' का एक उदाहरण यहाँ देना अप्रासंगिक न होगा—

हरजस

ए राधा ! भज लेनी राम, राम भजियाँ काया सुधरे, हरि राम।
ओ रामजी, राम मोसू भजियो रे नहीं जाय, जिवड़ो धन में झिल रहियो
ओ हरि राम॥

ए राधा मत कर धन रो गुमेज, धन धरती में रेह जाई ॥१॥
ए राधाँ ! भज लेनी भगवान राम सिवरियाँ काया सुधरै, हरि राम।
ओ प्रभू मोसूं राम भजियो रे नहीं जाय जिवड़ों पूतरलों में झिल रहियो
ओ हरि राम।

ए राधा मत कर पूतां रो गुमेज, पूत पड़ोसी हवै जाई।
आडी घालेला भींत, मूंडे वोलण री हवेला सावली ॥२॥
ए राधा ! भज लेनी राम, राम भजियाँ काया सुधरै हरि राम।
ओ रामजी मोसूं राम भजियो रे नहीं जाय, जिवड़लो धीवडली में
झिल रहियो हरि राम।

ए राधा ! मत कर धीवड़ली रो गुमेज, धीवड़ जंवाई-राणा ले जाई।
आडी देला सींव मुखड़ो देखण ही हवैला सावली ॥३॥

ए राधा ! भज लेनी राम, राम भजियाँ काया सूवरै ओ हरि राम ।
ओ रामजी मोसूं राम भजियो रै नहीं जाय, जिवड़ो जोवनिया में भिल
रहियो हरि राम ।
ए रावा ! मत कर जोवनिया रो गुमेज, अन्त वुढापो आवसी ।।४।।

भगवान कृष्ण राधा से कहते हैं कि ए राधा ! परमात्मा का स्मरण कर । इससे तुम्हारा उद्धार हो जायेगा । राधा उत्तर में निवेदन करती है—भगवन् मेरे से भगवन् भक्ति नहीं होती, क्योंकि मेरा जी माया में फंसा हुआ है । इस पर भगवान कृष्ण फिर राधा से कहते हैं कि राधा माया का तुझे व्यर्थ गर्व है । यह तो धरती (पृथ्वी) में रह जायगी । इसलिये यही उपयुक्त है कि भगवान की उपासना की जाय । किन्तु राधा कहती है—मेरा जी पुत्रों के स्नेह में लिप्त है, मुझसे कभी परमात्मा का भजन नहीं होगा । भगवान कहते हैं—राधा पुत्रों का तू क्या घमण्ड करती है, वे एक दिन तुझसे पृथक होकर आडी भींत खड़ी कर देंगे और उनसे बोलने के लिए भी तू लालायित रहेगी अर्थात् तरसेगी । पुत्री को दामाद (जंवाई राणा) ले जायेंगे और उसका मुंह भी बड़ी कठिनाई से कभी-कभी देख सकेगी । यौवनावस्था अस्थिर है । अन्त में वृद्धावस्था आकर तुझे घेर लेगी और फिर कुछ न हो सकेगा ।

विविध विषयक लोक-गीत

उपरोक्त चारों श्रेणियों में जिन गीतों की गणना की गई है, उनके अतिरिक्त कुछ पृथक्-पृथक् विषयों पर भी इक्के-दुक्के गीत विरल संख्या में उपलब्ध होते हैं । इन्हें हम विविध विषयक लोक-गीतों की संज्ञा दे सकते हैं । कुछ गीत ऐसे हैं, जिनमें कतिपय प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाओं को पद्य-बद्ध किया गया है और कुछ गीत ऐसे हैं जो किसी वस्तु-विशेष पर लिखे गये हैं । 'रतन-राणा', 'घुड़लो', 'अमरसिंह राठोड़' और 'गोरबन्द' इत्यादि ऐसे गीतों में प्रमुख हैं । इसके अतिरिक्त कुछ शकुन सम्बन्धी और अन्ध-विश्वासों सम्बन्धी गीत भी हैं । बच्चों के लोक-गीत भी विरल संख्या में उपलब्ध होते हैं । ये एक प्रकार की 'नर्सरी रहाइम्स्' ही हैं जिनमें तुकों के मिलने और सरल शब्दों की संयोजना को ध्यान में रखा गया है । बच्चों के गीत का एक उदाहरण यह दिया जा सकता है—

मेह बाबा आजा

मेह बाबा आजा ।
घी नं रोटी खाजा ।।
आयो बावो परदेशी ।
अबै जमानो कर देसी ।।
ठीकरी में ढोकलो ।
मेह बावो मोकलो ।।

लोक गीतों की गायन पद्धति

लोक गीतों का महत्व केवल इनके भावनात्मक सौन्दर्य में ही निहित हो, ऐसा नहीं है। उनकी वास्तविक महत्ता तो उनके संगीतात्मक सौन्दर्य में है। प्रत्येक लोक-गीत को गाने की अपनी विशिष्ट गायन पद्धति होती है और जब तक वह उस पद्धति से न गाया जाय, तब तक उससे पूर्ण रस-निष्पत्ति नहीं हो सकती। किसी भी लोक गीत की पूर्ण भावाभिव्यंजना करने के लिए और श्रोता के साथ उसका साधारणीकरण करने के लिए यह परमावश्यक है कि संगीतात्मक प्रस्तुतीकरण किया जाय। राजस्थान के लोक गीतों में जिन रागों का प्रयोग मुख्य रूप से किया जाता है, उनमें काफी बिलावल, खमाच, पीलू इत्यादि रागों का प्राधान्य है। 'माड' तो राजस्थान के लोक-संगीत की एक ऐसी विशिष्ट और सुप्रसिद्ध गायन प्रणाली है जो शनैः-शनैः शास्त्रीय राग का स्वरूप ही ग्रहण कर रही है। यह गायन प्रणाली इतनी अधिक लोकप्रिय हुई है कि राजस्थान से बाहर के प्रदेशों में भी यहाँ के लोग-गीत गायकों को आमन्त्रित किया जाता है।

पवाड़े

पवाड़े वीर काव्य हैं। राजस्थानी में अनेक पवाड़े लोक-गीतों के रूप में सुरक्षित हैं। यहां हम दो पवाड़ों की चर्चा करेंगे जो अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। इनमें से एक है पाबूजी का पवाड़ा और दूसरा है निहालदे।

पाबूजी

पाबूजी राठौड़ थे और वीरत्व से पूर्ण इनका हृदय था। शरणागत की रक्षा करना ये अपना परम कर्त्तव्य मानते थे। अपने अलौकिक एवं देवतुल्य गुणों के कारण ही जनता की भावनाओं में आज भी पाबूजी का रंग है।

पाबूजी के अलौकिक चरित्र से प्रभावित होकर राजस्थान की जनता इनको देवता के रूप में पूजा करती है। पाबूजी के स्थानक राजस्थान के कई गाँवों में मिलते हैं और पाबूजी का मन्दिर फलोदी से १८ मील दूर 'कोलू' गाँव में बना हुआ है।

राठौड़ों के मूल पुरुष आसथानजी के पुत्रों में धांधलजी बड़े प्रतापी थे। पाबूजी इन्हीं वीर धांधलजी के पुत्र थे। पाबूजी एक दृढ़प्रतिज्ञ, शूरवीर, शरणागत रक्षक और देवतुल्य पुरुष थे। इन्होंने आना बावेला के चांदोजी–डाभोजी आदि सात वीर थोरी नायकों को आश्रय देकर बड़े ही साहस का कार्य किया और इन नायकों ने भी

मरते दम तक पाबूजी का साथ देकर अपने कर्तव्य का पालन किया। इन नायकों के वंशज आज भी पाबूजी री पड़ अर्थात् चित्रपट प्रदर्शित करते हुए "पाबूजी रा पवाड़ा" गाकर इस वीर–चरित्र का संदेश राजस्थान के घर-घर में पहुँचाते हैं। इन पवाड़ों की संख्या ५२ है और इनमें राजस्थानी संस्कृति का सजीव चित्रण हुआ है।

एक पवाड़े का आरम्भ इस प्रकार होता है कि अमरकोट की सोढ़ी राजकुमारी के महल के नीचे से पाबूजी गुजरे। घोड़ों की घमासान मच गई। राजकुमारी की थाल के मोती धरती कांपने से हिलने लगे। चित्रण देखिये :

चमक्यो चमक्यो सहेल्यां रो साथ
कोई भावज्यां रो चमक्यो जाभो झूमको,
हारी डाली चुडलाँ केरी मूल
कोई बाजवन्द रा हाल्या पोया झूमका
खुलगी खुलगी नकवेसर री गूंज
कोई चूनड़ तो सलूड़ा झीणी सल भर्‌यो
हाली हाली मोत्यां विचली लाल
कोई काना केरा हाल्या बाली झूटण
हाल्या हाल्या छाती परला हार
कोई पायलड़ी तो खुड़की बिछिया बाजिया।

सहेलियाँ बाहर झांक कर कहती हैं–अरे यह तो शूरवीर पाबूजी हैं। वे आगे कहती हैं—

देखोजी बाईजी ! पाबूजी राठोड़
कोई धरती तो राचै वांरी चाल सूं
पाबूजी सरीसा होगा विरला जुग में भूप
कोई जसढ़े पाबूजी जुग में ऊजला।
पाबूजी बाईसा लिछमा रो अवतार
कोई राठोड़ी धरती में मुड़कै आविया
थारे ओ बाईजी ! भाई भतीजा गोत
कोई पाबूजी सरीसो जिणनें को नहीं

थारे ओ बाईजी राव घणा उमराव
कोई पावूजी रे उंणियारे कुल में को नहीं।
देखी म्हें बाईजी थारी सगली फौज
कोई फौजां में पावू रे जोड़े को नहीं
एकर बाईसां छाजे ओ चढ़ देख
कोई किसी अक पावूजी री सूरत मनोकारी ।।

इसके पश्चात् सहेलियां सोढ़ी राजकुमारी और पावूजी की तुलना करती हैं।

पावूजी और सोढ़ी राजकुमारी का विवाह निश्चित हो गया। पुरोहित पाँच मोहरें और एक सोने का नारियल लेकर कोमलगढ़ पहुँचा। वहाँ पनघट पर पहुँच कर पनिहारियों से पावूजी का ठिकाना पूछा। पनिहारियों ने कहा :—

अगूणी कहीजै ओ जोसी पावूजी री पोल
कोई केल तो झबरखै रे वां पावूजी री पोल।
धोला तो कहीजै रे वां पावूजी का म्हेल
कोई लाल तो किंवाड़ी रे के पोल भंवर के पालिया
पोल्यां रे कहीजै रे वां चन्नण का किंवाड़
कोई आमा सामां कहिये पावूजी रा गोखड़ा।

विवाह की तैयारी हुई। बरात के रवाना होने का समय समीप आया। पावूजी की सवारी के लिए देवल चारणी की कालमी घोड़ी, जिसकी नामवरी चारों ओर फैली हुई थी, मांगी गई। देवल देवी इस शर्त पर घोड़ी देती है कि उसकी गायों की रक्षा का भार पावूजी पर होगा। पावूजी ने कहा—किसी भी तरह होगा तुम्हारी गायों की रक्षा करूंगा। वे घोड़ी पर चढ़कर मण्डप में जाते हैं। मंगल गात गाये जा रहे थे। फेरे होने लगे। इतने में घोड़ी हिनहिनाने लगी, पैर पटकने लगी और देवल की आवाज सुनाई दी कि "जायल खींची ने मेरी गायों को घेर लिया है।" इतना सुनते ही पावूजी ने हथलेवा छुड़ा लिया और जाने लगे। सोढ़ीजी ने पावूजी का पल्ला पकड़ कर पूछा—

कोई तो गुन्नो ओ पावू करियो म्हारो वाप,

कोई कांई तो गुन्नो ओ पावू करियो माता जलम की,

कोई तो गुन्नो करियो ओ पावू म्हारे परवार,

कोई तो गुन्नो ओ पावू म्हारे थें ओलख्यो ॥

पावूजी का उत्तर है—

वचन वाप मरदां कै सोढ़ी कहीजै एक ।

कोई धरम तो कहीजै सोढ़ीजी फेरां आगलो ॥

वचनां का वांध्या जी सोढ़ी धरती अर असमान ।

वचनां का वांध्योड़ा जी सोढ़ी पवन पांणी आगला ।

कोई वचनां हूँ वडेरा जी सोढ़ी जो जुग में को नहीं ।

वचनां का वांध्या जी सोढ़ी धरती अर असमान ।

सोढ़ीजी ने कहा कि आप अवश्य गायों की रक्षा कीजिये । पावूजी जाते-जाते कह गये—

जीवांगा तो फेर मिलांगा, सोढ़ी थां सूं आय ।

कोई मर ज्यावां तो ल्या देगो, ओठी म्हारा महंमद मोलिया ।

शूरवीर पावूजी और उनके नायक वीरों ने खींची जिनराज को जा घेरा । घमासान युद्ध हुआ । पावूजी ने गायों को छुड़ा लिया । इनमें से एक बछड़ा नहीं मिला इसलिए पावूजी को पुनः खींची पर चढ़ाई करनी पड़ी । इस युद्ध में शूरवीर पावूजी, सातों नायक वीर और उनके कई सम्बन्धी काम आये । युद्ध के समाचार और पावूजी के शिरोभूषण लेकर सवार उमरकोट पहुंचा ।

सोढ़ीजी अपनी सहेलियों के बीच उदास बैठी हुई थी उसके हाथों में कांकण डोरडा बंधा था । वह विवाह का वेश पहने हुई थी और उसके हाथ-पैरों में सुरंगी मेंहदी रची हुई थी । सवार सोढ़ीजी के सामने कुछ बोल नहीं सका । उसने जाकर पावूजी के शिरोभूषण और कांगण डोरडे सोढ़ीजी के सामने रख दिये । सोढ़ीजी की स्थिति का चित्रण अब देखिए—

नैंणा तो देखी छै जद था पाल मंदर की पाग ।

कोई फिलंगी तो पिछाणी छै था कुरजाले के सीस की ।

माथा कै लगा दी छै सायब कीं किलंगी पाग ।

कोई छाती के लगायां छै पावू का कांगण डोरडा ।

छाती जो फाटी छै जी उजल्यो छै दिल दरियाव ।

कोई खाय तो तिवालो धरती पर सोढ़ी छै पड़ी ।

एक पहर के प्रयत्न के बाद जब सोढ़ी राजकुमारी की मूर्च्छा दूर हुई तो वह वन के कायर मोर की तरह रोने लगी । रोते-रोते हिचकियाँ बँध गईं और आँखों से सावन-भादों की झड़ी बरसने लगी । फिर उठ कर वह अपने माता-पिता, भाई और सहेलियों के पास पहुँची । हाथ पसार कर मां से विदाई का नारियल लिया । फिर पिता, भाई, भौजाई और सहेलियों से विदा ली । सोढ़ी राजकुमारी बोली—आप लोगों ने मुझे इतने प्यार से बड़ा किया और अब मैं ऐसे घर में जा रही हूँ जहाँ से मैं नहीं लौटूँगी । तीज-त्यौहार आयेंगे, सभी सम्बन्धी मिलेंगे, किन्तु यह लाड़ली बेटी फिर नहीं मिलेगी ।

सोढ़ी राजकुमारी रथ में बैठ कर अपनी ससुराल पहुँची । प्रियतम के बाग-बगीचों को, महल-मालियों को, मेड़ी-ओबरों को और झाड़-झरोखों को आँसू भरी आँखों से पहली और अन्तिम बार देखा । प्रियतम के साज-सामान और वस्त्राभूषण देखे और फिर ससुराल वालों से कहा कि हम ऐसी घड़ी में मिले हैं कि सदा के लिए अलग होना पड़ रहा है ।

फिर रानी सोढ़ीजी अपने हाथों से सूरजपोल के तेल सिन्दूर का छापा लगा कर अपने प्रियतम पाबूजी से मिलने के लिए रवाना हो गई । धरती पर जिनका मिलन न हो सका उनकी आत्माएँ स्वर्ग में परस्पर गुँथ गईं ।

दूसरा पवाड़ा है निहालदे सुल्तान का । "निहालदे" नामक पवाड़ा राजस्थान में बहुत प्रसिद्ध है । यह कथा गीत एक विशाल पवाड़े के रूप में मुख्यतः शेखावाटी में बड़े चाव से गाया और सुना जाता है । निहालदे के गाने वाले मुख्यतः जोगी हैं । इस पवाड़े में ५३ खंड हैं और इससे बड़ा पवाड़ा सम्भवतः राजस्थानी भाषा को छोड़ कर अन्य किसी भाषा में नहीं है ।

निहालदे इन्द्रगढ़ के राजा मगपारि की राजकुमारी थी । निहालदे विवाह योग्य हुई तो राजा ने स्वयंवर के निमन्त्रण चारों ओर के राजकुमारों को भेजे । स्वयंवर के लिए वसन्त पंचमी की तिथि निश्चित की गई । चारों ओर के सैकड़ों ही राजा अपने राजकुमारों सहित एकत्रित हुए ।

राजकुमारी निहालदे की ओर से घोषणा की गई कि जो राजकुमार ऊपर बंधी हुई मछली की परछाईं को नीचे तेल में देखते हुए तीर से मछली को बेंध देगा वही वरमाला का अधिकारी होगा।

इसी अवसर पर कचीलगढ़ का राजा भी अपने राजकुमार फूल कुँवर और पाहुने सुलतान के साथ पहुँचा। सुलतान ईडर का राजकुमार था और प्रसिद्ध चकवे वेण के वंशज मेनपाल का पुत्र। एक बार सुलतान बाग में तीर से निशाना साध रहा था। अचानक ही तीर एक ब्राह्मण-कन्या के पानी से भरे हुए कलश के जा लगा, जिससे कलश फूट गया और कन्या के कपड़े पानी से भीग गये।

इस घटना से ब्राह्मण ने उग्र रूप धारण किया और राजा के दरबार में पहुँच कर राजकुमार सुलतान की शिकायत कर दी। राजा ने सोचा—सुलतान बचपन में ही प्रजा को सताने लगा है तो बड़ा होने पर तो प्रजा का जीवन ही दूभर कर देगा। राजा ने कुँवर को बारह वर्ष का देश-निकाला दे दिया।

राजकुमार सुलतान दूसरे देशों में घूमता हुआ भीख माँगने लगा। समय का फेर कि एक राजकुमार को घर-घर का भिखारी होना पड़ा। इस प्रसंग में 'निहालदे सुलतान' में गाया जाता है—

> समै भी चिणवा दे रे भाई कूवा बावड़ी,
> समै मंगा दे घर-घर भीख,
> समै बली है रे मोटो, नर को कै बली जी,
> समै भी हिंडा दे रे एक छन मां कै पालणें।
> समै भी बँधा दे सिर के मोड़,
> समै भी चढ़ा दे चार जणा के घोड़ले,
> ईडर की नगरी में यो धनी एक पल ओपतो,
> करता गादीपत राज जुहार।
> पिरजा भी लेती वा राजकुमार का वारणा,
> घर-घर डोले रे यो एक पल फजला झांकतो ॥

भीख मांगते हुए सुलतान कचीलगढ़ जा निकला। राजमार्ग से [illegible] की सवारी जा रही थी। इतने में एक बैल ने सुलतान के टक्कर मारी, सो सुलतान औंधे मुँह जा गिरा। सुलतान की झोली में से दाने बिखर गये और वह पुनः उन्हें

भरने लगा। राजा घोड़े से उतर कर सुलतान के पास पहुँचा और कहने लगा, "दीखते तो राजकुमार जैसे हो, फिर यह वेष क्यों धारण कर रखा है ?

सुलतान राजा की बात सुन कर रोने लगा। तब राजा ने सुलतान को अपने महल में ठहरा दिया। रानी ने उसके बड़े-बड़े बाल कटवा दिये और अच्छे कपड़े पहिना कर उसका पूरा आदर-सत्कार किया, फिर सुलतान भी इन्द्रगढ़ के स्वयंवर में पहुँचा।

स्वयंवर में कोई अन्य राजकुमार मछली बेंधने में सफल नहीं हो सका। राजकुमार फूलकुंवर भी असफल रहा। सुलतान ने तुरन्त ही तेल में परछाईं देखते हुए मछली को बेंध दिया और इन्द्रगढ़ की राजकुमारी निहालदे से विवाह कर लिया।

सुलतान विवाह कर लौटा और जब फूलकुंवर असफल हो गया तो फूलकुंवर की माँ को बहुत बुरा लगा। उसने कह ही दिया "तू कल तो भीख मांगता था और आज गढ़पति की लड़की से विवाह कर आया है।"

यह सुनते ही निहालदे को छोड़ कर सुलतान वहाँ से जाने लगा। निहालदे ने कहा, "मुझे भी साथ ले लीजिये—जो आपकी गति सो मेरी गति।"

सुलतान ने कहा, "मेरा क्या ठिकाना ? मैं कहीं जाकर ठिकाना कर आऊँ। अगली तीज को आकर ले जाऊँगा। रावजी तुम्हें अपनी पुत्री की तरह ही प्रेम से रखेंगे।"

इस घटना के पश्चात् निहालदे के दिन दुःख में बीतने लगे। यों तो राजा ने अलग बाग में निहालदे को ठहराया, किन्तु फूलकुंवर उसको कई तरह के लोभ दिखाने लगा। निहालदे को न सोते चैन, न जागते चैन। फिर थोड़े ही दिनों में कामधजराव की मृत्यु हो गई तो निहालदे का जीवन कठिन हो गया।

सुलतान नरवरगढ़ पहुँचा और राजा ढोला के दरबार में लाख टका वेतन पर काम करने लगा। इधर फूलकंवर ने झूठा समाचार पहुँचा दिया कि निहालदे की मृत्यु हो गई। इस समाचार को सुनकर सुलतान बहुत दुखी हुआ।

इधर एक नहीं, कई श्रावणी तीजें निकल गईं तो निहालदे बहुत दुखी हुई। उसने मारु राणी की तीज पर सुलतान को भेजने का परवाना लिखा और सूचना

भेजी कि अगर अगली तीज पर सुलतान न आवेंगे तो वह जल कर प्राण त्याग देगी। फूलकुँवर से छिपा कर किसी प्रकार पत्र पहुंचा दिया गया, किन्तु सुलतान को पहुँचने में थोड़ा सा विलम्ब हो गया और निहालदे ने अपने प्राण त्याग दिये।

वास्तव में राजस्थानी इतिहास में वर्णित त्याग और बलिदान के अनुरूप ही निहालदे का चरित्र सम्बन्धित गीत में प्राप्त होता है। ऐसे उज्ज्वल चरित्र आज भी कर्त्तव्यपरायणता, त्याग और साहस की प्रेरणा देते हैं।

---

३० | ललित कलायें

साहित्य के क्षेत्र में राजस्थान जितना सरनाम रहा है, ललित-कलाओं के क्षेत्र में भी उसकी उपलब्धियां उतनी ही महत्त्वपूर्ण रही हैं। राजस्थानी चित्र-शैलियों का भारत की चित्रकला के इतिहास में अद्वितीय स्थान है। भारतीय चित्रकला को जो समृद्धि प्राप्त हुई है, उसमें राजस्थान की चित्रकला का अमूल्य योगदान सभी कला-समीक्षकों ने एक स्वर से स्वीकार किया है।

चित्रकला की भांति यहां की मूर्तिकला भी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर चुकी है। जयपुर के मूर्तिकारों की छेहनी का चमत्कार प्रान्त और देश की सीमाओं को लांघ कर सुदूर विदेशों तक विस्तार पा गया है।

मूर्तिकला ही नहीं, संगीतकला के क्षेत्र में भी यहां के गायकों ने अपनी गौरव पताका फहराई है। शास्त्रीय संगीत और लाके-संगीत दोनों में ही यहां के कलाकारों ने उन ऊँचाइयों का स्पर्श किया है, जो बहुत ही विरले साधकों का सौभाग्य होता है।

यहां संक्षेप में राजस्थान की इन तीनों ही ललितकलाओं के बारे में स्थूल जानकारी प्रस्तुत की जा रही है।

चित्रकला

भारतीय जनता की रस प्रधान कल्पना और अनुभूति का जो विस्तृत क्षेत्र है उस समग्र का चित्रण राजस्थानी शैली में और कालान्तर में उसी से अनुप्राणित हिमाचल चित्र-शैली में प्राप्त होता है। जनता के काव्य, संगीत और नाट्य से भी इस कला का घनिष्ठ सम्बन्ध था। प्रेम इस कला का मूलमन्त्र है। कहा जा सकता है कि प्राकृतिक दृश्यों की लिखाई में जैसी उत्कृष्ट सफलता चीनी चित्रकारों को प्राप्त हुई थी कुछ वैसी ही सिद्धि, प्रेम के क्षेत्र में राजस्थानी चितेरों को प्राप्त थी। उनकी दृष्टि में प्रेम ही जीवन में विचित्रता लाने का मार्ग है। सोते हुए हृदय में प्रेम के द्वारा

नये लोक में प्रवेश करते हैं। मानवीय प्रेम ही हृदयों को पारस्परिक संयोग में बांधने का एकमात्र कारण है ; प्रेम के बिना हृदय एक दूसरे से पृथक बने रहते हैं। राधा और कृष्ण के रूप में जगतीतल के स्त्री और पुरुष, प्रेम के लोक में अपने आपको मूर्तिमत देखते हैं। स्त्री पुरुष का प्रेम व्यवहार राधा-कृष्ण की प्रेम-लीला की झांकी मात्र है। प्रेम की यह सरस, सुबोध और सुन्दर व्याख्या राजस्थानी चित्रकारों के हाथ में खूब फूली-फली, जिसके फलस्वरूप अनेक भावात्मक चित्रों की सृष्टि हुई। श्रीकुमार स्वामी के शब्दों में 'राजस्थानी चित्रकला की सुन्दर कृतियों को देखते हुए हमारे मन में ऐसा भाव उत्पन्न होता है कि राधा-कृष्ण का पवित्र लीला-लोक हमारे अपने जीवन की अनुभव भूमि है।' यदि हम अपने जीवन में ही सौन्दर्य के दर्शन नहीं कर पाते तो अपरिचित और पराई वस्तुओं में उसे कैसे पा सकते हैं ? अपने गृह-मन्दिरों में अपने जीवन की लीला में जो हमें नहीं मिलता वह हमें कहीं भी प्राप्त नहीं हो सकता। ऐसी दृढ़ आस्था राजस्थानी चित्रों की मानस पृष्ठ भूमि को आलोकित करती है। इसी कारण ये चित्र स्त्री-पुरुषों के नित्य के जाने पहचाने जीवन के सजे-सजाये आलेखन प्रतीत होते हैं।

राजस्थानी चित्र शैली स्त्रियों की सुन्दरता की खान है। भारतीय नारी के आदर्श सौन्दर्य की उसमें पूरी छटा है। कमल की तरह उत्फुल्ल बड़े नेत्र, लहराते हुए केश, घन स्तन, क्षीण कटि और ललित अङ्ग-यष्टि। भारतीय स्त्री के हृदय में प्रेम का अटूट भण्डार है। उसका प्रभाव मानों इन चित्रों में वह निकला है।

अनेक प्रकार के चटकीले रंगों का प्रयोग इन चित्रों की विशेपता है। भांति-भांति के चटक रंगों को एक साथ सजाने का रहस्य इन चित्रकारों को विदित हो गया था। लाल, पीले, हरे, बैंगनी, किरमिजी, काले, सफेद और सुनहले रंगों की खुलाई चित्रों को अत्यन्त मनोहर बना देती है। कहीं-कहीं तो चतुर चित्रकार अनेक रंगों के साथ क्रीड़ा करते हुए जान पड़ते हैं।

राजस्थानी चित्रों के विषय बहुत विस्तृत हैं। राधा कृष्ण की लीला, अनेक प्रकार की नायक नायिकाएं, रामायण महाभारत की कथाएँ, ढोला-मारू, माधवानलकाम कंदला सदृश लोक कथाएं, स्त्री पुरुषों के शृंगार भाव, ऋतुओं के चित्र और बारहमासा तथा राजाओं की प्रतिकृतियां या शबीह इन चित्रों के विस्तृत विषय हैं। लेकिन इनकी सबसे बड़ी विशेषता रागमालाओं का चित्रण है, जिनके लिए राजस्थानी शैली भारतीय चित्रकला में अनोखा स्थान रखती है।

राग और रागिनी संगीत के विषय हैं, किन्तु काव्य और चित्र के साथ भी उनका सम्बन्ध है। प्रत्येक राग और रागिनी के पीछे जो मनोभाव है, उनको पहिचान

कर उसको चित्रात्मक लिखाई से ही राग-रागिनी के चित्रों का स्वरूप निष्पन्न हुआ है। उदाहरण के लिये टोडी रागिनी के चित्र में एक युवती बीणा बजाती हुई दिखाई जाती है, जिसके संगीत स्वर से आकर्षित होकर मृग चारों ओर से घेरते हुए दिखाए जाते हैं। राग का 'टोडी' नाम दक्षिण भारत से लिया गया है, जहां मध्यकाल में मलाबार प्रदेश 'तोढ़ी मण्डलम्' के नाम से प्रसिद्ध था। बीणा दक्षिण का प्रसिद्ध वाद्य है। चित्र-गत राग का तात्पर्य स्पष्ट है। उससे यही ध्वनि निकलती है कि कोई युवती किशोरावस्था को पीछे छोड़ कर यौवन में पदार्पण करती है। उसके सौन्दर्य संगीत से आकृष्ट होकर मृग-रूपी प्रेमी युवक उसके चारों ओर एकत्र हो रहे हैं। विलावल राग के चित्र से यौवन गर्विता नायिका दर्पण में अपना सौन्दर्य देख कर अपने ही रूप पर रीझती हुई दिखाई जाती है। भैरवी रागिनी के चित्र अत्यन्त प्रसिद्ध और सुन्दर हैं। इनमें शिव की प्राप्ति के लिए शिव-पूजा में निरत स्त्री अंकित की गई है। बसन्त राग के चित्र भारतीय बसन्त ऋतु के मानसिक उल्लास और प्राकृतिक सौन्दर्य को प्रकट करते हैं। प्रायः मृदंग बजाती हुई सखियों के साथ नृत्य से थिरकते हुए कृष्ण इन चित्रों के विषय हैं। भैरवी, मालव, श्रीराग, वसन्त, दीपक और मेघ इनका सम्बन्ध छःह ऋतुओं से है और प्रत्येक राग का सम्बन्ध पांच या अधिक रागिनियों से हैं। इन सबसे चित्रांकन में चित्रकारों को भाव और सौन्दर्य का विस्तृत क्षेत्र प्राप्त हुआ और इस प्रकार राजस्थानी चित्र-शैली भारतीय जीवन की व्यापकता के साथ मिल गई।

राजस्थान गुजरात की सीमा के समीप इस शैली का पूर्वोदय हुआ होगा। अवश्य ही उदयपुर, मेवाड़ और मालवा में इसकी आरम्भिक लीला-भूमि होनी चाहिए। उस सामग्री का सुव्यस्थित अनुसधान कर्तव्य शेप है। सोलहवीं सदी के निश्चित उदाहरण अभी तक उपन्यस्त नहीं किये जा सके हैं। किन्तु शैली के विकास की दृष्टि से यह माना जा सकता है कि जिस चित्रकला का मध्याह्न सत्रहवीं शती में हुआ होगा उनका आरम्भ लगभग एक शती पूर्व तो हुआ ही होगा। डाक्टर आनन्दकुमार स्वामी पारखी आँख से कुछ राजस्थानी चित्रों की शैली सोलहवीं शती की स्वीकार करते हैं। इस विषय में अभी इस शैली के समुचित अध्ययन से और भी नई जानकारी मिलने की आशा है। शनैः शनैः राजस्थान के पूरे क्षेत्र में यह चित्र-शैली व्याप्त हो गई और उदपुर की भांति अनेक राज्यों में इसके रचना केन्द्र स्थापित हो गये। राज्याश्रय से बाहर भी अनेक चित्रकार बराबर चित्र लिख रहे थे। राजस्थान में शायद ही कोई ठिकाना ऐसा हो जहां इस शैली के चित्र न लिखे गये हों।

राजस्थानी चित्र-शैली की श्वास-वायु राज-दरबारों के अवरुद्ध वातावरण से नहीं, जनता के उच्छ्वसित वातातपिक जीवन से आई है। सतरहवीं शती में तो

चित्रों के विषयों का सम्बन्ध राजकीय जीवन से नहीं के बराबर है। उसमें जीवन का ही आलेखन हुआ है। लगभग तीन शतियों तक लोक-मानस को रस की अभूतपूर्व अनुभूति से इस शैली ने आनन्दित किया है। देश के वसन्त में क्रमशः आने वाले मलयानिल की भांति देश के एक कोने से उठ कर इस चित्र-शैली ने विस्तृत भू-खण्ड को छा लिया। राजस्थानी चित्रों में भावों के अपूर्व मेघ जल बरसे हैं। भाव और कल्पना की अनेक धाराएं इस चित्र शैली में लीन हो गईं। राजस्थानी चित्रकार रंगों के जादूगर थे। उनकी वर्ण-व्यंजना सचमुच किसी अभूतपूर्व नेत्र कौमुदी का सुख देती है। उनके चित्र रस के अक्षय होते हैं। सचित्र ग्रंथ और फुटकर चित्रावली के रूप में अनेक भावात्मक चित्रों का अङ्कन राजस्थानी शैली में हुआ। मनोभावों की चित्रात्मक अभिव्यक्ति राजस्थानी चित्र-शैली का प्राण है। मानवीय हृदय सदा रस का अभिलाषी होता है। राजस्थानी चित्र मुख्यतः रसात्मक हैं। अतएव इन चित्रों की भाषा मानवीय हृदय के अति सन्निकट है। श्री कुमारस्वामी के शब्दों में 'राजस्थानी चित्र-कला विश्व की महान् चित्र शैलियों में स्थान पाने योग्य है।'[1]

राजस्थानी चित्रकला के इस प्रसंग में यहां की लोक चित्र-कला के प्रतीक भित्ति-चित्रों की चर्चा करना अत्यन्त आवश्यक है।

भित्ति चित्र

राजस्थान, जिसका कोई भवन, चित्रों से खाली नहीं है, भित्ति-चित्रों की दृष्टि से बहुत समृद्ध प्रदेश है। बिना चित्रों के भवन भूतवास समझे जाते हैं। भवन के प्रमुख द्वार पर गणपति द्वार के दोनों ओर भारी आकृतियां, अश्वारोही अथवा गजारूढ़ सामन्त चित्रित किये जाते हैं। लड़ते हुए हाथी, सेवक, दौड़ते हुए ऊंट, रथ, घोड़े, गायों के झुण्ड गोवत्स अथवा कदली पत्र लिखे जाते हैं। शंख, चक्र, पद्म और पताकायें भी द्वारों पर चित्रित रहती हैं।

इस दिशा में जयपुर, कोटा, बून्दी, किशनगढ़, बीकानेर, उदयपुर सभी राजस्थान के प्रमुख नगर उल्लेखनीय हैं, किन्तु कोटा इस दिशा में अधिक समृद्ध है। सबसे छोटा नगर होते हुए भी यहां के रसज्ञ श्रीमन्तों ने इसे खूब सजाया है। जहां भी दृष्टिपात करिए, चित्रों के विविध रूप दिखलाई पड़ते हैं। दक्षिण के चित्रकारों ने भी कोटा में रह कर अपनी कला का गौरव प्रकट किया है. गंजीर शैली के अनेक चित्र कोटा के भवनों में चित्रित हैं। झाला जी की हवेली, रसिक बिहारी जी का

---

[1] डा० वासुदेव शरण अग्रवाल—राजस्थान-भारती

मन्दिर भित्ति चित्रों की वह परम्परा अब तक देखी जा सकती है जब कोटा की चित्र शैली ने अपना एक पृथक स्थान बनाया था। कोटा की चित्र शैली यद्यपि बून्दी से आई हुई है और बून्दी के चित्रकारों की ऋणी है, तब भी उसकी एक विशेषता है जो अपने अस्तित्व को प्रकाश में ला सकी है।

बून्दी के चित्र, आलेखन की दृष्टि से बड़े श्रम सम्पन्न और विविध हैं। इनकी कल्पनामूलक अभिव्यक्तियां कृष्णलीला के शृंगारिक प्रसंगों पर आधारित और सौन्दर्य के विविध भेदों पर आश्रित है। भट्टजी की हवेली, राजमहल और मन्दिरों के अनेक गृह चित्रों से सुसज्जित हैं। ये आलेखन आकृति में बड़े शृंखलाबद्ध और प्रसंगों को क्रम से प्रकाश में लाने वाले हैं। इनमें रंग आज भी चमकदार सुवर्ण के आलेखनों से सौन्दर्य सम्पन्न तथा रेखाओं की गतिशील बारीकियों से युक्त है।

राजस्थान में भित्ति चित्रों को चिरकाल तक जीवित रखने के लिए एक आलेखन पद्धति है जिसे आरायश कहते हैं। आरायश पर चित्रों को स्याही की रेखाओं स सर्वप्रथम लिखकर रंग भरे जाते हैं। इसकी एक विशेष विधि है जिसे जयपुर के अस्सी प्रतिशत कलाकार जानते हैं। इस पद्धति का प्रचार सारे राजस्थान में है, किन्तु उसका जन्म जयपुर ही में हुआ प्रतीत होता है। यह भी सम्भव है कि ये परम्परागत हों। जयपुर में इसका विशेप प्रसार है। इसके अतिरिक्त यहां की आरायश अधिक सुन्दर और टिकाऊ होती है। जयपुर में भित्ति चित्रों की परम्परा बहुत विकसित हुई थी तथा यहां के चित्रकार अन्य नगरों में जाकर अपना कौशल दिखलाया करते थे। जयपुर में पुण्डरीकजी की हवेली, गलता घाट, रावलजी के महल भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं। अनेक भित्ति चित्र असावधानी के कारण नष्ट हो चुके हैं तथा अनेक हो रहे हैं। तब भी जो कुछ बच रहा है राजस्थान के चित्र प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त है। किशनगढ़ के भित्ति चित्र अधिक प्राचीन नहीं हैं। न ये आरायश पद्धति के अनुसार बने हैं न उनके विषयों में विविधता ही है। राधा-कृष्ण के युगल रूप की झांकी ही सर्वत्र पाई जाती है। किशनगढ़ के भित्ति चित्र आकार में बहुत बड़े नहीं हैं और न उसकी संख्या ही अधिक हैं। जोधपुर के चित्र सवारी, शिकार, कथा प्रसंगों के दृश्यों में सीमित हैं। यहां के चित्र उदात्त भाव लिए वीर रस के प्रतीक और पीले रंग को अधिकतर लिये हुए हैं। बीकानेर के राजमहलों के चित्रों में घुमड़ते हुए बादलों के दृश्य, चमकती हुई बिजलियों की प्रकाश धारा, उड़ते हुए पक्षी, विविध बेल बूंटे और सुवर्ण के आलेखन हैं। डाक्टर कुमारस्वामी ने बीकानेर के राजमहलों में चित्रित एक पक्षी युगल का चित्र अपनी पुस्तक में प्रकाशित किया है जो बड़ा ही सुन्दर और भाववाही है। बीकानेर की अनेक प्राचीन हवेलियों में चित्र बने हुए हैं जो यहां के उस्ताद कहलाने वाले चित्रकारों ने बनाये हैं ये उस्ताद

जाति के मुसलमान है तब भी हिन्दू धर्म के देवी देवताओं से परिचित और भारत की चित्र पद्धति के अनुयायी हैं।

उदयपुर के चित्र संख्या में अधिक हैं किन्तु जयपुर जैसा सौन्दर्य इन चित्रों में नहीं है। भित्ति चित्रों की पद्धति जयपुर, अलवर, कोटा, बूंदी में ही अधिक प्रस्फुटित हुई, इसका एक छोर वल्लभ सम्प्रदाय की सगुण उपासना है तो एक छोर मुगल घरानों के अनुकरण की परम्परा है। कोटा, बूंदी, वल्लभीय उपासना के केन्द्र हैं और जयपुर, अलवर मुसलमान परम्परा के प्रतीक हैं।

राजस्थान ही नहीं, समस्त भारत की चित्रकला का प्रारम्भ भित्ति चित्रों से हुआ है। कारण कि कागज का अभाव था, काष्ठ फलक छोटे थे। वस्त्रों के नष्ट हो जाने का भय था, इसलिए भित्तियां ही ऐसा सुविधाजनक उपकरण थीं जिस पर अपनी भावनाओं को विशद रूप से व्यक्त किया जा सकता था, बड़े से बड़े आलेखन भी सम्भव थे और छोटे से छोटा रूप भी अङ्कित किया जा सकता था। रंग वही प्रयोग में लाये जाते थे जो अधिक समय तक जीवित रह सकें। ये रंग थे प्रस्तर खण्डों के गर्भ से निकले अथवा पत्थरों को पीस कर बनाये। मृत्तिका से प्राप्त हुए राजस्थानी भित्ति चित्रों के रङ्गों में प्रधान रङ्ग हैं, हरा पत्थर, हिरमिच पत्थर, रामरज, काजल और गौगोली। ये सभी रङ्ग स्वाभाविक और न उड़ने वाले हैं। यद्यपि कई स्थानों पर लाल, गुलाबी, नीले का भी प्रयोग है पर वह उन अन्तःपुरों में जहां के चित्रों की धूप और पानी से रक्षा होती है। ऐसे विविध रङ्गों से बनाए चित्र अलवर के समीप राजगढ़ नामक ग्राम में हैं। ये चित्र किले की उन दीवारों पर बने हैं जहां इस नगर के राजा का अन्तःपुर है। चित्रों के विषय है, सुन्दर युवतियों की क्रमबद्ध पंक्तियां। इन आकृतियों में सुवर्ण और मूल्यवान विविध रङ्गों का प्रयोग किया गया है। समस्त राजस्थान में इन भित्ति चित्रों की जैसी श्रम साध्यकला अन्यत्र देखने में नहीं आती। ये अधिक प्राचीन नहीं हैं, तब भी बड़े उत्कृष्ट हैं। जयपुर के चित्रों में केवल गलता के एक मन्दिर में बने चित्र बहुत सुन्दर हैं। पर वे नष्ट हो चुके हैं। जितना अंश बच रहा है उसी से उनकी विशेषता का परिचय मिलता है।

जैसलमेर तथा शेखावाटी के कतिपय गांवों में भित्ति चित्रों की अधिकता है, परन्तु वे लोककला के अन्तर्गत माने जा सकते हैं। वे अधिक श्रम-साध्य और उत्कृष्ट नहीं हैं।

संगीत कला

१९वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में, मुगल साम्राज्य के क्षय के पश्चात्, समस्त उत्तरी भारत की हिन्दू रियासतों और रजवाड़ों में भारतीय संस्कृति तथा

कला का जो पुनरुत्थान हुआ, वह जयपुर में सम्भवतः उससे बहुत पहले आरम्भ हो गया था। आमेर व जयपुर के कछवाहा शासक दिल्ली में हुमायूं का शासन स्थापित होने के समय से ही मुगल साम्राज्य के विश्वस्त और वफादार साथी रहे और उन्हें कभी मुसलमानों के आक्रमणों का सामना नहीं करना पड़ा। सम्पूर्ण मुगल काल में पुराने आमेर और नये जयपुर राज्य में जो राजा बने, उनमें कोई योग्य सेना-नायक और योद्धा थे तो कोई कूटनीतिज्ञ, कोई विद्वान थे तो कोई पण्डित और कला निपुण। इन्हीं में जयपुर के आधुनिक गुलाबी नगर के निर्माता ज्योतिर्विज्ञ सवाई जयसिंह भी थे, जिनके राज्य की सीमायें सांभर झील से लेकर पूर्व में यमुना तक और उत्तर में शेखावाटी प्रान्त से लेकर दक्षिण में चम्बल नर्मदा के मध्य तक जा पहुँची थी और उन्होंने अश्वमेघ यज्ञ का अनुष्ठान कर तत्कालीन राजाओं में अपनी कीर्ति और प्रभुता की उद्घोषणा भी की थी। इस प्रकार अपने प्रदेश में शान्ति और समृद्धि के फल-स्वरूप जयपुर के शासक संगीत व नृत्य जैसी ललित-कलाओं को भी प्रोत्साहन एवं संरक्षण देने तथा उन प्रतिभाओं का विकास करने में समर्थ हुए, जो उस मध्य-काल में उदार और कला-पारखी नरेशों के दरबारों में ही पनप सकती थी।

औरंगजेब के प्रमुख सेना-नायक, मिर्जा राजा जयसिंह का दरबार कवियों, कलाकारों और संगीत-विशारदों के लिए उर्वरा भूमि थी, जिसमें बिहारी के बोये हुए बीजों से अंकुर फूट कर 'सतसई' की विशाल और सुगन्धित लता फैल चुकी थी। इसी दरबार में १६२० के आस-पास 'हस्तकार रत्नावली' नामक विपद् संगीत-ग्रन्थ लिखा गया। मीरां के पद और दादू-पंथ के प्रवर्त्तक दादू दयाल के 'सबद' इस समय तक जनता के गीत बन चुके थे और आवश्यकता थी तो यह कि लोक-जीवन में व्याप्त इन राग-रागनियों का शास्त्रीय आधार पर वर्गीकरण कर दिया जाय। महाकवि बिहारीलाल को उसकी 'सतसई' के एक-एक दोहे पर स्वर्णमुद्रा प्रदान करने वाले इस मिर्जा राजा ने ऐसे प्रामाणिक संगीत-ग्रन्थ की रचना करा कर भारत की इस पुरातन विद्या के शास्त्रीय अध्ययन को भी बड़ी प्रेरणा दी।

सवाई प्रतापसिंह, जो १७७८ में गद्दी पर बैठे थे, स्वयं एक काव्य-मर्मज्ञ, कवि और संगीताचार्य थे। उनके दरबारी संगीतज्ञ, उस्ताद चांदखां ने, जिन्हें महाराजा से 'बुधप्रकाश' की उपाधि प्राप्त हुई थी, 'स्वर सागर' नामक एक उच्च कोटि के संगीत-ग्रन्थ की रचना की। उनके वंशज जो सेनिया कहलाते हैं, अब भी अपने पूर्वजों की इन परम्पराओं का निर्वाह कर रहे हैं।

देवर्षि भट्ट द्वारकानाथ जयपुर के राजाओं की तीन पीढ़ियों के कृपा-भाजन थे और उन्हें महाराजा माधोसिंह प्रथम से 'सुरसुति', महाराज पृथ्वीसिंह से 'भारती'

और महाराजा प्रतापसिंह से 'बानी' की उपाधियां प्राप्त हुई थी। इन्होंने 'रामचन्द्रिका' का प्रणयन किया। किन्तु, संगीत के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और विशद् ग्रन्थ 'राधा-गोविन्द संगीत सार' के निर्माण का श्रेय उनके पुत्र देवर्षि-भट्ट व्रजपाल को है, जिन्हें महाराज प्रतापसिंह ने बदरवास की जागीर प्रदान की। यह जागीर अब तक उनके वंशजों के पास है। सात खण्डों में लिखा गया यह विशाल ग्रन्थ आज भी शास्त्रीय संगीत का एक अपूर्व प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। इसकी प्रकाशित प्रति जयपुर की महाराजा पब्लिक लाइब्रेरी में उपलब्ध है। 'राधा-गोविन्द संगीत सार' के कुछ आगे पीछे कवि राधाकृष्ण ने 'राग रत्नाकर' नामक एक और संगीत ग्रन्थ तैयार किया।

बहुत सम्भव है कि जयपुर का 'गुणीजन खाना' जिससे उस काल की 'साहित्य और ललित कला अकादमी' समझा जा सकता है, महाराजा प्रतापसिंह के संरक्षण में भली-भांति स्थापित हो चुका था। कहा जाता है कि महाराजा विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों की 'बाईसी' रखते थे और उनके दरबार में २२ कवि, २२ ज्योतिषी, २२ संगीतज्ञ और इसी प्रकार अन्य विषयों के ज्ञाता और विद्वान थे। संगीतज्ञों में अली-भगवान और अदारंग भी थे, जो अपने समय के प्रसिद्ध स्वरकार थे।

महाराज माधोसिंह प्रथम (१७५१–१७६७) के शासन-काल में दरबार में व्रजलाल नामक एक सिद्धहस्त वीणावादक थे, जिन्हें जागीर प्राप्त हुई थी।

आधुनिक जयपुर के निर्माता महाराजा रामसिंह द्वितीय के संरक्षण में 'संगीत रत्नाकर' और 'संगीत राग कल्पद्रुम' नामक दो और प्रामाणिक संगीत ग्रन्थों की रचना की गई, जिनके प्रणेता हीरानन्द व्यास थे। पण्डित मधुसूदन सरस्वती ने, जो एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक के अवसर पर स्वर्गीय महाराजा के साथ इङ्गलैण्ड गये थे और वहां वैदिक विज्ञान पर आक्सफोर्ड व केम्ब्रिज में व्याख्यान भी दिए थे। विभिन्न शास्त्रीय राग-रागनियों का एक सचित्र 'खरड़ा' तैयार किया, जिसका नाम 'राग-रागिनी संग्रह' था। महाराजा रामसिंह के समय में ही जयपुर में रामप्रकाश थियेटर की, जो सम्भवतः राजस्थान की पहली सुनिर्मित नाट्यशाला थी, स्थापना हुई।

वंशीधर भट्ट को भी, जो अपने समय के एक श्रेष्ठ संगीतज्ञ थे, महाराजा रामसिंह से एक गांव जागीर में प्राप्त हुआ। जयपुर के निकट गालवाश्रम के राजगुरु हरिवल्लभाचार्य को भी एक बड़ी जागीर प्रदान की गई। हरिवल्लभाचार्य संगीत के पण्डित थे। सन् १६२० में उनका देहान्त हुआ।

संगीत के अतिरिक्त जयपुर के नृत्य में भी उच्चता एवं विशेषता प्राप्त की और यहां के कत्थकों ने विख्यात 'कत्थक' नृत्य शैली का विकास किया। यह शैली मुख्यतः भावात्मक है, जिसकी भाव-भंगिमा और मुद्रायें देखने ही बनती हैं।

१९४७ में भारत के स्वतन्त्र हो जाने और फिर संयुक्त राजस्थान के निर्माण के पश्चात् गायकों और नृत्यकारों के लिए यह दरबारी संरक्षण उठ गया और 'गुणीजन' खाने का भी केवल नाम ही शेष रह गया है। जयपुर के कलाकार, जिनके पूर्वजों ने इस 'कच्चे जादू' को अनेक उच्च और आदर्श परम्पराओं का प्रादुर्भाव किया था, इस प्रकार आश्रयहीन हो गये। जिन्होंने उस्ताद करामत खां को १०८ वर्ष की आयु में भी गाते हुए सुना है, वे उनकी मानसिक खिन्नता और दर्द को नहीं भुला सकते हैं। यह वयोवृद्ध संगीतज्ञ, जो 'ध्रुपद' का अद्वितीय गायक और 'बुद्धप्रकाश' का वंशज था, कहा करता था कि इस बुढापे में भी 'मेरे गले में लोच है, क्योंकि मैंने टके पाव मलाई खाई हैं।' आज जब हमारे तरुण कलाकारों के लिए सम्मानपूर्ण जीवन निर्वाह भी कठिन हो रहा है तो क्या यह सोचने की बात नहीं कि वे उन उच्च परिपाटियों और परम्पराओं का, जो उन्हें विरासत में मिली है, किस प्रकार प्रतिनिधित्व कर पायेंगे ?

जयपुर के कुछ प्रमुख कलाकारों, गायकों व वादकों को कई वर्षों से 'आकाशवाणी' का संरक्षण मिलता रहा है, किन्तु कहने की आवश्यकता नहीं, कि महीने में रेडियो पर एक-दो कार्यक्रम हो जाना कलाकार के रूप में उनके जीवित रहने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता। 'आकाशवाणी' की प्रसार-योजना के अन्तर्गत जो नये ब्राडकास्टिंग स्टेशन खुले हैं, उनमें जयपुर भी है। स्थानीय कलाकारों के लिए यह आशा करना अधिक नहीं है कि रेडियो स्टेशन जैसे सामान्य धरातल पर वे संस्कृति और ललित-कलाओं की उन समृद्ध परम्पराओं की रक्षा तथा विकास करने में समर्थ होंगे जिनके लिए जयपुर और राजस्थान अतीत-काल से विख्यात रहे हैं।

मूर्ति-कला

जयपुर की मूर्ति-कला की उच्चता और उसकी समृद्धि का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि समूचे हिन्दू संसार में प्रतिष्ठापित देवी-देवताओं की अधिकांश मूर्तियां यहीं के कलाकारों की बनाई हुई हैं। हिन्दू-धर्म में तैंतीस करोड़ देवी-देवता गिनाये गए हैं और पौराणिक काल से ही इस देश के श्रद्धालु-जनभक्ति-भावना के साथ इन देवी-देवताओं की मूर्ति-पूजा करते आये हैं। अतः भारतीय मूर्ति-कला शताब्दियों के उत्थान-पतन में होकर जीवित रही और फली-फूली। जयपुर में यह कला आज भी एक लाभदायक उद्योग के रूप में विकसित हो रही है।

जयपुर की मूर्तिकला के क्रमिक विकास का सिंहावलोकन मुगल सम्राट अकबर के प्रधान सेना-नायक राजा मानसिंह के समय से किया जा सकता है। उनके समय

में आमेर राज्य के उत्तरी भारत में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया था और आमेर का नगर इस राज्य की राजधानी के रूप में विकासोन्मुख था। राजा मानसिंह ने देश के अन्य भागों से जिन शिल्पिकों और कलाकारों को आमन्त्रित कर अपने राज्य में पुनर्स्थापित किया उनमें मूर्तिकार भी थे जो दक्षिण में माण्डू, उत्तर में नारनौल और पूर्व में मण्डावर तथा डीग के आस-पास के ग्रामों से आमेर आए थे। १७२८ ईस्वी में जब सवाई मानसिंह ने जयपुर की नई राजधानी में पदार्पण किया तो मूर्तिकार परिवार भी आमेर को छोड़कर नये जयपुर अथवा जयनगर में स्थानान्तरित हुए। इस नये नगर में पूरा एक 'वार्ड' ऐसे ही लोगों के लिए सुरक्षित किया गया था जो अपने हाथ के हुनर से जीविकोपार्जन करते थे। फलतः शिल्पिक और कारीगर, चितेरे अथवा चित्रकार, हाथी दांत की नक्काशी करने वाले और दूसरे कलाकार नगर के इसी भाग में बसे। दो रास्ते तो मूर्तिकारों से ही भर गये और उन्हीं के कारण अब भी वहां 'सिलावटों का मोहल्ला' बना हुआ है।

मुगल शासन-काल में यद्यपि ऐसे अवसर भी आये थे, जब हिन्दू मन्दिरों और उनकी पवित्र मूर्तियों का विनाश प्रायः निश्चित-सा हो गया था, किन्तु जयपुर—औरंगजेब जैसे धर्मांध शासक के समय में भी सुरक्षित ही रहा। मुगलों की मैत्री और अपने व्यक्तित्व के कारण जयपुर के राजाओं ने आमेर और जयपुर को तब राजस्थान में एक महत्त्वपूर्ण व्यावसायिक केन्द्र के रूप में विकसित किया, जिससे अनेक प्रकार के कला-कौशल, दस्तकारियों और उद्योगों को प्रश्रय मिला। इस प्रकार देश के अन्य भागों में जब अनेक पावन मूर्तियों के नष्ट होने की आशंका थी, जयपुर के मूर्तिकार निरन्तर पौराणिक कल्पनाओं को पाषाण में साकार बनाने और अन्य स्थानों की मूर्तियों की माँग को पूरा करने में व्यस्त थे।

जयपुर की इन मूर्तियों में विभिन्न प्रकार के पाषाणों का उपयोग किया जाता है। सर्वश्रेष्ठ पाषाण तो संगमरमर है, जो जयपुर से ५० मील पश्चिम में सांभर झील के उस पार, मकराना की खानों से आता है। स्थायी रूप से शुभ्र, श्वेत रंग का यह पाषाण मुलायम होता है, जिस पर कलाकार की छैनी और हथौड़ी सुगमता से अपना कौशल दिखा सकती है। रंगीन और पालिस की मूर्तियों के लिए अलवर की सीमा पर स्थित रियालो का संगमरमर काम में लिया जाता है। इस पाषाण में हल्की नीली झांई होती है। रियालो, मकराना से पर्याप्त सस्ता होता है, और भी सस्ती मूर्तियां और खिलौने काले संगमरमर के बनते हैं जो खेतड़ी के निकट भैंसलाना की खानों में निकलता है। इनके अतिरिक्त अलवर जिले के झीरी और बलदेवगढ़ का सफेद पत्थर तथा डूंगरपुर का काला पत्थर भी काम में लिया जाता है, किन्तु इन्हें संगमरमर बताना केवल व्यापारिक चाल ही है।

मंहगी और सुन्दर कलात्मक मूर्तियों के लिए मकराना के संगमरमर, किफायती काम के लिए रिवालो और जैन तीर्थङ्करों, विशेषत: शिव-लिंगम् तथा शनिश्चर की मूर्तियों, हाथियों तथा अन्य खिलौने के लिये भेंसलाना के काले संगमरमर की मांग बहुत रहती है। जयपुर के मूर्तिकार वर्ष भर अपने कारखानों में मूर्तियां तथा विभिन्न वस्तुयें बनाते रहते हैं। नवम्बर-दिसम्बर में गुजरात और बंगाल से व्यापारी यहां आते हैं और तैयार माल को खरीद ले जाते हैं।

मूर्ति निर्माण का कार्य पाषाण पर ही किया जाता है और मूर्तिकारों के औजार आज भी वही हैं जो तीन-सौ वर्ष पहले थे। छोटी-बड़ी, मोटी-पतली अनेक प्रकार की छैनियां और हथौड़े जिनकी सहायता से वे बड़ी से बड़ी पूरे आकार की मूर्तियां और छोटे-छोटे खिलौने तक बनाते हैं। कोयले अथवा पेन्सिल से पाषाण पर कृति की रूप-रेखा बनाने के साथ ही कलाकार की छैनी हथौड़ी पर आ जाती है और मूर्ति बनाई जाने लगती है। मूर्ति बन जाने पर एक विशेष प्रकार के पत्थर को उस पर घिसा जाता है जिससे वह सुचिक्कण होती है, यह कार्य महिलाएं करती हैं। इसके पश्चात् एक अन्य पत्थर को रगड़ से मूर्ति के अंशों को और निखारा जाता है, फिर पालिश की जाती है। जिन मूर्तियों के रंग की आवश्यकता होती है, उन्हें चितेरे के पास जाना होता है।

हिन्दू देवी-देवीताओं की संख्या को देखते हुए मूर्तियों के विषय का अत्यन्त व्यापक होना स्वाभाविक ही है। फिर भी चतुर्भुज नारायण, जिसके हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म है, शेषशायी-विष्णु और उनका पद-चम्पन करती हुई लक्ष्मी, सरस्वती, राम और सीता, राधा और कृष्ण, हनुमान, गरुड़ और ऋद्धि-सिद्धि के स्वामी गणेश आदि की मूर्तियों की सारे भारत से मांग होती है। जैन तीर्थङ्करों—महावीर, आदिनाथ, पार्श्वनाथ की मूर्तियों की मांग कुछ कम नहीं। श्रीलंका, बर्मा, हिन्द-चीन, और सुदूर हांगकांग तक से भगवान बुद्ध की प्रतिमाओं के 'आर्डर' आते हैं। इधर देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्र बोस और अन्य राष्ट्रीय नेताओं की पूरे आकार की या अर्द्ध-मूर्तियों की मांग बहुत है।

जयपुर की मूर्ति-कला को जीवित रखने और इसे वर्तमान व्यावसायिक रूप में विकसित करने का श्रेय यहां के स्कूल ऑफ आर्टस् को है। १८३६ में स्थापित यह स्कूल भारत का दूसरा प्राचीनतम कला-प्रशिक्षण संस्थान है। आरम्भ में यह व्यापारिक दृष्टिकोण से आरम्भ किया गया था और इस उद्देश्य में इसे पर्याप्त सफलता भी मिली। सारनाथ के नये बौद्ध-विहार में प्रतिष्ठापित बुद्ध की ७ फुट ऊंची प्रतिमा इसी स्कूल में बनायी गई थी। बनारस में स्थापित महात्मा गांधी की मूर्ति भी यहीं की देन है, जिसकी सभी ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। जयपुर की मूर्ति-कला का आधुनिक विकास नयी दिल्ली के प्रसिद्ध लक्ष्मीनारायण मन्दिर में दर्शनीय है, जहां की सभी मूर्तियां जयपुर के मूर्तिकारों की रचना है।

---

३१ | हस्त कलायें

राजस्थान की हस्तशिल्प की वस्तुयें अपनी कलात्मकता के लिये देश और दुनिया में समान रूप से लोकप्रिय रही हैं। पिछले वर्षों में कई अन्तर्राष्ट्रीय मेलों और प्रदर्शनियों में इन हस्तशिल्प की वस्तुओं को सराहा गया है और उनके परिणाम-स्वरूप इनके निर्यात में दिनों-दिन वृद्धि होती जा रही है। जयपुर के हीरे-जवाहरातों की वस्तुयें, संगमरमर की मूर्तियां, पीतल की खुदाई, कुट्टी के खिलोने, ऊनी कालीन, जोधपुर की बन्धेज और कशीदाकारी सांगानेरी वस्त्र छपाई, उदयपुर के लकड़ी के खिलौने, जैसलमेर की पत्थर की जालियाँ आदि कई हस्तशिल्प वस्तुयें अपने परम्परागत विशेषताओं को बनाये रखे हुये हैं।

ऊनी कालीन

जयपुर की बनी ऊनी कालीनें अपनी रंग-बिरंगी और आकर्षक बनावट के लिये प्रसिद्ध रही हैं। इंग्लैण्ड, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस और अन्य कई यूरोपीय देशों को निर्यात की जाने वाली ये कालीनें लगभग २०० वर्षों से जयपुर में बनाई जाती रही हैं। पिछले लगभग ५० वर्षों में कालीन-निर्माण की दिशा में विशेष प्रगति हुई है। कालीन उद्योग के लिये ऊन एक प्रमुख कच्चा माल होता है। ऊन में यह विशेषता होती है कि इसे किसी भी मोटाई तक गूंथा जा सकता है और कोई भी रंग इस पर आसानी से चढ़ाया जा सकता है। बीकानेरी भग्रा ऊन इस कार्य के लिए विशेष उपयोगी मानी जाती है।

पीतल की कलात्मक वस्तुयें

पीतल की कलात्मक वस्तुओं के लिये जयपुर सम्पूर्ण देश का एक प्रमुख केन्द्र है। मुरादाबाद और बनारस देश के अन्य प्रमुख केन्द्र हैं।

पीतल के वर्तनों पर कलात्मक खुदाई का यह काम जयपुर में लगभग दो सौ वर्षों से हो रहा है। अधिकांश कारीगर मुरादाबाद से ही आकर बसे हैं। इस कला को देखने का सर्वोत्तम स्थान मिर्जा इस्माईल रोड पर स्थित आलावख्श का कारखाना है। पीतल की कलात्मक रंगीन खुदाई की कई प्रसिद्ध वस्तुयें जयपुर म्यूजियम में भी रखी हुई हैं।

चन्दन और हाथी दाँत की वस्तुयें

चन्दन और हाथी दांत की वनी विभिन्न वस्तुयें विदेशी पर्यटकों में विशेष रूप से लोकप्रिय होती जा रही है। ऊँट पर ढोलामारू, अम्बाबाड़ी हाथी आदि कई वस्तुयें हाथी दांत और चन्दन की खुदाई की प्रसिद्ध वस्तुयें मानी जाती हैं। परन्तु अब बिजली के टेबिल लेम्ब, कानों में पहनने के इयररिंग्ज, कागज काटने के कलात्मक चाकू आदि भी बनाये जाने लगे हैं। घर की सजावट के काम आने वाली कई वस्तुयें भी बनाई जाने लगी हैं।

ब्ल्यू पॉटेरी

काँच, गोंद, मुलतानी मिट्टी, सज्जी आदि के मिश्रण से बनाये जाने वाले वर्तनों पर विभिन्न प्रकार के मोहक वेल-बूँटे बनाये जाते हैं।

ब्ल्यू पॉटेरी के लिये जयपुर वर्षों तक मशहूर रहा। १६३५ तक इन वस्तुओं की विदेशों में बड़ी माँग रही है, परन्तु इसके बाद इस काम को करने वाले अधिकांश कारीगर यहां से वाहर चले गये। जो कुछ थोड़े वहुत कारीगर बचे थे, उनके सहयोग से राज्य हस्तकला मण्डल ने इस कला को पुनः जीवित करने की ओर हाल ही में कुछ प्रयत्न आरम्भ किये हैं।

लाख की बनी चूड़ियां

महिलाओं द्वारा हाथ में पहनी जाने वाली लाख की वनी चूड़ियां सम्पूर्ण देश में सभी वर्ग की महिलाओं में समान रूप से लोकप्रिय हुई हैं। ये चूड़ियां विभिन्न रंगों और डिजाईनों में बनती हैं।

लाख की चूड़ियां बनाने की विधि यह है कि पहले लाख को पानी में कुछ देर तक भिगो दिया जाता है। कुछ देर पानी में भिगोने के वाद लाख को वार-वार घोया जाता है। लाख पर चिपटे अशुद्ध तत्वों को इस प्रकार दूर कर दिया जाता है। वारीक रेत और अन्य पदार्थों के साथ इस लाख को फिर गर्म किया जाता है। जब लाख पिघल जाता है तव इसे कूट-कूट कर अन्य पदार्थों के साथ मिला दिया जाता है। तव इसके तार खींच-खींच कर लाख वढ़ाई जाती है।

कसीदाकारी की जूतियाँ

आमतौर पर 'जूतियाँ' या 'मोजरी' कहलाने वाले जूते अपनी आकर्षक बनावट के कारण तथा साथ ही वजन में हल्के और पहिनने में सुविधाजनक होने के कारण बहुत ही लोकप्रिय हुए हैं। इन जूतियों के नीचे का भाग तो चमड़े का ही होता है परन्तु ऊपर के मुख्य भाग के चमड़े के ऊपरी सतह पर कपड़ा या मखमल लगा होता है। इस कपड़े या मखमल पर बारीक डिजाईन की कसीदाकारी की जूतियां बनाने का यह उद्योग शहरों और गाँवों में समान रूप से फैला हुआ है, परन्तु जोधपुर और जयपुर की बनी जूतियाँ अधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय हुई हैं।

संगमरमर की मूर्तियाँ

जयपुर की बनी संगमरमर की मूर्तियाँ अपनी सजीव और कलात्मक बनावट के कारण सम्पूर्ण भारत में लोकप्रिय है। जयपुर के मूर्तिकारों द्वारा बनाई गई प्रसिद्ध मूर्तियां भारत के कई नगरों के मन्दिरों और सार्वजनिक स्थानों पर स्थित हैं। सारनाथ के नवीन बौद्ध विहार में प्रतिष्ठापित बुद्ध की ७ फुट ऊँची मूर्ति, नई दिल्ली, के प्रसिद्ध लक्ष्मीनारायण मन्दिर की मूर्तियां, बनारस में स्थापित महात्मा गांधी की मूर्ति आदि अनेकों मूर्तियां प्रसिद्ध हैं।

जयपुर के निकट ही मकराना में संगमरमर पत्थर की खानों से निकाला जाने वाला सफेद संगमरमर पत्थर इन मूर्तियों के लिये अधिक उपयुक्त माना जाता है। खेतड़ी के निकट भैंसलाना के काले संगमरमर पत्थर, डूंगरपुर के काले पत्थर, भीरी और बलदेवगढ़ के सफेद पत्थर से भी मूर्तियाँ बनाई जाती हैं। कुशल मूर्तिकारों का आज भी यहाँ अभाव नहीं है और इस उद्योग की उज्जवल परम्पराओं को भविष्य में भी बनाये रखने में सक्षम और समर्थ हैं।

आधुनिक मोड़ देने की आवश्यकता

विदेशों में हुई विभिन्न प्रदर्शनियों में राजस्थान की इन हस्त-शिल्प वस्तुओं की काफी सराहना हुई है और इनके प्रति जो दिलचस्पी प्रकट की गई है, उससे स्पष्ट है कि हमारे हस्त-शिल्पों में निर्यात की महान् सम्भावनायें निहित हैं। यदि इनकी डिजाईनों को विदेशों की पसन्द के अनुकूल बनाया जा सके तो इन सम्भावनाओं का क्षेत्र और भी अधिक व्यापक बनाया जा सकता है। इस दृष्टि से यह उचित और उपयोगी होगा कि एक डिजाइन केन्द्र की स्थापना की जाय तो हमारे हस्त-शिल्प कलाकारों को समुचित प्रशिक्षण देकर ऐसी वस्तुयें बनाने की प्रेरणा और प्रोत्साहन दें जो विदेशी लोगों की पसन्द के अनुकूल हो। हमारी हस्त-शिल्प के वर्तमान प्रवाह

को इस प्रकार आधुनिक मोड़ देने के ठोस प्रयत्नों से विदेशी पर्यटकों और बाहरी देशों में इन्हें अधिक लोकप्रिय बनाया जा सकता है। इससे विदेशी मुद्रा अर्जन करने में हमारी हस्त-शिल्पों की क्षमता में वृद्धि होगी।

राजस्थान लघु उद्योग निगम को जब से हस्त-शिल्पों के विकास और विस्तार का उत्तरदायित्व सौंपा गया है, तब से उसने इस क्षेत्र में उचित पहल की है।

वस्त्रों की छपाई

हस्तशिल्प के क्षेत्र में राजस्थान की बनी वस्तुओं ने अपने कलात्मक मूल्यों और उपयोगिता के कारण देश और विदेश में समान रूप से लोकप्रियता प्राप्त की है। विदेशों में आयोजित कई विश्व मेलों और प्रदर्शनियों में इन वस्तुओं के प्रति जो दिलचस्पी प्रकट की गई है, उससे निर्यात की संभावनाएं अधिक स्पष्ट हुई हैं। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में हमारी हस्तशिल्प वस्तुओं को लाने की दृष्टि से यह उचित और आवश्यक है कि इनकी डिजाइनों और किस्म में सुधार की दृष्टि से इन्हें आधुनिक मोड़ दिया जाय।

कपड़े पर छपाई का सादगी के साथ हाथ से किया हुआ सांगानेरी काम इतने उच्च कोटि का होता है कि अपनी सानी नहीं रखता। अनेक चमकीले रंगों में वस्त्रों पर बनी डिजाइनों की छटा अनुपम होती है। इनमें रंगों के समन्वय तथा विविधता के द्वारा बड़ा ही आकर्षण और निरालापन आ जाता है। लाल, हरा, अंगूरी, नीला, काला, गुलाबी व पीला आदि अलग-अलग रंगों की मिली-जुली छटा बस देखते ही बनती है। वास्तव में यह काम बड़ा मनोहारी होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि इस कार्य को करने वाले लोग इसमें पूर्णतः रमे हुए हैं, और इस कला को अपनी पवित्र निष्ठा के साथ सजोये हैं।

वस्त्रों पर छपाई का काम करने वालों की 'छीपा' जाति कहलाती है, और अनन्त काल से ही इस कार्य को करती आ रही है। ये लोग सदा से ही कल्पना के घनी रहे हैं तथा नई-नई डिजाइनो का आविष्कार करते रहते हैं डिजाइनों के ठप्पे अथवा ब्लाक लगभग ५०० वर्ष पुराने भी मिलते हैं। अपने कुशल हाथों और सूझ-बूझ के बल पर इन सीधे-सादे लोगों ने बड़े धैर्य और निष्ठा के साथ सदियों से अपनी कला को जीवित रखा है। इसीलिए तो इस पर जो पुरातन की छाप है वह चिरकाल तक नूतन बनी रह कर आधुनिकता के सामने दिव्य आलोक प्रशस्त करती रहेगी। इन कलाकारों ने भी अब नए वातावरण के अनुरूप एवं लोगों की रुचि के अनुसार डिजाइनें तैयार करना प्रारम्भ कर दिया है। इससे ये सहज ही जन-मानस में बसते जा रहे हैं, और इन्हें बड़ी लोकप्रियता प्राप्त हो रही है। इसीलिये तो आज हाथ की

छपाई के ये वस्त्र भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी काफी ख्याति अर्जित कर चुके हैं और इनकी मांग निरन्तर बढ़ रही है।

हाथ की छपाई के ये वस्त्र 'छींटों' के नाम से जाने जाते हैं। छपाई परम्परागत तरीकों से ही होती है। सदियों से इस कार्य को करते आ रहे इन कलाकारों के कुशल हाथों में कला की अभिव्यक्ति एक पैतृक देन के रूप में फलीभूत हुई है। वैसे सारी प्रक्रिया में पूर्णतया सादगी है और कोई बड़ा रहस्य नहीं है, किन्तु सब-कुछ कला के उपासक इन लोगों के कुशल हाथों में समाहित है। निश्चय ही छींटों को तैयार करने में कारीगर के हाथ की छपाई और साधना का ही महत्त्व है। यही तो वह विशेषता है, जिसके कारण इनके प्रति इतना आकर्षण स्वतः ही होता है। इन वस्त्रों को घर की सजावट, पर्दों, सोफा-सैटों के कवर, चद्दरें, लिहाफ, बच्चों की बुशर्ट स्कार्फ, फ्राक, साड़ियाँ, ब्लाऊज, शर्ट-पीस, थैलों आदि के काम में लिया जाता है। विदेशी पर्यटकों के लिए तो ये बड़े ही आकर्षण की वस्तु बन गये हैं और इनका काफी तादात में विदेशों को निर्यात होता है।

छपाई के लिए वनस्पति रंग प्रयुक्त होते हैं, जो कि इन कारीगरों द्वारा ही आवश्यकतानुसार तैयार कर लिए जाते हैं। परन्तु खास बात तो यह है कि इन वस्त्रों में स्वाभाविक रूप से प्राकृतिक रंग यहां साँगानेर के पास ही बहने वाली सरस्वती नदी के पानी में धोने से स्वतः आ जाता है। इस नदी के पानी में धोने से कपड़े पर अपने आप ही हल्का-सा गुलाबी रंग चढ़ जाता है। अरुणिमा की यही गुलाबी आभा यहां के कपड़ों की विशेषता है। छपाई के लिए वस्त्रों को बार-बार करीब १५ दिन तक एक प्रकार के घोल में नित्य भिगो कर सुखाया जाता रहता है। इस मिश्रण में चूना, अलसी का तेल व पानी क्रमशः एक, दो व चार के अनुपात की मात्रा में होते हैं। तदुपरान्त 'हरड़' के पानी में डुबो कर वस्त्र को पुनः सुखा लेने के पश्चात् वह छपाई करने योग्य हो जाता है। छापने के रंग हल्दी, फिटकरी, मजीठ एवं तेल आदि से तैयार किए जाते हैं। लकड़ी के बने हुए ब्लाक अथवा ठप्पों जिन पर विभिन्न प्रकार की डिजाइनें, बेल-बूटे, आकृतियां अंकित रहती हैं, उन पर वांछित रंग लगाकर उन्हें वस्त्रों पर अंकित कर दिया जाता है। छपाई हाथों से की जाती है और इसमें कपड़े पर ठप्पों को सही तरह रखने तथा पर्याप्त मात्रा में रंग लगाने, आदि में कलाकार की कुशलता निहित है।

कपड़े पर सुनहरी अथवा चाँदी का काम भी छपाई का होता है। यह कार्य जयपुर में भी काफी होता है। इसे भी इन सांचों अथवा ठप्पों के द्वारा ही किया जाता है तथा छपाई का तरीका वैसा ही होता है, जैसा कि सामान्यतः छपाई होती है। इसमें चमक-दमक ज्यादा रहती है। छपाई का काम कच्चा नहीं होता। वैसे तो जयपुर के विभिन्न मोहल्लों में वस्त्रों की रंगाई-छपाई का काम होता है, किन्तु छींटों

का मुकाम पुरानी बस्ती में अधिकतर है। ये लोग भी छपाई से पूर्व कपड़ों सरस्वती नदी के पानी में सांगानेर धो लाते हैं। तत्पश्चात् छपाई की जाती हमारे गांवों में तो यह ग्राम पौशाक है। स्त्रियां छींटों के घाघरे, चोली, कब्जे, लू अथवा ओढ़नियाँ पहिनती हैं। छपाई की साड़ियों का प्रचलन भी अब तो बहुत गया है, तथा मध्यम वर्ग की स्त्रियां भी इन्हें काफी पसन्द करने लगी हैं। सादगी-‍ होने के कारण गांवों में लोग सादा रेजी के कपड़े पसन्द करते हैं, किन्तु साफे, दुप अंगोछे, सुवाफी आदि छपाई के ही अधिक चलते हैं। शहरों में ही अब तो इन्हें ब पसन्द किया जा रहा है और इनके वस्त्र, बुस्शर्ट, शर्ट पीस, स्कार्फ, थैले आदि ‍ चलते हैं।

बन्धेज के काम में भी जयपुर अग्रणी रहा है। जयपुरी बन्धेज की साड़ि सर्वत्र काफी लोकप्रिय हैं। इनकी कलात्मकता तथा रंगों के निखार के लिए ये विख्य हैं। सूती, रेशमी (असली व नकली), जार्जट, वायल आदि वस्त्रों से साड़ियां अथ साफे बनाये जाते हैं। लहरिया मोठड़ा और चून्दड़ी इन तीन शैलियों में साड़ियों ‍ रंगा जाता है, तथा उनमें डिजाइनें नई-नई तथा लोगों की रुचि के अनुकूल बन जाती हैं। इससे इनकी लोकप्रियता उत्तरोत्तर बढ़ रही है।

इस काम में कलाकार डिजाइनें बना कर डोरों की सहायता से गांठे ल‍ देता है। कपड़े में घुण्डिया लगा देने के पश्चात् उन्हें डिजाइन के अनुसार रंग दिय जाता है तथा शेष भाग पर भी आवश्यकतानुसार रंग लगा देते हैं। रंग विभिन्‍ रंगों के 'पैड' द्वारा कपड़े को छूकर कई डंडों में लगाया जाता है। सूखने के उपरान घुण्डियों को खोल देते हैं और कपड़े पर पानी के छींटे देकर उसे साफ कर लिय जाता है। साधारण रूप से इस प्रकार कपड़े पर प्रेस कर ली जाती है तथा कपड़ तैयार हो जाता है।

सांगानेरी छपाई और जयपुरी बन्धेज की ख्याति न केवल देश के विभिन्न भागों में ही है, अपितु विदेशों में भी काफी फैल चुकी है। इसकी विदेशों में बड़ी मांग रहती है और काफी निर्यात होता है। खास कर पर्यटकों के लिये तो ये बड़े आकर्षण की वस्तु बन गए हैं। जयपुर की विशिष्ट कलात्मक वस्तुओं में इनका स्थान है तथा इनका विकास सुनियोजित ढंग से किए जाने की आवश्यकता है। इसके लिए बखूबी गुंजाइश है। राज्य-सरकार इस दिशा में जागरूक रहकर ऐसे उदीयमान कलाकारों उत्पादकों को यथोचित सहयोग व सहायता प्रदान करती है। इससे इन परम्परागत कलाओं का भरपूर विकास हो सकेगा, जो न केवल देश में ही ऊँचा स्थान रखती है, अपितु दुर्लभ विदेशी मुद्रा के अर्जन का एक अच्छा साधन बन गई है। निश्चय ही इनका भविष्य उज्जवल है।

३२ | लोकोत्सव

भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं के अन्तर्गत जो त्योहार अथवा लोकोत्सव सार्वदेशिक हैं, वे तो समूचे राजस्थान में उल्लास एवं उमंग के साथ मनाये ही जाते हैं, इसके अतिरिक्त उनके ऐसे त्योहार भी हैं, जो इस प्रदेश की लोक-सस्कृति के परिचायक हैं।

इन त्योहारों का जन्म यहां की प्राकृतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों से हुआ है। रेगिस्तान होने के कारण यहां वर्षा ऋतु का सदैव बड़ा महत्त्व रहा है। वर्षा के आते ही यहां के निवासी आनन्द और मौज मनाने की मनःस्थिति में आ जाते हैं। यही कारण है कि यहां वर्षा ऋतु में अनेक उत्सव और त्योहारों का आयोजन होता है। इन सभी लोकोत्सवो का इतिवृत्त संक्षेप मे यहां प्रस्तुत है :—

तीज

"तीज त्योहारां बावड़ी ले डूबी गणगौर" अर्थात् तीज वापिस त्योहारों को लेकर आई और गणगौर उनको लेकर डूब गई। राजस्थान में गर्मियों के दिनों में कोई त्योहार नहीं मनाया जाता। दो-तीन महीने तक मनोरंजन की दृष्टि से सामाजिक जीवन में नीरसता आ जाती है। तीज आने के साथ ही त्योहारों की शुरुआत होती है।

तीज के त्योहार के पहले से ही चौमासा के गीत प्रारम्भ हो जाते हैं। ये चौमासा के गीत, मारवाड़, बीकानेर, जैसलमेर और शेखावाटी के शुष्क प्रदेशों में विशेष गाये जाते हैं। ये इलाके वर्षा का मूल्य ठीक आंक सकते हैं। कुछ प्रदेशों में तो वर्षा पहले से ही गीत शुरू हो जाते हैं और कुछ इलाकों में वर्षा के शुरू होते ही गीत प्रारम्भ होते हैं। अपने-अपने मोहल्लों में स्त्रियों के झुण्ड गीत गाना प्रारम्भ कर देते हैं गांव-गांव और कस्बों-कस्बों में जब ये गीत गाये जाते है तब लोक-जीवन में

उल्लास और उत्साह आ जाता है और सरसता उमड़ पड़ती है। कालिदास के यक्ष को जब आषाढ़ में बादल दिखलाई दे गया था तो उसने मेघ के द्वारा संदेश भेजा। बादल देखते ही उसकी विरह व्यथा जाग उठी। बरसात के लिये तरसने वाले प्रदेश तो वर्षा का कैसे उपकार नहीं मानें।

किसी किसी इलाके में तीज के त्यौहार की समाप्ति पर बरसात के गीत समाप्त कर दिये जाते हैं और किसी-किसी में समस्त चौमासे (आषाढ, श्रावण, भादवा, आसोज) में गाये जाते हैं। तीज का त्यौहार मुख्यतः बालिकाओं और नव-विवाहितों का त्यौहार है। इस त्यौहार के अवसर पर स्त्री-समुदाय नये वस्त्र धारण करता है और घरों में पकवान बनता है। एक दिन पूर्व बालिकाओं का सिंधारा (शृंगार) किया जाता है। "आज सिंधारा तड़कै तीज, छोरियां नैं लेगो गूगो पीर' उक्ति भी बालिकाएं कहती हैं। हाथों-पैरों पर मेंहदी मांडी जाती है। विवाहिता बालिकाओं के ससुराल में 'सिंधारा' वस्त्र आदि भेंट-स्वरूप उनके माता-पिता भेजते हैं। तीज के त्यौहार पर लड़की अपने पिता के घर आती है।

इस त्यौहार के दिन किसी सरोवर के पास मेला भरता है। इसमें झूला डाला जाता है। सभी लोग उस पर झूलते हैं। गणगौर की प्रतिमा भी कहीं-कहीं निकाली जाती है। तीज को कहीं-कहीं हरियाली तीज भी कहते हैं।

सिरोही जिले में तीज की पूजा के अन्तिम दिन विवाहिता बहनों के भाई अपनी बहिनों को भेंट और पोशाक देते हैं। यदि सगा भाई न हो तो कुटुम्ब कबीले का भाई यह कार्य सम्पन्न करता है। इसके पीछे एक दर्द-पूर्ण कथा है, कि अन्तिम पूजा के दिन पुराने जमाने में किसी बहिन का भाई उपहार देने नहीं आया। उसने उसकी बड़ी प्रतीक्षा की। अन्त में वह इस मानसिक वेदना के कारण कि उसके भाई के हृदय में अपनी बहिन के प्रति कोई प्यार नहीं है, जल में गिर पड़ी उसी समय उसका भाई पहुँचा भी किन्तु वह तो तब तक जल-मग्न हो गई थी।

श्रावण शुक्ला तीज को छोटी तीज मनाई जाती है और बड़ी तीज भादवे के महीने में। छोटी तीज ही अधिक प्रसिद्ध है और इसी पर प्राय सभी मेले लगते हैं। इन मेलों में ऊंटों और घोड़ो की दौड़ होती है जिसका दृश्य दर्शनीय है।

होली

होली का त्यौहार भी आदि त्यौहार है। इसके पीछे ऋतु-परिवर्तन और रबी फसल की कटाई है। जाड़े की कठिन और कष्टदायक ऋतु के बाद बसन्त का आगमन होता है और सर्वत्र सुहावना वातावरण हो जाता है।

होली के त्यौहार से कुछ दिन पूर्व गोबर के बड़कुल्ले बनाये जाते हैं। उनकी माला तैयार की जाती है। गोबर की ही होली की प्रतिमा बनाई जाती है। एक माला को थोड़ा जलाकर (होली की अग्नि में) निकाल भी लेते हैं और वह घर में टंगी रहती है।

होलिका दहन के दिन होली जलने से कुछ समय पूर्व उस सामग्री का पूजन होता है। उसमें होली खांडा भी रहता है। ढाल और तलवार भी लकड़ी के रहते हैं। ये उपकरण शौर्य और युद्ध की स्मृति करवाते हैं। गोबर आर्य संस्कृति की याद दिलाता है जिसमें गौ और खेती की प्रधानता है।

फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा को होली का त्यौहार मनाया जाता है। राजस्थान के कुछ भागों में दुलण्डी के दिन अभिवादन करने और मन्दिरों में जाने की प्रथा है। इस दिन सभी लोग नृत्य-गायन द्वारा अपना और दूसरों का मनोरंजन करते हैं।

दीपावली

राजस्थान में दीपावली का त्यौहार बड़े उत्साह से मनाया जाता है। १०-१५ रोज पहले ही घरों और दुकानों की मरम्मत और सफाई की जाती है। काम में आने वाले औजार, कलम, दवात, आदि की सफाई होती है। काली रोशनाई तैयार की जाती है। वही खाते नये डाले जाते हैं और पिछला हिसाब चुकाये जाने का तकाजा किया जाता है।

दीपावली से दो दिन पूर्व एक दीपक जलाया जाता है। इसे 'जम दिया (यम दीप) कहते हैं। उसमें एक कोड़ी भी डालते हैं। इसके पास बैठे रहना पड़ता है। घर के बाहर धूल की ढेरी बनाकर यह जलाया जाता है और हवा से उसे बचाने की पूर्ण चेष्टा की जाती है। दूसरे दिन छोटी दिवाली मनाई जाती है। इसमें ११ दीपक जलाये जाते हैं। कार्तिक कृष्णा अमावस्या का अंधकार दूर करने के लिये बड़ी दिवाली लगभग समस्त हिन्दुस्तान में मनाई जाती है। छोटी दिवाली को तेल की चीजें बनाई जाती हैं। और बड़ी दिवाली को तेल और घी दोनों की। राजस्थानी पैदावार कंरिया, गुंवार की फली आदि विशेष रूप से तल कर खाई जाती हैं और शकुन माना जाता है। खरीफ की फसल लगभग कट जाती है। राजस्थान के अधिकांश भागों में केवल यही एक फसल होती है। अतएव लोगों को उत्साह भी रहता है। बड़ी दिवाली को कहीं ४१, कहो ५१ और कहीं १०१ दीपक जलाये जाते हैं। दीपावली पूजन रात्रि को लगभग ८-९ बजे होती है। पूजन के बाद भोजन होता है। घर का बड़ा-बूढ़ा श्रद्धा और लगन से पूजन करता है। नंगे सिर पूजन नहीं होता।

सभी बारी-बारी से लक्ष्मीजी की प्रतिमा अथवा चित्र को नमस्कार करते हैं। लक्ष्मीजी की छपी हुई या चित्रित तस्वीरें बिकती हैं। रुपये, मोहर आदि उनके सामने रखे जाते हैं।

एक दीपक रात भर लक्ष्मीजी के सामने जलता रहता है। घरों पर दीपक जला कर रख दिये जाते हैं। पूजन के बाद बाजार में लोग रामरामी (नमस्कार) अपने मित्रों एवं सम्बन्धियों से करते हैं।

गोवर्धन पूजन अथवा अन्नकूट

दीपावली का दूसरा दिन अर्थात् कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा अन्नकूट अथवा गोवर्धन पूजन का दिन होता है। मन्दिरों में अन्नकूट (भोज) तैयार होता है। कुछ घरों में वह मन्दिरों से भेजा जाता है और बदले में उन्हें रुपया, इकन्नी, चवन्नी यथा शक्ति भेंट स्वरूप दे देते हैं। इसी दिन घर के आगे गोबर डाला जाता है। उसकी पूजा होती है। दूसरे शब्दों में यह गाय की महत्ता बतलाता है। गोवर्धन का मतलब ही है, गोवंश की वृद्धि। केन्द्रीय सरकार पिछले पांच वर्ष से इसी दिन से गो समृद्धि सप्ताह मना रही है, जो गोपाष्टमी तक चलता है। इसी गोवर्धन के दिन राजस्थान भर में छोटे, बड़ों के चरणों में नये वस्त्र पहन कर पड़ते हैं। इस अवसर पर जाति-पांति कम बरती जाती है। यद्यपि अपनी जाति वाले अत्यन्त निकट वालों के ही घर जाते हैं फिर भी आजकल जाति-पांति का भेद कुछ कम होता जा रहा है। प्रीति सम्मेलन भी इसी दिन कहीं-कहीं मनाये जाते हैं। इस दिन विरोध, वैर भुला दिये जाते हैं और सभी जैरामजी की अथवा नमस्कार, नमस्ते करते हैं। जैसा प्रेम का वातावरण इस त्यौहार पर देखा जाता है वैसा और किसी त्यौहार पर नहीं। चरण स्पर्श इस त्यौहार पर ही अधिक होता है। होली पर भी सर्वत्र नहीं होता। अतएव गौ और गोबर तथा समृद्धि तीनों का नाता यह त्यौहार है। स्त्रियां भी अपने सम्बन्धियों के घरों में मिलने-जुलने के लिए जाती हैं।

दीपावली का त्यौहार प्रेम और उल्लास का त्यौहार है। गाने-बजाने होते है। रोशनी होती है। गोवर्धन पूजन के दिन कहीं-कहीं बछड़े का पूजन कर स्त्रियां उससे हल जुतवाने का शकुन करती हैं और गीत गाती हैं। बैलों के सींग रंगे जाते हैं और रंगों के छापे उनके बदन पर दिये जाते हैं। भरतपुर, अलवर, उदयपुर की ओर यह प्रथा विशेष है।

दीपावली की रात्रि को हीड़ देने जाने की प्रथा राजस्थान में कई स्थानों पर प्रचलित है। वे लोग गौ पूजन करते हैं। गायों के गले में घंटियां बांधते हैं और हीड़ का एक विशेष गीत गाते हैं।

मेवाड़ में दीवाली से १५ दिन पहले ही लड़के और लड़कियों की टोलियां प्राय: सबके घर गाती हुई निकल जाती हैं। स्त्रियों के द्वारा भी दिवाली के गीत गाये जाते हैं। लड़कों के द्वारा 'लोवड़ी' या 'हरणी' गीत गाये जाते हैं और लड़कियों द्वारा 'घड़ल्यो'।

शीतलाष्टमी

होली पूजन से आठवें दिन यह त्योहार पड़ता है। शीतला का तात्पर्य शीतल करने वाली से है। यह माता, चेचक, बोदरी आदि देवी के रूप में पूजी जाती है। प्रत्येक कस्बे अथवा गांव में इसके मन्दिर बने रहते हैं।

इसी दिन घुड़ले का त्योहार मनाया जाता है। स्त्रियां इकट्ठी होकर कुम्हार के घर जाती हैं और छेदों से युक्त एक घड़े में दीया रखकर अपने घर गीत गाती हुई वापिस आती हैं। यह घड़ा बाद में तालाब में बहा दिया जाता है। कहा जाता है कि मारवाड़ के पीपाड़ नामक स्थान पर कुछ स्थान पर कुछ स्त्रियां एक बार तालाब पर गौरी पूजार्थ गई थीं। अजमेर का सूबेदार मल्लूखां उन्हें ले गया। जोधपुर नरेश राव सातलजी को जब यह ज्ञात हुआ तब उन्होंने उसका पीछा किया। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में मल्लूखां के सेनापति घुडलेखां का सिर तीरों से छेद डाला गया और राजा की अपने राज्य की स्त्रियों को बचाकर ले आये। कहा जाता है कि उस सिर को लेकर स्त्रियां गांव में घूमी थीं।

गणगौर

गणगौर का त्यौहार राजस्थानी स्त्रियां बड़ी निष्ठा और श्रद्धा से मनाती हैं। राजस्थान में कुमारियों का ऐसा विश्वास है कि इस व्रत के करने पर उनको श्रेष्ठ पति मिलेगा। सधवा स्त्रियों का यह विश्वास रहता है कि उनका पति चिरायु होगा। लोक गीतों में तो यहां तक वर्णन मिलता है कि यदि तू रुठी हुई इस त्यौहार को मनायेगी तो तुझे रुठा पति मिलेगा। इसलिए बड़ी उमंग और उत्साह से यह त्यौहार उनके द्वारा मनाया जाता है।

इस त्यौहार से लगे हुए गीतों की संख्या राजस्थानी त्यौहारों में सबसे अधिक है। लगभग ३५ की संख्या के गीत इसी त्यौहार से सम्बन्धित मिलते हैं।

होलिका दहन के बाद से ही गणगौर का त्यौहार प्रारम्भ हो जाता है। होली की राख के पिण्ड बांधे जाते हैं। सात दिनों तक उनकी पूजा होती है। आठवें दिन शीतला पूजने के बाद टीलों से बालू मिट्टी तथा कुम्हार के यहां से चिकनी मिट्टी लाकर गौर की प्रतिमा बनाई जाती है। ईसरदास, कानीराम, रोवां, गौर और मालण की भी प्रतिमाएं निर्मित की जाती हैं। जौ बो दिये जाते हैं। इन्हें भंवारा कहते हैं। गौर की पूजा १८ दिन तक की जाती है। गौर का त्यौहार चैत्र बुदी १ से शुरू होकर चैत्र शुक्ला तृतीया को समाप्त होता है। चैत्र शुक्ला १ से ३ तक यह मेला समस्त राजस्थान में लगता है।

गणगौर के अवसर पर स्त्रियां घूमर नृत्य करती हैं। उदयपुर, बून्दी में ये घूमरें बहुत ही कलापूर्ण होती हैं।

सिरोही में गौरी की प्रतिमाएं शहर की गलियों में से निकाली जाती हैं। स्त्रियां गीत गाती हैं और गरबा नृत्य करती हैं।

पौराणिक आधार पर यहां ऐसा विश्वास है कि पार्वती (शिव की स्त्री) के अपने पिता के घर वापिस लौटने के उपलक्ष्य में उसका स्वागत और मनोरंजन अपनी सखियों द्वारा हुआ था, तब से गणगौर का त्यौहार मनाया जाता है। गणगौर की सवारी जयपुर और बीकानेर में धूमधाम से निकलती है।

अक्षय-तृतीया

राजस्थान के जीवन में खेती का महत्त्व है ही। उत्तरी राजस्थान के भागों में तो एक फसल होती है और वह भी बीकानेर, जैसलमेर सरीखे इलाकों में बहुत ही कम। अतएव यहां खेती लोगों के जीवन का प्राण है। अक्षयतृतीया के दिन शाम को लोग हवा का रुख देखकर शकुन लेते हैं।

बाजरा, गेहूं, चना, तिल, जौ आदि सात अन्नों की पूजा कर शीघ्र ही वर्षा होने की कामना की जाती है। कहीं-कहीं घरों के द्वार पर अनाज की बालों आदि के चित्र बनाये जाते हैं। स्त्रियां मंगलाचार के गीत गाती हैं और मनोविनोद की दृष्टि से स्वांग भी छोटे बच्चों के रचाये जाते हैं। लड़कियां दूल्हा-दुलहिन का स्वांग भरती हैं। यह त्यौहार बैशाख मास की शुक्ला तीज को मनाया जाता है।

जिला नागौर में इस दिन लोग अपने मित्रों और सम्बन्धियों को निमन्त्रित करते हैं और भोज होता है। अपने अतिथियों की अफीम, गुड़ और अन्य भेंटों से मनुहार करते हैं।

सिरोही में इस दिन शकुन लेते हैं। लोगों का ऐसा विश्वास है कि इस दिन शकुन अच्छे हो जाते हैं तो सारा वर्ष आनन्द से बीतता है और इस दिन अपशकुन होने पर कष्ट ही पल्ले पड़ते हैं। यहां एक रीति यह है कि लोग सुबह ही जंगल में शिकार के लिये जाते हैं और जब तक शिकार नहीं हो जाता तब तक लौटते नहीं।

गणेश चतुर्थी

गणेश चतुर्थी का महत्त्व इस दृष्टि से सबसे अधिक है कि यह बालकों अथवा बच्चों का विशेष त्यौहार है।

गणेशजी का यह त्यौहार पाठशालाओं के द्वारा मुख्यतः मनाया जाता है। गणेश चतुर्थी से दो दिन पूर्व बच्चों का सिधारा किया जाता है। ये नये वस्त्र धारण करते हैं और उनके लिए घर पर पक्का भोजन भी बनाया जाता है। इस दिन बच्चों का विशेष सम्मान किया जाता है।

लगभग एक मास पूर्व से ही पाठशालाओं में चहल-पहल हो जाती है। बच्चे चेहरे बनाते हैं और प्रत्येक सहपाठी के घर जाते हैं। ब्राह्मण घरों में प्राय गुरुजी नारियल ही ग्रहण करते हैं। शेष घरों में आमतौर से एक रुपया व नारियल लिया जाता है। शिष्य और गुरु एक-दूसरे के तिलक करते हैं। साथ में बच्चे मनोविनोद के गीत गाते हैं। सरस्वती सम्बन्धी गीत भी गाये जाते हैं और गणेशजी सम्बन्धी भी। ये चेहरे लयबद्ध उछलते-कूदते चलते हैं। इनमें बड़ा उल्लास रहता है। साथ में गणेशजी, सरस्वती की मूर्ति भी रहती है।

यह त्यौहार भादवा सुदी चौथ को मनाया जाता है। जैनियों के लिये भी यह पवित्र दिन है। कुछ जैन सम्प्रदाय के लोग इसे पंचमी को भी मनाते हैं।

रामनवमी

रामनवमी श्री रामचन्द्रजी का जन्म-दिवस है। इस दिन मन्दिरों में भजन होते हैं और रामायण की कथा पढ़ी जाती है। लोग पूरी कथा सुनकर घर आते हैं। कहीं-कहीं रामधुन भी गायी जाती है। इस दिन व्यापारी वर्ग कहीं-कहीं अपने बही-खातों को भी बदलते हैं। इस प्रकार व्यापारियों के लिये भी यह विशेष दिन है।

तुलसी पूजन

कन्यायें एक महीने तक इसकी पूजा करती हैं। तुलसी-पूजन मन्दिर में ही होता है। बालिकाएं १५ दिन घृत का दीपक जलाकर अपने घर से ले जाती हैं और १५ दिन का तेल का। यह कार्तिक मास में सम्पन्न होता है। तुलसी श्रीकृष्ण भगवान की पत्नी मानी जाती है। यह कार्य शाम के समय किया जाता है।

दशहरा

राजस्थान में दशहरे के त्यौहार को बड़े उत्साह से मनाते हैं। विशेष रूप से भरतपुर में दशहरे का त्यौहार बड़ी शान शौकत से मनाया जाता है। इस अवसर पर सारे राजस्थान में शमीवृक्ष (खेजड़ी) की पूजा की जाती है और लीलटांस पक्षी का दर्शन शुभ माना जाता है। इस दिन राजपूत लोग शस्त्रों की पूजा करते हैं। कई जगह पर मेले लगते है और हाथी घोडों के साथ सवारियां निकलती हैं।

रक्षाबन्धन

दशहरे की भांती रक्षाबन्धन का त्यौहार भी राजस्थान में बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। इसी दिन बहनें अपने भाईयों के हाथों पर राखी बांधती हैं। राखी बांधने का अर्थ ही यह है कि भाई अपनी बहन की रक्षा का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेता है। यह पर्व मनुष्य को धर्म एवं जाति के बन्धनों से ऊपर उठ कर अपने कर्तव्य-पालन करता है राजस्थान की रानी कर्णावती ने अपने राज्य पर आक्रमण होने पर हुमायूं को राखी भेज कर रक्षा करने का अनुरोध किया था और हुमायूं स्वयं विपत्ति ग्रस्त होते हुए भी उसकी सहायता के लिए दौड़ पड़ा था।

इस दिन गांवों में ब्राह्मण लोग अपने यजमानों के राखियां बांधते हैं और इस प्रकार उन्हें अपने कर्त्तव्य-बाध का ध्यान दिलाते हैं।

उक्त त्यौहारों के अतिरिक्त नाग-पंचमी, करवा चौथ, राम नवमी आदि और भी अनेक त्यौहार हैं, जो राजस्थान के निवासियों द्वारा मनाये जाते हैं।